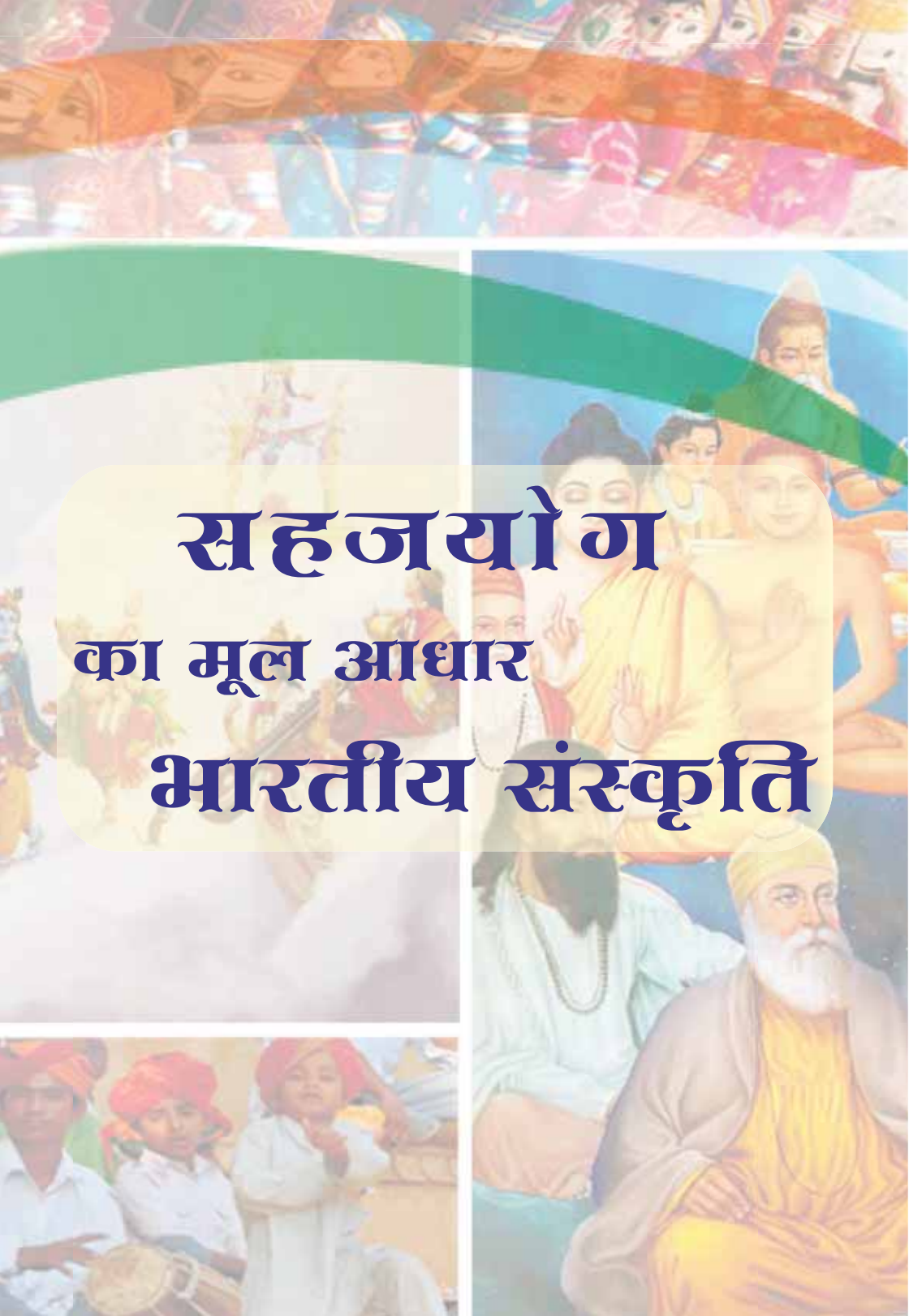

सहजयोग
का मूल आधार
भारतीय संस्कृति

सहजयोग
का मूल आधार
भारतीय संस्कृति

'सहजमार्ग भारतीय संस्कृति पर बसा हुआ है'
(प.पू.श्रीमाताजी)

संकलन
श्रीमती लीला अग्रवाल
डा.(श्रीमती) सरोजिनी अग्रवाल

अपनी बात

साक्षात सरस्वती स्वरूपा श्रीमाताजी ने अपने प्रवचनों में भारतभूमि एवं भारतीय संस्कृति के महत्त्व की बार-बार चर्चा करते हुए कहा है- ''**भारतीय संस्कृति बहुत ऊँची है यही एक दिन संसार का मार्गदर्शन कर सकती है।**'' एक बार उन्होंने अपनी आन्तिरिक इच्छा भी व्यक्त की थी ''**कभी ग़र मुझे समय मिला तो मैं थोड़ा बहुत लिखना चाहती हूँ कि यह देश कितना महान है**'' उनकी यही एक पंक्ति हमारे इस संकलन की मूल प्रेरणा स्रोत है।

परम पूज्य श्रीमाताजी ने स्पष्ट कहा है, ''**सहजयोग भारतीय संस्कृति पर बसा हुआ है,**'' ''**ग़र आप सहज में आ रहे हैं, तो आपको इस भारतीय संस्कृति को अपनाना पड़ेगा।**'' ''**इस महत्त्वपूर्ण संस्कृति को समझना, उसकी गहनता को समझना हर एक सहजयोगी का परम कर्तव्य है।**'' अत: इस संकलन के दो ही उद्देश्य हैं, एक तो हमारे सभी देसी-परदेसी सहजी भाई बहन भारतीय संस्कृति की मूल अवधारणाओं व जीवन-मूल्यों की महत्ता को अच्छी तरह जानें समझें और दूसरा यह कि हर सहजयोगी पहले स्वयं इस संस्कृति की गहनता को आत्मसात करे और फिर इसके प्रचार-प्रसार के दायित्व को पूरी गंभीरता से ले।

वैसे तो श्रीमाताजी ने अपने प्रवचनों में भारतीय संस्कृति के प्रत्येक पक्ष पर काफी विस्तार से बताया है पर फिर भी संबंधित विषय की पर्याप्त जानकारी देने के लिए हमें निर्मल वाणी के साथ-साथ अपनी भाषा भी जोड़नी पड़ी है। हमने अपनी भाषा का प्रयोग केवल भारतीय ग्रंथों से संकलित अत्यंत आवश्यक तथ्यों के लिए ही किया है।

आज हमारी परमेश्वरी माँ हमारे बीच नहीं हैं पर उनके इस विशाल सहजी परिवार को उनके विश्वशांति के स्वप्न को पूरा करना है। हममें से

हर एक की ज़िम्मेदारी है कि हम सारे संसार को अपनी कर्मभूमि बनाकर अधिक से अधिक लोगों को आत्मसाक्षात्कार दें, अपने आध्यात्मिक व्यक्तित्त्व की गरिमा में रहते हुए अपनी दिव्य शक्तियों को कार्यान्वित करें, पाश्चात्य जीवन शैली के अन्धानुकरण में दिग्भ्रमित युवा पीढ़ी को सही रास्ता दिखायें और सर्वोपरि छोटे बच्चों को उचित परिवेश और संस्कार देकर उन्हें सशक्त भविष्य निर्माता व उन्नत सहजयोगी बनायें।

हमारा सामूहिक संकल्प और हमारा समवेत प्रयास ही परमपूज्या माताजी के प्रति हमारा सच्चा समर्पण और श्रद्धा-निवेदन होगा।

जय श्रीमाता जी

विषय-क्रम

अध्याय	प्राक्कथन	पृष्ठ
	वंदे मातरम्	
	विश्व की सर्वश्रेष्ठ भूमि हमारी भारत भूमि	
	भाग १	
1	महान देश भारत और उसकी गरिमामयी संस्कृति	11
2	भारत देश के अमूल्य आध्यात्मिक एवं धार्मिक ग्रंथ	19
3	भारतीय संस्कृति में अध्यात्म	27
4	भारतीय संस्कृति के सामाजिक आदर्श	41
5	भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्य	59
6	भारतीय संस्कृति में संस्कारों के विधान	66
7	भारत देश के प्रमुख पर्व एवं मान्यताएँ	73
8	भारत देश की विविध कलाएँ	87
9	भारत देश की विशिष्ट विद्याएँ	97
10	भारत देश की प्राचीन वर्णाश्रम व्यवस्था	108
11	महर्षि पातंजलि का "अष्टांग योग" और आज का सहज योग	114
12	जगद्गुरु श्री शंकराचार्य का वेदांत दर्शन	120
13	ब्रह्म का निराकार-साकार स्वरूप एवं उपासना पद्धति	124
14	प्रचलित धार्मिक अनुष्ठानों के मूल तत्त्व	131
15	सृष्टि का कालचक्र और ईश्वर के दस अवतार	137
16	परम चैतन्य के दो अलौकिक अवतरण - संत ईसा मसीह एवं श्री निर्मला देवी	145
	भाग २	
17	सहजयोगी उठो, चारों ओर फैल जाओ	151
18	सारा विश्व आपकी कर्मभूमि	159

19	अपनी दिव्य शक्तियों को कैसे कार्यान्वित करें?	169
20	अपने आध्यात्मिक व्यक्तित्त्व की प्रतिष्ठा में अटल रहें	186
21	सर्वप्रथम युवा वर्ग की जाग्रति आवश्यक	197
22	सहजी बच्चे ही कल के विश्व निर्माता	203
23	बच्चों के साथ माता पिता के संबंध एवं उत्तरदायित्व	211
24	बच्चों के उचित पालन हेतु व्यवहारिक निर्देश	226
25	बच्चों के पूर्ण विकास में सुसंस्कृत घर एवं सहज आदर्श विद्यालय का महत्त्व	232
26	हमें शपथ है आपकी (काव्य)	245

वंदे मातरम्

''सुजलां सुफलां, मलयज-शीतलाम्।
शस्यश्यामलं मातरं, वन्दे मातरम्।
शुभ्रज्योत्स्नां, पुलकितयामिनीम्।
फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभनीम्।
सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीम्।
सुखदां वरदां मातरं, वन्दे मातरम्।''

भारतभूमि की अप्रितम विशेषताओं की ओर इंगित करते हुए कवि श्री बंकिमचन्द्र चटर्जी कहते हैं- "जहाँ गंगा-यमुना और ब्रह्मपुत्र जैसी सुन्दर जलवाली पवित्र नदियाँ प्रवाहित होती हैं, जहाँ सुन्दर वृक्ष सदैव मीठे फलों से आच्छादित रहते हैं, जहाँ चंदन के समान शीतल वायु सतत प्रवाहित है और जहाँ हरी भरी फसलों के कारण सारी पृथ्वी शस्यश्यामला प्रतीत होती है, मैं उस भारत माँ की वंदना करता हूँ।"

"जिस भारतभूमि में चन्द्रमा की धवल उज्ज्वल चाँदनी से रात प्रसन्न रहती है, जहाँ नाना प्रकार के रंग बिरंगें फूल सदैव खिले रहते हैं, जहाँ हरे-भरे वृक्षों के समूह से धरती सदा सुशोभित रहती है, जहाँ वसुधा का कण-कण मधुर मुस्कान से युक्त है और जहाँ के निवासी स्त्री-पुरुष बाल-वृद्ध सभी मधुर वाणी बोलते हैं ऐसी सुखदायिनी व वरदायिनी भारत माँ की मैं वंदना करता हूँ।"

"यह पुराने दिनों (स्वंतत्रता संग्राम) का अत्यंत महान गीत है... यह गीत हमारी मातृभूमि के सौन्दर्य और उसकी प्रकृति का वर्णन करता है। इसे सदा राष्ट्रगीत के रूप में गाया गया।

...इस गीत की पूरी भाषा संस्कृत नहीं है। मुझे वो दिन याद है जब बर्तानवी बंदूकें हमारे ऊपर तनी होती थीं और हम यह गीत गाते हुए बहादुरी से उनका सामना करते थे।''

विश्व की सर्वश्रेष्ठ भूमि हमारी भारत भूमि

''तत्रापि भारतं श्रेष्ठं जम्बूद्वीपे महामुने
यतोहि कर्मभूरेषा ततोऽन्या भोगभूमय:''

जगत में भारत ही श्रेष्ठभूमि है क्योंकि यह कर्मभूमि है, भारत के सिवा सारी भूमि भोग भूमि है'' **(विष्णु पुराण)**

''भारत-भूमि ब्रह्म-ज्ञान की जननी है। इस संसार में सभ्यता की जननी यही हमारी भारत-मही(भूमि) है'' **(मनुस्मृति २/२०)**

''भारत-भूमि मोक्ष रूपी परम कार्य की सिद्धि का साधन है इसीलिए भारतवर्ष को इतना गौरव प्राप्त हुआ है'' **(श्रीमद्देवीभागवत पाँचवाँ स्कन्ध)**

''जिस मातृभूमि में सबके कल्याण की कामना करने वाले अनके महर्षियों ने तप किया है, जहाँ गायत्री मंत्र का ज्ञान हुआ वह भूमि हमें उत्तम राष्ट्र मे बल और ब्रह्मतेज को देने वाली हो'' **(ऋग्वेद)**

''देवता लोग भी निरन्तर यही गाया करते हैं कि जिन्होंने स्वर्ग और मोक्ष के मार्गभूत भारतवर्ष में जन्म लिया है वे हम देवताओं की अपेक्षा अधिक सौभाग्याशाली हैं'' **(विष्णुपुराण २/३/२४)**

''माता भूमि: पुत्रो अहं पृथिव्या:'' **(मंत्र १२)**

भूमि माता है, मैं उस पृथ्वी का पुत्र हूँ।

''पृथ्वी सच्चे अर्थों में सबका भरण पोषण करने वाली माता है। वह वृक्ष-वनस्पति, कीट-पतंग, पशु-पक्षी और मानव सबकी पालन कर्त्री शक्ति है''

''भारत हमारी मातृभूमि है, इस भूमि के साथ हमारा हृदय प्रगाढ़ स्नेह से बँधा है। हमारी जन्मभूमि शान्तिमयी, सौरभशालिनी, मृदुला, सहनशीला और अमृतवती है'' **(मंत्र ५९)**

''हे मातृभूमि! हमें सब प्रकार की श्री और सम्पति इस जीवन में प्रदान करो। साथ ही द्युलोक (आकाश) का जो अमृतजीवन है उसके साथ भी हमारा सम्बन्ध स्थिर रहे''-

''भूमे मातनि देहि मां भद्रया सुप्रतिष्ठितम्।
संविदाना दिवा कवे श्रिया माधेहि भृत्याम्।।

(मंत्र ६३, अथर्ववेद-पृथ्वीसूत्र)

अध्याय 1

महान देश भारत और उसकी गरिमामयी संस्कृति

अपने देश जैसा महान देश कोई नहीं और हमारी भारतीय संस्कृति जैसी कोई संस्कृति संसार में नहीं है।

..... सहजमार्ग भारतीय संस्कृति पर बसा हुआ है।

प.पू.श्रीमाताजी, 18-12-98, दिल्ली

– संस्कृति किसी भी समाज के इतिहास उसकी श्रद्धा उसके सोच विचार, उसकी भावनाओं और उसके आदर्शों की देन होती है। ...संस्कृति सामाजिक शांति, विवेक और नैतिकता को दर्शाती है। अबोधिता एवं आध्यात्मिकता की अन्तर्जात संस्कृति शान्ति, ईमानदारी एवं नैतिक विवेक का सृजन करती है। सर्वोपरि अच्छी संस्कृति मधुर एवं भद्र भाषा तथा शान्त पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन प्रदान करती है।

..... भारतीय जीवन शैली की जड़े पारम्परिक विवेक में बहुत गहरी उतरी हुई हैं। ...भारत ने श्रेष्ठ आदर्शों वाले बहुत से पुरूषों तथा महिलाओं को जन्म दिया है जो पारम्परिक विवेक तथा सत्य के पक्षधर थे। संतों पैगम्बरों, महान राजाओं तथा समाज सुधारकों ने भारत के इतिहास को आध्यात्मिक रूप से सम्पन्न किया है।

प.पू.श्रीमाताजी, परा आधुनिक युग

– भारत बहुत महान देश है। ये योग भूमि है, दिव्यता और चैतन्य लहरियों से पूर्ण, परन्तु आज हम लोग अपनी यहाँ की सारी उपलब्धियों से कट गए हैं और यही कारण है कि हम नहीं जानते कि अपनी इस मातृभूमि की क्या विशेषता है और हम क्या प्राप्त कर सकते हैं?एक दिन आएगा कि जब पूरा विश्व इस योगभूमि की पूजा करेगा।

प.पू.श्रीमाताजी, 17-4-2000, दिल्ली, चै.ल.2001 मार्च–अप्रैल, पृ.13

..... हमारी भूमि योग भूमि है। ... हमें योग से बनाया गया है... हमें इस भूमि पर योगी की तरह रहना है। एक दिन ऐसा आएगा जब सभी को योग प्राप्त होगा, उस समय सारी दुनिया इस देश के चरणों में झुकेगी।

प.पू.श्रीमाताजी, 27-9-79, बंबई

– वे (विदेशी सहजयोगी) जैसे ही बम्बई में उतरेंगे तो आपके एयर पोर्ट की जमीन को झुककर नमस्कार करते हैं और चूमते हैं उसे। ... वे कहते हैं कि चैतन्य तो एयरपोर्ट पर ही महसूस होने लगता जाता है।

..... ऐसा न कहीं चैतन्य है, न कहीं ऐसा आराम। ... इस संतों की भूमि में इस योगभूमि में चैतन्य की पूरी बस्ती है।

प.पू.श्रीमाताजी, 26-3-92, नोएडा, चै.ल.1992 अंक 3,4 पृ.17

– वो जानते हैं कि यह योगभूमि है और पूरे ब्रह्माण्ड की कुण्डलिनी इस योगभूमि में है।

प.पू.श्रीमाताजी, 22-8-2000, दिल्ली, जु.अ.2000

– भारत महान देश है जिसमें साक्षात्कारी लोगों की विशालतम सामूहिकता है। निश्चित रूप से ये आशीर्वादित देश है।

प.पू.श्रीमाताजी, चै.ल.2008 जन.फ.

– भारतवर्ष में 'सत्य' है। ... इस सत्य की खोज में हर साल हज़ारों लोग इस देश में आते हैं और हज़ारों वर्षों से आते रहे हैं। आपने सुना ही होगा इतिहास में, चाइना से और भी दूर देशों से लोग यहाँ आते थे और पता नहीं उनको कैसे मालूम था कि इस देश में ही सत्य निहित है, छिपा हुआ है।... 'सत्य' हमारे देश में था और अब भी है। इस सत्य को पाना अत्यन्त आवश्यक है।

..... इस देश में कोई तो विशेषता, पवित्रता है कि यहाँ इतने ऋषि मुनि और इतने मनन करने वाले महान लोग हो गए ... अनेक ऐसे साधु

संत हो गए कि उन्होंने 'सत्य' में काफी कुछ लिख दिया। ... ये हमारे देश की विशेष, विशेष तरह की एक प्रणाली है जिसमें हम एक श्रद्धा भाव से एक विश्वास के साथ इस चीज़ को मानते हैं कि जो बड़े पहुँचे हुए, आध्यत्मिक स्तर के ऊँचे मार्ग में रहते हुए लोगों ने लिखा है, वही बात सही है। उसमें झूठ नहीं। उसको पड़तालने का उसका विश्लेषण करने का हमें कोई अधिकार नहीं।... हम श्रद्धापूर्वक उस महान तत्व को मानते हैं जो हमारे सामने ऋषी–मुनियों ने रखा।

..... अपने देश की जो सम्पति है वो इतनी ज़्यादा इतनी गहरी, इतनी अचल है पर उसको देखना, जानना हम हिन्दुस्तानी अपना कर्तव्य ही नहीं समझते । वे यहाँ की संस्कृति के बारे में तो कुछ बता ही नहीं सकते। कितनों ने मुझसे कहा, खासकर हमारे जो परदेशी सहजयोगी हैं कि, ''माँ आप एक किताब हिन्दुस्तान की जो ख़ासकर ग़हरी बाते हैं उस पर लिखो।'' सो मैंने कहा कौन सी गहरी बातें? तो कहने लगे 'संस्कृति' भारतीय संस्कृति पर आप एक किताब लिखो। मैंने कहा ये तो महासागर है, इस सागर से मैं आपको क्या दे सकती हूँ? उसके लिए तो ग्रन्थ पे ग्रन्थ लिखने पड़ेगे।

..... **भारत की जो चीज़ है, वो बड़ी गहरी है। ...अपनी भारतीय संस्कृति को उभारना चाहिए। उसके बगैर यह संसार नहीं बच सकता।** संसार को बचाना है तो भारतीय संस्कृति का यहाँ एक बढ़िया उदाहरण होना चाहिए, मसला होना चाहिए जिसको देखकर लोग समझ जाएँ कि ये भी एक ज़िंदगी है, इसमें भी एक आनंद है।

..... **कौनसी गहनता हमारी संस्कृति की विशेष है? अब इस संस्कृति के बारे में कहना बहुत जरूरी है। ...सबसे विशेष बात है हमारी आध्यात्मिक दृष्टि** ... पर आज राजकरण में आध्यात्म की तो कोई बात ही नहीं करता। आध्यात्म में हम हिन्दुस्तानी नहीं जाएंगें तो कौन जाएगा उसमें? कौन

उसको समझेगा?

..... आज (सहजयोग से) पचहत्तर देशों में ये आध्यात्म फैल गया... इन्होंने (विदेशी सहजयोगियों ने) आत्म साक्षात्कार को प्राप्त किया और अपनी भारतीय संस्कृति को पकड़ा अमरीकन संस्कृति को नहीं फ्रेंच संस्कृति को नहीं, उल्टे ये जिस देश से आए हैं उस देश की संस्कृति को कहते हैं कि ये तो बिल्कुल ही पतन की ओर ले जा रही है। ये हमारी आत्मा का हनन करती है, ये हमें नैतिकता से गिराती है।

..... भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी देन है कि हम लोगों को नैतिक होना चाहिए।... अनैतिकता को फैलाना जिनका काम है वे भारतीय नहीं हो सकते।

प.पू.श्रीमाताजी, 18-12-98, दिल्ली, जु.अ.1999

– **हमारी संस्कृति की नैतिकता हमारा अंकुश है।** नैतिकता वो हमें समझ लेना चाहिए और वो पूरी जब तक हमारे अंदर उतरेगी नहीं, हम लोग असली तरह से सहजयोगी भी नहीं हो सकते क्योंकि यह सहज–योग के लिए बहुत पोषक है।

..... **भारतीय संस्कृति का जो शुद्ध स्वरूप है वो आत्मसाक्षात्कार के लिए बहुत पोषक है,** अगर हम भारतीय संस्कृति में नहीं आएंगे तो कभी भी इस देश का हाल ठीक नहीं हो सकता।

..... परदेश में जितने सहजयोगी हैं आश्चर्य की बात है हमेशा कहते हैं कि **माँ हमें भारतीय संस्कृति में आप उतारिये, ये तो बहुत सौम्य संस्कृति है। इसमें सब बच्चे, लोग अत्यन्त सौम्य हैं, सहनशील हैं, इतना ही नहीं धार्मिक हैं।**

..... जब विदेशों के लोग हमारी संस्कृति को ले रहे हैं तो क्या आपके लिए ज़रूरी नहीं है कि हम भी अपनी संस्कृति को समझें तथा

जाने? बहुत सी बातों में हम सोचते हैं कि उनका अनुकरण करना आसान है लेकिन वे लोग सोच रहे हैं कि उन्होंने जो भी गलतियाँ की उसका कारण उन पर किसी तरह के अंकुश का न होना था। एक कटी पतंग की तरह वे लोग मनमानी करते और अति पर चले जाते, तब उन्हें पता लगता कि गलतियों के कारण कई बीमारियाँ हो गईं, सारा उनका समाज नष्ट भ्रष्ट हो गया।

प.पू.श्रीमाताजी, 10-3-91, जन्म दिवस पूजा, दिल्ली

– हम अपने का कहलाते हैं कि हिन्दू या भारतीय हैं, लेकिन हम भी अपनी संस्कृति से पूरी तरह अनभिज्ञ हैं। हम कुछ भी नहीं जानते कि हमारी जड़े क्या हैं? किस जड़ के सहारे हम खड़े हैं? दूसरों की जड़े अपने अन्दर बिठा कर हम जी नहीं सकते और जो हमारी जड़े हैं वो इतनी महत्त्वपूर्ण हैं कि उसी से संसार की जड़े प्लावित होंगी। उसी से वो उच्च स्तर पर उठेंगी।

..... सहजयोग के लिए यह महान चीज़ है कि आप लोग हिन्दुस्तानी हैं और आपके पास ''संस्कृति'' की एक बड़ी भारी धरोहर वस्तु भी है, उसको आप पकड़े रहें, पकड़ कर उसी पर आप जमें और उसी पर आप परिपक्वता पायें।

प.पू.श्रीमाताजी, 29-3-1983, दिल्ली, न.दि.2006, पृ.30

– आप लोग इस महान पुण्य भूमि भारत में पैदा हुए हैं, कृपया अपनी धरोहर आपने जो पाया हुआ है उसे जानने की कोशिश करें क्योंकि **हमारी जो भारतीय संस्कृति है ये आत्मा की पोषक है, यही आत्मा को बढ़ावा देने वाली है। बाकी किसी भी संस्कृति में आत्मा की ओर चित्त नहीं दिया गया है इसलिये इस संस्कृति की ओर चित्त दें, उसको समझने की कोशिश करें और अपने जीवन में उसे लाने की कोशिश करें।**

प.पू.श्रीमाताजी

– भारतीय संस्कृति सब चीज़ पे असर करती है, हर चीज़ को वो ठीक करती है, जीवन के जितने भी प्रसंग है, जितने भी आयाम हैं सबमें वो एक दैवी प्रकृति को प्रस्थापित करती है। यह दैवी प्रकृति को प्रस्थापित करने की बात और किसी भी संस्कृति में नहीं है।

प.पू.श्रीमाताजी, 10-3-91, दिल्ली

– इस संस्कृति में सबको पूरी तरह स्वतंत्रता है, पूर्णतया स्वतंत्रता है कि आप स्वतंत्र हैं।... अब स्वतंत्र समझना चाहिए। "स्व" के तंत्र को जानना यही स्वतंत्रता है और "स्व" माने क्या? स्व माने आपकी आत्मा। आत्मा को जानना ही स्वतंत्रता है।... "स्व" के तंत्र को जानना होगा और वही सहजयोग है जिससे आप स्व के तंत्र को जानते हैं, और इस स्व के तंत्र को जानने के लिए सबसे सहज मार्ग जो है वो है– "भारतीय संस्कृति"।

प.पू.श्रीमाताजी, 18-12-98, दिल्ली

– अपने देश की संस्कृति बहुत ऊँची है, ऐसी संस्कृति कोई भी देश में नहीं है।... इस संस्कृति में सबकी इज्ज़त करना, सबको प्यार करना और देश को प्यार करना और बड़े–बड़े इनके आदर्श हैं। उन आदर्शों पर चलना है, उनको भुलाकर हमारा कोई फायदा नहीं। इन्हीं आदर्शों को हमको और देशों में फैलाना है।... हम लोगों की जो अच्छाइयाँ है, वो सामने आनी चाहिए।

प.पू.श्रीमाताजी, 24-3-2000, दिल्ली

– हर चीज़ हमारी संस्कृति में बहुत नापतोल और समझ से बनाई गई है, ये कोई, किसी धर्म ने नहीं बनाई, ये द्रष्टाओं ने बनाई हैं, बड़े–बड़े ऋषियों और मुनियों की बनाई गई चीज़े हैं, इसको हमें समझ लेना चाहिए। हर चीज़ में, हर रहन–सहन में, बातचीत में ढंग में हमें पहले भारतीय होना चाहिए। **जब तक हम भारतीय नहीं हैं, तब तक सहजयोग आपमें बैठने वाला नहीं।** ...ये संस्कृति हज़ारों वर्षों से सोच समझ कर बनाई गयी है, इसमें जो गलतियाँ है उसे ठीक करके, अनेक वर्ष बिता कर,

इसमें जो कुछ भी दोष हैं उसे निकाल कर, ये संस्कृति बनाई गयी।

..... भारतीय संस्कृति को ज़रूर अपनाना होगा पूरी तरह से और उसकी पूरी इज्ज़त करते हुए। .... इस संस्कृति को छोड़कर के आप किसी भी तरह से सहजयोग में पनप नहीं सकते।

..... इस संस्कृति की महत्ता जितनी भी गाई जाए वो कम है लेकिन सिर्फ महत्ता से नहीं, वो हमारे अंदर बिंधनी चाहिए, हमारे अंदर उसका पूरा प्रवेश होना चाहिए। उसके अंग-अंग में हमें मज़ा आना चाहिए।

..... हम चाहेंगे कि आप अपनी भारतीय संस्कृति जो है उसको सर आँखों पर लगाकर मान्य करें, उसे स्वीकार करें और उसमें ही देखियेगा कि आपका चरित्र ऊँचा उठता जाएगा।

..... **अपनी संस्कृति जो है, बहुत महत्त्वपूर्ण है और इस महत्त्वपूर्ण संस्कृति को समझना, उसकी गहनता को समझना हरेक सहजयोगी का परम कर्तव्य है।** जब आप लोग उसे समझेंगे, उस पर कुछ लिखेंगे तभी तो न हमारे परदेस के सहजयोगी भी उसको आत्मसात करेंगे।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-3-85, दिल्ली, चै.ल. 2008 जु.अ.

- भारतीय संस्कृति बड़ी ऊँची है। यही एक दिन संसार का मार्ग दर्शन कर सकती है।

प.पू.श्रीमाताजी, 24-3-2002, दिल्ली

- आप सहजयोगी हैं, ... आपकी जीवन प्रणाली भी वैसी होनी चाहिए जैसे एक आदर्श हिन्दुस्तानी की होती है।... आप हिन्दुस्तान की शोभा बनें और उसी में रममाण रहें। यहाँ की हर चीज़ में आपको ध्यान देना चाहिए, यहाँ का संगीत, यहाँ की कला, यहाँ की शिल्पकला सभी चीज़ इतनी बढ़िया थी। चलो न भी बने पर उसको समझना तो चाहिए, उनको देखना तो चाहिए।

..... जब तक वो दृष्टि नहीं आएगी तब तक आप सहजयोगी नहीं हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 24-3-2003, दिल्ली

– आपको ये सोचना चाहिए कि ग़र आप ''सहज'' में आ रहे है तो आपको इस भारतीय संस्कृति को ही अपनाना पड़ेगा।

प.पू.श्रीमाताजी, 18-12-98, दिल्ली

अध्याय 2

भारत देश के अमूल्य आध्यात्मिक एवं धार्मिक ग्रंथ

हमारे देश में अमूल्य ग्रंथों का विशाल भंडार है। ऋषियों-मुनियों, संतों-महात्माओं और अनेक धर्मगुरुओं ने अपनी तपस्या, साधना और अनुभवों से जो भी लौकिक अलौकिक ज्ञान प्राप्त किया वह सब इन ग्रंथों में संचित है। ये ग्रंथ ही हमारी आध्यात्मिकता और धार्मिकता के मूल आधार हैं। पूज्या श्री माता जी ने इन ग्रंथों के विषय में कहा है-

''हज़ारों वर्षों पूर्व भारत में मानव ने वेद उपनिषदों और गीता जैसे महान विकसित और आध्यात्मिक दर्शन का सृजन किया''

प.पू.श्रीमाताजी, परा आधुनिक पुस्तक से

''सहजयोगियों को सब शास्त्रों, भूतकाल में हुए अवतरणों, पैगम्बरों ऋषियों एवं आत्मसाक्षात्कारी व्यक्तियों का ज्ञान होना चाहिए''

प.पू.श्रीमाताजी, सहजयोग पुस्तक से

हमारे देश के आध्यात्मिक ग्रंथों में वेद उपनिषद, पुराण, देवी-महात्म्य व श्रीमद्भगवद् गीता आदि मुख्य हैं। धार्मिक ग्रंथों में रामायण, महाभारत एवं श्री गुरुग्रंथ साहिब विशेष हैं। श्री माता जी ने इन सभी ग्रंथों के साथ 'नल-आख्यान', 'ज्ञानेश्वरी', 'अमृतानुभव', 'गुरुगीता', 'विवेकचूड़ामणि' व 'सौन्दर्यलहरी' के साथ कबीर व नानक की रचनाओं का उल्लेख अपने प्रवचनों में बार-बार किया है। श्री माँ ने लिखा है- ''हर शास्त्र में किसी न किसी रूप में इसका (सहजयोग का) वर्णन किया गया है। भारत अतिप्रचीन देश है तथा बहुत से संतों तथा पैगम्बरों की कृपा इस पर हुई है। इन्हीं लोगों ने बहुत से शोध-ग्रंथ लिखे तथा लक्ष्य-प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन किया''

प.पू.श्रीमाताजी, सहजयोग पुस्तक से

हमारे इन आध्यात्मिक एवं धार्मिक ग्रंथों में क्या लिखा है इसी की संक्षिप्त जानकारी निम्नलिखित है:-

1. वेद -

वेद परम शक्तिमान ईश्वर की वाणी है अर्थात वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वेद श्रुति भी कहलाते हैं, श्रुति का अर्थ है सुनना। इसका अर्थ है कि प्राचीन ऋषियों ने मनन एवं ध्यान कर अपने तपस्या के बल पर ईश्वर के ज्ञान को ग्रहण किया उसे आत्मसात किया। जब उनके शिष्य उनसे शिक्षा ग्रहण करते तो वे उसी ज्ञान को उन्हें बाँटते। यह ईश्वरीय ज्ञान मंत्रों के रूप में ऋषियों के साथ सभी को स्मरण होते गए, उन्हें कंठस्थ हो गए और धीरे-धीरे उन सभी से एक-दूसरे के पास पहुँचते गए।

जब सृष्टि की रचना हुई तब वेदों में सभी के लिए नाम, उनके कर्म उनकी संस्थाओं को अलग-अलग बनाया गया जिससे सभी अपनी-अपनी संस्था के अनुसार कर्म करें। वेद के अंदर वह ज्ञान है जो संम्पूर्ण मानव जाति के लिए उपयोगी है। वेद मनुष्य के कल्याण के लिए सभी प्रकार के ज्ञान के भंडार हैं। वेदों में ज्योतिष, संगीत, गणित, विज्ञान, धर्म, औषधि, प्रकृति, खगोल शास्त्र आदि लगभग सभी विषयों से संबधित ज्ञान भरा पड़ा है।

मनुष्य से संबंधित कोई भी कर्म हो जैसे विवाह, जन्म-मृत्यु, यज्ञ आदि, वे सभी कार्य मंत्रोचारण के बिना पूर्ण नहीं होते हैं। ये सारे मंत्र वेदों में ही वर्णित हैं। वेदों में सामाजिक आचार-विचार, शिष्टाचार, राष्ट्र रक्षा के उपाय, उस पर शासन करने के सिद्धांत उल्लेखित हैं, व्यवसाय आर्थिक नीतियों का वर्णन है।

सर्वोपरि वेदों में ईश्वर के विषय में पूर्ण ज्ञान दिया है। सत्य एक है लेकिन वह अनेक रूपों में विद्यमान है। वैदिक काल में ऋषियों ने ध्यान

करने के लिए कहा क्योंकि ध्यान करने से ही मनुष्य का मन एकाग्र हो सकता है, तभी वह ईश्वर से सम्पर्क कर सकता है। वेदों में यज्ञकर्म आदि पर बहुत ज़ोर दिया गया है। प्राचीन काल में वेदों के मंत्रों द्वारा ऋषियों ने जन कल्याण को सबसे ऊपर रखा और तबसे वही परम्परा आज तक चली आ रही है। ऐसी मान्यता है कि वेद प्रारम्भ में एक ही था, उसे सुविधानुसार चार भागों में विभक्त कर दिया गया।

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।

चारों वेदों में प्रधानत: तीन विषयों का प्रतिपादन है –

1) कर्मकाण्ड अर्थात यज्ञकर्म–जिससे याज्ञिक अथवा यजमान को इस लोक में अभीष्ट फल की प्राप्ति हो।

2) ज्ञान काण्ड – जिससे परमात्मा के सम्बन्ध में वास्तविक तत्व तथा रहस्य की बातें जानी जाती है और जिससे मनुष्य के स्वार्थ, परार्थ तथा परमार्थिक अभीष्ट की सिद्धि हो सकती है।

3) उपासना काण्ड – ईश्वर भजन जिससे मनुष्य को ऐहिक तथा पारलौकिक सिद्धि हो सकती है।

वेद कोई पुस्तक वाचक शब्द नहीं है, बल्कि भिन्न–भिन्न ऋषी मुनियों के अनुभव सिद्ध आध्यात्मिक नियमों के संग्रह का नाम वेद है। वेद में सभी विद्याएँ बीज रूप में विद्यमान हैं।

''वेदो में क्या है'' पुस्तक से संकलित

प.पू.श्रीमाताजी ने भी इसका अनुमोदन किया है कि –

''विद् (का अर्थ है जानना) शब्द की उत्पत्ति दैवी ग्रन्थ के प्राचीन ग्रन्थ वेदों से है।

परा आधुनिक युग

2. उपनिषद -

उपनिषद वेदों का अंतिम भाग है इसलिए इसे वेदांत कहते हैं। इनमें ब्रह्म, जगत, जीव व माया आदि का स्वरूप विवेचन तथा ब्रह्म-प्राप्ति के उपायों का वर्णन है। रहस्यात्मक तत्त्वज्ञान गुरु और शिष्य के मध्य चर्चा का विषय रहा है। शिष्यों के तत्त्व ज्ञान से संबंधित प्रश्नों के उत्तर गुरु देते आए हैं, ये ही प्रश्नोत्तर उपनिषदों में संकलित है। उपनिषदों में दस उपनिषद प्रमुख माने गए हैं-ईशोपनिषद, केनोपनिषद, कठोपनिषद, प्रश्नोपनिषद, मांडूक्य उपनिषद, तैत्तिरीय उपनिषद व एतरेय उपनिषद आदि। उपनिषदों के विषय में श्री शंकराचार्य ने लिखा है ''जिससे मोक्ष चाहने वाले साधकों का सांसारिक अज्ञान नष्ट होता है, दु:ख समाप्त हो जाते हैं और ब्रह्म की प्राप्ति होती है वही अध्यात्म विद्या उपनिषद है''

श्री माताजी ने लिखा है :- ''संस्कृत भाषा में 108 उपनिषद हैं जिन्होंने कुंडलिनी जागृति एवं आध्यात्मिक उत्थान के विषय में वर्णन किया है''

प.पू.श्रीमाताजी, सहजयोग पुस्तक से

3. पुराण -

पुरातन काल की घटनाओं को पुराण कहते हैं। पुराणों को पंचम वेद माना जाता है। पुराणों की रचना महर्षि वेदव्यास ने की है। इनका मुख्य विषय अवतारवाद तथा देवोपासना है। इनमें सृष्टि, प्रलय मन्वंतर, वंश तथा वंशचरितों (एतिहासिक महापुरूषों का जीवन-वृत्तांत) का वर्णन किया गया है। पुराणों की संख्या अठारह है जैसे शिव पुराण, विष्णु पुराण, मार्केण्डेय पुराण, श्रीमद्भागवत व गरुड़ पुराण आदि। ''अठारह पुराणों में श्री व्यास जी ने दो ही वचनों में सारे आचार-व्यवहार की शिक्षा दे दी है- दूसरों के साथ बुरा बर्त्ताव पाप है अच्छा आचरण करना पुण्य गिना जाता है''। ये पुराण हमारे भारतीय ज्ञान, दर्शन धर्म व कला के साथ भारतीय

समाज व्यवस्था के आधार भी हैं।

श्रीमाताजी ने अपने प्रवचनों में 'मार्केण्डय पुराण' व 'विष्णु पुराण' आदि की चर्चा की है। वे कह रही हैं कि-

''प्राचीन पुराणों में स्पष्ट वर्णन है कि सच्चा गुरु कौन है, झूठा गुरु कौन है तथा ठीक शिक्षा क्या है, ग़लत शिक्षा क्या है?''

प.पू.श्रीमाताजी, परा आधुनिक युग से

''पौराणिक कथन निरर्थक नहीं है, निन्नायनबे प्रतिशत तो पूर्ण तथा सत्य हैं... ये ही भारतीय लोगों की धरोहर है... हमें अपनी संस्कृति तथा ज्ञान में विश्वास करना चाहिए''

प.पू.श्रीमाताजी, 7-12-91, मद्रास, खंड IV, अंक 1-2-1992, पृ.7

4. रामायण -

'रामायण' की रचना आदि कवि श्री वाल्मीकि ने की है। इसमें अयोध्या नरेश दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्रीरामचन्द्र जी का जीवनचरित है। वाल्मीकि के राम साक्षात धर्म (रामोविग्रहवान धर्म:) है। धर्म के तत्त्व को जानने वाले (धर्मकामार्थतत्त्वज्ञ:) सत्यवादी (रामो द्विर्नाभिभषते) और मर्यादापुरुषोत्तम हैं। उन्होंने अपनी विविध लीलाओं द्वारा दो बातें दर्शायीं- एक तो परिवार और समाज के प्रति व्यक्ति का व्यवहार कैसा होना चाहिए और दूसरा परमात्मा की प्राप्ति के लिए किन सद्गुणों और साधनाओं की आवश्यकता है। श्री राम ने अपने उत्तम चरित्र से सिद्ध किया कि वे एक साथ अच्छे पुत्र, पति, भाई, स्वामी, मित्र एवं राजा है। बाद में वाल्मीकि की रामायण का प्रसंग लेकर ही गोस्वामी तुलसीदास जी ने अवधी भाषा में 'रामचरितमानस' की रचना की। तुलसीकृत मानस में सभी वेदों, दर्शनों और पुराणों का ज्ञान सार रूप में समाहित है। इसे विक्रम की दूसरी सहस्त्राब्दी का सबसे अधिक प्रभावशाली ग्रंथ माना गया है।

5. महाभारत –

महाभारत महर्षि वेदव्यास रचित एक वृहद एतिहासिक महाकाव्य है। इसमें महाराज धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों (कौरवों) और महाराज पांडु के पाँच पुत्रों (पाण्डवों) की सम्पूर्ण जीवन–गाथा वर्णित है। बाहर से महाभारत कौरवों और पांडवों के मध्य राज्य प्राप्ति के लिए हुए पारस्परिक संघर्ष की कथा लगता है परंतु भीतर से इसका एक गूढ़ प्रतीकात्मक अर्थ है। यहाँ कौरव ईर्ष्या, द्वेष, छल एवं लोभ जैसी अधार्मिक प्रवृत्तियों के प्रतिनिधि हैं और पांडव त्याग, क्षमा, उदारता व विनम्रता जैसे सद्गुणों के स्वरूप हैं इसलिए कुरुक्षेत्र में हुआ महासंग्राम केवल एक पारिवारिक युद्ध नहीं है वरन एक धर्मयुद्ध है, पांडवों की विजय धर्म की विजय और कौरवों की हार अधर्म की हार है। भगवान श्री कृष्ण अर्जुन के सारथी के रूप में पांडवों के साथ हैं। श्री कृष्ण साक्षात सत्य हैं। महाभारत में इसी तत्त्व की प्रतिष्ठा की गई है जहाँ सत्य है, वहीं धर्म है, जहाँ धर्म है वहीं विजय है। महाभारत में विविध प्रसंगों के माध्यम से अनेक दार्शनिक एवं सामाजिक विषयों की भी विस्तृत चर्चा है। 'विदुरनीति' एवं 'श्रीमद्भगवद्गीता' इस विशाल ग्रंथ के महत्त्वतम अंश हैं।

6. श्रीमद्भगवद्गीता –

गीता महाभारत के "भीष्मपर्व" का अंश है कुरुक्षेत्र के मैदान में अर्जुन जब प्रतिपक्षियों के रूप में अपने सगे संबंधियों को देखकर मोहासक्त हो गया तब उसी युद्ध क्षेत्र में सारथी बने श्री कृष्ण ने व्याकुल विषादग्रस्त अर्जुन को जो ज्ञान दिया वही 'श्रीमद्भगवद्गीता' है। इसमें अठारह अध्याय और सात सौ श्लोक हैं।

श्रीमाताजी ने बताया है – ''अपनी गीता के माध्यम से उन्होंने (श्री कृष्ण ने) हमें ये बताने का प्रयत्न किया है कि आसुरी शक्तियों पर विजय

कैसे प्राप्त की जा सकती है? पूरी गीता में उन्होंने साक्षी अवस्था का वर्णन किया है।... सर्वप्रथम वे कर्म के विषय में बताते हैं... वे कहते हैं जो भी कर्म करने आवश्यक हों उन्हें आप कीजिए परंतु उनका परिणाम परमात्मा पर छोड़ दीजिए... कर्म के बाद उन्होंने ज्ञान के विषय में लिखा। ज्ञान का अर्थ पुस्तकों का ज्ञान नहीं है। ज्ञान का अर्थ है स्व को समझना (अर्थात) आप आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करें और स्व को पहचानें... अन्त में वे भक्ति की बात करते हैं। भक्ति का अर्थ है श्रद्धा... उन्होंने भक्ति का एक शब्द में वर्णन कर दिया "अनन्य भक्ति"। अनन्य भक्ति जहाँ दूसरा कोई नहीं... वास्तविक भक्ति तभी हो सकती है जब आप परमात्मा से एक तार हो जाते हैं। एकतार हुए बिना तो ये दिखावा है''

प.पू.श्रीमाताजी, 16-8-98, कबैला, खंड-XI, अंक 3-4 1999, पृ.३२

7. गुरुग्रन्थ साहिब -

यह सिख समुदाय का अत्यन्त पूज्य धर्म ग्रंथ है। यह सभी गुरुद्वारों में रखा जाता है। गुरुनानक ने इस ग्रंथ में अनेक सिख गुरुओं के साथ अन्य संतों, भक्तों एवं ज्ञानी पुरूषों की वाणी को संकलित किया है।

''ऐसे लोग जो बिल्कुल माने हुए थे कि ये बड़े भारी गुरु हैं और इन्होंने बड़ा कार्य किया है और इतने Spiritual (आध्यात्मिक) हैं उन सबकी वाणी को संकलित कर दिया उन्होंने (नानक जी) और उसमें रख लिया, उन सबकी कविताएँ उन्होंने अपने ग्रंथ साहिब में लिखी इसीलिए ग्रंथ साहिब पूजनीय है।''

प.पू.श्रीमाताजी, चै.ल. जन.फर.2000, गुरु नानक जन्मदिवस 1999

''श्री गुरुनानक ने कहा था कि दोनों हाथ नमाज़ की तरह फैलाकर परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। इस तरह से हाथ फैला कर प्रार्थना करने से कुंडलिनी शक्ति का जागरण होता है''

प.पू.श्रीमाताजी, चै.ल.1999 अंक 1-2

ये समस्त ग्रंन्थ ज्ञान के अनन्त भंडार हैं। हमारी भारतीय संस्कृति इन्हीं पर आधारित है। लेकिन आज के युग की अंधी भागदौड़ तथा अल्प ज्ञान के चलते भारतीय ही इन वेदों के ज्ञान को नहीं समझते। हमारे वेद तो अपने प्राचीन काल की असीम धरोहर है। आधुनिक काल में भी ये वेद उतने ही प्रभावशाली एवं हितकारी है जितने कि प्राचीन काल में थे।

पू.श्री माँ बता रही हैं कि– ''शास्त्रों में जो कुछ विधि लिखी हुई हैं उन सबके बहुत गहरे कारण हैं। इसलिए जो कुछ लिखा हुआ है उसको ग़र आप follow (अनुसरण) करते हैं तो उसमें कोई blindness नहीं है, उसमें अंधता नहीं है''

प.पू.श्रीमाताजी, 2-3-1976, बंबई

''संसार को हमें सभ्यता देनी है। हमारी संस्कृति में सभी मान्यताएँ इतनी सुन्दर हैं... इन्हें अपनाइए ... इतना ही नहीं हम सभ्य हों, हम सुसभ्य हों। सभ्यता ऐसी हो कि हमारे व्यक्तित्व से शुभ झरे तभी संसार ठीक हो सकता है''

प.पू.श्रीमाताजी, 25-3-85, दिल्ली जु.अंक 2005

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का महत्त्व

''क़ुरानशरीफ' मुसलमानों का और 'बाइबिल' ईसाइयों के धर्मग्रंथ है, जिनका भारत में भी उचित सम्मान किया जाता है। पूज्या श्रीमाता जी ने बताया है कि ये दोनों ग्रंथ श्री मुहम्मद पैगम्बर साहब और श्री ईसा मसीह के अनुयायियों द्वारा बाद में लिखे गए हैं।

''मुंबईय्या द्वारा रचित 'क़ुरान' में बहुत से सत्य मिलते हैं और यहूदियों की 'बाईबिल' में भी बहुत से सत्य छिपे हुए हैं परन्तु यह सब इनके अपने भले के लिए बनाए गए विचारों, तर्कों ओर समायोजनों में छिपे हुए हैं''

प.पू.श्रीमाताजी, 7-12-91, अंक 5-6-1996, पृ.13

अध्याय 3

भारतीय संस्कृति में अध्यात्म

(ब्रह्म और उसकी सृष्टि-लीला का सम्पूर्ण ज्ञान अध्यात्म कहा गया है। हमारे प्राचीन ग्रंन्थों में यह समस्त आध्यात्मिक ज्ञान ऋचाओं, सूक्तियों एवं श्लोकों के माध्यम से व्यक्त है, जिसे समझना साधारण मनुष्यों के लिए अत्यंत कठिन है। प.पू.श्रीमाताजी ने इसी गूढ़ ज्ञान को बोलचाल की सरल भाषा में समझा कर सभी अस्पष्ट बातों को स्पष्ट कर दिया है। उन्होंने हमारी सभी परम्परागत आध्यात्मिक अवधारणाओं की सिद्धता दी, उन्हें सुधारा, अंधविश्वासों का खंडन किया और साथ ही साथ कुछ ऐसे नए तथ्य भी बताए जो अब तक कहीं भी वर्णित नहीं हैं। सहजी भाई बहनों की सुविधा के लिए वैदिक एवं सहज ज्ञान समानान्तर रूप में देने का प्रयास किया गया है।)

1. परब्रह्म

''एको ब्रह्म द्वितीयोनास्ति'' एक ही ब्रह्म है, दूसरा कोई नहीं''

'एकोऽहं बहुस्याम्' - ''मैं एक से अनेक हो जाऊँ' ब्रह्म ही इसी इच्छा से उनकी सुप्तशक्ति का जागरण हुआ जिसके द्वारा सम्पूर्ण सृष्टि का सृजन किया गया। भारतीय संस्कृति में हम एक ही ब्रह्म की सत्ता पर श्रद्धा एवं विश्वास करते हैं।

''इस ब्रह्मांड का संचालन करने वाली एक शक्ति है। सभी शास्त्रों में वर्णित परमात्मा के प्रेम की एक सर्वव्यापक शक्ति है ''परमचैतन्य'' यह एक सूक्ष्म शक्ति है जो सारे जीवन्त कार्य करती है... सृजन और विकास का महान कार्य किसी महान संस्था द्वारा किया गया है जो कि महान दैवी आकार में है''

प.पू.श्रीमाताजी ''सहजयोग पुस्तक''

परमात्मा सर्वव्याप्त, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है।

प.पू.श्रीमाताजी, 10-5-92, कबेला

''**एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति**'' एक ही ब्रह्म अनेक नामों से कहा जाता है''

ऋग्वेद 1/164/46

''**यो देवानां नामधा एक एवं तं स प्रश्नं भुवनायन्तन्या**'' वही ब्रह्मतत्त्व सब देवताओं में व्याप्त है और जितने भी देवी-देवताओं के नाम है सब उसी में घटित होते है''

ऋग्वेद, 10/82/3

''परमात्मा ने सबसे पहले आदिशक्ति की शक्ति की सृष्टि की''

प.पू.श्रीमाताजी, 5-6-96

आदिशक्ति से तीन शक्तियाँ निकली हैं- महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती

प.पू.श्रीमाताजी, 9-4-90

आदिशक्ति ही परमात्मा के तीन अलग-अलग रूपों को प्रकाशित करती हैं, जिनका नाम ब्रह्मा, विष्णु महेश है।

प.पू.श्रीमाताजी, 29-2-76

2. आत्मा

''ममैवांशौ जीव लोके जीवभूतःसनातनः'' (गीता 15/7)

मेरा ही सनातन अंश जीव है। (शरीर + आत्मा = जीव)

''ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति'' (गीता 18/61)

''हे अर्जुन! ईश्वर सब प्राणियों के हृदय में स्थित है''। सभी जीवित प्राणियों में परमात्मा का अंश आत्मा है। संसार में मनुष्य ही सबसे अधिक

विकसित प्राणी है। मनुष्य शरीर में जो चेतना है वह उसी आत्म तत्व की है–

– "हर मानव हृदय में सर्वशक्तिमान परमात्मा का प्रतिबिम्ब आत्मा का निवास है।... आत्मा हर व्यक्ति के अंदर एक व्यापक अस्तित्व के रूप में है। सर्वशक्तिमान परमात्मा क्योंकि एक ही है, मानव हृदय में उसका प्रतिबिम्ब भी समान है, परन्तु परावर्तक भिन्न होने के कारण प्रतिबिम्ब भिन्न प्रकार का हो जाता है।"

प.पू.श्रीमाताजी, सहजयोग

– आप स्वयं ये शरीर, अहंकार, बुद्धि आदि ये कुछ नहीं है, आप सिर्फ शुद्ध आत्मा हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 4-4-90

''आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो, मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः''

बृहदारण्यक उपनिषद

आत्मा ही दर्शनीय, श्रवणीय और मननीय है। हमें उसी का चिन्तन करना चाहिए।

– जब तक आपने आत्मा को जाना नहीं, आप परमात्मा को नहीं जान सकते।... सबसे बड़ी सनातन बात यह है कि हम ब्रह्म शक्ति से बने हैं और हमें उसे पाना है।

प.पू.श्रीमाताजी, 17&2&81

– एक बार जब आत्मा का प्रकाश मानव के चित्त में हो जाता है तो व्यक्ति ज्योतिर्मय हो उठता है, अर्थात वह अनुभव कर पाता है कि वह स्वयं का मार्ग दर्शक, स्वयं का गुरू बन गया है।

प.पू.श्रीमाताजी, सहजयोग

– मनुष्य का सार और तत्त्व क्या है? उसका सार और तत्त्व उसकी आत्मा है। जब आत्मा हमारे अन्दर जागृत हो जाती है तब आनन्द उसका

स्वभाव हमारे अन्दर प्रस्फुटित होता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 16-2-85

''अजो नित्यः शाश्वतोऽयं, पुराणः न हन्यति हन्यमाने शरीरं''

''यह आत्मा अजन्मा, नित्य शाश्वत और पुरातन है। शरीर के नाश, होने पर भी इसका नाश नहीं होता।'' – गीता 2/20

– आत्मा को तो कोई छू नहीं सकता, नष्ट नहीं कर सकता, उसको सता नहीं सकता... आत्म तत्व को प्राप्त करने के लिए कुंडलिनी का जागरण होना जरूरी है।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-12-2000, गणपति पुंज

3. कुंडलिनी

''कुण्डलिनी शक्ति हर मनुष्य में है। मनुष्य शरीर में मेरूदण्ड के निम्नप्रान्त में एक त्रिकोणास्थि है, इसका तांत्रिक नाम मूलाधार पद्म है। उसमें एक स्नायुगुच्छ है जो प्रज्ज्वलित दीप्ति राशि स्वरूप है और जो सर्पिणी के समान साढ़े तीन कुण्डल के आकार में स्थित है, यही तेजपुंजवती कुल कुण्डलिनी है।''

..... सुषुम्ना नाड़ी के अन्तर्गत एक नाड़ी है वज्रा उसके अन्तर्मार्ग में ब्रह्मनाड़ी है जाग्रत होकर कुल कुण्डलिनी इसी मार्ग से ऊपर आरोहण करती जाती है।''

संस्कृति अंक-कल्याण

''कुल कुण्डलिनी जब ऊर्ध्वगमन करने लगती है तब मूलाधार (पृथ्वी तत्त्व) से स्वाधिष्ठान (जल तत्त्व) में प्रवेश करती है, वहां से मणिपुर (अग्नि तत्त्व) में आरोहण करती है, उसे भेदकर अनाहत (वायु तत्त्व) में फिर विशुद्धि (आकाश) में और फिर भूमध्य में स्थित आज्ञा (मन) और आज्ञा से सहस्रार में प्रवेश करती है। वहाँ सहस्रदल कमल में

परम शिव के अंक में विहार करती है''

सौन्दर्य लहरी श्री शंकराचार्य कृत

परम पूज्या श्रीमाताजी ने ''कुण्डलिनी शक्ति'' के विषय में बहुत ही विस्तार से सरल रूप में समझा दिया है। अपने सहजयोगी साधकों की कुण्डलिनी जाग्रत करके उन्हें ''चैतन्य'' का अनुभव करवाया है।

प.पू.श्रीमाताजी ने स्पष्ट किया है कि -

- कण-कण में व्याप्त हो जाने वाली परमात्मा की ऊर्जा से हमारा सम्बन्ध जोड़ने के लिए शुद्ध इच्छा शक्ति है जिसे मनुष्य की पवित्र अस्थि में रखा गया है और जो कुण्डलिनी कहलाती है।

- मानव के अन्दर शुद्ध इच्छा रूपी यह सुप्त शक्ति है। यह आदिशक्ति (परमात्मा की शक्ति) या होली घोस्ट की प्रतिबिम्ब है।

- जाग्रत होकर जब यह सर्वव्यापक शक्ति से जुड़ जाती है तो मानव में चतुर्थ आयाम का विकास आरम्भ होता है।

- आध्यात्मिक जीवन का यह विकास एक नई अवस्था है, जिसमें मनुष्य अपने अन्तर्जात देवत्व में उन्नति करने लगता है। यह इसके शारीरिक, मानसिक भावनात्मक तथा आध्यात्मिक अस्तित्व का पोषण करता है और उसे प्रकाशित करता है।

प.पू.श्रीमाताजी- सहजयोग से

4. भारत भूमि में स्वयं ईश्वर मानव रूप में अवतरित हुए हैं।

''परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे॥'' - गीता 4/8

''साधुओं की रक्षा, दुष्टों का विनाश और धर्म की पुनर्स्थापना के लिए हर युग में परमात्मा ही पृथ्वी पर अवतार लेते हैं।''

– परमात्मा एक हैं, उन्होंने अलग–अलग अवतार लिए, पर परमात्मा एक हैं, उनमें आपस में कोई झगड़ा नहीं और वो संसार में इसीलिए आते हैं कि दुष्टों का नाश करें और ख़राब लोगों को बर्बाद करें।

प.पू.श्रीमाताजी, 10-11-2007, नोएडा, ज.फ.2008

– मानव बनने तक विष्णु शक्ति ने स्वयं अवतार लिए।... महाकाली शक्ति भी, जिसे हम शिव–शक्ति कहते हैं, कभी–कभी अवतरित होती है। जब–जब भक्तों पर विपत्ति आई तब–तब देवी ने स्वयं अपनी छत्रछाया से भक्तों को संरक्षण दिया

प.पू.श्रीमाताजी, 24-9-79, बंबई, निर्मला योग

– आदि गुरु दत्तात्रेय में श्री विष्णु, श्री महेश, श्री ब्रह्मा इन तीनों देवताओं की शक्ति समन्वित है। ... ये शक्ति अनेक बार जन्म लेती है।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-7-79, बंबई

5. "ईशावास्यमिदं सर्वंयत्किंच जगत्यां जगत" इस अखिल ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी जड़ चेतन स्वरूप जगत है वह समस्त ईश्वर से व्याप्त है।

यजुर्वेद 40/1

''मैं जल में रस हूँ और सूर्य चन्द्रमा में प्रकाश भी मैं ही हूँ, मैं पृथ्वी में पवित्र गंध और अग्नि में तेज हूँ''

श्रीमद्भगवतगीता 7/89

भारतीय संस्कृति में हम प्रकृति के कण कण में परमात्मा की उपस्थिति मानते हैं इसीलिए पृथ्वी, हिमालय समुद्र के साथ पशुओं वृक्षों और नदियों की भी पूजा करते हैं।

"संसार भी परमात्मा है, विराट के अंग–प्रत्यंग में सारा संसार है।"

प.पू.श्रीमाताजी, 10-11-2007, दिल्ली

पृथ्वी – ''यह पृथ्वी श्री गणेश की माँ है इसीलिए आपको भी पृथ्वी माँ की देख-भाल करनी चाहिए... भारतीय संस्कृति के अनुसार प्रातः काल जब आप उठते हैं तो सर्वप्रथम पृथ्वी माँ को नमस्कार करते हैं यह कहकर कि हे पृथ्वी माँ! मैं आपके सामने नतमस्तक हूँ, आपको प्रणाम करता हूँ, मुझे आप क्षमा कीजिए। क्योंकि आपको मैं पैरों से छुऊँगा। पृथ्वी माँ के प्रति जब इतना सम्मान मन में होगा तो आप कभी भी इसका दुरूपयोग नहीं करेंगे, आपके सम्मुख पर्यावरण संबधी आज की अन्य समस्यायें नहीं होंगी।''

प.पू.श्रीमाताजी, 25-9-99, कबैला, मा.अप्रैल 2000 पृ.9

हिमालय – ''भारत ब्रह्मांड की कुंडलिनी है। भारत की रक्षा करने के लिए इस देश में हिमालय का सृजन किया गया। कुंडलिनी की रक्षा की जानी आवश्यक थी। यह विराट का मस्तिष्क है। प्राचीन संस्कृति को बचाए रखने के लिए कुछ देशों को सुरक्षित किया जाना आवश्यक था। श्री गणेश को भारत में स्थापित करना पड़ा। इसी कारण से मुझे भी इस देश में जन्म लेना पड़ा कर्क रेखा के ऊष्ण कटिबंध पर।''

प.पू.श्रीमाताजी, 30-3-89, काठमांडू आश्रम पूजा

– हिमालय की चोटियाँ हमें सुरक्षित कर रही हैं। इनसे हमें गंगा, यमुना और सरस्वती की धारायें प्राप्त हुई। हिमालय इन नदियों में पावनता प्रवाहित करता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 26-3-85 धर्मशाला देवी पूजा

कैलाश पर्वत हमारे लिए तीर्थ स्थान है क्योंकि पौराणिक कथनों के अनुसार यह भगवान श्री शंकर का निवास स्थान है।

समुद्र – ''एक प्रकार से समुद्र आपके नाना हैं क्योंकि समुद्र ने लक्ष्मी को जन्म दिया जो बाद में महालक्ष्मी बनीं।... वरुण समुद्र के देवता हैं... इनकी आराधना करनी पड़ती है।... समुद्र में प्रवेश करने से पहले और

समुद्र से निकलने के बाद हमें नमस्कार करना चाहिए।... समुद्र गुरु हैं महागुरु हैं।... समुद्र की अपनी मर्यादा होती है।... जीवन का प्रारंभ ही समुद्र से हुआ, हमारे सारे पूर्वज पहले समुद्र में ही पैदा हुए और तब हम मनुष्य बनें।

..... समुद्र मुझे समझता है क्योंकि मेरा इसके साथ विशेष संबन्ध है व आदर है। **सूर्य की गर्मी को सहकर समुद्र बादलों की सृष्टि करता है तथा इस प्रकार तपस्या करता है, इसी प्रकार हमें भी दूसरों के ताप और गुस्से को सहन करना है और बाष्प बनना है, अर्थात दूसरों को चैतन्य लहरियों** का वरदान देना है... आप में समुद्र के समान गहराई, आत्मसम्मान और राजसी प्रवृत्ति होना चाहिए।

प.पू.श्रीमाताजी, 29-12-91, पृ.17-18-1992, अंक 1,2

भारतीय संस्कृति में गौ को माता, सर्प को देवता, पीपल के वृक्ष को देवों का वृक्ष, तुलसी को मोक्षदायिनी, गंगा को सुरेश्वरी और यमुना को पाप विनाशिनी माना जाता है।

"जब आदि शक्ति इस संसार में आई तो एक गाय के रूप में उन्होंने जन्म लिया था। मतलब परमचैतन्य की जो बस्ती है उसमें उन्होंने अवतरण लिया और वहाँ एक गाय बन कर रहीं। खास बात यह है कि गोकुल पहले बना और वहाँ ये गाय रहीं... आदि शक्ति स्वयं एक गाय के स्वरूप में थी इसीलिये हम लोग गाय को नहीं मारते क्योंकि वो माँ हैं।"

प.पू.श्रीमाताजी, 5-4-2000, नोएडा, मार्च अप्रैल 2001

6. कर्म प्रधान विश्व करि राखा। जो जस करइ सो तसु फल चाखा

रामचरितमानस

भारतीय संस्कृति पुनर्जन्म एवं कर्मवाद के सिद्धान्तों पर पूरा विश्वास करती हैं। स्वर्ग और नर्क की धारणा को भी हम मानते हैं।

– सहजयोगियों को समझ लेना चाहिए कि वे सहजयोग में मुख्यत: अपने दर्पण को स्वच्छ करने के लिए, पूर्व जन्मों के कर्मों के पापों को धोने के लिए और युग-युगान्तरों से उनके अंदर जमी हुई मैल को साफ करके स्वच्छ होने के लिए आए हैं।... एक जीवन से दूसरे जीवन तक दोषों का भार ढोते रहने से बेहतर ये होगा कि अपने दोषों को समझें और उन्हें सुधार लें।

प.पू.श्रीमाताजी, 29-12-91, दिल्ली, ज.फ.2007

– पशु योनि से मनुष्य बने और क्या फायदा है कि मनुष्य होने के बाद आप जाकर कीड़े बने?

प.पू.श्रीमाताजी, 20-1-75, बंबई

– जो दुष्ट हैं, जो परमात्मा के विरोध में काम करते हैं और पैसा कमाने के लिए कोई भी काम कर सकते हैं वो सब नर्क में जाएंगे।... आप अधर्म करें, ग़लत काम करें तो आप भी नर्क में जा सकते हैं। बहुत तरह के नर्क हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 10-11-2007, ज.फ.2008

– जब आदमी में अहंकार आ जाता है तो कोई सी भी ग़लती करता है, बुराई करता है, किसी को नुकसान करता है, पैसा खाता है, वो सब नर्क में जायेंगे... जो भी चोरी करते हैं वे कभी भी स्वर्ग में नहीं जा सकते।

प.पू.श्रीमाताजी, 24-5-81, लंदन

– कौन मरा है मैं यह पूछना चाहती हूँ। कोई मरता ही नही। जितने भी मरते हैं, परलोक में बैठते हैं और वापिस यहाँ लौट आते हैं। प्राणी मात्र से कुछ-कुछ लोग मनुष्य हो जाते हैं लेकिन अधिकतर मनुष्य परलोक से वापिस यहाँ पर और यहाँ से परलोक, यही आना जाना लगा हुआ है। हो सकता है कि आपमें से जो आज यहाँ बैठे हुए हैं ये भी जन्म जन्मान्तर की खोज लिए हुए आज यहाँ पहुँचे हुए हैं।

..... जैसे आपके अनेक जन्म हुए हैं, मेरे भी अनेक जन्म हुए हैं। इन सब बड़े-बड़े खोजने वालों से मेरा भी बड़ा नजदीक का संबंध रहा है।... पिछले जन्म में हो सकता है जो हिन्दू है वो मुसलमान रहा हो, जो मुसलमान है वो ईसाई रहा हो।... जन्म जन्मान्तर की बात है।

प.पू.श्रीमाताजी, 1-6-72, सि.अ. 2004

7. इस देश की भूमि में अनेक ईश्वरीय विग्रह प्रगट हुए हैं, जिनमें चैतन्य है। पृथ्वी से प्रगट हुए इन स्वयंभुओं की हम पूजा करते हैं।

- जिस चीज़ का सृजन पृथ्वी माँ ने किया है, जो पृथ्वी माँ के गर्भ से निकली हैं वे स्वयंभू हैं, उनका सृजन पृथ्वी माँ ने ही किया है। ये स्वयंभू हमें सर्वत्र मिलते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 24-5-1986, मैडरिड स्पेन

- भारत में बहुत से स्वयंभू हैं।... उदाहरण के रूप में हम जानते हैं कि हमारे यहाँ महाराष्ट्र में महाकाली का स्थान है, महासरस्वती, महालक्ष्मी का स्थान है और आदिशक्ति का भी स्थान हमारे यहाँ है।... नासिक में सप्तशृंगी है... ये सप्तशृंगी आदिशक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 21-6-98, कबैला इटली, पृ.6 ज.फ.1999

- गणपतिपुले में श्री गणेश-महागणेश, ईसा मसीह के रूप में पृथ्वी माँ से प्रकट हुए हैं। शरीर का नीचे का हिस्सा वहाँ दिखाई देता है, और पूरा पर्वत उनका सिर है। वहाँ समुद्र का पानी भी मीठा है और मीठे पानी के बहुत से कुए भी हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 24-5-86, मैडरिड

- भारतीय धर्मग्रन्थों में मक्केश्वर शिव का वर्णन किया गया है।

भारत में तो सर्वत्र स्वयंभू शिव हैं, बारह ज्योतिर्लिंग हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 23-4-2000, टर्की

– महाराष्ट्र में रक्षा करने के लिए आठ गणेश बैठे हुए हैं। बहुत से मारूति भी यहाँ विद्यमान हैं। यहाँ पर कोई नकारात्मक आक्रमण नहीं है।

प.पू.श्रीमाताजी, 19-12-82, लोनावाला, मार्च अप्रैल 2005, पृ.15

– कोल्हापुर में महालक्ष्मी के मंदिर में जब आप जायेंगे वहाँ आपको समझना होगा कि इन देवी का जन्म इस स्थान पर विशेष रूप में पृथ्वी माँ के गर्भ से हुआ है। इसका अर्थ ये हुआ कि इस स्थान पर आपको शक्ति प्रदान करने की योग्यता है, एक अतिरिक्त शक्ति या उत्क्रांति का एक गहन एहसास।... इस स्थान कोल्हापुर में महालक्ष्मी तत्व कार्यरत है।... मंदिर में प्रसारित होने वाली चैतन्य लहरियों के कारण यह स्थान ठंडा बना रहता है।... विशेष लक्ष्य से सृजित किए गए विशेष स्थानों का हमें अधिकतम लाभ उठाना चाहिए।

..... स्वयंभू पश्चिमी देशों में प्रकट नहीं हुए क्योंकि स्वयंभू देवता पृथ्वी के गर्भ से निकलकर यदि वहाँ प्रकट भी हो जाते तो भी उन्हें वहाँ कौन पहचानता? कौन उनका सम्मान करता और कौन उनकी पूजा करता?थोड़े से स्वयंभू वहाँ पर भी हैं पर यहाँ (भारत में) तो सभी देवी–देवताओं के मंदिर हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 1-1-83, कोल्हापुर, मई–जून 2005 पृ.10-19

8. देवाधीनं जगत्सर्वं मंत्राधीनश्च देवता ''अर्थात देवताओं के आधीन समस्त संसार है, और ये देवता मंत्रों के आधीन हैं।'' विधि पूर्वक श्रद्धा से मंत्रोच्चार द्वारा संबंधित देवता की शक्ति साधक के भीतर जागृत होती है।

हम मंत्रों की शक्ति एवं प्रार्थना के महत्व को जानते हैं, हमें यज्ञ आदि अनुष्ठानों के द्वारा समस्त दैवी शक्तियों और पंचमहाभूतों को जागृत करने का ज्ञान है–

(मंत्र वस्तुतः शब्द, ध्वनि, गति, ऊर्जा, भावना और श्रद्धा का समन्वित चित्र है। मंत्र जाप में बहुत शक्ति है)

– जो कुछ आपने वेदान्त वग़ैरह पढ़ा है, वह केवल ब्रह्मशक्ति से लिखा है। आश्चर्य की बात है जब मनुष्य संसार में आया तब उसे भी क्रिया करने की इच्छा हुई। इच्छा शक्ति तो उसमें थी परन्तु क्रिया करने की इच्छा हुई। क्रिया करने के लिए मनुष्य को पहले पंचमहाभूतों से सामना करना पड़ा... इन पंचमहाभूतों (वायु, आकाश, अग्नि, जल, पृथ्वी) को कैसे हाथ में पकड़ना, उन पर मास्टरी (नियंत्रण) कैसे प्राप्त करना और उन्हें किस तरह उपयोग में लाना है और उन्हें कैसे समझना है?...

उन्होंने (मनुष्य ने) यज्ञ–हवन करके इन पंचमहाभूतों को जागृत किया।... एक महान शक्ति का मनुष्य ने निर्माण किया और उन्होंने पंचमहाभूतों को आहुति देकर उनके देवताओं का आवाहन किया, वे देवता जाग्रत हुए। उन देवताओं की जाग्रति से वे सभी शक्तियाँ भी जागृत हो गई (जो उन देवताओं की थी) और तब उनसे गुण जाग्रत करके, मनुष्य सारी सुख–सुविधाएं निर्मित करके आज मानव उच्च स्थिति में पहुँच गया है। ये बहुत वर्षों पुरानी बात है।

प.पू.श्रीमाताजी, 23-9-79, बंबई, निर्मला योग कुंडलिनी और ब्रह्मशक्ति

– यह हवन–यज्ञ क्या है इसे समझ लेना चाहिए। हवन, पूजा, प्रार्थना, नमाज़, मंत्रोच्चार, तंत्र आदि सब कुछ समझो। तंत्र माने जो गंदी चीज़ है वो नहीं, यह है कुंडलिनी itself! तो ये सब कुछ हमें उस राह का मार्ग प्रदर्शन करते हैं, उस राह को आलोकित करते हैं जिसपर हमें उठना है। एकदम से चमका देती है, ट्रिगरिंग हो जाता है अपने जीवन में। एकदम

से चीज़ ट्रिगर हो जाती है, जैसे हम एकदम से कूद जाते हैं । इस सीमित जीवन से हम असीम में कूद जाते हैं एकदम से।

..... हवन में श्री विष्णु का हवन... इसका बहुत फायदा है क्योंकि अपने हाथों से मैं आज इसे करने वाली हूँ। श्री विष्णु के हवन का मतलब होता है कि श्री विष्णु ही हमारी उत्क्रांति के संयोजक हैं, वे स्वयं ही उठकर श्री कृष्ण बने... यज्ञ में जो मनुष्य निर्मल मन से यहाँ बैठा है, उसी पे उसका प्रभाव आने वाला है।

..... आज का हमारा यज्ञ बड़ा यशस्वी हो सकता है... इससे यहाँ का जो atmosphere है वो जाग्रत हो जाएगा।... नतमस्तक होकर आवाहन करें, जब उनका अवतरण हो यानी जब वो जाग्रत हों। तब आप उसे अपने अंदर लें। जितनी भी यज्ञ में डालने की सामग्री है उनके द्वारा आप श्री विष्णु के सामने यह कह रहे हैं कि आप उनसे उपकृत हैं, आपके हमारे ऊपर अनेक उपकार हैं। हवन के द्वारा हम आपको दिखा रहे हैं।

..... इस उपकार बुद्धि के कारण sense of gratitude के कारण आपके अंदर जितना भी मैल है उसे जलने दीजिए इस अग्नि में। यह अग्नि आपको पवित्र कर सकती है अगर आप इस भावना से इन चीज़ों को यहाँ दे रहे हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 5-2-76, बंबई

– यज्ञ करना सनातन बात है, जिसके कारण आप, पांच elements जो हैं अपने अंदर, उनकी शुद्धी करें।

प.पू.श्रीमाताजी, 4-3-79, देहरादून

9. हम धर्म से रहित अर्थ और काम को श्रेष्ठ नहीं मानते। केवल मोक्ष (परमात्मा से एकाकारिता) ही हमारे जीवन का लक्ष्य है। हम लौकिक कामना की जगह मोक्ष प्राप्ति के लिए साधना करते हैं।

– ''परमात्मा के विश्वास पर ही हम लोग जुट रहे हैं। ये बात और किसी देश में नहीं जो हमारे देश में है कि कितनी भी विपत्ति आए, कितनी भी तकलीफ हुई तो भी हम सोचते रहे कि एक दिन ऐसा आएगा कि परमात्मा हमें जरूर रास्ता दिखाएगा और हम उस स्वर्ण दिन की राह देखते रहे जहाँ हम अपने मोक्ष को प्राप्त करें।''

प.पू.श्रीमाताजी, 18-3-89, नोएडा, जु.अ.2002 पृ.5

अंतत: वह स्वर्ण दिन आ गया। इस तपोभूमि भारत में स्वयं परमात्मा की शक्ति ममतामयी माँ के रूप में साक्षात हमारे बीच आयीं। उन्होंने हमें आत्मसाक्षात्कार देकर मोक्षप्राप्ति का बहुत ही सरल रास्ता दिखाया और ब्रह्म विद्या का सारा ज्ञान दिया। सहजयोग ज्ञान की पराकाष्ठा है, इसको जानने के बाद मनुष्य को जानने को कुछ भी शेष नहीं। पू. निर्मला माँ ने हमें मोक्ष प्रदान किया।

प.पू.श्रीमाताजी ने स्पष्ट कर दिया है कि-

– इस बदली हुई दुनिया में आध्यात्मिक जीवन बहुत महत्त्वपूर्ण है। इससे कितने क्लेश हमारे दूर हो सकते हैं। हमारे शारीरिक क्लेश अध्यात्म से खत्म हो सकते हैं, मानसिक क्लेश अध्यात्म से खत्म हो सकते हैं इसके अलावा जागृति के मार्ग में जो भी क्लेश हैं वो भी खत्म हो सकते हैं। इस प्रकार सारी दुनिया की ज़िन्दगी जो है अध्यात्म से पनप सकती है।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-12-2003, गणपति पूले, मई-जून 2004

..... मनुष्य जान गया है कि उसके लिए सबसे बड़ी चीज़ है अध्यात्म को पाना।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-12-2003, गणपति पूले, मई जून 2004

आध्यात्मिकता ही इस देश का सौन्दर्य और सम्पदा है।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-12-98, गणपति पुले, अंक 3-4, 1999

अध्याय 4

भारतीय संस्कृति के सामाजिक आदर्श

(वेदों में वर्णित महान आदर्शों का हम भारतीय पूरी श्रद्धा से निर्वाह करते हैं इसीलिए विश्व में भारतवर्ष का एक विशिष्ट स्थान है। पू॰ श्री माँ ने इन्हीं आदर्शों के विषय में बार-बार बताया है ताकि सहजयोगी उनकी महत्ता को जानें, समझें और अपने जीवन में उन्हें अपनाएं)

1. ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' – सारी पृथ्वी ही एक परिवार है।

भारतीय संस्कृति विश्व के समस्त प्राणियों की समानता और हितैषिता पर विशेष बल देती है। सहजयोगियों का भी लक्ष्य है विश्व बन्धुत्व की भावना को प्रसारित करना है।

– ये जानकर हमें कितनी सूझ-बूझ और सुरक्षा प्राप्त होती है कि विश्वभर में हमारे भाई-बहन हैं, जो आत्मचालित हैं, जो अपने परमेश्वर पर निर्भर हैं और उस दिव्य प्रेम से हम किस प्रकार बँधे हुए हैं।... हम एक ही माँ के बेटे हैं... हम सब एक ही तत्व के बने हुए हैं... हम न ग़ैर हैं न दुश्मन।

प.पू.श्रीमाताजी, 28-8-73, जु.अ.2005

– आपका जन्म जो भी रहा हो, जिस देश में भी आप जन्में हो, आपकी जो भी संस्कृति हो, आप मानव हैं। मूल रूप से आप समान हैं। आप समान रूप से हँसते हैं, समान रूप से मुस्कराते हैं और समान रूप से रोते भी हैं।... हमें महसूस करना चाहिए कि हम जीवन के किसी एक समान सिद्धान्त में बँधे हुए हैं। आदिशक्ति का दिया हुआ समान सिद्धान्त जो हमें बाँधे हुए है वह है हमारे अंत: स्थित कुंडलिनी।... हमें सभी लोगों का, सभी मानवों का सम्मान करना चाहिए चाहे वे किसी राष्ट्र से हो,

किसी देश से सम्बन्धित हो और किसी रंग के हो क्योंकि उन सबमें कुंडलिनी विद्यमान है।

प.पू.श्रीमाताजी, 28-8-73, कबैला, चै.ल.1997 अंक 1-2

– हम न तो ईसाई हैं, ना मुसलमान हैं और न हिन्दू। हम इनमें से कुछ नहीं है, क्योंकि यह कहकर कि मैं सहजयोगी हूँ परन्तु ईसाई हूँ, आप स्वयं को तुच्छता में नहीं बाँध सकते। आपको यह तुच्छता छोड़नी होगी। आप पूर्णत: सहजयोगी हैं और किसी भी प्रकार की मूर्खतापूर्ण चीज़ से आपका कोई सम्बन्ध नहीं है।

प.पू.श्रीमाताजी, 28-8-73, लास एंजिल्स, मई जून 2002, पृ.9

– परमात्मा ने सारी सृष्टि सुंदर बनाई है... लेकिन आप ने तो इसको ये देश बना लिया उसको वो देश बना लिया और लड़ रहे हैं आपस में।... सहजयोग में ये चीज़ छूट जाती है... ये सब विचार ही नहीं आता है कि कौन बड़ा है, कौन छोटा, कौन कितनी पोज़ीशन में है, कुछ ख्याल ही नहीं आता। ये सब बाह्य की चीज़े हैं। सनातन नहीं है।... आपने सनातन को पा लिया है।... सामूहिकता में ही सहजयोग का आशीर्वाद है।

प.पू.श्रीमाताजी, 28-8-73, नई दिल्ली, सि.अ. 2005 पृ. 28-29

– अपनी देश की तो संस्कृति है कि भाई चारा होना चाहिए, आपसी मिलावा होना चाहिए। हरेक चीज़ में एक दूसरे की मदद करनी चाहिए यही तो अपनी संस्कृति है।

प.पू.श्रीमाताजी, 28-8-73, दिल्ली

– ''हमारा समाज विश्वस्तरीय है। हमारी पहचान किसी एक देश की नहीं होनी चाहिए। हमारे लोगों की अंतर्राष्ट्रीय पहचान होनी चाहिए... सहजयोग विश्वस्तरीय है पूर्णत: विश्वस्तरीय किसी एक देश या किसी व्यक्ति विशेष से इसे कुछ नहीं लेना देना... सर्वशक्तिमान परमात्मा ने

केवल एक विश्व बनाया है।''

प.पू.श्रीमाताजी, 18-9-2002, कबैला, मई जून 2003, पृ.5

– ''परमात्मा ने भिन्न-भिन्न देश नहीं बनाए। यहाँ तो वैचित्र्य है। बहुत प्रकार के लोग हैं, भिन्न प्रकार के स्थान हैं, इस वैचित्र्य को कलात्मकता के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। हमें ऐसे विचारों से भ्रमित और नष्ट नहीं होना चाहिए कि हम अमरीकन हैं, हम भारतीय हैं, हम ये हैं, हम वो हैं। सहजयोग में आकर आप देख सकते हैं कि आप सब सहजयोगी हैं, किसी देश विदेश के नहीं। यह कहने से मेरा अभिप्राय है कि यदि आप सभी राष्ट्रों का हित चाहते हैं तो कुछ कार्य करें सहजयोग का कार्य ताकि लोग भूमि आदि के लिए युद्ध करने के विचारों से मुक्त हो जाए, भूमि तो परमात्मा की है।''

प.पू.श्रीमाताजी, 5-9-99, कबैला, ज.फ.2000 पृ.46, कृष्णपूजा

– ''सारे बंधन त्यागने होगें और जानना होगा कि हम सब एक हैं। हम विश्वस्तरीय हैं। रंग प्रजाति और धर्म के कारण हम एक दूसरे से अलग नहीं है। ये बात हमें जाननी होगी कि हम एक हैं और इस एकता को, एकरूपता को केवल नारों और शोर-शराबों से स्थापित नहीं करना चाहिए। **ये एकरूपता क्या होनी चाहिए यह बात तो हृदय से महसूस की जानी चाहिए, ये बनावटी नहीं है। इसे वास्तविक होना होगा, वास्तविक एकरूपता और ये आपमें तभी आती है जब आप महसूस करते हैं कि आप विराट के अंग-प्रत्यंग हैं। धर्म आपको चेतना के इस बिन्दु तक ले आते हैं।''**

प.पू.श्रीमाताजी, 23-8-97, कबैला, न.दि.1997

2. धर्म चर– ''धर्मानुकूल आचारण करो।'' आचारः प्रथमो धर्माः'' सद्व्यवहार प्रथम धर्म है। यही धार्मिकता हमारा सहज स्वभाव है। हम भारतीय मानते हैं कि ''धर्मेण हीनः पशुभिः समानः'' अर्थात

जो मनुष्य धर्म से रहित है वह पशु के समान है-

- हमारा धर्म मानव धर्म है और मानव धर्म में हमारे अंदर दस गुण होना जरूरी है, यदि हममें ये गुण नहीं हैं तो हम मानव नहीं है, या तो हम जानवर हैं या हम शैतान हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, फरवरी 1981

- ये (भारतीय) धर्म में पले हुए लोग हैं। इनके अंदर धार्मिकता है। सदियों से धर्म हमारे अंदर बसा हुआ है।... पाप-पुण्य की जो कल्पना है वह सिर्फ भारतीयों को मिली हुई है और इसलिए आप लोग एक विशेष रूप के नागरिक हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 16-12-98, चै.ल.1999 अंक 3-4

- धर्म से हमारा मतलब कभी भी हिन्दू-मुसलमान से नहीं होता।... **कभी भी मैं बाह्य इस तरह के छोटे-मोटे घरौंदों में विश्वास नहीं करती, न ही मैं उन भ्रमों में विश्वास करती हूँ जो बिल्कुल ही मनुष्यों ने बनाएँ हैं। ये बिल्कुल ही बेकार के हैं। इन सब चीज़ों को तोड़-फोड़ कर ही अपना सहजयोग पनपा है।** धर्म का मतलब ये है कि हमारे अंदर जो sustenance power है। हमारे अंदर बसा हुआ जो Innate धर्म है, हमारे अंदर एक-एक अंग-प्रत्यंग में जो बनाया गया है, उसको जाग्रत करना चाहिए।... सबसे बड़ा धर्म ये है कि सर्व धर्म समान हैं। गाँधी जी ने कहा था कि सर्वधर्म समानत्व मानें।... **सब लोगों को एक ही तत्व सीखना चाहिए कि सबके अंदर एक ही आत्मा का वास है और जाति-पाँति आदि चीज़े ये जन्म से नहीं होती, ये कर्म से होती हैं। यही तत्व हिन्दू धर्म का है।**... लोग चाहे अपने को मुसलमान कहलाएँ, चाहे अपने को ईसाई कहलाएँ, एक ही शक्ति सबके अंदर बसती है।

प.पू.श्रीमाताजी, 16-12-98, दिल्ली, मई जून 2004 पृ.28

– हमारा धर्म सार्वभौमिक है। एक धर्म है। हम सभी देवी–देवताओं का सम्मान करते हैं, सम्मान ही नहीं करते उनकी पूजा करते हैं। ...धर्म तो व्यक्ति को प्रेम सिखाता है–परमात्मा से प्रेम, परस्पर प्रेम, धर्म किस प्रकार घृणा और हत्या सिखा सकता है? **...सहजयोग का कार्य परमात्मा के नाम पर लोगों को एक करना है, परमात्मा के नाम पर लोगों को परस्पर जोड़ना।**

प.पू.श्रीमाताजी, 21-4-2002, ईस्तम्बूल, न.दि.2002 पृ.24-25

– वास्तव में दो ही धर्म संसार में है– एक है धर्म और दूसरा अधर्म, तीसरा कोई धर्म है ही नहीं। एक है धर्म जिसकी धारणा अन्दर से होती है और दूसरा है अधर्म। ...जितने बड़े–बड़े गुरुजन हो गए वे धर्म के लिए लड़े और उस वक्त जो अधर्म में थे उनसे लड़ते रहे फिर उसका नाम मुसलमान कहिए, चाहे उसका नाम हिन्दू कहिए और चाहे उसका नाम क्रिश्चियन कहिए लेकिन उनमें जितने भी followers थे, अनुयायी थे उन लोगों में वह सत्यता नहीं थी, उन्होंने अपने छोट–छोटे group बना लिए और अधर्म के झगड़े होने लगे। **एक अधर्म दूसरे अधर्म से लड़ने लगा। धर्म में झगड़ा कोई नहीं होता, धर्म में कलह नहीं होता है, धर्म सब एक हैं, सबके अंदर एक है। सबमें एक ही बैठता है, उसमें कोई** argument **नहीं होता है।... धर्म को जानने के लिए वायब्रेशन्स चाहिए।**

प.पू.श्रीमाताजी, 30-3-75, बंबई, मार्च–अप्रेल 2005, पृ.37

– सभी धर्म किसी न किसी प्रकार की धर्मान्धता में विलय हो गए क्योंकि किसी को भी आत्मसाक्षात्कार प्राप्त न होने के कारण सभी ने अपने ढंग से धर्म की स्थापना कर ली।

प.पू.श्रीमाताजी, 31-5-92, गुडीकैम्प

– सहजयोग में हम किसी बेतुके धर्म से सम्बन्धित नहीं हैं, हम एक ही धर्म से संबंधित हैं– **''विश्व निर्मल धर्म''**। बाकी की सभी धर्मो की

मूर्खताओं को हमें त्याग देना चाहिए क्योंकि जैसे आप लोग देखते हैं कि सभी धार्मिक समूह एक दूसरे से लड़ रहे हैं, एक दूसरे को मार रहे हैं और इन्हें समाप्त करने में लगे हुए हैं।... जो लोग परमात्मा और धर्म के नाम पर क्रूर हैं वे किसी भी प्रकार से धार्मिक नहीं हैं। धर्म की यही विकृति है। हम यदि सहजयोग से जुड़े हैं तो हम सबको यह बात समझनी चाहिए।

..... मनुष्य का एक धर्म होता है-उस परमात्मा को पा लेना और जान लेना और जिस मनुष्य ने उसे पा लिया है उसका तो एक ही धर्म होता है कि उस पाई हुई चीज़ को पूरी तरह से आत्मसात करके पूरे संसार में प्रसारण करें।

प.पू.श्रीमाताजी, 30-3-75, मुंबई

- आपको किसी भी धर्म का तिरस्कार नहीं करना है और न ही किसी धर्म पर आक्रमण करना है, ऐसा करना बिल्कुल ग़लत होगा।... सहजयोग में लोगों को धर्मान्ध नहीं बनना चाहिए बहुत सावधान रहें।... (हम सारे रूढ़िवाद को समाप्त करेंगे)... कभी-कभी तो आप सहजयोग को भी रूढ़िवादी बनाने लगते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 10-5-92, कबैला, ज.फ.2007 पृ.19

- आप यदि किसी ऐसे कार्य में लगे रहते हैं जो आपके और आपके शान्तिमय जीवन के लिए अहितकर है तो आप अधार्मिक बन रहे हैं। यह बात अच्छी तरह समझ ली जानी चाहिए कि सहज धर्म यह है कि आप स्वतंत्र हैं- लालच, कामुकता तथा सभी प्रकार के प्रलोभनों से पूर्णत: स्वतंत्र आप इनमें ऊँचे हैं, कहीं ऊँचे।... अहितकर कार्य त्याग दें... यह सहज धर्म हैं, इसमें आप काम क्रोध लोभ मोह और अहंकार से छुटकारा पा लेते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 30-8-97, कबैला

3. हम भक्ति का आनंद लेते है। ''त्वदीयवस्तु गोविन्दं त्वदीयं समर्पये'' हे परमात्मा आपकी ही दी गई वस्तु अर्थात समस्त सांसारिक

एश्वर्य हम आपके चरणों में ही समर्पित करते हैं। इसी अटूट भक्ति में जीवन का आंनद है। हमारे मन में ईश्वरीय शक्ति के प्रति श्रद्धा के साथ-साथ भय भी है, यह भय की भावना हमें अधार्मिक कार्य करने से रोकती है-

- आपके अन्दर परमात्मा का भय होना चाहिए। परमात्मा का भय यदि आपके अंदर नहीं है... इस बात से यदि आप नहीं डरते कि कोई ग़लत कार्य यदि आपने किया तो परमात्मा का दंड भी है, वे दंडित करने वाले परमात्मा भी हैं और यदि हम दुष्कर्म करते हैं तो वे हमारे लिए विष से परिपूर्ण हैं।... उनसे कुछ भी छिपा नहीं है, आप स्वयं भी जानते हैं कि आप क्या ग़लत कर रहे हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 28-9-79, मुम्बई, सि.अ. 2004

- भक्ति विवेक से परिपूर्ण होनी चाहिए।... विवेक हीन भक्ति आपको सभी प्रकार की मूर्खताओं में फँसा सकती है, इसी के कारण बहुत से पथ और कुरीतियाँ पनपीं। अन्ध-भक्ति न तो कुछ देखती है, न जानती है, न समझती है।... कुण्डलिनी जाग्रति प्राप्त करके हम भक्ति को समझने की, भक्ति की शक्ति जानने की महान बुलंदी पर पहुँच गए हैं। भक्ति की सबसे बड़ी शक्ति है सुरक्षा। यह आपकी रक्षा करती है।

.....देवी आपकी त्रुटि सुधार भी करती हैं। ...सभी क्षेत्रों मे वे आपको सुधारती हैं। हम बीमारियों तथा अन्य प्रकार की समस्याओं में फँस जाते हैं, इसका कारण यह है कि हमें भक्ति नहीं है। भक्ति में आपके पास देवी माँ की शक्ति होती है। ...आपको चाहिए कि देवी से आप सुरक्षा की साधना करें क्योंकि सभी प्रकार के कष्टों, समस्याओं तथा सभी प्रकार की संभव मूर्खताओं से आपकी सुरक्षा करना ही देवी का महानतम गुण है।... न केवल शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक परन्तु आध्यात्मिक सुरक्षा भी जिसमें आप कोई ग़लत काम ही नहीं करते।

..... भारतीय सहजयोग को अपनाते हैं और उसकी गहनता में उतर जाते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि भक्ति क्या है, श्रद्धा क्या है? उनके अहं और दुर्गुण समाप्त हो जाते हैं। इस भक्ति का आनंद लिया जाना चाहिए।... भक्ति का आनंद आपमें होना चाहिए। भक्ति का यह आनंद जब आपमें प्रवाहित होने लगता है तो देवी स्वयं आपके रोम रोम में प्रवेश कर जाती हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 27-10-2002, लास एंजिल्स

4. ''मातृदेवो भव''-माँ देवी समान है। भारतीय संस्कृति में ''माँ'' शब्द बहुत ही सम्मानीय एवं स्नेहमय है। माँ ही इस धरती पर ईश्वरीय शक्ति का साक्षात स्वरूप है-

- माँ को शक्ति स्वरूपा मानते हैं और उसी शक्ति की हम पूजा करते हैं। सारे ग्रन्थों में सबसे पहले माँ का वर्णन है।

प.पू.श्रीमाताजी, 18-12-98, दिल्ली

- हम भारतीय शक्ति के पुजारी हैं... जो विष्णु को मानते है वो भी शक्ति के पुजारी हैं, जो शिव को मानते हैं वो भी शक्ति के पुजारी हैं क्योंकि माँ... माँ को तो कोई बाँट नहीं सकता। तो ये ऐसी बड़ी भारी संस्था माँ की अपने देश में है और इसीलिए हमें उनका आदर करना चाहिए।... इसीलिए हमारे देश में माँ को इतना मानते हैं लोग।... जो माँ की इज्ज़त नहीं करते वो देश नष्ट हो जाते हैं क्योंकि शक्ति ही खत्म हो गई।

प.पू.श्रीमाताजी, 5-4-2000, नोएडा, मार्च-अप्रैल 2001 पृ. 4

- श्री गणेश किसी अन्य देवता को नहीं पहचानते, सदाशिव को भी नहीं पहचानते, किसी अन्य को भी वे नहीं पहचानते। वे केवल अपनी माँ का सम्मान करते हैं अत: वे अपनी माँ के प्रति श्रद्धा एवं पूर्ण समर्पण की शक्ति हैं और यही कारण है कि वे सभी देवताओं में शक्तिशाली हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 5-4-2000, मई जून 2002

– जो लोग माँ के प्रति पूर्णत: समर्पित एवं श्रद्धावान हैं, किसी अन्य चीज़ के प्रति नहीं उनमें गणेश तत्त्व विकसित होता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 1-1-83, कोल्हापुर

– हमें अवश्य (माँ मेरी) की पूजा करनी चाहिए। आख़िरकार वे ईसामसीह की माँ हैं और माँ तो माँ है। क्या फर्क़ पड़ता है वो ईसाई हैं, हिन्दू हैं या मुसलमान, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अपने प्रेम के लिए उन्होंने विश्व के लिए ब्रह्माण्ड के लिए अपन बेटे को बलिदान होने की आज्ञा दी। क्या माँ थी!... इतना साहसिक, प्रेममय और सार्वभौमिक व्यक्तित्व।

प.पू.श्रीमाताजी, 21-4-2002, न.दि.2002

''सभी पाश्चात्य समाज लड़खड़ा रहे हैं, क्योंकि उनकी संस्कृति में ''माँ'' का कोई स्थान नहीं है। माँ का कार्य नियंत्रण करना नहीं है, उसका कार्य प्रेम करना और करुणा प्रदान करना है।''

प.पू.श्रीमाताजी, 2-1-2000

– माँ क्या है? माँ ने हमें अपने हृदय में स्थान दिया है। हमें माँ पर और माँ को हम पर पूर्ण अधिकार है क्योंकि वह हमें अगाध प्यार करती है। उसका प्रेम नितान्त नि:स्वार्थपूर्ण है। वह सदैव हमारी मंगलकामना करती है और उसके हृदय में हमारे लिए वात्सल्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। माँ में आस्था आपको तभी प्राप्त होगी जब आप ये समझ लेंगे कि आपकी वास्तविक शोभा अर्थात आपकी आत्मा उनमें ही वास करती है।

प.पू.श्रीमाताजी, 18-1-1980

– कर्क माँ के स्थान पर है अत: व्यक्ति जब माँ के प्रति पाप करने लगता है तो कर्क रोग (कैंसर) का आरंभ हो जाता है और मेरे अवतरण के पश्चात यह रोग बहुत ही प्रचलित हो गया है क्योंकि माँ के प्रति पाप आधुनिक युग का सबसे बड़ा पाप है। अत: व्यक्ति को इस बात का ज्ञान

होना चाहिए कि माँ के प्रति पाप करने से कर्क रोग तक हो सकता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 14-1-1983

5. ''मातृवत् परदारेषु''- पत्नी के सिवा हर नारी माता के समान है।

हम नारी का हर रूप में सम्मान करते हैं-

- भारतीय संस्कृति में यह कहा जाता है-''यत्र नार्या: पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' जहाँ स्त्री पूजयनीय है वहाँ पर देवता निवास करते हैं।... लक्ष्मी से लेकर हरेक देवी कोई भी आपको आशीर्वाद नहीं देगी, ग़र आप अपनी पत्नी का ख़्याल न करें और उसे सम्मान से न रखें।... ये अपना ऐसा देश है कि रानी पद्मावती के साथ 32000 औरतें होम कुण्ड में कूद पड़ी अपनी आबरू बचाने के लिए।... अब आप ही सोचिए कि ग़र आपकी माँ, बहन, बेटी की दुर्दशा हो रही हो तो ऐसे समाज से तो भगवान बचाए।

प.पू.श्रीमाताजी, 7-4-2000, नोएडा, ज.फ.2001 पृ.25-26

- जो औरत की इज्ज़त नहीं करते वे देश नष्ट हो जाते हैं।... स्त्री एक देवी है, उसकी इज्ज़त करना, उसको सँभालना और उसकी हर तरह से मदद करना, हरेक पुरूष का कर्तव्य है।... पुरूष के पास बुद्धि ज्यादा होती है पर हृदय तो स्त्री के पास होता है, इसलिए कोशिश ये करनी चाहिए कि स्त्री का मान रखा जाए।

प.पू.श्रीमाताजी, 5-4-2002, नोएडा, मार्च अप्रैल 2001

- भारतीय सभ्यता में हमेशा स्त्री को मान दिया गया है... राधा-कृष्ण, कहा जाता है। कृष्ण-राधा के बग़ैर कुछ भी नहीं।... हमारे यहाँ 'सीता-राम' कहा जाता है।... हरेक स्त्री एक गृहलक्ष्मी है। घर में उसका मान रखना, उनको इज्ज़त से रखना बहुत ज़रूरी है।... इस देश में इतनी बड़ी-बड़ी महान औरतें हो गई हैं जो पण्डितों के साथ बैठकर वाद-विवाद किया करती थीं।... औरत धरा जैसी है, उसके पास अनंत

शक्ति है।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-3-85, दिल्ली, जु.अ.2008

– कुण्डलिनी भी एक महिला है।

हमें समझना चाहिए कि महिलाएँ जाग जाएँ तो आपको कितनी शक्ति प्राप्त हो जाएगी। शक्ति जिस देश में भी मिली उसका माध्यम महिलाएँ थी। किसी भी महान पुरुष के जीवन को आप देखें चाहे वे महात्मा गाँधी हो या शास्त्री जी, वे अपनी पत्नियों से कितना प्रेम करते थे।.. भारत देश में महिलाओं ने ही देश की संस्कृति की रक्षा की है।... पुरुषों को चाहिए कि महिलाओं का मूल्य समझें उनके प्रेम को शक्ति को समझें।

प.पू.श्रीमाताजी, 17-4-2000, दिल्ली

– हमारी संस्कृति में भी कहा जाता है कि परस्त्री जो है वह माँ समान है, कोई भी परस्त्री माँ के समान है और परकन्या बेटी समान

प.पू.श्रीमाताजी, 25-3-85

6. ''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी''

जन्मभूमि माँ के समान है वह स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है हम अपनी जन्मभूमि को माँ स्वरूपा मानते हैं, देश–प्रेम और देशभक्ति हमारे रग रग में भरी है। हम भारतीयों ने अपने देश की सुरक्षा के लिए हँसते–हँसते अपने जीवन अर्पण कर दिए–

– पन्नाधाय जैसी औरतें, जिसने अपने बच्चे को त्याग दिया, युवराज को बचाने के लिए।... पद्मिनी जैसी स्त्री, इतनी लावण्यपूर्ण थी। उन सबको याद कीजिए जिन्होंने अपनी जान देश की आन में लुटा दी। उस संस्कृति को छोड़कर आप कभी भी सहजयोग में पनप नहीं सकते।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-3-85, दिल्ली, जु.अ.2008

– आप अपने देश से प्रेम करें।... हम सेनानी हैं, देश की स्वतंत्रता के लिए युद्ध करने वाले सिपाही। अब वह संघर्ष समाप्त हो गया है, पर अब हमें समझना है कि देश को दृढ़ करने का यही समय है।

प.पू.श्रीमाताजी, 17-4-2000, दिल्ली, मार्च अप्रैल 2001

– **वास्तव में यदि आपमें अपनी मातृभूमि के प्रति देश भक्ति है तो यही सारी समस्याओं का समाधान है।... आप यदि देशभक्त हैं तो भ्रष्ट नहीं हो सकते।**... आप यदि देशभक्ति, देशप्रेम अपने अन्दर विकसित कर लें तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप पूर्णतः ईमानदार बन जाएंगे।

..... आज हम सब भारतीय इस बात को स्मरण क्यों नहीं करते कि ये हमारी महान भूमि है। हमें यह समझना चाहिए कि यहाँ पर महान लोगों ने जन्म लिया। विश्व के किसी देश में इतने महान लोग कभी नहीं उत्पन्न हुए। उनकी महानता उनका देश धर्म है कि उन्होंने अपने देश को प्रेम किया और इस प्रकार श्रेष्ठता प्राप्त की।

..... प्रातः काल अपनी मातृभूमि की पूजा करें उसका चित्र आपके पास है, उसे देखें, उसे प्रणाम करें और स्मरण रखें कि आप उसके ऋणी हैं। भारत में जन्म लेना भी महान सम्मान है कि आपने इस देश में जन्म लिया, इसके लिए कृतज्ञ हों।... मेरा रोम-रोम देशभक्त है।... आप सब लोग शपथ लें कि आप अपने देश को प्रेम करेंगे और किसी भी प्रकार से इसे हानि पहुँचाने में आपकों खुशी न होगी। ऐसा करना यदि आप सीख लें तो भ्रष्टाचार रूपी इस भयावह राक्षस को समाप्त करने के लिए आवश्यक महान प्रकाश देने के लिए यह काफी होगा।

प.पू.श्रीमाताजी, १७-१२-२०००, दिल्ली – सर सी.पी. श्रीवास्तवजी की पुस्तक 'भ्रष्टाचार भारत का आन्तरिक शत्रु' के विमोचन के अवसर पर

– आपका देश आध्यात्मिकता का देश है, यह पूर्ण आत्मानन्द का देश है जिसमें केवल शांति का साम्राज्य है और जब आप ऐसे देश से प्रेम करते हैं तो किस प्रकार आपमें धन और सत्ता आदि हथियाने के मूर्खतापूर्ण विचार आते हैं?

प.पू.श्रीमाताजी, 21-3-2000, दिल्ली

– हम सब हिन्दुस्तानी हैं और इस भारतवर्ष में रहते हैं, इसी के अन्न जल से हम पले हुए हैं और इसी के सहारे हम जी रहे हैं और आगे भी इसी के सहारे जीना है। हमारे बच्चों और आने वाली पीढ़ी के लिए यह संदेश होना चाहिए कि भारत माता से प्यार करो, अपने देश के प्रति बहुत अपनापन होना चाहिए। ...ये भारत जो है ...ये हमारा देश है, इसके लिए हमें देशभक्ति रखनी चाहिए। जैसे ही आपके अंदर देशभक्ति आ जाएगी, आपको आश्चर्य होगा अनेक गुण आपके अंदर भी आ जाएगें। सबसे बड़ा गुण तो ये आएगा कि आपके अंदर जो बेकार की महत्वकांक्षाएँ हैं और जो आपके अंदर बेकार की इच्छाएँ हैं, सब खत्म हो जाएंगी। आपको लगेगा कि इस देश की उन्नति से ही हमारी भी उन्नति हो जाएगी।... अब आप सहजयोग में आ गए हैं, आपका कर्तव्य है कि आप पहले देखें कि भारतवर्ष में क्या ख़राबी है, क्या बुराइयाँ आ गई हैं, उनको हटाना चाहिए। ...हमें अपने देशवासियों और देश के लिए सब कुछ करना चाहिए जो हम कर सकते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, चैतन्य लहरी 1999, अंक 5&6

– हमारे देश में पहले ये हमारी ''भारत माता'' पूरी सम्पूर्ण थी, इसमें अनेक तरह के देश समाए हुए थे, आप जानते हैं इसमें सभी था– सीलोन था, पाकिस्तान, बंगलादेश, नेपाल आदि अनेक देश समाए हुए थे। ये हमारी माँ है– ''भारत माता'' पर इसको लोगों ने काट–पीट दिया।... विभाजन करने की एक प्रवृत्ति मनुष्य में है।... अभी भी अपने यहाँ चला

हुआ है विभाजन का विचार, जैसे हमारे यहाँ कहीं विदर्भ है तो कहीं झारखंड है। ये बनाने से क्या मिलेगा? किसको क्या मिला है विभाजन से?सहजयोग बिल्कुल इसके विरोध में है कि हम किसी चीज़ का विभाजन करें। हमको तो सबको जोड़ना है। सहजयोग समन्वय पर चलता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 21-3-97, दिल्ली, अंक 3-4 1997 पृ.5-6

7. "तुम सहृदयी बनो, पवित्र मन वाले बनो और प्राणिमात्र से द्वेषरहित होकर रहो।

एक दूसरे के साथ वैसा ही प्रेम का व्यवहार करो जैसा गाय अपने नवजात बछड़े के साथ करती है। - अथर्ववेद

हमारे देश में पारस्परिक सम्बन्ध बहुत ही पवित्र एवं प्रेममय होते हैं। हम संयुक्त कुटुम्ब प्रणाली को बहुत महत्व देते हैं-

- अपने कुटुम्ब जो हैं, बहुत महत्वपूर्ण चीज़ हैं। एक-एक कुटुम्ब से ही समाज बनता है और समाज से ही देश बनता है।... अपना देश ही ऐसा है जहाँ अब भी कुटुम्ब व्यवस्था चल रही है, बाकी कहीं नहीं है।

प.पू.श्रीमाताजी, 7-4-2000, नोयडा ज.फ.2001

- हमारे व्यक्तित्व के निर्माण में परिवार का अपना महत्त्व एवं प्रभाव है।

प.पू.श्रीमाताजी अगस्त 1995 कबैला

- परिवार का ज्ञान व्यक्ति के लिए आवश्यक है ...सर्वप्रथम पारिवारिक जीवन के महत्त्व को साकार करना होगा।... भारतीय परिवारों में लोग वास्तव में एक दूसरे को प्रेम करते हैं। ...कारण ये है कि हमारे यहाँ संयुक्त परिवार प्रणाली होती थी। संयुक्त परिवार प्रणाली बिल्कुल सामूहिकता जैसी है, कोई नहीं जानता था कि उसका सगा भाई या सौतेला भाई है और चचेरा भाई कौन है, कुछ नहीं, सभी लोग संबंधियों के रूप में साथ-साथ रहा करते थे। आर्थिक कारणों से तथा ऐसी ही अन्य चीज़ों के

कारण संयुक्त परिवार टूट गए।

प.पू.श्रीमाताजी, 6-6-1993 कबैला, पृ.98, अंक V 1993

- मूलतः परिवार एक सूत्र बद्ध होने चाहिए। यह सामूहिकता सर्वप्रथम परिवार में आनी आवश्यक है।... वास्तव में प्रेम तथा करुणा ही परिवार का आधार हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 2-7-2000, मई-जून 2001, पृ.8

- भारत में यदि आप देखें तो यहाँ सम्बन्धों को बहुत अधिक महत्त्व दिया जाता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 18-8-2002, अमेरिका

- आपकी अबोधिता द्वारा सभी सम्बन्ध पवित्र होने चाहिए जैसे आपकी बहन हैं, माँ हैं, पिता हैं। आपके सभी सम्बन्ध इतने सुन्दर और पवित्र हैं क्योंकि आपके रिश्ते अबोधिता के हैं। आप अपने पिता से, बेटी से, माँ से अबोधिता वश प्रेम करते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 2-7-2000, कबैला, ज.फ.2001

8. हमारे हृदय में बड़े-बुजुर्गों के प्रति आदर भाव हैं, हम उनकी सेवा करके प्रसन्न होते हैं-

'वृद्धोपसेविनः वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्'' अर्थात वृद्धों की सदैव सेवा करने वालों की आयु, विद्या, यश और बल बढ़ते है।

मनुस्मृति-2/121

- भारत में बुजुर्गों की चरण-सेवा करने की रीति है और बड़े उसके बदले में आशीर्वाद देते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, चैतन्य लहरी 2004 सि.आ.

- बड़ों का मान रखना अपने देश की संस्कृति का एक लक्षण है।

प.पू.श्रीमाताजी, 17-2-85, दिल्ली

– मान–पान किसका करना है, यह सहजयोगियों को आना चाहिए। आर्टिस्ट लोग भी आप देखिए, यह ट्रेडीशन है कि पैर पर हमेशा शाल डाल कर बजायेंगे अगर असली आर्टिस्ट हों तो, क्योंकि हो सकता है कि श्रोतागण में कोई बैठे हो देवी–देवता और मेरे पैर न दिखाई दें।

..... अब आप देखिए आज पूरे लेक्चर में मर्यादा बनी रही कि हमारे जेठ हमारे बड़े भाई बैठे हुए हैं तो उनके आगे कहाँ तक हम बोल सकते हैं। अब तो हम आदिशक्ति हैं, कौन हमारे लिए जेठ और कौन बड़े भाई, लेकिन जब इस रिश्ते में बैठे हुए हैं तो उसका मान पान पूरी तरह से रखना चाहिए।... मान पान की बात है... हर रिश्ते का मान रखना चाहिए। आप कुछ भी हो जाओ, सहजयोगी भी हो गए तो भी आप मान पान को लेकर चलो, ये नहीं कि उसको आप तोड़ दें और इस तरह से जब आप करेंगे तो धीरे–धीरे आपकी समझ में आ जाएगा कि इसमें बड़ा ही माधुर्य है और बहुत ही मीठी चीज़े हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 29-3-83, न.दि. पृ. 31&32

9. ''अतिथिदेवो भव''– अतिथि देव हैं।

हम अतिथि को भगवान मानकर उनकी सच्चे मन से सेवा–सत्कार करते हैं–

''भारतीय लोग अत्यन्त प्रेममय है। ...अतिथि की वे सेवा करते हैं। यह प्रेमभाव विश्व में अन्यत्र कहीं नहीं है, कहीं भी नहीं। अतिथि की सेवा में प्राय: लोगों का विश्वास ही नहीं है। अन्य देशों में कहीं भी आप जायें लोगों का नज़रिया अत्यन्त लेखे–जोख़े वाला होता है कि इससे क्या लाभ होगा? भारत में यदि आप किसी निर्धन के घर भी जाएँगे तो वो आपसे बैठने के लिए कहेगा, दूध आदि पेय आपको पेश करेगा। उनके हृदय बहुत विशाल हैं। ...पारंपरिक लोग, भारतीय संस्कृति में विश्वास करने वाले लोग अत्यंत प्रेममय हैं।

..... विदेशी या विदेशों से आया हुआ व्यक्ति हमारे लिए सम्मानजनक होता है, ... विदेशों में किसी अन्य देश से आए हुए व्यक्ति को बहुत तुच्छ माना जाता है ... यहाँ भारत में लोग आपकी सराहना करेंगे, आपको समझेंगे और आपको प्रेम करेंगे।

प.पू.श्रीमाताजी, 24-3-2002, दिल्ली

– अपने यहाँ कोई आदमी, कोई भी मेहमान घर में आए, उसके लिए हम लोगों को जान भी दे देनी चाहिए। इसके अनेक उदाहरण हैं। जो हमने खोया हुआ है पूरा का पूरा सहजयोग में लाना है।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-3-85, दिल्ली, जु.अ.2008

10. ''महाजनो येन गतः सो पन्थः'' अर्थात महान संतपुरूष जिस रास्ते से जाते हैं वही पथ सर्वश्रेष्ठ व अनुकरणीय है। हम भारतीय अपने पथ प्रदर्शक गुरुओं संत महात्माओं को पूरी श्रद्धा सम्मान देते हैं–

– इस भारतवर्ष की एक महिमा है, बहुत बड़ी महिमा है। कोई कितना भी बड़ा शास्त्री हो, पंडित हो, वेद–व्यास हो कुछ हो लोग उसके सामने हाथ नहीं जोड़ते पर अगर कोई संतफकीर हो, हाथ में झोला लिए हो और संत हो, माना हुआ संत तो लोग उसके सामने झुक जाते हैं फिर वो राजा हो चाहे कुछ। यह अपने देश की बड़ी महिमा है, ऐसे आपको कहीं भी नहीं दिखाई देगा, यह इसी भारत देश में होता है क्योंकि इस देश का अपना पुण्य है, यहाँ बड़े–बड़े पुण्यात्मा, धर्मात्मा, संत–साधु हुए हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 15-3-84, नई–दिल्ली, मार्च अप्रैल 2007

– हमारे देश में महान राजा हुए क्योंकि हमारी संस्कृति महान है और संत लोग राजाओं को चलाया करते थे। शिवा जी के गुरु महान संत थे, राजा जनक भी एक गुरु थे। हर सम्राट का एक गुरु था, यहाँ तक कि श्री

राम के भी एक गुरु थे पर वे सच्चे गुरु थे जो संतो का जीवन यापन करते थे, अन्दर बाहर से सच्चे थे। लोग भी आध्यात्मिक पृष्ठभूमि वाले तथा आध्यात्मिक लोगों का सम्मान करने वाले राजाओं को स्वीकार करते थे।

प.पू.श्रीमाताजी, 4-12-94, दिल्ली, 1995 अंक 8-9, पृ.7

– अपनी संस्कृति में भी पैसे वालों की महत्ता नहीं गाई, हमेशा उसी मनुष्य की गाई गई जो धर्मात्मा है... आप चाहें कितनी भी फालतू की चीज़े करें, आपकी तभी महत्ता गाई जायेगी जब आप धर्मात्मा हों।

प.पू.श्रीमाताजी, 30-1-78, न.दि.2005, पृ.22

अध्याय 5

भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्य

(धर्मानुकूल कर्म ही नीति हैं। जो नियम मनुष्य को सन्मार्ग पर आगे ले जाते हैं उन्हें नीति कहा जाता है। हमारे वैदिक ग्रन्थों में सूक्तियों के रूप में नैतिक मूल्यों का स्पष्ट उल्लेख है। हर सहजी को नीतिवान होना है।)

- हमारी सारी नैतिकता का आधार पावित्र्य है। हमें अत्यंत पवित्र होना चाहिए।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-9-99, कबैला

- इस देश में पवित्रता का अर्थ लोगों को मालूम है। लोग ग़लत काम करते हैं लेकिन जानते हैं कि यह ग़लत है।

प.पू.श्रीमाताजी, 15-3-84

- कम से कम ऐसा हिन्दुस्तानी मुझे आज तक नहीं मिला जो अपवित्रता को अच्छी समझता हो।

प.पू.श्रीमाताजी, चैतन्य लहरी, ज.फ., 2005, पृ.32

- अपने यहाँ (भारत में) पवित्रता समझाने की बात नहीं है... इग्लैंड में अमेरिका में समझाना पड़ता है परंतु आप अब भी सही हैं विशेषत: इस भारतभूमि पर परमेश्वर की कृपा से, अष्ट विनायक की कृपा से या आपकी पूर्व पुण्यों से, आपके गुरुसंतों की हुई सेवा के कारण पृथ्वी पर महाराष्ट्र एक ऐसी भूमि है जहाँ से पवित्रता अभी तक नहीं हिली है।

प.पू.श्रीमाताजी 22-9-79, सि.अक्टू.2008 पृ.21

- अनैतिकता को फैलाना जिनका काम है वो भारतीय नहीं हो सकते क्योंकि नीति के सिवाय आप उठ नहीं सकते। नीति के सहारे ही आप उस

परम को पा सकते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 18-12-98

– सबसे बड़ी चीज़ अपनी संस्कृति की देन है कि हम लोगों को नैतिक होना चाहिए। नैतिकता के अनेक नियम हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 18-12-98, जु.अगस्त 1999

– अपना देश **शांति प्रिय** देश है। इस देश ने किसी भी देश पे अगाड़ी नहीं करी, किसी देश को लूटा नहीं, किसी भी देश की ज़मीन अपने हाथ नहीं ली। ये शांति कहां से आई? **...ये इस धरती की विशेषता है** जिस धरती पर आप बैठे हैं उसी धरती की विशेषता है कि हम लोग शांति प्रिय लोग हैं, ये नियंत्रण हमारे ऊपर अपने आप आया हुआ है, स्वयं आया है तो अंदर की शांति प्रस्थपित होती है।

प.पू.श्रीमाताजी, 18-12-98, दिल्ली

– जीवन के हर व्यवहार में हमारा जीवन अत्यंत **सौष्ठव पूर्ण** होना चाहिए। सौष्ठव का मतलब होता है– 'सु' से आता है जिसमें शुभदायी चीज़ हो, मन पवित्रता से भर जाए।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-3-85, दिल्ली, जु.अ. 2008

हमारे वेदों में वर्णित कुछ नैतिक सूक्तियाँ

1. ''आत्मवत् सर्वभूतेषु आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्''

[सारे प्राणियों को अपने समान समझो, जो अपने को बुरा लगे वैसा आचरण दूसरे के साथ न करो]

– सबसे पहले जानना चाहिए कि हम उस विराट के अंग प्रत्यंग हैं, हम अलग नहीं हैं –

प.पू.श्रीमाताजी, 10-2-81, दिल्ली

– हमें समझना है कि जाति, रंग और भिन्न धर्मों के आधार पर हमें भेद-भाव आदि से ऊपर उठ जाना चाहिए... मानव होने के नाते हमें इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि हम सब एक ही प्रकार से हँसते हैं, एक ही प्रकार से मुस्कराते हैं सबका एक ही तरीका होता है... केवल एक ही शब्द होना चाहिए कि मैं सबसे प्रेम करता हूँ।

प.पू.श्रीमाताजी, 29-7-80, लंदन, मार्च-अप्रैल, 2004, पृ.14

– आपके पारस्परिक संबंध आपकी गरिमा आत्मसम्मान और अन्य लोगों के सम्मान बनाए रखते हुए पनपने चाहिए। जिस प्रकार आप अपने प्रति व्यवहार करते हैं वैसे ही अन्य लोगों से करें।

प.पू.श्रीमाताजी, 17-9-86, हेग, हालैंड

2. 'सं गच्छध्वं, संवद्ध्वं, अन्योऽन्यमपि हर्यत'

(मिलकर चलो, मिलकर बोलो, परस्पर एक दूसरे से प्रेम करो)

– सहजयोग की ऐसी स्थिति है जैसे कि मैं एक कहानी बताती हूँ कि जैसे बहुत सी चिड़ियां थीं और उनको एक जाल में फँसा दिया गया तो चिड़ियों ने आपस में सलाह मशविरा किया अगर हम लोग सब मिल कर इस जाल को उठा लें तो जाल हमारे साथ उठ जायेगा फिर जाकर इसको तुड़वा देंगे, बाद में फड़वा देंगे किसी तरह से निकाल देंगे तो कहा हाँ ठीक है। सब मिलकर एक दो तीन कहकर उठे और सबके सब उठे और जाल को तोड़ दिया उन्होंने। वही चीज़ सहजयोग है।

प.पू.श्रीमाताजी, 18-2-81

– मेरी तो साधारण सी इच्छा है कि सभी लोग प्रेम करें... हर स्थिति को हर चीज़ को प्रेम से देखें और आप आश्चर्यचकित होंगे कि अब रोब न जमाना, नियंत्रण न करना, घृणा न करना, बुरी बात न बोलना आपके

लिए कितना सुगम हो जायेगा। यह अत्यंत सुधारक चीज़ है, प्रेम अत्यंत सुधारक है अत्यंत आनन्ददायी।

प.पू.श्रीमाताजी, 23-3-2000, दिल्ली

3. ''सत्यंवद, प्रियंवद, धर्मंचर, धीतिमश्याः श्रद्धस्मै धत्त''

(सत्य बोलो, प्रिय बोलो, धर्मानुकूल आचरण करो धैर्य रखो, श्रद्धा धारण करो)

– सहजयोगी को सच्चा होना है... कसम लें न तो हम झुठ बोलेंगे न तो हम झूठों की मदद करेंगे... मैं चाहती हूँ आप सत्य पर खड़े हो

प.पू.श्रीमाताजी, 10-11-2007

– अपनी जीभ जो है एक मधुर स्वरों में मधुर शब्दों में बाँधनी चाहिए

प.पू.श्रीमाताजी, 17-2-85] दिल्ली

– अपने मन की बात कहने के लिए अश्लील शब्दों या गंदे शब्दों का उपयोग आवश्यक नहीं है इससे आपकी जिह्वा ख़राब होती है और जिह्वा से अबोधिता चली जाती है। आपकी जिह्वा से यदि अबोधिता बिल्कुल चली गई तो आपकी कही गई बात कभी सत्य न होगी वह कभी सत्य न होगी।

प.पू.श्रीमाताजी, 16-9-2000, कबैला, जन.फर. 2001

– जो लोग विनम्र नहीं हैं उन्हें शुद्ध विद्या नहीं प्राप्त हो सकती। जो अहंकारी हैं अन्य लोगों से कोमलता, मधुरता एवं सुन्दरतापूर्वक आचरण नहीं करते उन्हें श्री महादेव का अशीर्वाद प्राप्त नहीं हो सकता। जीवन में वो कोई उपलब्धि प्राप्त नहीं कर सकते।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-2-2001, पुणे

– श्रद्धा आत्मा का नैसर्गिक प्रकाश है... आत्मा के ध्यान धारणा के अतिरिक्त किसी भी अन्य विधि से यह विकसित नहीं हो सकती... श्रद्धा से एक प्रकार के भाई चारे का भी उदभव होता है।... जब तक आपमें श्रद्धा नहीं है आपका उत्थान नहीं हो सकता... श्रद्धा एक प्रकार का प्रेम है।

प.पू.श्रीमाताजी, 23-7-2000, कबैला, न.दि.2000, पृ.12

4. ''मा क्रुधः मा गृधः मा निन्दत, मा रिषध्यत् मा की ब्रह्मद्विषं वनः''

(क्रोध मत करो, लालच मत करो, परनिंदा मत करो, हिंसा मत करो ईश्वर विरोधियों का साथ मत करो)

क्रोध बहुत बड़ा अवगुण है। श्री कृष्ण ने कहा है कि क्रोध ही सभी बुराइयों को जन्म देता है... आपको क्रोधित नहीं होना, किसी पर नहीं चिल्लाना और न ही किसी को पीटना है।

प.पू.श्रीमाताजी

– क्रोध आने का अभिप्राय ये है कि आपके अंदर अशांति है और दूसरे व्यक्ति पर अनावश्यक आक्रमण करने के लिए आप क्रोधित होते हैं। मौन रहकर भी आप बहुत प्रभावशाली हो सकते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 19-3-99

– लालच ही समस्या है मानव के अंदर यह आंतरिक दोष है। वह लालची हो जाता है क्योंकि वह धर्मच्युत हो गया है। वह सोचता है कि वस्तुओं से उसे सुख प्राप्त हो सकता है। वस्तुओं से उसे सुख प्राप्त नहीं हो सकता फिर भी वह चीज़ें खरीदता जाता है और इकट्ठी करता जाता है... तो लालच से मुक्ति पाने का उपाय क्या है? प्रयत्न द्वारा दूसरों को देकर उसका आनंद लेना। किसी अन्य को कुछ दें अपनी चीज़े उसके

साथ बाँटे और फिर देने के आनंद का अनुभव करें।

प.पू.श्रीमाताजी, 4-10-1997, कबैला, इटली

– यदि हम सोचते हैं... दूसरो को मारना हमारा अधिकार है... तो ये मूर्खता पूर्ण है।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-4-99, टर्की

– लोगों से व्यवहार करते हुए बहुत सावधान रहें... किसी भी प्रकार से न तो उनकी आलोचना करें और न ही उन्हें नीचा दिखाने का प्रत्यत्न करे... आपके अन्दर यदि दूसरों से ऊँचा होने की भावना आ जाती है तो आपका पतन आरंभ हो जाता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 15-10-79, लंदन, जु.अग. 2000

5. मान्तुस्थुर्नो अरातयः विश्वदुरिता तरेम् स्वस्तिपंथामनुचरेम्

हमारे अन्दर कंजूसी न हो, हम सब बुराइयों से पार हों, हम कल्याण के मार्ग पर चलें

– सोचना चाहिए कि हमारे समाज में जो भी कार्य करने पड़ते हैं उसके लिए पैसा चाहिए (तो आपको) अपनी भी कुछ लक्ष्मी खर्चनी चाहिए सबको धर्म से कहना चाहिए माँ हम लोग सब अपने ही मन से देना चाहिए... लोग खाने का पैसा भी देने को तैयार नहीं... ऐसे लोग हमें नहीं चाहिए। मुफ्तख़ोर लोग सहजयोग में चाहिए नहीं

प.पू.श्रीमाताजी, 30-9-1979, मुंबई, ज.फ.2008

– कल्याण माने हर तरह से साफल्य, हर तरह से प्लावित होना, हर तरह से अंलकृत होना।... यह वही कल्याण है जिसे हम आत्मसाक्षात्कार कहते हैं, बग़ैर आत्मसाक्षात्कार के कल्याण नहीं हो सकता।

..... कल्याण मार्ग में सबसे बड़ी उपलब्धि है शांति, मानसिक शांति शारीरिक शान्ति और सबसे बढ़कर है सांसारिक शांति।

प.पू.श्रीमाताजी, 15-2-2004, पुणे

– गृहस्थी, पारिवारिक कार्य या दिनचर्या से दैवत्व के विशेष गुणों की अभिव्यक्ति होनी चाहिए जैसे सत्य, अहिंसा, दिव्यप्रेम... अपनी पवित्रता, भद्रता, उदारता... ईमानदारी, धर्मपरायणता, मध्य में संतुलन... नम्रता, माधुर्य, क्षमा, सम्पूर्णता, प्रतिद्वंद्विता विहीनता, आध्यात्मिक सुख में संतोष, पहनावे, भाषा सहन शक्ति तथा व्यक्तित्व में गरिमा शीलता।

प.पू.श्रीमाताजी, सहजयोग पुस्तक से

– हर चीज़ में हर रहन सहन में बातचीत के ढंग में हमें पहले भारतीय होना चाहिए। जब तक हम भारतीय नहीं है तब तक यह सहजयोग आपमें बैठने वाला नहीं... क्योंकि जो परदेशी हैं वो हर समय ये कोशिश करते है कि हम भारतीय लिबास में कैसे रहें?भारतीय तरीक़े से कैसे उठे, बैठें, बोलें। हर चीज़ वो देखते रहते हैं और सीखते रहते है कोशिश करते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-3-85, दिल्ली, जु.अ. २००८

अध्याय 6

भारतीय संस्कृति में संस्कारों के विधान

''संस्कारोहि नाम संस्कारस्य गुणाधानेन वा स्याद् दोषापनयेन च''
श्री शंकराचार्य ब्रह्मसूत्र, भाष्य 1-1-4

अर्थात किसी व्यक्ति के गुणों की वृद्धि करने अथवा दोषों को दूर करने के लिए जो कार्य किया जाता है, वह संस्कार है।

भारतीय संस्कृति मानती है कि मनुष्य अपने पूर्व जन्मों के संचित कर्मों और उत्तराधिकार में मिली पाशविक प्रवृत्तियों के साथ जन्म लेता है अत: सद्चरित्र बनने के लिए उसका परिष्कार करने की आवश्यकता है। हमारे शास्त्रों में प्रमुख सोलह संस्कारों का विधान है।

1. गर्भाधान संस्कार - पति-पत्नी के परस्पर पूर्ण मिलन से पूर्व हवनदि एवं प्रार्थनाओं का विधान है।

2. पुंसवन संस्कार - प्रथम तीन माह में सुंदर, स्वस्थ एवं गुणवान संतान जो ''पुम्'' नामक नरक से रक्षा करे अर्थात पुत्र हेतु।

3. सीमांतोनयन संस्कार - गर्भ के चौथे, छठे या आठवें मास में गर्भ के स्थायित्व एवं बुद्धि परिमार्जन हेतु।

4. जात-कर्म - जन्म के बाद पिता अपने नवजात संतान की जिह्वा पर सोने की सलाई में घी और शहद लगाकर ऊँ लिखता है और कानों में ''वेदोऽसि इति'' कहता है।

5. नाम-करण - जन्म के दसवें दिन हवन-पूजा के साथ नवजात शिशु का नामकरण किया जाता है।

6. निष्क्रमण - शिशु को प्रथम बार घर से निकालना, पंचमहाभूत दर्शन हेतु।

7. अन्नप्राशन - छः माह पर शिशु को प्रथम बार अन्न (खीर) खिलाते हैं।

8. मुंडन - प्रथम वर्ष के अंत या तीसरे वर्ष की समाप्ति पर गर्भ के बालों को उतार कर देवस्थान में अर्पित किए जाते हैं। इससे कुसंस्कारों का शमन व दीर्घायु के साथ-साथ दाँत व काले घने बाल निकलने में सहायता होती है।

9. कर्ण-भेद - छः से सोलह माह या 3 से 5 वर्ष या कुल परम्परानुसार आभूषण धारण या तेज प्राप्ति हेतु।

10. विद्यारम्भ - पाँच वर्ष की आयु में माँ सरस्वती से विद्या बुद्धि व ज्ञान प्रदान करने की प्रार्थना के साथ।

11. यज्ञोपवीत - पूर्व जन्म के बुरे कर्मों का शमन व इस जन्म में नैतिकता, मानवता एवं पुण्य कर्तव्यों को अपने कंधो पर उत्तरदायित्व स्वरूप अनुभव करने एवं यज्ञ करने का अधिकार प्राप्त करने हेतु।

12. समावर्तन - साधारण तथा पच्चीस वर्ष की आयु में विद्याध्ययन पूर्ण करने एवं विवाह से पूर्व इन्द्रिय निग्रह, दान, दया, धर्म और मानव कल्याण की अपरम्पारिक शिक्षा करने हेतु। गुरू-दीक्षा और गुरु दक्षिणा का विधान है।

13. विवाह संस्कार - दो शरीर, दो मन, दो बुद्धि, दो हृदय, दो प्राण व दो आत्माओं के समन्वय हेतु एवं पितृऋण उतारने हेतु।

14. वानप्रस्थ - परिवार एवं समाज को अपने अनुभवों एवं ज्ञान का निःस्वार्थ प्रसारण तथा आध्यात्म की ओर अग्रसरण।

15. सन्यास - परिवार व समाज से विरक्त होकर मुक्ति हेतु भगवत सेवा में पूर्णतया लीन।

16. अन्त्येष्टि - पंचतत्व का शरीर पंचतत्व में विलीन करने हेतु।

संस्कार प्रक्रिया में स्थान की पवित्रता, स्वजनों का साथ, धर्म भावना, हर्षोल्लास, देवताओं का आवाहन व देव अनुकम्पा तथा भावपूर्ण शपथ ग्रहण, मनुष्य को चिरस्थाई विशेष मानसिक स्थिति प्रदान करती है।

संकलित भारतीय संस्कृति अंक कल्याण

हमारे भारत देश में सभी संस्कार वैदिक मंत्रों के साथ अग्निदेव की साक्षी में समस्त समाज एवं परिवार के समक्ष उनके आशीर्वाद सहित सम्पन्न होते है।

(पू.श्रीमाताजी ने विवाह संस्कार के विषय में बहुत विस्तार से चर्चा की है। ''सहजयोग'' में परम-पूज्या माताजी ने अपने सहजयोगी बच्चों के आपस में अन्तर्राष्ट्रीय विवाह सम्पन्न करवा कर स्वयं ही उन्हें अनन्त आशीर्वाद दिया है।)

हमारी संस्कृति में विवाह बहुत ही महत्वपूर्ण संस्कार है, स्त्री-पुरुष के बीच यह एक पवित्र बंधन होता है।

- सहजयोग में विवाह बहुत शुभ है क्योंकि विवाह को परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त होता है। **...यह ब्रह्मएक्य विवाह है, जिस स्थिति में व्यक्ति आत्मा से एकरूपता महसूस करता है, सर्वव्यापी शक्ति से तादात्म्य होता है।** यह समझने का प्रयत्न करें कि विवाह संतों के मध्य हो रहे हैं, समान्य लोगों के बीच नहीं। आपस में आन्तरिक गुणों का सम्मान करें।

प.पू.श्रीमाताजी, 12-2-84, बोर्डी, ज.फ. 2004 पृ.15

- अब आपका सहजयोग में विवाह हो गया है इसलिए आपको चाहिए कि परस्पर प्रेम करें, एक दूसरे को समय दें, मधुर व्यवहार करें तथा एक दूसरे के प्रति विचारवान हों।

..... आप महसूस करें कि आप आत्मा हैं आपके पति भी आत्मा हैं, यदि आप पति हैं तो जान लें कि आपकी पत्नी भी आत्मा हैं। आप दोनों क्योंकि संत हैं, सहजयोगी हैं, अत: पारस्परिक सम्मान होना आवश्यक है।

..... विवाह में किसी तरह की चालाकी करने का प्रयत्न न करें, कोई अटपटा कार्य न करें जिसके कारण आप अपने विवाह का आनन्द न उठा पाएँ। पहले दिन से ही यह बात समझने का प्रयत्न करें कि आपको अपने **जीवन साथी के प्रति अत्यन्त करुणामय होना होगा, अत्यन्त सम्मानमय और प्रेममय।** यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बात है जिसे लोग न तो समझते हैं और न स्वीकारते हैं। वास्तविक आनन्द (वैवाहिक जीवन का) यदि आप प्राप्त करना चाहते हैं तो अपने अन्दर निश्छल प्रेम बनाए रखें और जीवन का आनन्द लें।

..... मेरे विचार से विवाह को क़ामयाब बनाने का उत्तरदायित्व पुरुषों पर कहीं अधिक है। **...विवाह आपकी ज़िम्मेदारी है। ...आपकी पत्नी एक अन्य परिवार, अन्य देश,** अन्य वातावरण से आ रही है, **अत: उसे चीज़ों को समझने दें, तथा सामंजस्य स्थापित करने दें। उसमें दोष न खोजें। अत्यन्त सुख और प्रसन्नता उसे प्रदान करें।**

..... मैं आपसे आशा करती हूँ कि आप अच्छे पति बनेंगे और अपनी पत्नियों को प्रेम, स्नेह और दुलार देंगे।

..... मैंने पाया है कि कभी-कभी पुरुष उनपर अपना अधिकार मान लेते हैं, ऐसा नहीं होना चाहिए। प्रेम एवं स्नेह से जो कुछ भी वे करती हैं उसकी सराहना होनी चाहिए। उसकी सराहना करने से ही आप उसके प्रति अपने प्रेम की अभिव्यक्ति कर सकते हैं।

..... विवाह को सफल बनाने के लिए महिलाओं की भी ज़िम्मेदारी बहुत अधिक है। महिला ने ही विवाह को सफल बनाना है। **...सूझ-बूझ**

महिलाओं की ज़िम्मेदारी है, उन्हे अपने पति को, पारिवारिक जीवन के साथ जुड़ी सभी-चीज़ों को समझना होगा। महिलाओं में सूझ-बूझ की भावना ही अच्छे परिवारों का सृजन करती है।

..... देखो। यूं तो सामान्य विवाह में पुरुष को परिवार का मुखिया माना जाता है, यह ठीक है **...परन्तु आप हृदय बनें, सिर की अपेक्षा हृदय अधिक महत्त्वपूर्ण है। संभवतः हम महसूस नहीं कर पाते कि हृदय किस प्रकार महत्त्वपूर्ण है, मस्तिष्क यदि रुक जाये तो भी हृदय चलता रह सकता है, हृदय के चलते हुए जीवित रह सकते हैं परन्तु हृदय के रुकते ही मस्तिष्क रुक जाता है, अतः एक महिला के रूप में आप हृदय हैं और पुरुष परिवार का मुखिया (Head) है, उसे स्वयं को मुखिया समझने दो।** यह केवल एक भावना है, केवल एक भावना। मस्तिष्क सदैव सोचता है कि निर्णय वह लेता है परन्तु मस्तिष्क यह भी जानता है कि उसे हृदय के अनुसार चलना है और हृदय तो सर्वव्यापक है और हर चीज़ का स्रोत। महिला यदि अपने महत्त्व को समझ लेगी, अपनी पदवी को समझ लेगी, यदि वह हृदय है तो वह कभी अपने आपको प्रताड़ित नहीं मानेगी।

..... **विवाह केवल अहं की स्पर्धा के कारण असफल होते हैं। अहं यदि पुरुषों में न हुआ तो महिलाओं में होता है** और आपके बच्चों के जीवन को नष्ट कर सकता है। महिलाएं विवेकशील होती हैं, परन्तु उनकी सहनशक्ति की भी सीमा होती है, अतः हमें देखना चाहिए कि एक अच्छा परिवार बनाने के लिए कितने विवेक की आवश्यकता है, यही हमारी आवश्यकता है क्योंकि अच्छे परिवारों में ही अच्छे बच्चे जन्म लेंगे और सहजयोग सार्वभौमिक बन जाएगा।

प.पू.श्रीमाताजी, 16-9-2000, कबैला, ज.फ.2001

- कभी रोब न जमायें। प्रभुत्व किस लिए जमाना है?ये शब्द प्रभुत्व

मेरी समझ में नही आता। आप एक रथ के दो पहिए हैं दो पहिए कभी एक दूसरे पर प्रभुत्व जमाते हैं? क्या वे ऐसा कर सकते हैं?एक यदि प्रभुत्व जमाता है यानी दूसरे से आकार मे बड़ा हो जाता है तो यह एक ही जगह पर घूमता रहेगा। क्या यह बात ठीक नहीं? **अतः पति-पत्नी में प्रभुत्व जमाने वाली तो कोई बात ही नहीं। यह तो परस्पर सूझ-बूझ एवं पूर्ण सहयोग की बात है जिसका प्रभाव पूरे परिवार और समाज पर पड़ना चाहिए।**

..... हम सहजयोगियों के आपस में विवाह करना चाहते हैं, जिनके सुन्दर बच्चे हों और सुन्दर परिवार बने। खूबसूरत परिवार चाहते हैं। ... छोटी-छोटी चीज़ों के लिए परस्पर लड़ना व्यर्थ है। **...आपका दृष्टिकोण यदि ये हो कि दो आत्माओं के बीच- बाँए और दाँए की बीच विवाह हुआ है तो एक दूसरे के प्रति पूर्ण समझ आ जाएगी।** विवाह का भावानात्मक पक्ष भी है। पत्नी यदि उदास है या रो रही है तो आपके दो प्रेम के शब्द या उसके प्रति प्रेम प्रदर्शन बहुत बड़ा कार्य करेंगे।

..... आपका विवाह प्रेम का आनन्द लेने के लिए हुआ है। प्रेम करना दिव्य है और बहुत बड़ा आशीर्वाद। **...सर्वोत्तम बात तो यह है कि परस्पर विश्वास करें।**

..... विवाह का अभिप्राय आप कह सकते हैं, आपको प्रसन्नता, उल्लास आदि वो सभी आशीर्वाद देना है जो दो व्यक्तियों के मिलन से पाने की आशा की जा सकती है।

..... विवाह क्यों आवश्यक है? क्यों विवाह होने चाहिए? आजकल तो लोग विवाह के बिना भी रह रहे हैं परन्तु विवाह का अर्थ है **विवाह की पावनता** आपकी शारीरिक, मानसिक तथा भावनात्मक संपूर्णता की पावनता के लिए। **पावनता के बिना यदि आप किसी व्यक्ति के साथ रहते हैं तो वह सम्बन्ध अपूर्ण है, उससे जो बच्चे उत्पन्न होंगे वो भी**

ठीक न होंगे। इसी कारण से विवाह आवश्यक है।

..... पति-पत्नी के बीच सम्बन्ध पावन होने आवश्यक हैं, अन्यथा उत्पन्न बच्चे कुछ भी बन सकते हैं- धोखेबाज़, झूठे, डकैत... अत्यन्त क्रूर।

..... सहजयोग में विवाहित व्यक्ति अन्य सहजयोगियों से और सहजयेाग समाज से यदि प्रेम बाँटते हैं तभी महान आत्मायें जन्म लेंगी।

प.पू.श्रीमाताजी, 16-9-2000, कबैला

अध्याय 7

भारत देश के प्रमुख पर्व एवं कुछ मान्यतायें

(हमारा भारत पर्वों, रीतियों और उत्सवों का देश है। भारतीय संस्कृति में मिलजुल कर प्यार से पर्व मनाने की प्रथा है, हम बहुत ही उत्साह के साथ पर्वों को मनाते हैं। पू॰ श्रीमाता जी ने बहुत विस्तार से इनके विषय में बताया है, हर पर्व एक दैवी शक्ति से जुड़ा है। पर्वों के माध्यम से हम दैवी शक्ति के प्रति आभार दर्शाते हैं और आपस में प्यार बाँटते हैं)

1. नवरात्र – में नौ दिन दुर्गा या देवी के नौ रूपों की पूजा होती है।

– देवी नौ बार पृथ्वी पर आईं, देवी ने उन सभी लोगों से युद्ध किया जो साधकों का विनाश कर रहे थे तथा उनका जीवन दूभर कर रहे थे। सताए हुए इन महात्माओं ने देवी से प्रार्थना की, उन्होंने भगवती की पूजा की और देवी नौ बार आवश्यकतानुसार अवतरित हुईं। हर बार उन्हें अहंकारी तथा निरंकुश लोगों का सामना करना पड़ा।

प.पू.श्रीमाताजी, 27-9-92, कबैला, पृ.2 1992 9-10

– उन दिनों देवी का स्वरूप माया स्वरूपी नहीं था, वे अपने वास्तविक स्वरूप में थीं जिससे शिष्यों में भयंकर भय उत्पन्न हो गया, उनके आत्मसाक्षात्कार का प्रश्न ही नहीं था, सर्वप्रथम उनकी रक्षा करनी थी। जिस प्रकार माँ नौ महीने तक गर्भ में रखती है और दसवें महीने जन्म देती है इसी प्रकार आप सबकी भी नौ युगों तक भली भाँति रक्षा की गई और दसवें युग में आपको जन्म दिया गया।

प.पू.श्रीमाताजी, २३-९-९०

– नवरात्रि की शुरूआत का मतलब है एक महायुद्ध की शुरूआत

है। नवरात्रि का एक-एक दिन प्रत्येक महापर्व की गाथा है। ये युद्ध अनेक युगों में हुआ है- केवल मानव के संरक्षणार्थ।

..... कलियुग में महान घमासान युद्ध चालू है। यह आपात काल का समय है- पीछे हटवाकर नहीं चलेगा। शैतानों का साम्राज्य हर एक के हृदय में प्रस्थापित है। अच्छे बुरे की पहचान नहीं रही। परमेश्वर और संस्कृति दोनों बाज़ार में राक्षस बेच रहे हैं, नीति नाम की चीज़ कोई मानता ही नहीं।

..... सहजयोग कितना अद्‌भुत है यह जानना चाहिए और उसके मुताबिक अपने आप की विशेषता समझनी चाहिए। आप आगे जाते जाते बीच में क्यों रूकते हो? पीछे मत मुड़िए क्योंकि फिसलोगे और चढ़ाई मुश्किल हो जाएगी।

प.पू.श्रीमाताजी के एक मराठी पत्र से

- मुझे महामाया बनना पड़ा और यही वास्तविकता है। इस रूप में आप मेरे पास आ सकते हैं, मुझसे बातचीत कर सकते हैं और मुझसे सीख भी ले सकते हैं। इस प्रकार से ये विचार-विनिमय बेहतर रूप से किया जा सकता है। सभी चीज़ों के रहस्य में आपको बता सकती हूँ।

प.पू.श्रीमाताजी, १५-१०-८८

- हमने देवी कवच को संक्षिप्त कर दिया है। आप मात्र बंधन ले लें यह कवच सम ही है।

14-10-88

- हम नवरात्रि क्यों मानते हैं? हृदय में नवरात्रि पूजा का अर्थ है सात चक्रों के अन्दर निहित शक्ति की अनुमति करने के लिए आदिशक्ति को स्वीकार कर लेना। जब यह चक्र जाग्रत हो उठते हैं तो आप किस प्रकार अपने अंदर इन नौ चक्रों की शक्ति की अभिव्यक्ति करते हैं। सात चक्र तो यह हैं और इनसे ऊपर दो चक्र और हैं।

प.पू.श्रीमाताजी का परामर्श, चै.ल.अंक 7-8-1997

2. होली - मस्ती और मेल जोल का त्यौहार है-

- होली का जो इतिहास है वो ये है कि एक राक्षसी थी होलिका और प्रह्लाद (एक भक्त बालक) और प्रह्लाद का पिता (हिरण्यकश्यप राक्षस) उसे बहुत सताता था। होलिका को वरदान था कि वह जलती नहीं है। उन्होंने कहा कि इस लड़के को फेंक दो आग में और होलिका तो जलेगी नहीं। होलिका उसे लेकर आग में कूद पड़ी पर आश्चर्य की बात वो जल गई और प्रह्लाद नहीं मरा और वो आग से निकल आया साफ। ये बड़ी भारी एक घटना है। लोग समझ गए कि पाप करना, दुष्टता करना, बुराई करना ग़लत बात है क्योंकि वो जल गई।

..... **इसीलिए कभी किसी के प्रति घृणा या उसके प्रति द्वेष भाव हो तो उसको निकाल देना चाहिए, यह होली का आपके लिए संदेश है।**

प.पू.श्रीमाताजी, 23-03-2002, सि.अ.2002, पृ.23

- उस ज़माने में कंडीशनिंग की वज़ह से लोग बहुत गंभीरता से धर्म करने लगे ... उनका आह्लाद उनका उल्लास सब ख़त्म हो गया। राधा जी की जो मुख्य शक्ति थी वो थी आह्लाददायिनी, इसीलिए उन्होंने होली का त्यौहार बनाया। ...उन्होंने रंग वग़ैरह खेलना शुरू किया। रंग भी जो है, वो देवी के रंग हैं सारे। सातों चक्रों के रंग से रंग खेला जाता है। सारे चक्रों के रंग ही अपने पर उड़ेल लो, खेलो उल्लास आह्लाद और आनंद में। गंभीरता पूर्वक बैठने की क्या ज़रूरत है?

..... होली के रोज चाहे कोई भी मालिक हो, नौकर हो सब आपस में होली खेलते थे **...इस तरह से एक समाजवाद और एक सामाजिक खुशी का त्योहार अपने देश में होता है।**

..... इसमें Indecent काम नहीं होना चाहिए। अश्लीलता बिल्कुल

नहीं आनी चाहिए। अश्लीलता अगर आ गई तो यह फिर से श्रीकृष्ण की होली नहीं। ...सहजयोग में हम स्त्री-पुरुष होली नहीं खेलते, औरतें औरतों के साथ और पुरुष पुरुषों के साथ। ...भाभी और देवर में होली होती है लेकिन जेठ और दुल्हन में नहीं हो सकती, जेठ से परदा होता है और यह क़ायदा आपको आश्चर्य होगा कि सारे हिन्दुस्तान में है और वो अपने आप में चलता है। हम लोगों के अंदर अर्तर्निहित हैं, हमारे संस्कारों में बैठा हुआ है।

प.पू.श्रीमाताजी, 29-3-83, न.दि.2006

- होली का तत्त्व जानना चाहिए। होली में अपने अंदर की गंदगी और दोष जलाकर हृदय शुद्ध करते ही जो प्रेम उमड़ आता है, उसके चैतन्य से सब तरफ चैतन्य के रंगो की बौछार होने से सब लोग मस्त हो जाते हैं। इसीलिए होली में सर्वप्रथम अपने अंदर की बाधाएँ जलानी चाहिए।

..... **बदला, दोष, बाधा सब होली में जलाइए, ग्रुपबाजी, राजनीति सब जला दीजिए।' ...होली में जलाने के लिए अपने अपने घर की लकड़ी देते हैं ताकि उस लकड़ी के जलने से उनका घर बाधारहित हो जाए।** ...प्रतीकात्मकता से होली जलाओ। स्वच्छ हो जाओ, मुक्ति में जो आनंद आ रहा है इसमें नाचो, गाओ और सबको आंनदित करो। सहजयोग की होली श्रीकृष्ण की होली है। आजकल तो लोग होली में भंग पीते हैं।

श्री कृष्ण क्या भंग पीते थे? भंग तो सिर्फ शिवशंकर पीते हैं।

..... असल में होली का तत्त्व यही है कि अपने आपको अंदर से साफ करना चाहिए। ...आप सब लोग जितने स्वच्छ रहेगें उतना आप सहजयोग के लिए उपयुक्त साबित होंगे।

प.पू.श्रीमाताजी, १७-३-९५

3. दीपावली प्रकाश का पर्व है -

दीवाली का अर्थ है दीपों की पंक्तियाँ। भारतवर्ष का यह अत्यन्त प्राचीन उत्सव है। नरकासुर का वध करने के पश्चात वर्ष की सबसे अँधेरी रात्रि में दीवाली मनाई गयी थी।

प.पू.श्रीमाताजी, 06-11-94, इस्तंबूल टर्की, 1995, अंक3 ए4, पृ.24

- दीवाली से पहले (धनतेरस के दिन) लोग परिवार के लिए कुछ न कुछ खरीदते हैं, चाहे ये खाना बनाने के बर्तन हो, आपकी पत्नी के लिए कोई गहना हो या ऐसा ही कुछ और क्योंकि यह गृह लक्ष्मी का दिन होता है और इसे गृहलक्ष्मी के प्रति सम्मान के रूप में मनाया जाता है।

..... धनतेरस के अगले दिन भयंकर राक्षस नर्कासुर का वध हुआ था।... इसका अगला दिन सर्वोत्तम है क्योंकि इस दिन श्रीराम-भरत मिलाप हुआ था... चौदह वर्षों पश्चात श्रीराम-भरत मिलन हुआ और श्रीराम का राज्याभिषेक किया गया। हज़ारों वर्ष पूर्व यह सब घटित हुआ परन्तु आज भी उस दिन को त्यौहार के रूप में मनाया जाना महत्वपूर्ण है क्योंकि इस दिन योग्य राजा को उसका सिंहासन प्राप्त हुआ और उन्होंने सारे अन्याय और अत्याचारों का अन्त किया, इन्हीं कारणों से दीवाली महत्त्वपूर्ण है।

..... दीवाली के दिन लक्ष्मी की पूजा की जाती है क्योंकि उन्ही के आर्शीवाद से ये सब सुंदर मिलन हुए। ...इस लक्ष्मी पूजा में आप साक्षात लक्ष्मी की पूजा करते हैं। लक्ष्मी का अर्थ किसी प्रकार के धन से नहीं है। धन की पूजा करना ग़लत है। इसका अर्थ है कि धन या सम्पत्ति के रूप में जो भी लक्ष्मी हमारे पास है उसे सावधानी पूर्वक ख़र्च किया जाना चाहिए क्योंकि लक्ष्मी अति चंचल है और ये धीरे से खिसक जाती हैं, परंतु किसी भी प्रकार आपको कंजूस नहीं होना है।

..... दीवाली का संदेश ये है कि श्रीराम को राज्य दिया गया, श्रीराम न्याय एवं ईमानदारी की प्रतिमूर्ति थे इसीलिए उन्हें गद्दी सौंपी गई इसी प्रकार हमें भी महसूस करना है कि **कृतज्ञता और प्रेम की हमारी अभिव्यक्ति ऐसे व्यक्ति के लिए होनी चाहिए जो श्री राम की तरह महानता का प्रतीक हो।**

प.पू.श्रीमाताजी, 25-10-98, कबैला दीवाली पूजा, जु.अ. 1999

– दीवाली के अंतिम दिन (भाई-दूज) बहन-भाई मिलकर पवित्र एवं संरक्षक संबधों के लिए प्रार्थना करते हुए उत्सव को मनाते हैं। **ऐसा मात्र यह दर्शाने के लिए होता है कि दीपक जलाने के पश्चात सच्चरित्रता समाज की पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।** चरित्र हीनता आजकल का महानतम अंधकार है। लोग यह भी नहीं समझते कि उनके पारस्परिक संबध क्या हैं?

..... भारत में हमारे यहाँ मिट्टी की हाँडी होती है। **यह शरीर, मस्तिष्क और दिखाई देने वाला सभी कुछ अंदर से हाँडी की तरह से हैं, प्रेम और करुणा इसका तेल है, कुंडलिनी शुद्ध इच्छा बाती है और आत्मा चिंगारी है। सर्वप्रथम हाँडी को ठीक होना होगा। हाँडी में तेल को सँभालने की शक्ति होनी चाहिए, वह इसे रिसने न दे। अहम् तथा बंधन दो अत्यन्त समस्याप्रद छिद्र हैं।... दूसरा भाग तेल है जो कि स्वाभाविक अर्न्तजात तथा आनन्ददायी है, करुणा को पवित्र होना होगा।... कुण्डलिनी की बाती से आप ज्योतिर्मय हो जाते हैं और आप शांति एवं आनंद के दीप बन जाते हैं ...यह दीपक ध्यान-धारणा से प्रज्ज्वलित है और इस प्रकाश में आप अत्यन्त सुदृढ़ बन सकते हैं।**

प.पू.श्रीमाताजी, 6-11-94 टर्की, 1995 अंक 3 व 4 पृ.24

– ये दीप ज्योतित आत्मा को चित्रित करते हैं। आप लोग यदि आत्मसाक्षात्कारी जीव हैं, यही दीवाली है कि वे कलियुग के अंधकार को

दूर करके इसके सौन्दर्य और खुशी का आनंद लें। मैं कहूँगी कि यह अत्यंत प्रतीकात्मक बात है कि दीवाली शुरु हो चुकी है। हमारे पास बहुत से दीप हैं और बहुत से अन्य दीप हमें जलाने हैं। हमें अधिक दीप क्यों चाहिए? इनकी क्यों आवश्यकता है?ताकि सभी लोगों को बचाया जा सके। हमारा प्रयत्न सभी लोगों को बचाने का है।

प.पू.श्रीमाताजी, 7-11-99, डेल्फी यूनान, मई.जून.2000 पृ.21

4. रक्षा-बन्धन भाई-बहनों के परस्पर पवित्र प्यार का पर्व है-

भारत में भाई-बहन संबंध अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं सहजयोगियों में भी ऐसा ही होना चाहिए। हमारे यहाँ रक्षाबंधन तथा भाई दूज होता है जिसमें हम भाई को राखी बाँधते हैं। यह राखी विष्णुमाया की शक्ति है जो भाई की रक्षा करती है। समआयु, एक सी सूझ-बूझ, सुरक्षा, प्रेम और पवित्रता के कारण भाई बहन के संबन्ध अत्यंन्त महत्वपूर्ण है। इस संबंध को विष्णुमाया चलाती है।

प.पू.श्रीमाताजी, 19-9-92, यू.एस.ए.

- राखी का मतलब है रक्षा करने वाली पवित्र शक्ति इस शक्ति का बंधन बहुत ही ज़ोरदार है और अत्यन्त कोमल भी क्योंकि यह बहन के प्यार की निशानी है, जिसे एक बार राखी बाँधी वहाँ फिर निर्मल रक्षा का स्थान स्थापित किया है।

यह परम्परा है। अब मुनष्य की संवेदन क्षमता इतनी कम हो गई है कि राखी बाँधना एक यांत्रिक क्रिया हो गई है, **जहाँ श्रद्धा की गरिमा नहीं वहाँ सारी सुंदर मानवी परम्पराएँ बेजान हो जाती हैं।** ... रक्षाबन्धन बहुत महत्वपूर्ण दिन है। उस दिन परिपूर्णता की माँग करनी चाहिए। बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनानी चाहिए। अपना लक्ष्य हमेशा ऊँची बातों पर रखना चाहिए।

प.पू.श्रीमाताजी के एक पत्र से 17-8-78, नव.दि.2006

5. गुडी पड़वा- नव वर्ष का प्रारम्भ-

- गुडी माने झंडा के प्रतीक रूप और उसके ऊपर में एक लोटा होता है, Particular shape उसका एक होता है, वह भी कुंडलिनी का द्योतक है।... एक लोटे के अंदर एक पताका लगा के और पताके का डंडा वो जो लोटा होता है उसमें लगा देते हैं।

..... हम इस दिन कुंडलिनी का स्वागत करते हैं और कुंडलिनी का विशेष रूप से प्रदर्शन करते हैं। ...शालीवाहन लोग सात वाहन भी कहलाये जाते थे क्योंकि वो सात चक्रों को मानते थे ...कुंडलिनी की पूजा करते थे इसलिए उन्होंने इस तरह से अपना नव वर्ष शुरु किया।

प.पू.श्रीमाताजी, 13-4-2002, गुड़गाँव, सि.अ.2002 पृ.26

6. मकर संक्रति -

- मकर संक्रति का अर्थ है संक्रमण अर्थात कुछ बदलाव लाने वाला दिन इस दिन सूर्य का उत्तरायण शुरु होता है। हमारे भारतवर्ष में सारे त्यौहार चंद्रमा की स्थिति के अनुसार चलते हैं, इसलिए उनकी तिथि बदलती रहती है। मकर संक्राति सूर्य की स्थिति पर निर्भर है और यही कारण है कि ये पर्व हर साल चौदह जनवरी को ही मनाया जाता है।

- संक्राति का अर्थ है सूर्य शक्ति। सूर्य शक्ति अर्थात आत्मविश्वास। सूर्य उष्णता है, तेज है। अब यह हम पर निर्भर करता है कि हमें इस उष्णता से दग्ध होना है या सूर्य के तेज से आत्मविश्वास प्राप्त करना है, तेजस्वी बनना है।

- मकर संक्राति इस बात का संकेत है कि आज से सूर्य की गर्मी बढ़ती जायेगी। सूर्य की गर्मी मानव जाति के लिए हितकारक है। इसी ऊष्णता के कारण हम चल फिर सकते हैं, बोलचाल सकते हैं। सूर्य की गर्मी के प्रभाव से ही मनुष्य में क्रोध आता है, इसीलिए इस दिन गुड़ खाया

जाता है। ताकि वाणी मधुर हो जाए।

सूर्य की ऊष्मा से ही पृथ्वी पर धन-धान्य, फल-सब्ज़ियाँ वग़ैरह होते हैं। इस दिन देवी को फल-सब्जियाँ आदि अर्पण करके देवी का आशीर्वाद लिया जाता है। आदिशक्ति के आशीर्वाद से पृथ्वी तत्त्व शांत हो जाता है और मनुष्य की उन्नति होती है।

प.पू.श्रीमाताजी, 14-1-2002, पुणे, मई.जून.2002

- ऐसे हमारे यहाँ सूर्य नारायण की भी बहुत महति है और लोग सूर्य नारायण को मनाते हुए गंगा जी पर जाकर नहाते हैं और अनेक तरह के अनुष्ठान करते हैं, पर सबसे महत्त्वपूर्ण यही एक दिन है।

..... सूर्य को नमस्कार करके, अर्ध्य देकर सूर्य के प्रति अपनी कृतज्ञता हम लोगों ने संबोधित की किन्तु क्या विशेष अब कर सकते हैं? विशेष कर सहजयोगी क्या कर सकते हैं

- आज्ञा चक्र पर सूर्य का स्थान है, आप लोग जानते हैं और आज्ञा चक्र से आप आगे की सोच सोचते हैं तो आज्ञा-चक्र को ठीक करना बहुत ज़रूरी है क्योंकि ये सूर्य को प्रभावित करता है। ...हम लोग आज्ञा चक्र से लोगों पर क्रोधित होते हैं और उनके साथ हमारा व्यवहार बिगड़ जाता है। ...आज्ञा चक्र बहुत महत्वपूर्ण क्षेत्र है ...हमें सबको क्षमा करना चाहिए।

प.पू.श्रीमाताजी, 14-01-2004, पुणे, मई-जून 2004

- आज जो संक्राति हम मना रहे हैं उसमें जो संक्राति है, **संक्राति अर्थात एक ऐसी शुभ क्रांति जिसमें हमारे अंदर देने की प्रवृत्ति आ जाए। ... यह देखना चाहिए कि हम मुक्त मन से अपने देश के लिए, अपने बंधुओं के लिए, अपने पड़ोसियों के लिए क्या कर रहे हैं?** ...उस सूर्य के जैसा अपना स्वभाव होना चाहिए। सूर्य क्या करता है, इसका उसे कुछ भी आभास ही नहीं, उसे कुछ भी पता नहीं परंतु सतत

अकर्म में खड़ा है। और प्रज्जवलित रहता है और आपको नित्य प्रकाश देकर, आनंद देकर संम्पूर्ण जीवन तत्त्व देकर आपका पालन-पोषण करता है। हम प्रतिदिन उसे देखते हैं। बहुत से लोग उसे नमस्कार करते हैं, किंतु मात्र नमस्कार तक उसमें से कुछ भी हमारे अंदर आता नहीं। उसकी देने की शक्ति, उसकी क्षमता हमारे अंदर आनी चाहिए।

प.पू.श्रीमाताजी, 14-1-87, राहुरी

7. हम ईश्वरीय अवतरणों एवं संत महात्माओं के जन्मदिनों को भी पर्व की तरह उत्साह पूर्वक मनाकर उनके प्रति अपना आभार प्रगट करते हैं-

श्री गणेश चतुर्थी, रामनवमी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, श्री शिवरात्रि, बसंत पंचमी (देवी सरस्वती का पूजन), क्रिसमस (प्रभु ईसा का जन्म) ईस्टर (प्रभु ईसा का पुनर्जन्म) आदि।

कार्तिक पूर्णिमा (गुरु नानक जंयती), महावीर जंयती, बुद्ध जयंती श्री हनुमान जयंती आदि।

पू॰श्रीमाता जी ने बताया है कि- ''महाशिव रात्रि के दिन श्री शिव जी ने गरल पिया था, जो कुछ भी पाप था, जो कुछ भी दुष्टता सारे संसार में फैली हुई थी, सबका उन्होंने शोषण कर लिया था।... सारी रात उन्होंने पिया, रात का जितना भी अंधकार संसार का है, उसको उन्होंने अपने अंदर समा लिया है। इसीलिए आज को ''महाशिव रात्रि'' कहते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी

''प्रत्येक चतुर्थी को, जो कि महीने के चौथे दिन पड़ती है, श्री गणेश का जन्म-दिन मनाया जाता है।

प.पू.श्रीमाताजी

हमारी कुछ मान्यताएँ-

(जिनके प्रति हमारे मन में दृढ़ विश्वास है कि वे हमारे लिए शुभ है।

हम पूरी आस्था से इन्हें निभाते हैं।)

1. हमारी संस्कृति में अलंकार धाराण करना आवश्यक है। हम मानते हैं कि विशेष अवसरों पर सुंदर समयानुकूल वस्त्राभूषण धारण करने से उस अवसर की गरिमा बढ़ जाती है–

– स्त्री के लिए अलंकार आवश्यक बताया गया है, उसे अलंकार पहनना चाहिए। विवाहिता स्त्री के लिए बताया गया है कि उसे अलंकार पहनना चाहिए, ख़ास करके उस पर सारे घर का दारोमदार होता है, उसके चक्र ठीक रखने चाहिए, उनको सुशोभित रखना चाहिए। उसी तरह से क़ायदे से कपड़े पहनने चाहिए, क़ायदे से रहना चाहिए। लेकिन अपने को विशेष आर्कषक बनाना (शारीरिक प्रदर्शन) वग़ैरह ये सब चीज़े भारतीय संस्कृति की नहीं है। कोई भी स्त्री भारत में अपने को आकर्षक बनाने के लिए नहीं पहनती पर हरेक समय-समय पर जो Occasion (अवसर) होता है उसके अनुसार है। वो अवसर और भी सुंदर हो जाएगा।

..... हाथ में चूड़ी पहनना एक छोटी सी चीज़ है, ये है क्या चीज़?आप जानते हैं? विशुद्धि के चक्र में स्त्री में कंकड़ होना चाहिए। पुरुष भी पहले कंकड़ पहनते थे। मेरे नाक में ये (नथ) शुक्र का तारा है, ये मुझे पहनना पड़ा पहले पहना नहीं था बहुत दिनों तक लेकिन समझ गई कि इसको पहने बग़ैर काम नहीं होगा इसलिए पहनना पड़ा।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-03-85, दिल्ली, जु.अ.2008

2. हमारा विश्वास है कि कुमकुम, रोली, रक्षासूत्र (कलावा), कलश स्थापना रंगोली, ग्रहानुसार रत्न धारण करने जैसी मांगलिक वस्तुओं से हमारी रक्षा होती है हम शकुन-अपशकुन पर भी विश्वास करते हैं–

– आज्ञा चक्र को कुमकुम से ढकते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी

– यदि कोई व्यक्ति मांगलिक हो अर्थात उसका मंगल ग्रह दुर्बल हो तो उसे मूंगा पहनने के लिए कहा जाता है जो कि गर्म होता है। अग्नि से अग्नि बुझती है।

– युग युगान्तरों से हमारे देश में शुभ–अशुभ के शकुन प्रचलन में हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 18-8-1971

3. हमारी मान्यता है कि कुछ विशेष तिथियों एवं सूर्य चन्द्र ग्रहण पर विशेष सावधानियाँ रखना आवश्यक है ताकि मन एवं शरीर की सुरक्षा हो–

– गर्भवती महिलाओं को कभी भी सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण को नहीं देखना चाहिए क्योंकि यदि वे सूर्यग्रहण देखती हैं तो उनमें शारीरिक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं, उनसे उत्पन्न बच्चों के हाथ पैर टेढ़े हो सकते हैं, उनमें कुछ दोष उत्पन्न हो सकते हैं। यदि वे चन्द्र–ग्रहण देखती हैं तो उनको मानसिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 17-8-87 फ्रांस

– अमावस्या के दिन आपको शिव जी का ध्यान करना चाहिए। शिवजी का ध्यान करके उनके हवाले अपने को करके सोना चाहिए।

..... पूर्णिमा के दिन आपको श्रीरामचन्द्र जी का ध्यान करना चाहिए, उनके ऊपर अपनी नैया छोड़कर।

..... अमावस्या की रात या पूर्णिमा की रात को बहुत जल्दी सो जाना चाहिए, चित्त सहस्रार में डालकर बंधन डालकर सो जाना चाहिए।

..... सप्तमी और नवमी दो दिन विशेषकर आपके ऊपर हमारा आशीर्वाद रहता है। सप्तमी और नवमी के दिन जरूर ऐसा आयोजन करना जिसमें आप अपना पूरा ध्यान करें।

प.पू.श्रीमाताजी, 27-5-1976

4. भारतीय संस्कृति में धन दान एवं सेवा दान की विशेष महत्ता वर्णित है। हमारी मान्यता है कि दान करने से हमारे पूर्व जन्मों के पाप नष्ट होते हैं और इस जन्म में पुण्य मिलता है-

''आर्शीवाद के रुप में जो धन मुनष्य को प्राप्त होता है वह दान उदारता सृजनात्मक कलाकारों लेखकों, कवियों की कला तथा ज़रूरतमंद लोगों की वास्तविक मदद कर आनंद लेने के लिए होता है''

प.पू.श्रीमाताजी, परा आधुनिक युग, पृ.132

''सोचना चाहिए पैसा जो है परमात्मा ने हमारे लिए दान के लिए दिया है। हम बीच में एक माध्यम बने खड़े हुए है और उसको दान के लिए दिया हुआ है इसका जो शुभ कर्म हो सकता है वो करना है और इससे जो भी लोगों को मदद हो सकती है वो करना चाहिए और अच्छे मार्ग में सन्मार्ग में रहना चाहिए।''

प.पू.श्रीमाताजी, 15-3-84, दिल्ली, मा.अ.2007

''सूक्ष्म में दिलखोल देना चाहिए... ये ही हमारी सभ्यता का तत्त्व है कि दो। जितने जितने अपने यहाँ लोग हो गए हैं बड़े-बड़े जिनके आपने आख्यान सुने चाहे हरिश्चन्द्र हैं... उसमें ऐसे लोगों की महानता बताई है जो दिल खोलकर देते हैं।''

प.पू.श्रीमाताजी, 25-3-85, दिल्ली

5. वेदों में वर्णित प्रतीक चिन्हों के प्रति हमारा पूरा विश्वास है। जैसे कुश, तुलसी, शंख आदि पवित्रता के, नारियल सद्बुद्धि तथा स्वास्तिक कल्याण, कमल नम्रता एवं चक्र गति का प्रतीक माने गए हैं-

''दाँयी दिशा में चलने वाला 卐 श्री गणेश का प्रतीक है परंतु स्वास्तिक यदि उल्टी दिशा का होगा तो वह विनाशकारी होता है''

प.पू.श्रीमाताजी, 25-9-99, कबैला

''श्री हनुमान ने हिटलर के साथ एक चालाकी की थी। हिटलर श्री गणेश का प्रतीक रूप में 卐 उपयोग कर रहा था। स्वास्तिक दक्षिणावर्त (सीधे चक्कर) में होना चाहिए था। प्रयोग में आने वाले स्टैन्सिल को उलटाकार श्री हनुमान ने स्वास्तिक को उल्टा करवा दिया। आदिशक्ति ने उन्हें ऐसा करने की सलाह दी परंतु चाल उन्होंने चली। स्वास्तिक के उल्टा 卐 होते ही श्री गणेश तथा हनुमान दोनों ने हिटलर को विजय प्राप्त करने से रोक दिया।''

प.पू.श्रीमाताजी, 25-3-85 फैंकफर्ट मा.अ.2008

''नारियल के फल को श्री फल कहते हैं क्योंकि यह सहस्रार होता है। यह अंचभे की बात है कि यह फल जानता और समझता है। यह किसी व्यक्ति या जानवर पर नहीं गिरता। इस फल से कोई आहत नहीं होता। यह मनुष्यों से अधिक समझदार है''

प.पू.श्रीमाताजी, 29-12-91

बड़े सोचने की बात है कि ''नारियल को श्री फल क्यों कहते हैं? ये समुद्र किनारे होता है और कहीं होता नहीं, सबसे अच्छा जो ये फल होता है समुद्र के किनारे पर, उसकी वजह ये है कि समुद्र जो है ये धर्म है, जहाँ धर्म होगा वहीं श्रीफल फलता है जहाँ धर्म नहीं होगा वहाँ श्री फल नहीं फलता''

प.पू.श्रीमाताजी, 5-5-83, सित.अक्टू.2003 पृ.35

कमल का फूल आपने देखा है, उसमें हमेशा थोड़ी सी झुकान रहती हैं, कमल कभी भी तन कर खड़ा नहीं होता... उसमें थोड़ी सी झुकान डंठल में ज़रूर आ जाती है (यही नम्रता है)।

प.पू.श्रीमाताजी, चै.ल.न.दि. 2007

अध्याय 8

भारत देश की विविध कलाएँ

(कला वही है जो वस्तु को सुन्दर बनाए और उसकी उपयोगिता बढ़ा दे। हमारी संस्कृति विविध कलाओं से अत्यन्त समृद्ध है। प्राचीन काल में भारतीय शिक्षा में कलाओं की शिक्षा अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती थी। कला के दो भेद हैं- ललित कला और उपयोगी कला। ललित कलाएँ पाँच हैं काव्य संगीत, चित्र, मूर्त्ति एवं वास्तुकला। उपयोगी कलाओं में कृषि, लुहार, सुनार, जुलाहे, पाककला, बागवानी आदि अनेको कलाएँ सम्मिलित हैं। हमारे ग्रन्थों में चौसठ सृजनात्मक कलाओं का उल्लेख है।)

प.पू.श्रीमाताजी ने बताया है-

- यह सृजनशक्ति सरस्वती का आशीर्वाद है जिसके द्वारा अनेक कलायें अत्पन्न हुई ...कला की और दृष्टि बढ़ाने से एक तो जीवन में सौन्दर्य आ जाता है और जीवन का रहन-सहन सुन्दर हो जाता है ...हमारे ऊबड़ खाबड़ जीवन में यदि थोड़ी सी कला की झलक आ जाए तो बड़ा सुख और आनंद मिलता है।

- अगर आप कला को बग़ैर आत्मसाक्षात्कार के ही अपनाना चाहें तो वह कला अधूरी रह जाती है ...अगर आत्मसाक्षात्कारी मनुष्य ...कोई कलात्मक चीज़ बनाता है तो उसमें से भी चैतन्य आने लग जाता है। सुन्दर होने के साथ साथ ऐसी कृति में एक तरह की अनन्तशक्ति होती है ... क्योंकि उसने जो कुछ भी बनाया है आत्मा की अनुभूति से बनाया है। ... हाथ से बनी हुई चीज़ों में चैतन्य बहता है।... हाथ से बनी चीज़ों के द्वारा अपने हृदय का आनंद हम दूसरों को समर्पित करते हैं। ...कलात्मक चीज़ हठात आपको निर्विचारिता में उतारेगी ...क्योंकि सौन्दर्य देखने से ही

चैतन्य एक दम बहने लगता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 4-4-92, यमुना नगर, खंड IV, अंक 3-4, 1992

– कला का जो भी कार्य हम करते हैं वह परमात्मा को समर्पित होना चाहिए। इस भाव से की गई सभी रचनायें शाश्वत होंगी। परमात्मा को समर्पित सभी कवितायें, संगीत और कलाकृतियाँ आज भी जीवित हैं।... कला परमात्मा की ज्योति है... इनमें चैतन्य लहरियाँ है।

प.पू.श्रीमाताजी, 3-2-92, कलकत्ता, खंड IV, अंक V, VI, 1992

1. भारतीय काव्य कला –

भारतीय काव्यकला के अन्तर्गत सारे वैदिक ग्रंथों का असीम भंडार है जिसकी भाषा संस्कृत है। वैदिक ग्रंथों के साथ कालिदास, माघ, भारवि, भवभूति, दंडी तथा बाणभट्ट जैसे साहित्य साधकों की पद्य व गद्य में लिखित कृतियाँ तथा पालि, प्राकृत व अपभ्रंशभाषा में रचा गया सारा बौद्ध और जैन साहित्य भारतीय काव्य कला के प्रमुख अंश है। भारत की बंगला, मराठी आदि प्रादेशिक भाषाओं और अवधी, ब्रजभाषा व भोजपुरी जैसी बोलियों में भी अनेक प्रसिद्ध ग्रंथ लिखे गए हैं।

– साहित्य क्या है? इसे स + हित कहते हैं अर्थात हितकारी। यदि वह हितकारी नहीं है तो साहित्य नहीं व्यर्थ है।

प.पू.श्रीमाताजी, 23-2-92, न्यूजीलैंड, खंड IV, अंक 7-8, 1992

– शारदा देवी की कृपा से (अपने देश में) बहुतों ने बहुत कुछ लिखा। ज्ञानेश्वर जी ने 'ज्ञानेश्वरी' लिखी और उसके बाद एक और किताब (अमृतानुभव) इतनी सुन्दर है कि ऐसा लगता है कि आप अमृत पी रहे हों। संतों ने लिखा जिन पर शारदा देवी की कृपा हुई। शरदचन्द्र ग़र आप पढ़िए तो आप कहानी लिखना शुरु कर देंगे। ऐसे ऐसे लेखक अपने यहाँ हो गए इस भारतवर्ष में कि ऐसे कहीं नहीं हुए होंगे। ...राजस्थान में

उसकी (देवी सरस्वती की)बड़ी कृपा रही। यहाँ बड़े-बड़े कवि हो गए और यहाँ से अलेक्ज़ेन्डर (सिकन्दर) भी यहाँ की संस्कृति देखकर इतने अचंभे में पड़ गए तो वापस गए और अपने साथ चंद्रवर्दाई को ले गए। एक बड़े भारी कवि है चंद्रवर्दाई यहीं के हैं, राजस्थान के हैं... फिर सूफियों में ख़ुसरो हैं। क्या कवितायें हैं। कबीरदास हैं। गुरु नानक साहब का तो कहना ही क्या वो तो गुरु हैं। रामदास स्वामी (हैं)बंगाल में भी क्या एक से एक कवि हो गए और ये सब शारदा देवी की कृपा से। सारे शब्दों से मानोधर्म बहता हो। प्रकाश और सारे ही शब्द इनके व्यविस्थत ऐसा लगता है मानो निर्विचारिता में लिखे गए हों। इतने शुदध वर्णन ये हम ज़रूर कहेंगे कि सबसे ज्यादा संस्कृत में और उसके बाद मराठी में ही अध्यात्म पे किताबें बढ़िया लिखी। न जाने बड़ी गहराई से अध्यात्म पे काम किया गया ...अब यही सोचिए अंग्रेजी भाषा में आत्मा के लिए Spirit शब्द है, है ना?शराब को भी Spirit और भूत को भी ये कोई भाषा हुई?... फ्रेंच भाषा तो उससे भी गई बीती, एकदम, उसमें चेतना के लिए कोई शब्द नहीं।... उनके (शारदा) आशीर्वाद से ही जितने महान ग्रंथ हैं वो बने। कितने महान नाटक या कादम्बरियाँ लिखी गई वो सब शारदा देवी के आशीर्वाद से...

प.पू.श्रीमाताजी, 11-12-94, जयपुर

2. संगीत कला -

इसे भारतीय संस्कृति में गांधर्व विद्या कहा गया है। संगीत में नाद का स्थान मुख्य है। शब्द लोक परलोक का आधार है। शब्द से भाषा बनी। भाषा एवं संगीत एक ही विद्या के दो अंग हैं। हर शब्द का एक अर्थ होता है और उस शब्द में उस अर्थ को उत्पन्न करने की शक्ति होती है। यह मंत्रों का रहस्य है, यदि शब्द के उच्चारण अशुद्ध हों तो मंत्र प्रभावहीन हो जाता है उसी प्रकार संगीत में भी है। स्वर-श्रुति आदि का एक स्वाभाविक

अर्थ है जिससे रस उत्पन्न होता है, यदि उसमें अशुद्धता हो तो रसभंग हो जाता है, संगीत दोषपूर्ण कहलाता है। उच्चारण की शुद्धता मुख्य है। शब्द सगुण ब्रह्म है। राग द्वारा सगुण ब्रह्म को प्राप्त किया जा सकता है। वाणी शब्दों से, शब्द वर्णों से और वर्ण स्वर से बने हैं अतः वाणी का सूक्ष्मतम स्वरूप स्वर है। संगीत के स्वरों का आधार मध्यमा वाक् है। मध्यमा नाद रूप नहीं होती इसीलिए संगीत के स्वर रूप नाद में अलग-अलग अक्षर नहीं होते। संगीत के एक-एक स्वर में अनेक अर्थ होते हैं। संगीत में सात स्वर होते हैं। नाद को श्रुति कहते हैं।

संस्कृति अंक -कल्याण से

रुद्र के डमरू से उत्पन्न ''महेश्वर सूत्रों'' का रहस्य इस प्रकार वर्णित है- महेश्वर सूत्र का प्रथम सूत्र ''अ इ उ ण्'' है। प्रथम स्वर ''अ'' कंठ में स्थित है। अकार सर्वस्वरों का आधार एवं कारण है। ''आ इ उ ण् सरिगाः स्मृता''

(रुद्रडमरु 26)

संगीत में 'अ' का रूप आधारभूत स्वर षड्ज है इसके बिना किसी भी स्वर का अस्तित्व नहीं है। दूसरा स्वर 'इ' का स्थान तालु है। प्राण बाहर निकालने की प्रवृत्ति ''इ'' शब्द का कारण है। ''इ'' शक्ति या आदि द्योतक है इसीलिए इकार सर्व वर्णों का कारण है। अकार ज्ञान स्वरूप मात्र है, इकार ज्ञान साधन चित्त है। 'उ' का अर्थ होता है सगुण ब्रह्म। उकार विष्णुनामक सर्वव्यापक ईश्वर का स्वरूप है।

अकार एवं उकार का मिला हुआ रुप ओंकार है। अ निर्गुण रूप है और उ सगुण रूपए सगुण में निर्गुण ओ का रहस्य है। अतएव ओंकार से प्रणव बनता है। निर्गुण-सगुण की वास्तविक अद्वितीयता का द्योतक ओंकार है। उसका मूर्त रुप गणपति हैं।

संस्कृति अंक, कल्याण से संकलित

पू.श्रीमाताजी ने बताया है -

- भारत का जो संगीत है ''ओम'' से बना है।... हम जानते नहीं हमारा संगीत कितना ऊँचा है, इस संगीत में सारा ओम है।

..... यह आत्मा का संगीत है, इससे हमारे हाथ के वायब्रेशन बढ़ते हैं और इससे परम शान्ति मिलती है।

प.पू.श्रीमाताजी, 16-3-84, दिल्ली

- मैं आपको 'राग' के विषय में बताऊँगी- 'रा' का अर्थ है शक्ति और 'ग' शब्द का अर्थ है जो हमारे अन्दर प्रवेश कर जाए, यह आकाश तत्त्व का गुण है। आकाश तत्त्व में यदि आप कोई शब्द डाल दें तो आप ब्रह्माण्ड के किसी भी कोने में पकड़ सकते हैं तो राग वह शक्ति है जो आकाश तत्त्व में प्रवेश कर जाती है, अर्थात आपकी आत्मा ही राग है।

प.पू.श्रीमाताजी, 14-8-88, जार्ज श्वेस

- संस्कृत भाषा की विशेषता ये है कि एक-एक अक्षर मंत्र है।

..... जब तक आप संस्कृत में श्लोक नहीं कहते, मेरे चक्र चलते ही नहीं, आश्चर्य की बात है।

..... मंत्र विद्या का बड़ा भारी शास्त्र है।

प.पू.श्रीमाताजी, 3-2-78, दिल्ली

- हमारे देश का जो संगीत है और नृत्य है, ऐसा कहीं भी दुनियाँ में नहीं है कहीं भी... ये सब आपके भारत की संस्कृति है।... संगीत देहात में गाते हैं, लोग कितना शुद्ध, कितने प्रेम से और शारदा देवी के पूर्ण आशीर्वाद से

पपू.श्रीमाताजी, 11-12-94, जयपुर

..... फिर नाट्य कला है, बंगाल और महाराष्ट्र में नाट्य कला बहुत ऊँची है।

(नाट्य कला के विषय में कहा गया है, कि ये भी वेद मूलक हैं। ऋगवेद में कई संवाद सूक्त आते हैं जिनमें पुरुरवा और उर्वशी संवाद विशेष प्रसिद्ध माना गया है। प्राचीन काल में राजा लोग नटों को अपने आश्रय में रखकर उनको नाटक का अभिनय करने के लिए प्रोत्साहित किया करते थे। भारतीय नाट्य-साहित्य प्राचीनतम है। संस्कृत साहित्य के प्रमुख नाटककार कालिदास के अभिज्ञान ''शाकुन्तलम्'' ''मालविकाग्निमित्र'' आदि नाटक संस्कृत साहित्य की अमूल्य निधि है। इसके बाद 'भवभूति', 'विशाखदत्त' शूद्रक और राजशेखर आदि नाटककारों ने बड़े ही सुन्दर नाटक लिखे। हिंदी भाषा के साथ बंगला और मराठी भाषा में भी प्रचुर नाटय साहित्य है।)

3. भारतीय मूर्ति कला-

भारतीय मूर्ति कला की उत्कृष्टता स्वीकार करनी होगी। सबसे प्राचीन प्रस्तर मूर्तियाँ भरहुत, बुद्धगया तथा साँची की मिलती हैं। मूर्तिकला का आधार मिट्टी, पत्थर और संगमरमर के साथ सोने, चाँदी, ताँबा, पीतल और काष्ठ रहा है। संगमरमर की बनी राजस्थान की मूर्तियों का कला कौशल सराहनीय है। जगन्नाथपुरी में कृष्ण, बलराम और सुभद्रा की मूर्तियाँ काष्ठ की है। अनेक मंदिरों में सोने चाँदी की मूर्तियाँ हैं।

भारतीय चित्र कला की अपनी विशिष्टता है। चित्रकला के लिए भित्तियों (दीवार), कपड़ा, कागज़ और लकड़ी को आधार बनाया गया है। अजंता एलोरा की गुफओं में प्रस्तर मूर्त्तियों के साथ अनेक भित्ति चित्र भी है। हिमाचल चित्र शैली और मुग़ल चित्र शैली विशेष रुप से प्रसिद्ध हैं।

पू.श्रीमाताजी ने राजस्थान की कला की बहुत सराहना की है-

..... इस राजस्थान में जो कला का प्रादुर्भाव हुआ है ...ये बिलकुल शारदा देवी का ही आशीर्वाद है इसमें कोई शक नहीं। ऐसी ऐसी

नक्काशियाँ, ऐसी ऐसी चीज़े बनाने लग गए लोग हाथ से अपने बड़ा आश्चर्य। ...अब सारे पाटरी (pottery) में देख लीजिए कहीं देख लीजिए। क्या सुन्दर सुन्दर कला बढ़िया ऐसे रंग-बिरंगी ऐसी चीज़ें... रंगों की हमारे यहाँ जो साड़ियाँ बनती हैं कपड़े बनते हैं लहँगे बनते हैं वे सब उनके (पाश्चात्य) देश में कहाँ? बहुत ही कलापूर्ण यहाँ (राजस्थान) के लोग हैं, बहुत सुंदर इतने सुन्दर घर आपको मेरे ख़्याल से हिन्दुस्तान में कहीं नहीं मिलेंगे।... अपने देश मे जो कुछ कलाकरों ने बनाया उसकी इज्ज़त करनी चाहिए... अजंता जैसी चीज़ कोई नहीं बना सकता।... सो कला में रुचि रखना और अपने देश की कला को पहले अपनाना चाहिए।

प.पू.श्रीमाताजी, 11-12-94, जयपुर

- हमारा संगीत हमारी कलायें हमारा जो कुछ भी है बड़ा गहन है उसको समझिए क्या चीज़ है। उसकी गहनता में घुसें। मैं चाहूँगी आपसे जितना भी बन पड़े हमारे संगीत के बारे में, कला के बारे में जानने का प्रयत्न करें। जो अपनी कला को नहीं जानते अपनी भारत माँ को नहीं जानते, वे इस माता को प्यार कैसे कर सकते हैं?

प.पू.श्रीमाताजी, 25-3-85, दिल्ली, निर्मला योग जु.अग. 2008

4. वास्तु कला -

वास्तु कला को भवन निर्माण कला भी कहा जाता है। इस कला के उत्कृष्ट प्रमाण भारत के राजभवनों, किलों, मंदिरों एवं स्मारकों के रूप में विद्यमान हैं।

5. भारतीय वैमानिक, नौका, रथ निर्माण कला-

❐ महर्षि भरद्वाज के ग्रंथ ''यंत्र सर्वस्व'' में भारतीय वैमानिक कला का विस्तृत वर्णन है। जो पृथ्वी, जल और आकाश में पक्षियों के समान वेगपूर्वक चल सके उसका नाम विमान है। विमान चालक के लिए बत्तीस

वैज्ञानिक रहस्यों का ज्ञान आवश्यक बताया गया है। इस ग्रंथ से ज्ञात होता है कि हमारे पूर्वजों के पास दूरबीन, वायरलेस रेडियो, टेलीविज़न और टेलीफोन वाले अनेक यंत्र थे।

❒ भारतीय संस्कृति में नौका निर्माण कला (जहाज़) अत्यन्त समृद्ध थी। भारतीय जहाजों में सुन्दरता तथा उपयोगिता का बड़ा अच्छा योग है और ये भारतीयों के कारीगरी और उनके धैर्य के नमूने हैं।

❒ वर्तमान समय में रथ, यान, वायुयान, जलयान आदि जो भी यातायात के साधन हैं, उन सबका वर्णन वेदों में मिलता है। त्रितला, धूमशटक (रेलगाड़ी) विद्युत रथ, अश्वरथ, त्रिचक रथ (Tricycle) जैसे नाम वैदिक साहित्य में मिलते हैं। कार का अर्थ रथ भी होता है। वाल्मिकि रामायण में पुष्पक विमान की चर्चा है।

पू.श्रीमाताजी समर्थन कर रही हैं-

''श्री रामचन्द्र जी के ज़माने में भी हवाई जहाज़ थे। हवाई जहाजों में लोग घूमते थे, उन्होंने खुद लंका से अयोध्या तक का सफर किया। अर्जुन के समय में अपने यहाँ चक्रच्यूह था। इस तरह विशेष साधन थे। आयुध (लड़ाई का सामान) वग़ैरह सब कुछ अपने यहाँ था, और अब एटम बम है, इस प्रकार के अस्त्र भी थे। उसी प्रकार अंतरिक्ष में जाने की सभी व्यवस्था थी। ये बात बिल्कुल सच है। उस समय हिन्दुस्तानियों की स्थिति बहुत अच्छी थी। जिसे ''भारतीय वास्तुशास्त्र'' आप कहते हो उस समय आप उच्चतम स्थिति में थे। लोगों के पास अनेक प्रकार के वाहन थे। प्रासाद (महल) वग़ैरह बहुत ही सुन्दर बनाए हुए थे।

प.पू.श्रीमाताजी, 23-9-79, बंबई

6. प्राचीन भारत के वाद्ययंत्र -

हमारे प्राचीन ग्रंन्थों में नाना प्रकार के वाद्ययंत्रों का उल्लेख मिलता

है। इन्हें चार भागों में विभक्त किया गया है'

1. तंत्रीगत - तंत्रीगत वाद्ययंत्र का साधारण नाम वीणा है। ''संगीत दमोदर ग्रन्थ'' में वीणा के उन्तीस प्रकार-भेद और उनका विस्तृत वर्णन दिया है- जैसे ब्रह्मवीणा, किन्नरी, सारंगी, पिनाकी, त्रिदायी, घोषवली आदि आदि। श्री नारद की वीणा चर्चित रही है, देवी सरस्वती का नाम ही वीणा वादिनी है।

2. चर्मवाद्य यंत्र - यानी चर्म से आच्छादित वाद्य जैसे- मुरज, झल्ली, ढपली, डमरू, दुन्दभी, मृदंग, स्तुंग आदि।

3. रन्ध्रयुक्त वाद्य- जो खोखली लकड़ी से बनाए जाते है, इनसे छिद्र होते हैं जैसे वंशी, मुरली, तोरही, मृंग, स्वरनाभि आदि।

4. धातुनिर्मित वाद्य- जैसे करताल, जयघंटा, झंझताल, मंजीरा घंटी, घुंघरू आदि।

7. हमारे अस्त्र-शस्त्र -

प्राचीन भारत के आर्य पुरुष अस्त्र-शस्त्र विद्या में निपुण थे, उन्होंने आतताइयों एवं दुष्टों के दमन के लिए नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों की सृष्टि की थी। हमारे यहाँ दिव्य अस्त्र थे जो मंत्रों से चलाये जाते थे, प्रत्येक शस्त्र पर भिन्न-भिन्न देव शक्ति का अधिकार होता था जैसे- आग्नेय, पर्जन्य, गरुड़, ब्रह्मास्त्र, पाशुपत आदि। गदा, मुग्दर, चक्र, वज्र, शूल, खड्ग, फरसा, धनुष-वाण, बर्छी, कुल्हाड़ी आदि अनेक अस्त्र-शस्त्र का उल्लेख है। श्री कृष्ण का सुदर्शन चक्र एवं महादेव का त्रिशूल, श्री राम कर धनुष बाण और देवी दुर्गा का खड्ग इन दैवी शक्तियों की पहचान है।

- सहजयोगियों के लिए यह बहुत ज़रुरी है कि वे कला में उतरें और कला को समझें। आप पर सरस्वती की कृपा हमेशा बनी रहे।

आत्मसाक्षात्कार के बाद अगर कला ली जाए तो वह बहुत ही सुघड़ और बहुत ही सहज हाथ में लग जाती है।

प.पू.श्रीमाताजी, 4-4-92

– आप सब सहजयोगियों को कला की समझ होनी चाहिए और कलात्मक चीज़ें आप लोग इस्तेमाल करें खास कर हाथ से बनी हुई।

प.पू.श्रीमाताजी, 11-12-94, जयपुर

कला मानव का अभिन्न अंग तथा उसकी शक्ति है, हमें कला विकसित करनी है क्योंकि परमात्मा के साम्राज्य का आनंद लेने के सिवा सहजयोग कुछ भी नहीं, यदि कला ही न होगी तो आप आनंद किसका लेंगे? परंतु कला पवित्र होनी चाहिए, पावित्र्य महत्वपूर्ण है और भारतीय संस्कृति में आज तक पवित्रता का सम्मान किया जाता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 20-3-94, कलकत्ता, खंड VI
अंक 9-10-11-12, 1994 पृ.6

अध्याय 9

भारत देश की विशिष्ट विद्याएँ

I. वेदों में तात्रिंक विद्या का वर्णन-

तांत्रिक विद्या का उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है। इसमें तंत्र विद्या से जुड़े जादू-टोने के मंत्र हैं। ये मंत्र विशेष रुप से अथर्ववेद के सत्रहवें काण्ड में हैं। इनमें प्रधानत: मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि प्रयोगों के लिए और हर क्षेत्र में सफलता पाने के लिए मंत्र है। इसमें कई प्रयोग विधियाँ है जिससे हम सब तरह के भूत, प्रेत, पिशाच आदि से बच सकें। इसमें जादू टोना करने वालों से बचने के उपाय, सर्पदंश, बिच्छू दंश, हिंसक जन्तु एवं कई रोगों से बचने के भी उपाय हैं।

अथर्ववेद में तंत्र विद्या एक सशक्त माध्यम है बाधाओं को दूर करने का। इस तांत्रिक विद्या का मूल उद्देश्य मनुष्य के शरीर की सारी बाधाओं को मंत्र शक्ति से दूर कर उसे निरोगी बनाना है क्योंकि इसी मानव देह में परमात्मा का वास है अत: उसे पूर्ण रुप से स्वस्थ रखना आवश्यक है। इस वेद में मंत्र विद्या पाँच भागों में बाँटी गई है।

1. आदेशात्मक मंत्र -

इन मंत्रों को वशीकरण और सम्मोहन दोनों कहते हैं। इनमें आदेश देकर प्रभाव डाला जाता है। वह रोगी जो मानसिक पागलपन आदि से व्यथित हो उसे मंत्रों द्वारा आदेश देकर वश में किया जाता है और रोग दूर किया जाता है। इस विद्या से नशाख़ोरी, हिंसात्मक प्रवृत्ति, मानसिक विकृति आदि को वश में किया जा सकता है।

2. संकल्पित –

इस विद्या में चिकित्सक अपना हाथ रोगी के सिर पर रखता है, अपना ध्यान एकाग्र करता है, मंत्र पढ़ता है और रोगी का रोग दूर करता है। इसके द्वारा दु:ख, शोक, पापाचार आदि को ठीक किया जाता है।

3. अभिमर्षण –

इस विद्या द्वारा हृदयघात, उच्चरक्तचाप आदि रोगों का इलाज किया जाता है। इस विद्या में दोनों हाथों की उँगालियाँ रोगी के शरीर के ऊपर से नीचे स्पर्श करते हुए मंत्र पढ़े जाते हैं।

4. कृत्या –

इस विद्या में मंत्रों द्वारा देवों को बुलाया जाता है साथ ही भूत–पिशाचों को भी बुलाया जाता है। इसमें उच्चाटन, वशीकरण आदि मंत्रों का प्रयोग किया जाता है। किसी का वध करने, किसी को वश में करने किसी को कीलों द्वारा बाँधने आदि में इस मंत्र विद्या का उपयोग होता है।

5. मणिबंधन –

मणिबंधन से तात्पर्य ताबीज़ आदि बाँधने से है। इस विद्या के अंतर्गत वृक्ष, जड़, बीज आदि को मंत्र पढ़कर ताबीज़ में भरा जाता है और उस ताबीज़ को रोगी के शरीर में बाँध दिया जाता है। इस विद्या का शाप मुक्ति, शंका निवारण, अनिष्ट निवारण, विजय प्राप्त करना आदि में प्रयोग होता है।

अथर्ववेद का तांत्रिक क्षेत्र ऐसे मंत्रों का संग्रह है जो जादू टोने आदि रहस्यादि से भरपूर है जिसके कारण कुछ विद्वान इसे मात्र जादू टोने का और अंधविश्वास का ग्रंथ मानते हैं, लेकिन ऐसा नहीं है, आज भी इस वैज्ञानिक युग में अपने देश के साथ अन्य देशों विशेषतया आदि वासियों

के बीच जादू टोने से जुड़ी अनेकों अद्‌भुत क्रियाएँ की जाती है। **अथर्ववेद में जो यह तांत्रिक क्षेत्र की रहस्य विद्या है, उसके मंत्र जन कल्याण की भावना से प्रेरित हैं न कि किसी को हानि पहुँचाने के लिए। इसके चिकित्सक अपने जप-तप के बल से आन्तरिक शक्ति प्राप्त कर इस विद्या का प्रयोग करते हैं।** मात्र तांत्रिक का वेश धारण करने से कोई तांत्रिक नहीं बन जाता।

परन्तु आज यह विद्या ग़लत लोगों के हाथ में पड़ गई है जिसका उपयोग बदला लेने के लिए और लोगों को भ्रमित करने के लिए किया जा रहा है, बहुत से ढोंगी तांत्रिक पैदा हो गए हैं।

''वेदों में क्या है'' पुस्तक से संकलित

परमपूज्या श्रीमाताजी ने भी कहा है कि- जिनको लोग तांत्रिक कहते हैं असल में वे तांत्रिक नहीं हैं, वे परमात्मा के विरोध में है। ये दुष्ट लोग हैं, ये देवी जी को नाराज़ करके, श्री गणेश को नाराज़ करके उनके सामने व्यभिचार करके ऐसी सृष्टि तैयार करते हैं जहाँ वो दुष्ट कारनामें कर सकते हैं जहाँ वो भूत विद्या, मसान विद्या आदि करके लोगों को भ्रमा सकते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, फरवरी १९८१

प.पू.श्रीमाताजी ने भूत-बाधा के विषय में बताया है कि-

''अकस्मात अगर कोई चीखने चिल्लाने लग जाए और कूदने लग जाए तो उसका सीधा नाम है कि उसको भूत बाधा हो गई... उसके अंदर कोई आदमी आने के वजह से वो आदमी चिल्लाने लगता है, चीखने लगता है।

मार्कण्डेय से लेकर उससे भी अनादि काल से लोगों ने बताया कि भूत पिशाच आदि चिपक जाते हैं जितनी भी मानसिक बीमारियाँ हैं पहले

से किसी की ख़बर आ जाती है, ये सब कर्ण पिशाच आदि के बारे में अपने शास्त्रों में बहुत कुछ लिखा हुआ है।... हमारे शास्त्रों में लिखा हुआ है कि इस तरह की चीज़ें घटित होती हैं और उससे मुनष्य दु:खी हो जाता है। कुछ लोग अपने को बड़ी-बड़ी लोहे के जंजीरों में अपने को अटका लेते हैं और पेड़ पर लटका कर दिखाते हैं। ये खास कर आदिवासियों में तो बहुत ये प्रथायें चलती हैं। अज़ीब-अज़ीब तरह की बिल्कुल, आग जलाकर उस पर चलना। भूत-विद्या अफ्रीका में भी बहुत तरह की होती है हर एक देश में अज़ीब-अज़ीब तरह की भूत विद्याएँ होती हैं।... इस प्रकार की अनेक तरह की चीज़ें इस देश में बहुत पहले से होती रही हैं और अब इन देशों में हो रही हैं जहाँ रजोगुण अति पर पहुँच गया है।

प.पू.श्रीमाताजी, 30-1-1978, नव.दिस.2005

(वेदों के अतिरिक्त भी तांत्रिक विद्या पर कई शास्त्र उपलब्ध हैं जिनमें बताया गया है कि जो जीव मृत्यु के बाद अतृप्त वासनाओं के कारण नीचे पृथ्वी की ओर आकर्षित रहते हैं वे श्मशान, कब्रिस्तान, व खंडहरों या बरगद आदि के पेड़ों पर रहते हैं। कभी-कभी ये दुष्ट आत्माएँ किसी मुनष्य के शरीर में प्रवेश कर जाती हैं और उन्हें अनेक प्रकार के शारीरिक क्लेश देती है। इनको वश में करने वाली विद्या को ही श्मशान विद्या, प्रेत विद्या या काला जादू आदि कहा गया है)

संस्कृति अंक कल्याण से संकलित

पू.माँ ने भी बताया है-

''मृत लोग अपने सूक्ष्म शरीर में हमारे अंदर प्रवेश कर सकते हैं और तत्त्वों की रचना कर सकते हैं ये तत्त्व हमें काबू कर सकते हैं और हमें बाधित कर सकते है। इस प्रकार के भूत बाधित लोग बिल्कुल सामान्य प्रतीत होते हैं।''

''महत्त्वाकांक्षी लोग जब मरते हैं तो उनकी आत्मा अतृप्त रहती है।..

. वे मरने के लिए तैयार नहीं होते, इसीलिए वे किसी मनुष्य में घुसकर कुछ करते रहते हैं।''

23-9-1979, निर्मला योग, श्रीगणेश और ब्रह्मशक्ति पृ.8

''कुछ मृत आत्माएँ बहुत धूर्त होती हैं।... मांत्रिक लोग ऐसी मृत आत्माओं को पकड़ लेते है और उनसे अपने सारे कार्य करवाते हैं।''

24-5-81, जन.फर.२००७

''जीवात्माओं का देह जो होता है उस पर यह जड़ (पृथ्वी तत्त्व) नहीं होता। इसीलिए वे बहुत कुछ देख सकती हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 1-6-72

II. हमारे देश का सामुद्रिक, ज्योतिष शास्त्र एवं रत्न-विज्ञान-

सामुद्रिक शास्त्र यानी हाथ की रेखाओं को देखकर भूत-भविष्य-वर्तमान के सभी शुभ-अशुभ फल बताने का ज्ञान भी था। समुद्रिक-शास्त्र का विषय बहुत गहन और कठिन है। इस शास्त्र में तिथि वार, नक्षत्र, योग, करण मेषादि राशियों और लग्न आदि हाथ की रेखाओं से ही बता दिये जाते हैं। जीवन के हर क्षेत्र के विषय में जैसे स्वास्थ्य, आयु, शिक्षा, धन, वैभव का ज्ञान हाथ की रेखाओं से स्पष्ट जाना जा सकता है। बड़े पहुँचे हुए मनीषी तो ललाट की रेखाएँ पढ़ लेते थे और व्यक्ति के विषय में सब जान लेते थे।

ज्योतिष शास्त्र भी एक महत्वपूर्ण विद्या है। ज्योतिष शास्त्र के अठारह सिद्धांत प्रसिद्ध हैं। करण ग्रन्थ तथा अनेक फलित ग्रन्थ हैं। इसमें जन्मलग्न से व्यक्ति की भूत-भविष्य वर्तमान की सभी घटनाएँ शुभ-अशुभ फलों को बताने का विधान है। भारत में तो हर बच्चे की जन्म-कुण्डली बनवायी जाने की रीति है, बच्चे का नाम भी कुण्डली के अनुसार ही रखा जाता है। प्राचीन समय में यह ज्योतिष ज्ञान बड़ी उन्नत

दशा में था और अधिकांश लोग इसके जानकार थे, पर समय के साथ अल्पज्ञान के लोग स्वयं को बहुत बड़ा ज्योतिष बताकर इस शास्त्र के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं इसीलिए लोगों का विश्वास इसके प्रति कम होता जा रहा है।

रत्न विज्ञान भी बड़ा गहन है। रत्नों के विषय में भी पूरा ज्ञान भारतीय मनीषियों को था। महर्षि कश्यप का कहना था कि रत्नों को धारण करने से किसी प्रकार का कष्ट व्यक्ति को नहीं होता।

यों तो अनेक प्रकार के रत्नों के नामों का उल्लेख हमारे ग्रन्थों में मिलता है परन्तु नौ रत्न महारत्न कहे जाते हैं, वज्र (हीरा) मोती, मूँगा, गोमेद, इन्द्रनील (नीलम), वैदूर्य, पुखराज, पाचि (पन्ना) और माणिक्य। ये नवग्रहों के प्रभाव को संतुलित करते हैं। जैसे- माणिक्य सूर्य को प्रिय है, मोती चन्द्रमा को प्रिय है। सोने की झलक वाला पुखराज बृहस्पति को प्रिय है और तारों के समान कांति वाला हीरा शुक्र को प्यारा है। शनि को सजल मेघ के समान कान्तिवाला इन्द्रनील प्रिय है। लाल-पीली कान्तिवाला गोमेद राहु को तथा बिलाव के नेत्रों के समान कान्ति वाला एवं लकीर वाला वैदूर्य केतु को प्रिय है।

हमारे सहजयोग में भी प्रत्येक चक्र के लिए अलग-अलग रत्न का महत्व है।

III. आयुर्वेदीय चिकित्सा प्रणाली-

आयुर्वेद, अथर्ववेद का एक उपवेद है और इस पर आधारित चिकित्सा प्रणाली एक प्रकार से प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली है। इस प्रणाली में औषधि को भी भोज्य पदार्थ मानते हुए कहा गया है कि भोज्य पदार्थों का उचित और संतुलित सेवन ही स्वस्थ शरीर का मूल आधार है। आयुर्वेद आयुवृदिध का विज्ञान है पर वह यह मानता है कि औषधि के

सेवन के साथ सदाचारी जीवन और देवशक्तियों का पूजन आवश्यक है। महर्षि चरक ने लिखा है कि जिस देश का प्राणी है उसी देश की औषधि उसके लिए हितकारी होगी।

आयुर्वेदीय दवायें उन्हीं जड़ी बूटियों से बनाई जाती हैं जो भारत या समान जलवायु वाले आस पास के क्षेत्रों में पैदा होती हैं। ये औषधियाँ सस्ती व सर्व सुलभ हैं तथा इनका कोई विपरीत प्रभाव रोगी पर नहीं होता है। सबसे बड़ी बात यह है कि आयुर्वेद की रोग परीक्षा प्रणाली नाड़ी ज्ञान पर विशेष आधारित है जो सहन अकाट्य और कम खर्चीली है।

आयुर्वेद में रोग के तीन प्रधान कारण वात, पित्त, कफ का असंतुलन माना गया है और उचित पथ्य से उसे संतुलित कर देना ही आयुर्वेदीय चिकित्सा प्रणाली है। यह प्रणाली रोग के मूल कारण का इलाज करती है रोग विरोधी दवा देकर रोग को दबाती नहीं है। रोग का पूरा उपचार होने के कारण ही रोग उसी या किसी दूसरे रुप में नहीं उभरता। इसकी दवाओं में एलोपैथिक दवाओं की तरह सुरा स्पिरट या अन्य घातक पदार्थों का प्रयोग नहीं होता, ये शुद्ध और प्राकृतिक होती हैं इसीलिए लाभ हो न हो हानि की कोई संभावना नहीं होती। ऐसा विश्वास किया जाता है कि आयुर्वेद भी अन्य वेदों की तरह ईश्वरीय ज्ञान है और इसे साक्षात ब्रह्मा जी ने दिया है।

वर्तमान युग में प्रचालित एलोपैथी, होम्योपैथी, साइक्रोपैथी, नेचरोपैथी और हाईजीजम (व्यायाम चिकित्सा) प्रणालियों से यह आयुर्वेदीय चिकित्सा प्रणाली कम खर्चीली और ज्यादा विश्वास योग्य है।

आयुर्वेद में रोगों के लक्षण और उनसे उत्पन्न विकारों का वर्णन किया गया है और उनके उपचार के उपाय भी बताए गए हैं। इसमें रोगों की संख्या 99 बतायी है। कई प्रकार की जड़ी बूटियों से इनके उपचार की विधि बताई है। साथ ही **सूर्य की किरणों** से उपचार, **जल द्वारा उपचार** विधियाँ बताई गई हैं। बाँझपन दूर करने के लिए इसमें उपचार बताया गया

है जिसके अनुसार सरसों द्वारा मंत्र पढ़कर किया जाता है। अथर्ववेद के एक श्लोक के अनुसार बज नामक एक औषधि का उल्लेख है जो गर्भ रक्षक है।

संस्कृति अंक कल्याण से संकलित

पू.श्रीमाताजी ने कुछ दवाइयों का उल्लेख किया है-

हमारे यहाँ छोटी-छोटी दवाइयाँ हैं जो कि बहुत सालों से चली आ रही हैं। छोटी-छोटी बाते हैं- जैसे केला खाया तो उसके बाद चना या और कुछ खाने के बाद पानी पिओ। धूप में से आए तो आप पानी मत पियो। आजकल लोग सब बीमार हो जाते हैं, वजह क्या है? ये छोटे-छोटे नियम जीवन में जो बनाए हुये हैं समझदारी के, वो हम नहीं मानते।... अब अंगूर खाने के बाद लिमका (पेय पदार्थ) आप नहीं पी सकते।... फल खाने के बाद पानी पी लिया, आइसक्रीम खाने के बाद काफी (गर्मचीज़) पीली या काफी के बाद आइसक्रीम खा ली-तब तो गए।

ये छोटी-छोटी बातें, हमारे जीवन की जो छोटी-छोटी चीज़े हर एक जिसे कहते हैं कि हर एक अणु परमाणु में हमारा जीवन बड़ा ही सुघड़, सुव्यवस्थित ऐसा बनाया गया है जिससे कि मनुष्य हमेशा स्वस्थ रहे, उसकी तन्दुरुस्ती ठीक रहे, उसका मन स्वस्थ रहे, उसका चित्त स्वस्थ रहे और जिससे अन्त में वो परमात्मा को प्राप्त करे। ऐसा सुंदर सारा बनाया गया है लेकिन उसको समझ लेना चाहिए।

प.पू.श्रीमाताजी 25-03-85, दिल्ली

❒ चीनी पानी में घोलकर दीजिए, जिससे कि वो दांत में न लगे। पानी में घोलकर दी गई चीनी बच्चों के लिए बहुत अच्छी है।

❒ गर्मियों में ''कोकम'' नाम का एक फल आता है, उसका रस निकाल कर चीनी मिलाकर रख लीजिए। दिन भर बच्चे को वो पीने को दीजिए।

❒ अगर जांडिस जैसी बीमारी हो तो जाए तो मूली के पत्ते को छोटी-छोटी कोमल पत्तियाँ जो होती हैं, उनको उबाल लीजिए... उसमें वायब्रेट चीनी मिलाकर बच्चे को दीजिए, और कोई पानी न दें।

❒ एक चीज़ होती है, जिसे मराठी में एरोण्या कहते हैं, छोटी-छोटी काली-काली। नागपुर में बहुत होती है इसलिए वहाँ किसी को लिवर की बीमारी नहीं होती।

❒ गन्ने का रस जितना बच्चा पी सके उतली चीज़ अच्छी है उसके लिए, उसमें अदरक नींबू डाल करके। ये सब फायदा करती है।

परमपूज्या श्रीमाता जी ने बताया है-

''(आज का) चिकित्सा विज्ञान एक दम नया विज्ञान है। जो ज्ञान हमारे देश में है, दूसरे जो भी आविष्कार हमने किए हैं उनका आधार मानव पर किए हुए प्रयोग हैं, वो सब अनुभवों पर आधारित हैं। हमारी सारी दवाइयाँ भी इसी पर आधारित हैं। पाश्चात्य संस्कृति में भी ऐसा ही था परन्तु वे इसे आगे न बढ़ा सके इसलिए इन्होंने सब छोड़ दिया और रोग के लक्षणों को ही आधार बना लिया, बस जो भी लक्षण हैं उनका इलाज होना चाहिए, आप पूर्ण इलाज नहीं करते।''

पू.श्रीमाताजी, 6-9-84, विएना-साक्षात्कार, निर्मल सुरभि

IV. आज का विज्ञान हमारे ही प्राचीन वैदिक ज्ञान की देन है-

विज्ञान के क्षेत्र में वेदों में अनेक खोजों का उल्लेख मिलता है जैसे भौतिक, रसायन, वनस्पति विज्ञान आदि का ज्ञान वेदों में भरा पड़ा है।

आज प्रकृति से विज्ञान ने जो भी खोज की है, वे वेदों से ही संबंधित है क्योंकि वेदों में इन खोजों से संबंधित ज्ञान प्राचीन काल में ही ऋषियों को था जो कि वेदों से सिद्ध है। ग्रह-नक्षत्रों का ज्ञान वेदों से ही सर्वविदित हुआ। वैज्ञानिक वर्षों तक यही कहते रहे कि पृथ्वी चपटी है जबकि वेदों

में पृथ्वी के गोल होने की बात प्राचीन काल में ही कह चुके थे।

भारतीय नक्षत्र विज्ञान वेद का एक मुख्य अंग है क्योंकि वैदिक अनुष्ठानों के लिए काल निर्माण करने में नक्षत्रों की गति पर विशेष ध्यान दिया जाता था। सूर्य जिस आकाश मार्ग से नक्षत्र मण्डल होकर जाता है उसके बारह समान भाग करके मेष, वृष आदि बारह राशियों की गणना की गई। इसी प्रकार पूर्णिमा की रात्रि को जिस नक्षत्र विशेष के पास चन्द्रमा होता था उसके ही अनुसार चैत, बैशाख आदि महीनों के नाम रखे गए जैसे चित्र नक्षत्र के पास होने पर चैत्र और बिशाखा नक्षत्र पास होने पर बैशाख आदि। इसके साथ कुछ सुप्रकाशित ताराओं के नाम निश्चित किए हैं जैसे अगस्त्य, पुष्प आदि। अमंगल तारों में पुच्छल तारा कहा गया।

❒ आज वैज्ञानिक **टेलीपैथी** की बात करते हैं जबकि यह ज्ञान भी प्राचीन काल में भारतीय मनीषियों को था। वे अपने **चिंतन ध्यान** से अपने मन की बात एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाते थे।

❒ आज रेडियों टेलीविजन पर खेलों आदि का आँखों देखा हाल दिखाया सुनाया जाता है, लेकिन यह ज्ञान प्राचीन काल में ही भारतीयों का ज्ञात था। इसका एक उदाहरण यह है कि महाभारत काल में संजय ने धृतराष्ट्र को युद्ध क्षेत्र का आँखो देखा विवरण सुनाया जो कि दिव्य दृष्टि द्वारा संभव हुआ।

❒ गणित को लिया जाए तो भारतीयों ने ही **शून्य को खोजा** जिसके कारण ब्रह्माण्ड में नक्षत्रों आदि की दूरी की गणना सही-सही हो सकी, किसी भी प्रकार की गणना इसी शून्य की खोज से संभव हो सकी।

❒ हमारी संस्कृति में किसी भी धार्मिक कृत्य के लिए संकल्प करने का विधान है। **संकल्प** में कल्प से लेकर संवत, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार नक्षत्र आदि सबका उच्चारण आवश्यक माना गया है। यह प्रथा

सूचित करती है कि हमारा **समय का ज्ञान** अत्यन्त सूक्ष्म था और इस काल ज्ञान के लिए **भारतीय ज्योतिष शास्त्र** ने बहुत विस्तृत विचार किया है। सच्चा ज्योतिषी जगत के क्रिया कलाप को नियंत्रित करने वाले ग्रहों की स्थिति, गति, दृष्टि और संबंध के आधार पर भूत-वर्तमान-भविष्य की धारणाओं को देख सकता है।

❐ वेदों में मित्र एवं वरुण देवों को उल्लेखित किया गया है लेकिन इन देवों का सीधा संबंध आज के रसायन शास्त्र से है। इस प्रकार **'मित्र'** का तात्पर्य **आक्सीजन** से एवं **वरुण** का **हाइड्रोजन** से है और जब इन दोनों का संयोग होता है तो जल बनता है। आज विज्ञान के क्षेत्र का जो भी विकास है उनसे कहीं अधिक प्राचीन काल में भारतीय मनीषियों ने कर लिया था।

पू.श्रीमाता जी ने एक रहस्य की बात बतायी है कि -

''जब वेद व श्रुति (मंत्र) द्वारा पंचमहाभूतों को जाग्रत किया उसी के मूर्त स्वरूप आज अपने यहाँ विज्ञान आया। विज्ञान भी कहाँ से आया?ये जो वेदमंत्रों को बोलने वाले लोग थे उन्होंने पाश्चिमात्य देशों में जन्म लिया और उनका जो परमेश्वरी शोधकार्य अधूरा रहा था उसे उन्होंने पंचमहाभूतों को विज्ञान के जरिए जीतने का प्रयास किया, उन्हें लगता है विज्ञान के बल पर हम जीतेंगे इसलिए अब वे चाँद शुक्र पर कहाँ कहाँ जा रहे हैं।''

प.पू.श्रीमाताजी, 23-3-1979, मुंबई

अध्याय 10

भारत देश की प्राचीन वर्णाश्रम व्यवस्था

1. वर्ण व्यवस्था -

वर्ण (जाति) चार माने गए हैं। ऋग्वेद के एक मंत्र के अनुसार ये ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हैं जिन्हें क्रमशः परमात्मा का मुख, बाहु, उरु और चरण बताया गया है। प्राचीन काल में मनुष्यों का वर्गीकरण इन्हीं चार वर्गों में किया गया। इस व्यवस्था का मूल आधार मनुष्यों के गुण और कर्म थे, धीरे-धीरे समय के साथ इसमें पारस्परिक ऊँच-नीच के भेद आदि आ गए और मनुष्यों का वर्गीकरण जन्म के अनुसार हो गया।

वेदव्यवस्था स्थिर नहीं रह पायी अनेक जातियाँ और प्रजातियाँ जन्म के आधार पर बनती गईं, धार्मिक मतभेदों के कारण साम्प्रदायिकता की भावना बढ़ती गई, धन के कारण शोषक और शेषित वर्ग के प्रचलन ने भारतीय समाज की एकता को छिन्न-भिन्न कर दिया।

परम पूज्य श्रीमाताजी ने बताया है-

- **''भारतीय सभ्यता के आरंभिक हजारों वर्षों में लोग मनुष्य की प्रकृति के अनुसार उसकी जाति मानते थे। जाति अर्थात मानव की प्रवृत्ति।** परमात्मा को प्राप्त करने की प्रवृत्ति वाले लोग **ब्राह्मण** कहलाते थे, इन लोगों को पूर्णतः पावन तथा धन एवं सत्ता से विमुख होना पड़ता था। सत्ताकांक्षी लोगों को **क्षत्रिय** कहते थे, ये लोग अबोध, धार्मिक एवं दीन दुःखी लोगों की सुरक्षा के लिए ज़िम्मेदार हुआ करते थे। व्यापार तथा धनार्जन में जिन लोगों की अभिरुचि होती थी वे **वैश्य** कहलाते थे। चौथी प्रकार के लोगों को **शूद्र** कहा जाता था अर्थात निम्न चेतना के लोग

जो तुच्छ सेवाओं द्वारा अन्य लोगों की सेवा करके धनार्जन करते थे। ये जातियाँ जन्म से न होकर व्यक्ति की प्रवृत्ति के अनुसार मानी जाती थीं।

परा आधुनिक युग

– ''हिन्दू धर्म में माना जाता था कि हर मनुष्य के हृदय में परमात्मा का प्रतिबिम्ब आत्मा के रूप में है। तो किस प्रकार हिन्दू समाज को हम निम्न जातियों में बाँट सकते हैं?

''कहना कठिन है कि कब हिन्दू समाज ने जन्म से इस विध्वंसक जाति प्रथा को अपना लिया संभवत: कुछ धर्मान्ध पुजारियों ने धर्मग्रन्थों में परिवर्तित करके इस अभिशाप को प्रवर्तित किया।''

..... आज ब्राह्मण सत्ता के भूखे हो गए हैं...

..... भारत में आज चुनाव भी जातियों के अनुसार होते हैं और सर्वत्र ये जाति प्रथा बहुत शक्तिशाली है।

..... अदूरदर्शी राजनीतिज्ञ इस जाति प्रथा का पूरा लाभ उठाते हैं और सत्ता प्राप्त करने के लिए लोगों को लड़वाए रखते हैं। यह देख पाना कठिन है कि किस प्रकार ये लोग सामान्य अवस्था में लौटेंगे और समझ पाएंगे कि उनकी अपनी प्रवृत्तियाँ हैं जिनका जन्म और जाति से कुछ लेना देना नहीं।

..... सहजयोग में हमने इसका समाधान कर लिया है। सहजयोग में व्यक्ति अपने जन्म की जाति के महत्व को छोड़ देता है। सन्तों की तरह इन सब चीज़ों से ऊपर उठकर सहजयोगी आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति बन जाते हैं। जाति और धर्म की झूठी श्रेणियाँ इस प्रकार लुप्त जो जाती हैं जैसे सूर्योदय के पश्चात अँधेरा। जाति प्रजाति या राष्ट्रीयता के धर्म के बन्धनों से मुक्त होकर सहजयोगी परस्पर विवाह करते हैं।

पू.श्रीमाताजी द्वारा लिखित, पराआधुनिक युग

– आप (सहजयोगी) ब्राह्मण हैं क्योंकि आप साधक हैं, ब्रह्म को खोज रहे हैं इसलिए आप ब्राह्मण हैं।

पू.श्रीमाताजी २२-३-८१ आस्ट्रेलिया, न.दि. २००४

2. आश्रम व्यवस्था –

भारतीय संस्कृति में चार आश्रमों का विधान है– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। आश्रमों को प्राय: पच्चीस वर्ष की आयु के अन्तराल से रखा गया है।

ब्रह्मचर्य आश्रम विद्याध्ययन का समय माना गया है। पच्चीस वर्ष की उम्र तक की अवधि में बालक गुरु के आश्रम में रहकर अनेक नियमों व साधनाओं का पालन करता हुआ वेदों आदि का ज्ञान प्राप्त करता था। इस अवधि में शारीरिक तप के साथ मानसिक संयम एवं आचार व्यवहार में पवित्रता अनिवार्य थे।

गृहस्थाश्रम का अर्थ है प्रकृति के वैज्ञानिक विधान का पालन। पुरुष और स्त्री इन दोनों के सम्मिलन से ही व्यक्ति का जीवन पूर्ण बनता है। पति–पत्नी के सम्मिलन से नई सृष्टि अस्तित्व में आती है यही सृष्टि का मांगलिक विधान है। यही आश्रम अनेक सुन्दर कर्मों का स्थान है। लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार की उन्नति का मूल स्रोत गृहस्थाश्रम ही है। इसी आश्रम में अपने कर्तव्यों की पूर्ति करता हुआ मनुष्य परिवार, समाज, राष्ट्र और पूरे विश्व को समृद्धि शाली बनाता है। हिन्दू धर्म में गृहस्थाश्रम को अन्य तीन आश्रमों का उपकार करने वाला कहा गया है।

वानप्रस्थ आश्रम का विधान आयु के तृतीय भाग अर्थात पचास वर्ष की आयु में किया गया है। गृहस्थाश्रम में व्यक्ति प्राय: तीन प्रकार की नैसर्गिक इच्छाओं के जाल में फँसा रहता है, ये इच्छाएँ हैं– लोकैषणा

(यश व कीर्ति की इच्छा), वित्तैषणा (धन की इच्छा) और पुत्रैषणा (पुत्र की इच्छा) इन्हीं इच्छाओं के प्रबल आयोग से मनुष्य को मुक्ति दिलाने के विचार से इस आश्रम का विधान किया गया था। मनुष्य घर-संसार त्याग कर वनों में जाकर एंकात सादा जीवन व्यतीत करते हुए अपने चित्त को ईश्वर की ओर उन्मुख करे, इस आश्रम का यही मूल उद्देश्य था।

सन्यास आश्रम का समय आयु का चतुर्थ भाग अर्थात पचहत्तर वर्ष की आयु के बाद निर्धारित किया गया था। वानप्रस्थ के कठिन नियमों द्वारा अपने शरीर और मन को समुचित रुप से साधकर मनुष्य सन्यासी हो जाता था। काम क्रोध आदि विकारों को जीतकर वह स्थिर बुद्धि वाला और निर्भय हो जाता था तथा सबका हित करना उसका जीवन लक्ष्य बन जाता था।

भारतीय संस्कृति में सन्यास पलायन वाद नहीं था वरन एक प्रकार से परमार्थ की पुण्य यात्रा थी। सामाजिक कल्याण की भावना से प्रेरित हमारे ऋषी-मुनि एवं संत महात्माओं ने मानवता के हित के लिए अपना जीवन समर्पित किया।

परम पूज्य श्रीमाता जी ने हम सबको ''प्रपंच और सहजयोग'' के विषय में स्पष्ट रुप से समझाया है कि - ''सर्वप्रथम प्रपंच'' यह क्या शब्द है ये देखते हैं। 'पंच' माने हमारे में जो पंचमहाभूत हैं उनके द्वारा निर्माण की हुई स्थिति। परन्तु उसके पहले 'प्र' आने से उसका अर्थ दूसरा हो जाता है, वह है इन पंचमहाभूतों में जिन्होंने प्रकाश डाला वह प्रपंच है।

''प्रपंच छोड़कर अन्यत्र परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती। बहुतों की कल्पना है कि 'योग' (परमात्मा प्राप्ति) का मतलब है कहीं हिमालय में जाकर बैठना और ठण्डे होकर मर जाना। ये योग नहीं, हठ है। हठ भी नहीं बल्कि थोड़ी मूर्खता है। ये जो कल्पना योग के बारे में है अत्यन्त ग़लत है।''

''(भारत में) विशेषकर महाराष्ट्र में जितने भी साधु-सन्त हो गए वे सभी गृहस्थी में रहे, उन्होंने प्रपंच किया।''

''प्रपंच छोड़कर परमेश्वर को प्राप्त करना ये कल्पना अपने देश में बहुत सालों से आई है। इसका कारण है श्री गौतम बुद्ध ने प्रपंच छोड़ा और जंगल गए और उन्हें वहीं आत्मासाक्षात्कार हुआ परन्तु वे अगर संसार में रहते तो भी उन्हें साक्षात्कार होता।''

''सभी संत-साधुओं ने बताया है ''सहज समाधि लागों''।... जो सहज है उसे सभी ने बताया। कबीर ने विवाह किया था, गुरु नानक जी ने विवाह किया था। जनक से लेकर अब तक जितने भी बड़े-बड़े अवधूत हो गए हैं उन सभी ने विवाह किया था। और उनके बाद बहुत से आए, उन्होंने विवाह नहीं किया परन्तु किसी ने विवाह संस्था को ग़लत नहीं कहा।''...

''तो सर्वप्रथम हमें अपने दिमाग़ से ये कल्पना हटानी चाहिए। कि अगर हमें योग मार्ग से जाना है तो हमें प्रपंच छोड़ना होगा। उल्टे अगर आप प्रपंच करते हैं तो आपको सहजयोग में ज़रूर आना चाहिए।''

''सहजयोग की सबसे बड़ी सीढ़ी प्रपंच होना ज़रूरी है। हम सन्यासी को आत्मसाक्षात्कार नहीं दे सकते। क्या करें?बहुत बार करके देखा, पर मामला नहीं बनता। उसके लिए व्यर्थ का बड़प्पन किस लिए?उसका कारण है कि हमने बाह्य से सन्यासी के कपड़े पहने हैं, पर अन्दर से क्या आप सन्यासी हैं? सन्यास एक भाव है। ये कोई कपड़े पहनकर दिखावा नहीं है कि हम संन्यासी हैं, हमने सन्यास लिया है, हमने घर छोड़ा, ये छोड़ा, वह छोड़ा, ऐसा कहकर जो लोग कहते हैं कि हम योग मार्ग तक पहुँचेगे, ये अपने आपको भुलावा है। अगर आप पलायनवादी हैं, आपमें पलायन (भागना) भाव हैं तो उसका कोई इलाज नहीं है।...

''जो मनुष्य तत्त्व को समझेगा वही उसमें उतर सकता है। तो प्रपंच का तत्त्व है 'प्र' और वह प्र माने प्रकाश। वह जब तक आपमें जागृत नहीं होता तब तक आप पंच में है 'प्रपंच' में नहीं उतरे।''

प.पू.श्रीमाताजी द्वारा, 29-11-84, बंबई, खण्ड IX

अंक 11-12-1997

– भारतीय समाज में (आजकल) लोग सन्यास ले लेते हैं। काषाय वस्त्र पहनकर वे चले जाते हैं। आन्तरिक सन्यास क्यों न ले लें? वृद्ध तथा क्षीण होने की प्रतीक्षा करने की क्या आवश्यकता है। अपनी जवानी में ही यदि आप सहजयोग के अतिरिक्त हर चीज़ में निर्लिप्त हो गए तो भी आप सन्यासी हैं।

अध्याय 11

महर्षि पातंजलि का 'अष्टांग योग' और आज का 'सहजयोग'

एक जिज्ञासु ने परम पूज्या श्रीमाता जी से एक प्रश्न किया था कि सहजयोग पातंजलि-योग से किस प्रकार भिन्न है? उत्तर में पू० श्रीमाता जी ने समझाते हुए बताया था कि-

''सहजयोग पातंजलि से भिन्न नहीं है। ये एक ही हैं परन्तु लोग पातंजलि को पढ़ते ही नहीं। वे पातंजलि का केवल सोलहवाँ भाग ही पढ़ते हैं। **वास्तव में आपको चाहिए कि पूरा ''अष्टांग योग पढ़ें। अंत में वे (पातंजलि) इसी परिणाम पर आते हैं कि आपको निर्विचार चेतन, होना चाहिए जिसे निर्विचार समाधि निर्विकल्प समाधि कहते हैं। सहजयोग यही है।''**

प.पू.श्रीमाताजी, निर्मल सुरभि पुस्तक, पृ.218 से उद्धृत

महर्षि पातंजलि ने कहा है ''योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः'' अर्थात चित्त की वृत्तियों को रोकना ही योग है। इस निरोध के लिए तन, मन और इन्द्रियों की शुद्धता आवश्यक है। इसी शुद्धि के लिए आठ प्रकार के साधन हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। यम पाँच हैं और नियम भी पाँच हैं, इस प्रकार कुल सोलह भाग हैं, समाधि अंतिम सोलहवाँ भाग है। समाधि की स्थिति में साधक पूरी तरह चित्तवृत्तियों पर नियंत्रण प्राप्त कर लेता है।

1. यम- यम का आशय है संयम अर्थात नैतिक शिष्टाचार। ये मुख्यतः पाँच हैं जो इस प्रकार हैं-

(अ) अहिंसा- मन, वचन व कर्म द्वारा किसी भी प्राणी को किसी तरह का कष्ट न पहुँचाना, अर्थात् दूसरे जीव-जन्तुओं से प्रेम करना ही

अंहिसा है।

(ब) सत्य- सत्य नैतिकता का सर्वोच्च सिद्धान्त है। सत्य ही परमात्मा है और परमात्मा ही सत्य है। जैसा आँखो ने देखा, कानों ने सुना वैसा ही कहना सत्य है। सत्य हितकारी भी हो।

(स) अस्तेय - दूसरों की किसी वस्तु की प्राप्ति या भोग की इच्छा न करना ही अस्तेय है अर्थात दूसरे के धन के प्रति लालच न करना व चोरी न करना ही अस्तेय है।

(द) ब्रह्मचर्य - ब्रह्मचर्य का शब्दिक अर्थ है अविवाहित जीवन। धार्मिक अध्ययन और आत्मसंयम। दूसरे शब्दों में समस्त इन्द्रियों का संयम ही ब्रह्मचर्य है।

(य) अपरिग्रह - का अर्थ है वस्तुओं का संचय न करना।

2. नियम- चरित्र संबंधी विधान को नियम कहते हैं। नियम व्यक्तिगत अनुशासन के लिए लागू होता है। इस संबंध में महर्षि पातंजलि ने निम्न पाँच नियम बतलाएँ हैं-

(अ) शौच- इसका शब्दिक अर्थ है पवित्रता। शुद्ध और स्वच्छ रहने के लिए शारीरिक पवित्रता आवश्यक है। शरीर व मन को पवित्र रखना ही शौच है। स्नान आदि से बाहरी शरीर को शुद्ध किया जाता है जबकि योगासन एवं प्राणायम के द्वारा अंदर के शरीर को शुद्ध एवं मन को पवित्र किया जाता है।

' **संतोष** - जितना जो अपने पास है उसी से प्रसन्न रहना संतोष है। संतुष्ट व्यक्ति ही हमेशा प्रसन्न होगा। अपने कर्तव्य के पालन से जो खुशी मिलती है वही सबसे बड़ी संतुष्टि है।

(स) तप- तप का आशय है जलना, कष्ट सहना, प्रज्ज्वलित करना, चमकना। एक निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सुख-दुख,

सर्दी–गर्मी, भूख–प्यास की परवाह किए बिना मन और शरीर की साधना तथा सतत अथक प्रयत्न करना ही तप है।

(द) स्वाध्याय – अपने अंदर जो उत्तम है उसे प्रगट करना ही स्वाध्याय है। अच्छे विचारों का आदान–प्रदान, धर्म–शास्त्रों का अध्ययन व ज्ञान प्राप्ति ही स्वाध्याय है।

(य) ईश्वर प्राणिधान (समर्पण)– जब व्यक्ति अपने कर्म और इच्छा का समर्पण ईश्वर को करता है तो उसे ईश्वर प्राणिधान कहते हैं। मन, वाणी व कर्म से ईश्वर के प्रति समर्पित होना, ईश्वर का ध्यान करना, मनन व कीर्तन करना ही ईश्वर प्राणिधान है।

3. आसन – ''स्थिर सुखम् आसनम्'' अर्थात शरीर की जिस स्थिति में शरीर स्थिर रहे कोई कष्ट न हो, उसी शारीरिक स्थिति को आसन कहते हैं। आसन करने के लिए स्वच्छ हवादार स्थान, दृढ़ संकल्प व मृगचर्म या कबंल, चटाई की आवश्यकता है। विभिन्न आसनों के नियमित अभ्यास द्वारा नाड़ियों की शुद्धि, स्वस्थ शरीर, व मन की स्फूर्ति प्राप्त होती है।

4. प्राणायाम – श्वास–प्रश्वास की गति को सम बनाना प्राणायाम है। बाहरी वायु का लेना श्वास है और भीतरी वायु को बाहर निकालना प्रश्वास है। 'प्राण' का तात्पर्य श्वास जीवन वायु या शक्ति है, जबकि आयाम का अर्थ है लंबाई, विस्तार, कसावं। अतः प्राणायाम का आशय है श्वास का विस्तार।

प्राणायम के तीन प्रकार कहे गए हैं– पूरक, कुंभक और रेचक। योगी सोलह बार प्रणव (ओम) का उच्चारण कर सके उतने समय में ईड़ा यानी बाँयी नासिका के द्वारा बाहर की वायु खींचे यह पूरक प्राणायाम है। फिर इस पूरित वायु को चौसठ बार प्रणव का उच्चारण करने में जितना

समय लगे उतने समय तक सुषुम्ना में रोके रखे इसे **कुंभक प्राणायाम** कहते हैं। तदन्तर बीस बार प्रणव के उच्चारण में जितना समया लगे उतने समय में धीरे-धीरे पिगला-दाँयी नासिका के द्वार उसको बाहर निकाले इसे **रेचक प्राणायाम** कहते हैं। इस प्रकार पुनः पुनः बाहर की वायु लेकर पूरक, कुंभक और रेचक प्राणायाम का अभ्यास करें और क्रमशः मात्रा (प्रणव के उच्चारण का समय) बढ़ाते रहें।

प्राणायाम के अभ्यास से चित्त में एकाग्रता आती है।

5. प्रत्याहार- प्रति+आहार = प्रत्याहार। प्रति का अर्थ है प्रतिकूल या विपरीत और आहार का अर्थ है वृत्ति। जब इन्द्रियाँ अर्न्तमुखी हो जाती हैं और बाहरी विषयों से मुक्त हो जाती हैं तो उस अवस्था को प्रत्याहार कहा जाता है। जब यह अवस्था प्राप्त होती है तो साधक आत्म परीक्षण की खोज के मार्ग पर चल पड़ता है। प्रत्याहार की दशा में बाह्य विषयों का प्रभाव मन पर नहीं पड़ता।

6. धारणा- निर्मल चित्त को अपने इष्ट में लगा देने को ही धारणा कहते हैं। धारणा की सहायता से शांत मन को अपने इष्ट देव (ईश्वर) पर एकाग्रचित कर सफलता पूर्वक केन्द्रित किया जा सकता है।

7. ध्यान - धारणा की स्थिति में साधक अपने चित्त को जिस ईश शक्ति में लगाता है उसी में उसे लगातार लगाए रखने को ध्यान कहते हैं। ''तत्र प्रत्यैकतानता ध्यानम्'' अर्थात उस ध्येय वस्तु से एकाकार होकर जब उसका ज्ञान सतत प्रवाहित होता है, तभी वास्तविक ध्यान है। कहने का तात्पर्य है कि जब लक्षित ध्येय में (जिसका ध्यान कर रहे हैं) स्थित मनक्षण मात्र के लिए भी विचलित न हो और एकाकार हुआ धारावत प्रवाह बना रहे इसी धारावाहिता को ध्यान कहा जाता है।

8. समाधि - जब साधक अपने ध्यान की सर्वोच्च स्थिति पर पहुँच

जाता है तो उसे समाधि की अवस्था कहते हैं। साधक का सारा शरीर और इन्द्रियाँ स्थिर हो जाती हैं। समाधि की स्थिति में साधक सचेत होता है। साधक निर्विचार हो जाता है। समाधि में केवल इष्ट देव की सत्यता ही शेष रहती है।

ध्यान धारणा–समाधि ये योग के **अंतरंग साधन** हैं और यम, नियम्, आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार इन पाचों अंगों के समूह को **बहिरंग साधन** कहते हैं।

संस्कृति अंक कल्याण से संकलित

पू.श्रीमाताजी बता रही हैं– ''पुराना जो पातंजलि शास्त्र था उसमें जो अष्टांग योग कहा गया है उससे सारे आठो अंगो पर ज़ोर है इसीलिए केवल आसन करने मात्र से लोगो के दिमाग़ में ये आने वाला नहीं ...ऐसा आसनों से शारीरिक दृष्टि से आपको ठीक लगने लगेगा।

आजकल का हठ योग सिनेमा एक्टर–एक्ट्रेस बनाने वाला है।

पू.श्रीमाताजी, कुंडलिनी और ब्रह्मशक्ति

''पातंजलि शास्त्र ने थोड़े से व्यायाम आदि लिखे हैं। सहजयोग में समस्या को समझ कर हम भी इनका उपयोग करते हैं। हमारा अस्तित्व केवल शारीरिक, मानसिक या भावात्मक ही नहीं हमारा आध्यात्मिक अस्तित्त्व भी है।

6-12-91, मद्रास, खण्ड IV, अंक 17, 1992

''पातंजलि योग की मुख्य बात भी ''ईश्वरीय प्राणिधान'' प्राप्त करना है, परमात्मा को अपने अन्दर स्थापित करना है। परमात्मा को यदि आपने अपने अन्दर स्थापित नहीं किया है तो ये सब अभिनेता या अभिनेत्री बनने जैसा है जिसका कोई अधिक महत्त्व नहीं है। ये सारे व्यायाम आपके चक्रों और शरीर को ठीक करने के लिए होते हैं और

किसी विशेष तकलीफ के लिए कोई विशेष आसन किया जाता है। ... जिस प्रकार आजकल लोग हठयोग करते हैं वो तो एक बार में दवाइयों का पूरा बक्सा खा लेने जैसा है।

पू.श्रीमाताजी, हाँगकाँग 1992, साक्षात्कार से, 'निर्मल सुरभि' पृ.209

पूज्य श्रीमाता जी ने ध्यान-धारणा-समाधि को स्पष्ट किया है-

''सर्वप्रथम ध्यान है, दूसरे धारणा, फिर समाधि। साधना जब आपमें जागृत होती है तो आप अपना चित्त अपने इष्ट पर डालते हैं यह ध्यान है। आपने निरंतर अपना चित्त अपने इष्ट देवता पर रखना है, तब आप में वह स्थिति विकसित होती है जो धारणा कहलाती है, जिसमें आपके चित्त का एकीकरण इष्ट देवता के साथ हो जाता है। यह स्थिति परिपक्व होने के पश्चात तीसरी अवस्था समाधि का उदय होता है। यह कौन सी अवस्था है?आपके मस्तिष्क में वह स्थिति बन जाती है तो कुछ भी आप कहते हैं, जिस इष्ट की पूजा आप करते हैं, अपने कार्य में भी आप उसी इष्ट को देखते हैं, आपको लगता है वह इष्ट आपका पथ प्रदर्शन कर रहा है।

..... (सहजयोग में) अब जो अवस्था अन्दर जागृत हुई है यह मस्तिष्क की एक नई अवस्था है- ''ऋतम्भरा प्रज्ञा'' जिसमें आपकी एकाकारिता प्रकृति से है और प्रकृति की एकाकारिता आपसे। तो परमात्मा भिन्न घटनाओं, कार्यों तथा आपके प्रति परमेश्वरी चिंता द्वारा स्वयं प्रकृति के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति कर रहे हैं। यह घटित होता है- यही समाधि की अवस्था है।

पू.श्रीमाताजी, 19-1-84, बम्बई, न.दि.1999

अध्याय 12

जगद्गुरु श्री शंकराचार्य का वेदान्त दर्शन

श्री शंकराचार्य का जन्म 788 ई. (संवत 845) में हुआ और मृत्यु 820 ईसवी में हुई। मालावार प्रान्त के एक नम्बूद्री ब्राह्मण के घर जन्म लेकर इन्होंने काशी को अपना कर्मक्षेत्र बनाया। ये आचार्य गौड़ापाद के शिष्य गोविन्द भगवत्पाद के शिष्य थे। इनके विषय में प्रसिद्ध है कि इन्होंने आठ वर्ष की आयु में चारो वेदों, बारहवर्ष की आयु में सारे शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। सोलह वर्ष की आयु में आपने अनेक भाष्य (टीकायें) लिखे और बत्तीस वर्ष की आयु में निर्वाण प्राप्त किया। इस अल्पायु में आपने वैदिक धर्म की प्रतिष्ठा का जो महान कार्य किया वह अद्वितीय है।

इनकी प्रसिद्ध रचनायें हैं- 'उपनिषद भाष्य', 'गीता भाष्य', 'ब्रह्मसूत्र भाष्य', 'सौन्दर्य लहरी', 'विवेक चूड़ामणि' व 'उपदेश सहस्त्री' आदि। आपने अत्यंत गंभीर विषयों को सरल व रोचक शैली में अभिव्यक्त किया है।

श्री शंकराचार्य वेदान्तवादी थे। उन्होंने आजीवन वेदान्त दर्शन के महत्वपूर्ण सूत्रों को ही पुनर्प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया। ये महत्वपूर्ण सूत्र इस प्रकार है-

❒ वेदान्त मानता है कि इस जगत में सर्वत्र एक ही अखंड सत्ता विद्यमान है। ब्रह्मांड में व्याप्त उसका स्वरूप परमात्मा और पिंड यानी शरीर में स्थित वही आत्मा है। दोनों में सागर और उसकी बूँद की तरह कोई भेद नहीं है।

❒ ब्रह्म (परमात्मा) के दो रुप होते हैं सगुण ब्रह्म तथा निर्गुण ब्रह्म दोनों एक ही हैं परन्तु दृष्टिकोण की भिन्नता से दो रुपों में गृहीत किए जाते हैं। सगुण ब्रह्म या ईश्वर की कल्पना व्यावहारिक दृष्टि से इसलिए

की गई है कि जीव उस सर्वशक्तिमान सत्ता की उपासना करना चाहता है और उसे दया क्षमा आदि अनेक गुणों से पूर्ण मानता है। ब्रह्म का निर्गुण रुप वह कहा गया है जिसमें किसी गुण की सत्ता नहीं मानी जा सकती। निर्गुण ब्रह्म ही वास्तविक सत्ता है परन्तु व्यवहार के लिए उपासना के निमित्त वही सगुण ईश्वर माना जाता है।

❒ आत्मा स्वयं सिद्ध है उसी से यह नानारुपधारी जगत प्रकाशित होता है जैसे सूर्य के प्रकाश से जगत प्रकाशित होता है पर सूर्य को क्यों कर प्रकाशित किया जा सकता है, इसी तरह आत्मा की सत्ता स्वयं सिद्ध होती है।

❒ वेदान्त में बार-बार कहा गया है कि यह जगत नितान्त मिथ्या है।

❒ श्री शंकराचार्य ने समझाया कि जिस रुप से जो पदार्थ निश्चित होता है यदि वह सतत और समभाव से विद्यमान रहे तो उसे सत्य करते हैं। जगत के तो सभी पदार्थ परिवर्तनशील है अतः जगत को सत्य नहीं माना जा सकता है। उन्होंने बताया कि ब्रह्म ही एकमात्र ऐसा तत्त्व है जो कि भूत-भविष्य-वर्तमान तीनों कालों में और जाग्रत-स्वप्न-सुषुप्ति तीनों अवस्थाओं में एक रहता है अतः केवल वही एक सत्य है शेष नाना रुपधारी जगत मिथ्या है।

❒ समाधि अवस्था में साधक का अहं आत्मतत्त्व में लय हो जाता है, साधक की बुद्धि सम हो जाती है और विचार प्रवाह पूरी तरह समाप्त हो जाता है। सतत अभ्यास द्वारा शुद्ध हुआ मन जब ब्रह्म में लीन हो जाता है तब निर्विकल्प समाधि स्वतः ब्रह्म रस का अनुभव कराती है। (यही तुरीयावस्था है।)

❒ श्री शंकराचार्य जी कर्म का तिरस्कार नहीं करते वरन् चित्त शुद्धि के लिए निष्काम कर्म के अनुष्ठान पर जोर देते हैं।

❒ श्री शंकराचार्य जी ने दो प्रकार के सत्य का प्रतिपादन किया है- व्यावहारिक एवं परमार्थिक। उन्होंने ईश्वरीय कृपा के साथ उपासना,

भक्ति और सदाचार को भी महत्त्व दिया है।

विवेक चूड़ामणि से संकलित

परम पूज्या श्रीमाता जी ने जगतगुरु श्री शंकराचार्य के विषय में बताया है कि-

''स्वयं 'बुद्ध' ने इस संसार में जन्म लिया और वो ही हमारे हिन्दू धर्म के संस्थापक, जिन्हें हम मानते हैं, आदि शंकराचार्य जी वो ही थे, वे बुद्ध ही थे।''

..... उन्होंने बहुत बड़ी किताब लिखी थी ''विवेक चूड़ामणि''। पता नहीं आप लोग पढ़ते हैं कि नहीं पढ़ते होंगे ज़रूर, क्योंकि आप लोग सनातन धर्मी हैं।

पू.श्रीमाताजी, 17-2-81 दिल्ली

''चौदह हज़ार वर्ष पूर्व मार्कण्डेय नामक संत हुए उन्होंने चतुर्थ आयाम (तुरीयावस्था) के विषय में लिखा और उसको आदिशक्ति माँ का आशीर्वाद कहा। **इस ज्ञान में पारंगत दूसरे व्यक्ति आदि शंकराचार्य थे, जिन्होंने बहुत से ग्रन्थ लिखे। ''विवेक चूड़ामणि'' उनका पहला ग्रन्थ था इसमें उन्होंने चतुर्थ आयाम का वर्णन करते हुए व्याख्या की है** कि क्यों हमें यह चतुर्थ आयाम प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए।

श्री.शर्मा नामक एक बुद्धिवादी ने उन्हें चुनौती दी और बताया कि सन्यासी के रुप में वे कुछ नहीं कर सके और न ही मेरी बुद्धि पर विजय प्राप्त कर सके। श्री आदि शंकराचार्य को लगा कि सर्वसाधारण व्यक्ति के लिए यह सारा विचार विमर्श मात्र मानसिक कलाबाजियाँ है। अतः उन्होंने माँ आदिशक्ति की स्तुति करते हुए एक पुस्तक लिखने का निर्णय लिया। **''सौन्दर्य लहरी''** में, विशेष रुप से उन्होंने दिव्य लहरियों का माँ आदिशक्ति के प्रेम सौन्दर्य की लहरियों के रुप में वर्णन किया।

उस समय यह सब संस्कृत भाषा में लिखा गया था जिसे आम आदमी नहीं समझ सके। केवल कुछ विद्धान लोग ही उसे समझ पाए और उन्होंने भी इस प्रतिपादन की सूक्ष्मता में नहीं जाना चाहा।

प.पू.श्रीमाताजी, परा आधुनिक युग

– आदि शंकराचार्य ने कहा था कि **''न योगे न सांख्येन''** योग, सांख्य से कुछ नहीं होने वाला है।... विवेक चूड़ामणि के बाद उन्होंने दूसरी किताब लिखी जो ''सौन्दर्य लहरी'' है। पता नहीं आप लोग पढ़े होंगे, सारा उसमें माँ का वर्णन है, पूरा। यहाँ तक कि सब उनका आकार प्रकार, उनका तौर तरीका उनको कौन सा तेल पसन्द है, सर में कौन सा तेल डालती है। इतन बारीक लिख गए। **''विवेक चूड़ामणि''** तो इतनी भारी चीज़ लिख दी और अब यह माँ का वर्णन। यह क्या लिख रहे हैं? कहने लगे इसके सिवाय इलाज नहीं। **माँ के सिवाय इलाज नहीं, वो ही सब करेगी।** यह शक्ति का काम है। इसलिए हम सब शक्ति के पुजारी हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 17-2-81, दिल्ली

– ''सौन्दर्य लहरी'' का हर श्लोक मंत्र रुप है। यह बुद्धि के माध्यम से बुद्धि का समर्पण नहीं है, यह हृदय का सर्मपण है।

प.पू.श्रीमाताजी, 19-12-82, मार्च-अप्रेल २००५

– ''जो निर्गुण है उसको आदि शंकराचार्य ने स्पन्द कहा। स्पन्दन माने आपके अंदर जो चैतन्य की भावना है, चैतन्य जो महसूस होता है जिसे vibrations कहते हैं, वो ही स्पन्दन है।

प.पू.श्रीमाताजी, 13-3-2000, बंबई

– ''श्री शंकराचार्य ने बहुत साफ-साफ इस बात की घोषणा की थी कि इन्हीं चैतन्य लहरियों का आना ही परमात्मा को पाना है।''

प.पू.श्रीमाताजी, 27-3-74, मुंबई

अध्याय 13

ब्रह्म का निराकार-साकार स्वरूप एवं उपासना पद्धति

ईश्वर निराकार रुप में सर्वत्र विद्यमान है। साकार रुप में वे पृथ्वी पर अवतरित होते हैं। देव मूर्तियाँ निराकर देवी शक्तियों की साकार रुप में एक कल्पना है। देवमूर्तियाँ दो प्रकार की होती हैं एक तो **स्वयंभू** जो पृथ्वी के गर्भ से उत्पन्न हुई और दूसरी **पराकृति** जिन्हें मनुष्यों की कला ने भगवान का आकार दिया। दोनों प्रकार की मूर्तियाँ मंदिरों में प्रतिष्ठित हैं।

भारतीय संस्कृति में पैंतीस करोड़ देवी देवता माने गए हैं। ब्रह्माण्ड की दिव्य शक्तियों में से एक एक शक्ति पर एक-एक देवता का अधिकार है, जिस शक्ति पर जिसका अधिकार है वही उसका देह है जो उसके वश में है। प्रत्येक देवता एक दिव्य शक्ति का नियन्ता है पर सबके ऊपर उन सबका नियन्ता परमेश्वर है।

हमारे देश में तीन सम्प्रदाय बन गए- शैव (शिव भक्त), शाक्त (देवी भक्त) और वैष्णव (विष्णु भक्त)। गौरी पुत्र श्री गणेश सबके लिए पूजनीय हैं और श्री हनुमान भी श्री शंकर के ग्यारहवें अवतार के रुप में पूज्य हैं।

अधिकांश मंदिर इन्हीं देवताओं के हैं। इन मंदिरों का निर्माण हमारे ग्रंथों में दिये गए नियमों के आधार पर प्राचीन समय में राजकुलों द्वारा किया गया है। **भारतीय मंदिर केवल शिल्पकला के अन्यतम उदाहरण मात्र नहीं है वरन वे हमारी आस्थावादी संस्कृति के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। भारत के सभी मंदिर हमारी प्राचीन धार्मिक मान्यताओं एवं आध्यत्मिक अवधारणाओं को प्रतिबिम्बित करते हैं।**

देवताओं की उपासना के दो विधान हैं मंत्र और यज्ञ। दोनों का

उद्देश्य देवताओं को प्रसन्न करना है। हमारी संस्कृति में देवता मंत्र स्वरूप माना जाता है। हर देवता के अलग-अलग मंत्र होते हैं जिनके शुद्ध उच्चाराण द्वारा देवताओं की स्तुति की जाती है और उनसे अपनी कामना पूर्ति की प्रार्थना की जाती है।

यज्ञ का प्रयोजन भी देवताओं को तृप्त करना है। अग्नि को देवताओं का मुख कहा गया है। देवताओं का मुख्य भोजन घृत है इसीलिए यज्ञाग्नि में घी की आहुतियाँ दी जाती हैं। ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में ऋषि कहते हैं- ''मैं अग्निदेव की स्तुति करता हूँ, याचना करता हूँ।''

मनुस्मृति (3176) में स्पष्ट किया गया है कि 'यज्ञ से देवताओं की तृप्ति का रहस्य यह है कि जब हम अग्नि में घी तथा अन्य हवन सामग्री डालते हैं तब अग्नि उस स्थूल सामग्री को जलाकर सूक्ष्म कर देती है और स्वयं भी शान्त होकर सूक्ष्म हो जाती है। उसके बाद सूक्ष्म अग्नि उस सूक्ष्म हवि को लेकर अपने मित्र वायु की सहायता से आकाश की ओर जाती है तथा आकाश में स्थित सभी देवताओं को वह सूक्ष्म हवन सामग्री पहुँचा देती है। उससे तृप्त होकर देवता प्रजा (प्राणियों) के हित के लिए धनधान्य की उत्पत्ति के लिए वर्षा कर देते हैं।

कल्याण के संस्कृति अंक से संकलित

''वेदों द्वारा कर्मफल को सम्पन्न करने के लिए चार देवियाँ- स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा एक दक्षिणा मयी देवियाँ निरुपित हुई हैं। यज्ञकर्मों की पूर्ति के लिए ये चार रुप ब्रह्मा ने बनाएँ हैं।

स्वधा पितरों की पत्नी हैं। मंत्रों के अंत में ''स्वधा'' लगाकर मंत्रो का उच्चारण करके पितरों के उद्देश्य से पदार्थ अर्पण करना चाहिए।

स्वाहा अग्नि की पत्नी है। वे अग्नि की दाहक शक्ति हैं। इनके बिना अग्नि आहुतियों को भस्म करने में असमर्थ है। उन्हें ब्रह्मा जी ने वरदान

दिया था कि ''जो ब्राह्मण मंत्र के अंत में ''स्वाहा'' नाम का उच्चारण करके देवताओं को पदार्थ अर्पण करेंगे वह देवताओं को सहज उपलब्ध हो जाएगा। इसी कारण ऋषी, मुनि, ब्राह्मण क्षत्रिय आदि सभी श्रेष्ठ वर्ण ''स्वाहान्त'' मंत्रो का उच्चारण करके अग्नि में हवन करते हैं।

दक्षिणा देवी की महत्ता है। कर्ता को चाहिए कि कर्म करने के पश्चात तुरंत दक्षिणा दे तभी साद्यफल प्राप्त होता है ये वेदों की स्पष्ट वाणी है। ये देवी सम्पूर्ण यज्ञों का फल प्रदान करती हैं।

स्वस्ति देवी कल्याणदायिनी हैं। सबका कल्याण करती हैं।

श्री देवी भागवत, नवाँ स्कंध अध्याय 43

साकार रुप में विभिन्न देवी-देवताओं की मूर्तियों की पूजा करने की भी विशेष विधि होती है। इनमें प्राणप्रतिष्ठा की जाती है तब इन्हें मंदिरों में स्थापित करते हैं। पूजा में जल, चंदन, रोली, अक्षत, पुष्प नैवेद्य (भोग) दीप और धूप इन अष्ट पदार्थों को श्रद्धा भाव से देव प्रतिमा को अर्पण किया जाता है।

परम पूज्या श्री निर्मला माँ भगवती आदिशक्ति का महामाया रुप हैं। **स्वयं परमेश्वरी माँ साकार रुप में पृथ्वी पर अवतरित हुई, उनके शरीर में समस्त देवी-देवताओं का वास है। हम सहजियों को परमेश्वरी माँ के साक्षात स्वरुप की पूजा का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। पूज्य श्री माँ की पूजा-अर्चन द्वारा समस्त देवी शक्तियों की आराधना हो जाती है।** श्री माँ ने स्वयं हमें पूजा विधि बताई है। पू॰ माँ के चित्र महत्त्वपूर्ण है हम सहजी श्रद्धापूर्वक उसकी पूजा करते हैं।

परमपूज्या श्रीमाताजी ने हमें इस विषय में बहुत विस्तार से समझाया है।

-''सनातन धर्म और आर्य धर्म आदि में सदियों से झगड़े चले आ रहे

हैं।... अब निराकार साकार की बात थोड़ी सी समझा दें, तो ये झगड़े खत्म हो जाएँगे।

जिस वक्त हमारी पिंगला नाड़ी बनायी गयी... हमारे राइट साइड में उस वक्त ये पाँच तत्त्व जो थे, उनकी जाग्रत करने की बात थी। आप पाँच तत्त्व जानते हैं जिससे सारी सृष्टि बनायी गयी (आकाश, वायु, अग्नि, पृथ्वी और जल)। इनको जाग्रत करना था इसलिये यज्ञ वगैरह हमारे वेदों में किये गए, स्मृतियाँ पढ़ी गयी हैं। यज्ञों में, ये पाँच तत्त्व हैं इसको जाग्रत किया गया। ये पाँच तत्त्व जाग्रत करना ज़रूरी चीज़ है। अग्नि को जाग्रत करना था, पानी को जाग्रत करना था क्योंकि इनकी जागृति के कारण ही मनुष्य इनका इस्तेमाल कर सकता था। उसके बाद ही खेती बाड़ी शुरु हुयी।

आज का साइन्स भी इसी वजह से मनुष्य के समझ में आया। अगर हमारी पिंगला नाड़ी जाग्रत न होती तो हम कभी भी साइन्स न सोच पाते ना हम यह समझ पाते कि पाँच तत्त्वों को हम किस तरह इस्तेमाल करें। बिजली कैसे बनाए और किस तरह से हम इस अग्नि का इस्तेमाल करे, अग्नि तक का हमें पता न था, हम अग्नि भी न बना पाते। ये सब हम बना सके इसलिए राइट साइड की पूजा होती हैं। इसलिए यज्ञ होते रहे और निराकार में जो ये पाँच शक्तियाँ हैं तो निराकार ही पूजा होती रही उस ज़माने में।

लेकिन उस में जब आगे लोगों ने सोचा कि जागृत कर लिया, अब आगे क्या? तो फिर मनन की चीज़ शुरु हुई। तब फिर सेंट्रल पथ पर आ गए। जब सेन्ट्रल पथ पर सुषुम्ना नाड़ी पर चढ़नी शुरु हुई तो उन्हें दिखाई देने लगा कि ये देवी-देवता इस जगह पर बैठे हुए हैं। ये जो पाँच तत्त्व बने हैं इन्हीं से इन चक्रों की बाडीज़ भी बनी हैं। इनकी जो शरीर रचना है वो तो इन्हीं पाँच तत्त्वों से बनी है।

तो जब इन्होंने इन तत्त्वों को जानना शुरु किया तो देखा कि इनके देवता हैं, तब इन्होंने मनन विधि में उन देवताओं को जानना शुरु किया।

एक के बाद एक, एक के बाद एक। तब इन्होंने कहना शुरु कर दिया कि यह साकार भी है तो निराकार से साकार पर लोग उतरने लग गए। जैसे-जैसे चेतना बढ़ती गयी वैसे वैसे लोग आने लग गए। उसके बाद साकार पर जो आ गए... तो इसकी पूजा कर उसकी पूजा कर, Ritualism आ गया अंधश्रद्धा आ गयी, धर्मान्धता आ गई, बड़ा बुरा हाल हो गया।

तब से एक बड़ा भारी आन्दोलन हुआ, इतना ही नहीं मोहम्मद साहब जैसे लोग संसार में पैदा हुए, क्राइस्ट संसार में आए। इन्होंने सबसे कहा कि निराकार ही ठीक है, साकार को खत्म करो। हांलाकि बड़ा गोपनीय है ये सब कुछ इतना बाईबल में लिखा हुआ है, जो कुछ पृथ्वी ने बनाया हुआ है और जो कुछ आकाश ने बनाया है उसका प्रतिरुप तो बनाइये, ये बड़ी मार्मिक चीज़ है। इसको एक ईसाई लोग समझें तो समझ लें कि मूर्ति पूजा क्या है?अब पृथ्वी ने कौन सी चीज़, बनायी है? उसकी प्रतिरुप कर के उसकी पूजा नहीं करना चाहिए। ...जितने स्वयं भू लिंग हैं ये पृथ्वी ने स्वयं बनाए हैं, और इसके प्रतिरुप आपने जो बनाए भी वो पूजनीय होता ही नहीं क्योंकि वह imperfect है। इसका भी co-efficent होता है, इस आकार का भी Co-efficent होता है। उस आकार के कारण ही चैतन्य बहता है। और हू-बहू वैसा आकार बनाना असम्भव है और जो बनाता है वो भी realized soul होना चाहिए और वो उसे बेचना नहीं चाहिए उसको। इसलिए जितने भी मूर्तियों की हम पूजा करते हैं, अधिकतर इस हिसाब से जीरों हैं।... इसलिए मूर्ति पूजा का खण्डन है।

..... अब काबा के अन्दर जो पत्थर है वो साक्षात शिवलिंग है। पृथ्वी से निकला हुआ शिवलिंग है वो। उसे मोहम्मद साहब जानते थे और जितने भी शिवलिंग हैं वो साक्षात है जिसको देखिए वही उसकी मूर्ति बना ले, मिट्टी बना ले, पत्थर का बना ले, ये बनाने की इज़ाजत नहीं है। इसकी मूर्ति पूजा वर्जित है, इसलिए मूर्तिपूजा बाधक है। ...ऐसी मूर्तियों की पूजा

नहीं होनी चाहिए साकार परमात्मा नहीं होते, यह कहना बहुत ग़लत बात है। इसका मतलब यह है आपने वन साइडेडनेस ले ली।

समझ लीजिए हम आपसे कहें कि शहद को खोज लाएँ तो हम आपसे पहले फूलों का वर्णन करें कि फूल ऐसा होना चाहिए, वैसा फूल मिलेगा, उन में से शहद ले आइए। आप गए और देख के चले आए कि हाँ भई फूल मिल गया। अब फूलों की ही पूजा करने लग गए। इससे शहद आपको नहीं मिलेगा। बातचीत से शहद नहीं मिल सकता। सिर्फ फूलों की बातचीत होती रही... शहद नहीं मिलता बातचीत से।... तो उन्होंने कहा शहद की बात करते हैं, तो दूसरी बात शुरु कर दी निराकार की वो भी बातचीत तो बातचीत ही रह गयी दिमाग़ी ज़मा खर्च आप चाहे शहद की बात करो, चाहे फूल की बात करो, आपको शहद नहीं मिल सकता जब तक आप स्वयं मधुकर न हो जाए। जब तक आप स्वयं ही मधु को पाने के योग्य न हो जाएँ तब तक आपको शहद नहीं मिल सकता। फूल भी ज़रूरी है और शहद भी ज़रूरी है और शहद पाने के लिए आपका वो होना ज़रूरी है जिसे मधुकर कहते हैं।

अब उस ज़माने में या पिछले ज़माने में जब हम अपने पाँच तत्त्वों को प्रबुद्ध कर रहे थे (निराकार) उस चीज़ को लेकर आज झगड़ा करने की कोई ज़रूरत नहीं। वह भी सही था और यह भी सही है, बिल्कुल सही है कि **परमेश्वर अवतार के रूप में संसार में आकर मनुष्य का उद्धार करते हैं- यह भी बिल्कुल सनातन बात है और यज्ञ करना भी सनातन बात है जिसके कारण आप थे पाँच elements हैं अपने अन्दर में उनकी शुद्धि करें** क्योंकि जब आपके चक्र शुद्ध नहीं हुए तो मेरा कहना भी व्यर्थ है। वो भी ज़रूरी चीज़ है और आत्मा को जानना भी ज़रूरी चीज़ है।

प.पू.श्रीमाताजी, 4 मार्च 1979, देहरादून

अपने हृदय को स्वच्छ करने के लिए हवन का विधान है–

''ललिता पंचमी'' पूजा – ललित का मतलब है सुन्दर, अति सुंदर, गौरी जी का नाम है। कल गणेश जी का जन्म हुआ है इसलिये आज ''ललिता पंचमी'' को गौरी जी का दिन मनाया जाता है। वैसे भी आप जानते हैं कि मेरी कुण्डलिनी माने कुण्डलिनी का नाम ललिता है। लालित्य सौन्दर्य को कहते हैं, मुनष्य वही सुन्दर होता है जिसमें sense of gratitude (उपकार बुद्धि) होती है। जिस इन्सान में sense of gratitude जरा भी न हो वह इन्सान पशुवत है।... कैसी अजीब चीज़ है कि इंसान अपने से इस तरह compromise कर लेता है, वो अपने अन्दर का जो लालित्य है उसे भी नहीं पहचानता और अपने अंदर जो अग्लीनेस ugliness हैं उसके साथ रहता है हरदम... आपके अंदर जो गंदे तत्त्व हैं उन पर आप जी रहे हैं, उसे हम लोग भूत कहें, बाधा कहें कुछ भी कहें। ये आदत लग जानी चाहिए हमारे अंदर, सब सहजयोगियों के अंदर कि हमारी गंदगी की हम सफाई करें।

..... आज बड़ा शुभ दिन है ...आज श्री गणेश का स्मरण कर के हम लोग हवन करेंगे, अपने हवन को पूरी तरह से सम्पन्न करेंगे। ...मुझे आशा है कि इस यज्ञ से इस हवन से हम लोगों के हृदय स्वच्छ हो जाएंगे और हमारी उत्क्रांति में बहुत मदद मिलेगी।

प.पू.श्रीमाताजी, 5-2-76, बंबई

अध्याय 14

प्रचलित धार्मिक अनुष्ठानों के मूल तत्त्व को समझें

1. यज्ञोपवीत या उपनयन संस्कार - (जनेऊ धारण)- उप = पास; नयन= ले जाना, बालक को विद्यारम्भ के लिए आचार्य के पास ले जाना। उपनयन संस्कार करवा कर बालक को आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक शुद्धि के लिए तीन लड़ों का बना हुआ सूत का जनेऊ पहनाया जाता है और उसको आध्यात्मिक जीवन के लिए प्रतिबद्ध कराया जाता है, उसे उत्तरदायित्व का बोध कराया जाता है। इसके अनन्तर ही बालक गुरुकुल में विद्या प्रारंभ करता है। यज्ञोपवीत हिन्दू संस्कृति का चिन्ह है। युगों से मान्य यह संस्कार हमें ऋषि चरित्र का स्मरण कराता है। यह धागा पवित्रता एवं ब्राह्मणत्व की निशानी है।

कल्याण संस्कृति अंक से

2. शिखा धारण - तैत्तरीय उपनिषद में लिखा है कि ''तालु के मध्य भाग में गुच्छा की तरह जो केशराशि है, यहाँ केशों का मूल है यह 'इन्द्रयोनि' अर्थात परमात्मा को पाने का मार्ग है। बालक की शिखा रखा कर दैवी जगत से संबंध कराया जाता है और उसके उत्तमांग (सिर) को देव मन्दिर के रुप में परिणत किया जाता है। संध्या-वंदन आदि के अवसर पर परमात्मा की कृपा शिखा द्वारा ही हमारे अंदर पहुँचती है तभी नंगें सिर ही संध्या करने का नियम है।

संस्कृति अंक कल्याण से

3. काषाय वस्त्र धारण करना (गेरुआ वस्त्र)- काषाय वस्त्र विद्वता एवं तपस्वी का द्योतक माना जाता था परन्तु आज लोग काषाय वस्त्र धारण कर सन्यासी होने का ढोंग करने लगे हैं।

4. अन्त्येष्टि क्रिया-संस्कार रहस्य - मरण के पश्चात मृत शरीर को अग्नि प्रदान करके वैदिक मंत्रों द्वारा दाह-क्रिया की जाती है। दशगात्र विधान (दसंवॉ) तेरहवीं या सत्रहवीं आदि क्रियाएँ इसी संस्कार के अंतर्गत हैं। जीवात्मा जब अपना स्थूल शरीर छोड़ता है तो उसके सूक्ष्म शरीर को एक वायवीय शरीर मिलता है, इसी समय जीव की प्रेत संज्ञा पड़ती है अर्थात वह गतिशील और हल्का हो जाता है। प्रेत योनि में भी वह अपने पूर्व शरीर के सूक्ष्मावयवों (परमाणु) के पास ही बने रहना चाहता है। इसीलिए इस प्रेतत्व से छुटकारे के लिए दशगात्र क्रिया हमारे शास्त्रों में बतलायी गई हैं। मृत आत्मा की मुक्ति के लिए ही मृत शरीर को जलाने की प्रथा वर्णित है। इससे मृत आत्मा का सम्बन्ध पूर्व शरीर से विच्छिन हो जाता है।

उसके पश्चात तेरहवीं या सत्रहवीं में हवन आदि शास्त्रविहित क्रियाओं के द्वारा अर्पित सामग्रियों से तृप्त होकर वह आत्मा प्रेत शरीर को छोड़ देता है और मुक्त होकर अपने पितरों के साथ पितृलोक में निवास करता है। ऐसी ही हमारे शास्त्रों की मान्यता है।

संन्यासियों के लिए अग्नि संस्कार शास्त्र में नहीं बताया गया है क्योंकि उनकी वासनाएं इस जीवन में ही तपादि कर्म से भस्म हो जाती हैं और उनके मृत शरीर में जीवत्मा को आकर्षित करने वाली कोई वस्तु नहीं बचती।

बालकों का शरीर जलाया नहीं जाता, उसे भूमि के अंदर गाड़ दिया जाता है क्योंकि बालकों की मृत आत्मा अपने स्थूल शरीर के प्रति आकर्षित नहीं होती वह पूर्व शरीर का मोह-सम्बन्ध शीघ्र त्याग कर नए शरीर (पुनर्जन्म) को प्राप्त करती है।

संस्कृति अंक कल्याण से संकलित

5. श्राद्ध कर्म - अपने मृत पितृ गणों (स्वजनों) की मुक्ति एवं

तृप्ति के लिए श्रद्धा पूर्वक किए जाने वाले कर्म विशेष को श्राद्ध कहते हैं। पितरों की श्रेणी में तीन पीढ़ियाँ पिता, पितामह और प्रपितामह गिनी जाती हैं। श्राद्ध एक प्रकार से पितृ यज्ञ है। श्राद्ध दो प्रकार से किया जाता है एक तो हम पितरों के नाम से अग्नि में हवि द्वारा करते हैं, दूसरे अग्नि के सहोदर कहे जाने वाले ब्राह्मण को पितरों के नाम से भोजन करवायें और दान दक्षिणा दें। ब्रह्मपुराण में कहा गया है कि– ''देश काल और पात्र में श्रद्धा द्वारा जो भोजन पितरों के उद्देश्य से ब्राह्मणों को दिया जाए उसे श्राद्ध कहते हैं।'' गरुण पुराण में भी उल्लेख है ''श्राद्ध से संतुष्ट होकर पितर मनुष्यों के लिए आयु, पुत्र, यश, स्वर्ग, कीर्ति, पुष्टिबल, वैभव, सुख, धन और धान्य देते हैं।''

पितृलोक को यमलोक भी कहते हैं क्योंकि यम प्रथम पितर माने जाते हैं। पितरों को देव माना गया है और ऐसा विश्वास है कि जीवात्मा जब स्थूल शरीर छोड़ कर सूक्ष्म रुप से पितृलोक जाती है तो उसकी शक्ति बढ़ जाती है। पितरों में इस पृथ्वी लोक का नियमन करने की सामर्थ्य आ जाती है। श्राद्ध कर्म से तृप्त होकर पितर पृथ्वी पर निवास करने वाले अपने सगे संबधियों की अनेक प्रकार से सहायता करने में समर्थ हो जाते हैं। इसीलिए पितरों हेतु श्राद्ध कर्म की मान्यता है।

कल्याण संस्कृति अंक से संकलित

इन सभी धार्मिक अनुष्ठानों के अतिरिक्त भवन निर्माण के समय भूमि पूजन, गृह प्रवेश एवं संस्कार आदि सभी मांगलिक कार्यों में **देव शक्तियों के प्रति श्रद्धा, आचार्य (पंडित) के प्रति आदर एवं शुद्ध मंत्रोच्चारण एवं सही क्रिया विधि अनिवार्य है।** इन अनुष्ठानों के मूल में व्यष्टि और समष्टि दोनों के कल्याण का भाव मुख्य था पर आज इनके मूल अर्थ और भाव को पूरी तरह विकृत कर दिया गया है। इन कर्मकाण्डों की जो व्यापक अवधारणा हमारे ऋषियों ने की थी उसे बहुत ही संकीर्ण

और कहर बना दिया गया। धर्म के नाम पर बस बाहरी आडम्बरों का बोलबाला है। **''लोग अंधश्रद्धाओं और कुगुरुओं के जाल में फँस गए हैं जो धर्म के मूल तत्त्वों को नहीं समझते।''**

प.पू.श्रीमाताजी

आज धर्म के नाम पर अनेक गतिविधियों का प्रचलन निरंतर बढ़ता जा रहा है जैसे- देवी जागरण, कलश यात्रा, काँवरिया प्रथा, कुंभ मेला, दही-हाँडी, तीर्थाटन, प्रवचन, भागवत सप्ताह, ब्राह्मण भोज और न जाने क्या क्या। पर इन सबके पीछे परमात्मा के प्रति श्रद्धा समर्पण एवं आभार प्रगट करने का और उनसे जुड़े रहने का **जो मूल भाव था वह तो समाप्त हो गया और ये सारे के सारे आयोजन कोरे कर्मकाण्ड बनकर रह गए जिनमें पवित्रता एवं आत्मशुद्धि के स्थान पर दिखावा और आडम्बर मुख्य हो गया।** एक प्रकार से धर्म भी व्यवसाय हो गया और उसका शुद्ध रुप पूरी तरह विकृत हो गया।

श्रीमाताजी हमें समझा रही हैं-

''जीवन में कुछ घटनाएं होनी होती हैं, जीवन ऐसा ही है। किसी की मृत्यु होनी होती है, सभी लोग एक साथ तो मरते नहीं। जो भी जन्मा है उसकी मृत्यु होनी ही है। न जाने क्यों लोगों ने मृत्यु को इतना महत्त्व दे दिया है। यह भी केवल एक क्षण है जिससे व्यक्ति गुजर जाता है और कपड़े बदल कर वापिस आ जाता है।''

''हिन्दुस्तान की अपनी बहुत अच्छी परम्पराएँ हैं पर कुछ चली आती हुई गलत परम्परायें भी हैं... उनको हमने ज्यादा जकड़ लिया है बनिस्बत उनके जो सही है।

प.पू.श्रीमाताजी, फरवरी १९८१

''कर्मकाण्ड बहुत अधिक है। हिन्दू धर्म में कर्मकांडो का बाहुल्य है।

आप दाँए बैठे, बाँए को बैठे, इस समय ये कार्य करें तथा अन्य बहुत सी चीज़ें। आपकी बहन की मृत्यु होने पर कितने दिन भूखा रहना है और पति की मृत्यु पर कितने दिन? जो चला गया वो चला गया समाप्त। शरीर समाप्त हो जाता है तो आपका इतने दिनों व्रत करना बिल्कुल गलत है। व्रत करने से हो सकता है आपके अंदर भूत प्रवेश कर जाएं। मैं तो ये कहूँगी कि इन कर्मकाण्डो का सृजन करने वाले लोग... अत्यन्त भौतिक एवं अर्थहीन जीवन व्यतीत करते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 23-4-2000 टर्की

''इस क़दर दकियानूसीपना अपने देश में इस क़दर अंधापन है इस मामले में... ब्राह्मणाचार और स्त्रियाचार कहते हैं कि इस तरह हम लोग ढँक गए हैं कि छोटी-छोटी बातों में नाराज़ हो जाते हैं।''

प.पू.श्रीमाताजी, फरवरी 1981

''हमारी जकड़ जो है वो है अन्ध श्रद्धाएँ। किसी भी चीज़ में हमने विश्वास कर लिया तो वह परमविश्वास हो जाता है... वही मन्दिरों के चक्कर, वही मस्जिदो के चक्कर, वही गुरुद्वारे के चक्कर। अरे भई अस्पताल में जाने से आप ठीक हो जाएगें? दवाई का नुस्खा पढ़ने से आप ठीक हो जाएँगे क्या? दवा लीजिए दवा- ''कहे नानक बिन आपा चीन्हें मिटे न भ्रम की काई'' बस पढ़ते जाओ उससे क्या भ्रम मिट जाएगा? कोई बाइबिल पढ़ रहा है, उधर कोई कुरान पढ़ रहा है, उधर ग्रंथ साहब पढ़ रहे हैं, कोई कुछ पढ़ रहा है, कुछ खोपड़ी में तो जाता ही नहीं क्योंकि आपके अन्दर आत्मा का जागरण ही नहीं हुआ। आत्मा की जाग्रति के बाद धर्म आत्मसात होता है।... इस शक्ति को हमें प्राप्त करना है... सिर्फ कुंडलिनी जागरण मात्र करना है।''

प.पू.श्रीमाताजी, 23-3-92, दिल्ली

''हम भारतीय लोगों के साथ एक समस्या है कि हम बंधनों में

जकड़े हुए हैं। हमारे सम्मुख इतने आदर्शों के होते हुए भी हम ऊपर नहीं उठ पाते।... हमें समझना चाहिए कि सभी महान अवतरण, पीर और पैगम्बर इस जीवन वृक्ष को पोषित करने के लिए आए... आपको इस सबमें विश्वास करना होगा। कुंडलिनी जाग्रति विकास की जीवन्त क्रिया है– अन्तिम उपलब्धि।

प.पू.श्रीमाताजी, 6-12-91 मद्रास, खण्ड IV, १९९५

अध्याय 15

सृष्टि का कालचक्र एवं ईश्वर के दस अवतार

यह सृष्टि काल के अनुसार चार युगों में विभाजित है। सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग और कलियुग।

1. सतयुग - हजारों वर्ष पूर्व सतयुग था। उस समय प्राणीमात्र का नैतिक स्तर बहुत ऊँचा था। सभी ईश्वर भक्त थे और सात्विक जीवन व्यतीत करते थे, सत्य का साम्राज्य था। संत महात्माओं का सम्मान होता था। इस युग में कुछ राक्षसी शक्तियाँ भी थीं जिन्होंने तपस्या एवं कठिन साधना के बल पर इच्छा मृत्यु जैसे वरदान प्राप्त कर लिए थे। अपार ऐश्वर्यशाली एवं शक्तिशाली ये राक्षस घोर अहंकारी हो गए और अत्याचारी बन गए। ये अपना प्रभुत्व जमाने के लिए अकारण ही ऋषि मुनियों और धार्मिक मनुष्यों के यज्ञ आदि धार्मिक अनुष्ठानों में विघ्न डालकर उन्हें सताने लगे। उनका अभिमान यहाँ तक बढ़ा कि वे देवी शक्तियों के साथ भी युद्ध करने लगे। उस समय शंभु निशंभु, महिषासुर, रक्त्बीज आदि राक्षसों का वध स्वयं देवी दुर्गा ने किया और हिरण्याक्ष एवं हिरण्यकश्यपु का संहार विष्णु भगवान ने वराह और नृसिंह रुप में प्रकट होकर किया।

2. त्रेतायुग - में श्री राम और परशुराम के रुप में श्री विष्णु ने अवतार लिया। त्रेता युग में अधर्म के चार चरणों असत्य, हिंसा, असंतोष व कलह का प्रभाव बढ़ने लगता है जिसके कारण धर्म के चारों चरणों का चौथाई भाग दुर्बल हो जाता है। मनुष्य धर्म में निष्ठा रखता है पर उसकी प्रवृत्ति कर्मकाण्ड की ओर हो जाती है, उनमें सांसारिक सुखों के प्रति विशेष रुचि होने लगती है। वे वेदों का पठन-पाठन करते हैं पर मोक्ष के स्थान पर धर्म, अर्थ और काम ये तीन ही उनके लक्ष्य बन जाते हैं। एक

प्रकार से वे स्वार्थ परायण हो जाते हैं।

3. द्वापर युग - में अधर्म की चारों प्रवृत्तियाँ और अधिक बलवती हो जाती हैं, जिनके बुरे प्रभाव के कारण धार्मिक वृत्तियों का प्रभाव आधा रह जाता है। लोभ, असंतोष, अभिमान और ईर्ष्या आदि दोषों का बोलबाला हो जाता है और मनुष्य फल की कामना लेकर कर्म करता है। इस युग में श्री कृष्ण-बलराम का अवतार हुआ था।

4. कलियुग - में अधर्म के चारों चरण बढ़ जाते हैं और धीरे-धीरे धर्म के सारे लक्षणों का लोप होने लगता है। झूठ, कपट, हिंसा, विषाद, शोक मोह, भय और दीनता आदि तमोगुण बढ़ जाते हैं। कलियुग में पाखंड बढ़ जाते हैं। धनी इंसान ही शक्तिशाली होता है। धर्म नीति चरित्र सदाचार सब समाप्त हो जाते हैं और सब तरफ भ्रांति व अराजकता फैल जाती है। इस युग में कल्कि अवतरण होगा।

श्रीमद्भागवत पुराण के आधार पर

अवतार- अवतार का अर्थ है ईश्वरीय शक्ति का पृथ्वी पर प्रगट होना। ईश्वर के अवतार लेने के प्राय: तीन कारण 'श्री मद्भागवत' (एकादश स्कंध) 'श्रीमद्भगवद्गीता' (चतुर्थ अध्याय), 'दुर्गा सप्तशती' एवं अन्य पुराणों में इस प्रकार बताए गए हैं- धर्म की पुनर्स्थापना, देवताओं, संतों एवं भक्तों की रक्षा तथा दुष्टों का संहार। ''ईश्वर की यह अवतार लीला विश्व की रक्षा के लिए होती है इसलिए उसका नाम रक्षा भी है'' (श्रीमद्भागवत)

श्रीमद्भागवत के अनुसार महाप्रलय काल से आज तक नौ विभिन्न रुपों में श्री विष्णु जी इस पृथ्वी पर अवतरित हुए हैं, दसवाँ अवतार कलियुग में होगा।

हमारे पुराणों में इन दशावतारों का जो वर्णन है वह निम्नलिखित है।

इनमें प्रथम पाँच अवतार सतयुग में हुए-

1. मत्स्य अवतार (मछली के रुप में) - महाप्रलय के समय जब चारों ओर जल ही जल था, तो ईश्वर ने राजा सत्यव्रत को एक बड़ी नौका दी जिससे सप्तऋषियों [श्री ब्रह्मा जी ने मानस पुत्रों] के साथ सभी प्रकार के पौधों और अन्न आदि के बीजों की रक्षा हो सके। तेज आँधी-तूफान के कारण जब वह नौका समुद्र में डगमगाने और डूबने लगी तब मत्स्य (मछली) के रुप में आकर ईश्वर ने उस नौका को बचाया।

2. वराह अवतार - हिरण्याक्ष नामक महाशक्तिशाली राक्षस एक बार इस पृथ्वी को ही लेकर गहन जल में छिप गया। उस समय ईश्वर ने वराह (सुअर) के रुप में अवतार लेकर राक्षस के साथ भयंकर युद्ध किया और पृथ्वी की रक्षा की, उसे अपने दाढ़ो पर लेकर रसातल से ऊपर लाए और यथास्थान रखा।

3. श्री नृसिंह अवतार - दैत्यराज हिरण्यकश्यपु का बेटा प्रह्लाद बाल्यावस्था से ही भगवान का भक्त था, हिरण्यकश्यपु अहंकारी राजा था और स्वयं को भगवान मानता था। उसने अपनी तपस्या से एक अद्‌भुत वरदान प्राप्त कर लिया था कि उसकी मृत्यु न देवता के द्वारा होगी न मनुष्य व पशु द्वारा तथा वह किसी अस्त्र या शस्त्र से सुबह या शाम किसी भी समय नहीं मारा जा सकेगा। इस अत्याचारी राक्षस ने जब स्वयं अपने ही बेटे को मार डालने का प्रयास किया तो स्वयं भगवान अपने भक्त की रक्षा करने के लिये एक खंभे में प्रगट हुए थे। विष्णु भगवान का यह अवतार नृसिंह रुप में था, चेहरा सिंह का और बाकी शरीर नर का। उन्होंने गोधूलि बेला में (जब सुबह शाम मिलते हैं) अपने जाँघों पर उस दानव को लिटा कर अपने तेज नाखूनों से हिरण्यकश्यपु की छाती चीर डाली। भगवान ने अपने इस अवतार से स्पष्ट कर दिया कि जिसे तपस्या करने पर वरदान दिया जाएगा वही यदि अधर्म पर चलेगा और भगवान के भक्तों को

सतायेगा तो उसको भगवान द्वारा ही दण्ड भी मिलेगा।

4. कूर्मावतार - पुराणों में वर्णित है कि एक बार देवता एवं असुरों ने मिलकर समुद्र का मंथन किया था जिसमें मंदराचल पर्वत को मथानी बनाया गया और वासुकी नाग को रस्सी की तरह प्रयोग किया गया। ''जब समुद्र-मंथन होने लगा तो बड़े-बड़े बलवान देवता और असुरों के पकड़े रहने पर भी अपने भार की अधिकृता और नीचे कोई आधार ने होने के कारण मंदराचल पर्वत समुद्र में डूबने लगा ...उस समय भगवान ने अत्यन्त विशाल एवं विचित्र कच्छप (कछुआ या कूर्म) का रुप धारण किया और समुद्र के जल में प्रवेश करके मन्दराचल पर्वत को ऊपर उठा दिया।''

श्रीमद्भागवत, अष्टम स्कन्ध सप्तम अध्याय

सागर-मंथन से चौदह वस्तुएँ निकली उसमें से अमृत को अपनी चतुरता से भगवान ने मोहिनी रुप धारण कर सभी देवताओं की पिला दिया।

5. वामन-अवतार - भगवान ने यह अवतार वामन (बौना) के रुप में राक्षसों के राजा बलि को पराजित करने के लिए कश्यप ऋषि की पत्नी देवमाता अदिति के गर्भ से लिया। राजा बलि ने अथाह शक्ति प्राप्ति के लिये महान यज्ञ का आयोजन किया था। उसी में ब्राह्मण स्वरुप में उन्होंने दान में राजा बलि से तीन पग धरती माँग ली और फिर विराट रुप धारण किर लिया जिससे राजा बलि का सर्वस्व ही उन तीन पगों में समा गया। इस प्रकार भगवान ने राजा बलि का अहंकार चूर-चूर किया और देवताओं की रक्षा की।

6. परशुराम आवतार - पृथ्वी पर क्षत्रिय राजा राज्य करते थे। राजा का कर्तव्य है प्रजा की सुख-सुविधा का ध्यान रखना एवं संत ऋषियों की रक्षा करना परन्तु जब क्षत्रिय राजा अपने वर्ण के लिये निर्धारित कर्तव्य, लोक रक्षा को भूलकर स्वार्थी, अभिमानी और अत्याचारी हो गए तो परशुराम के रुप में अवतार लेकर भगवान ने इक्कीस बार पृथ्वी को क्षत्रिय

विहीन किया। परशुराम ऋषि जमदाग्नि और रेणुका के पुत्र थे।

7. रामावतार – त्रेतायुग में अयोध्यानरेश राजा दशरथ की बड़ी रानी कौशल्या के गर्भ से भगवान विष्णु ने राम के रुप में जन्म लिया। उस समय पुलस्त्य मुनि का ज्येष्ठ पुत्र रावण लंका का राजा अपने बंधु–बांधवो और पुत्रों सहित अत्यन्त अभिमानी और अत्याचारी हो गया था। वह ऋषि मुनियों की तपस्या–यज्ञ में विघ्न डालने एवं उन्हें मारने लगा था। रावण ने श्री राम की पत्नी सीता का भी अपहरण कर लिया था। श्री राम ने राक्षस रावण का उसके पूरे परिवार सहित वध किया और उसी के संत स्वभाव वाले भाई विभीषण को लंका का राजा बनाया। अयोध्या लौटकर उन्होंने रामराज्य की स्थापना की और मनुष्यों के लिये आज्ञाकारी पुत्र, सच्चे मित्र एवम् हितकारी राजा का आदर्श प्रस्तुत किया।

8. श्री बलराम अवतार – द्वापर युग में श्री कृष्ण के बड़े भाई के रुप में आये और उन्होंने कंस आदि अनेक राक्षसों के संहार में श्री कृष्ण की सहायता की। श्री बलराम श्री विष्णु भगवान के शेष अंश–शेषनाग के अवतार थे।

9. श्री कृष्णावतार – भगवान विष्णु ने द्वापर युग में ही राक्षस कंस की बहन देवकी के आठवें पुत्र श्री कृष्ण के रुप में जन्म लिया। मथुरा के राजा कंस ने मुनि नारद की भविष्यवाणी, कि देवकी का आँठवा पुत्र तुम्हारा काल होगा, के कारण अपनी ही बहन के सभी नवजात शिशुओं को पत्थर पर पटक कर मार डाला और आँठवे पुत्र के नन्दगृह में सुरक्षित पलने के समाचार पर क्रोधित होकर उस पुत्र को मारने के लिये पूतना आदि अनेक राक्षसों को गोकुल भेजा पर श्री कृष्ण ने अपनी लीला से सभी को मार डाला और अंतत: अपने मामा कंस का भी वध किया और साथ ही उसके सभी सहायकों जरासंध, शिशुपाल व रुक्मी आदि का भी वध किया।

उसके पश्चात कुरुवंश के राजा धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों-दुर्योधन, दु:शासन आदि सहित उनके इष्ट मित्रों कर्ण, शल्य, शकुनि, भीष्म, द्रोण आदि को पाण्डव पुत्रों युधिष्ठिर अर्जुन, भीम, नकुल व सहदेव द्वारा महाभारत के युद्ध में मरवा कर उस युग के सारे अधार्मिक लोगों का संहार करवा दिया। श्री कृष्ण ने कुरुक्षेत्र के मैदान में अपने परमभक्त अर्जुन को आध्यात्म का उपदेश दिया जो ''गीता'' में वर्णित है।

10. श्री कल्कि अवतार - श्रीमद्भागवत पुराण सहित अनेक धार्मिक ग्रन्थों में श्री विष्णु के इसी कलियुग में होने वाले दसवें अवतार की भविष्य वाणी की गई है- ''उन दिनों शम्भल ग्राम में विष्णुयश नामक श्रेष्ठ ब्राह्मण के घर कल्कि भगवान अवतार ग्रहण करेंगे... वे देवदत्त नामक शीघ्र गामी घोड़े पर सवार होकर दुष्टों को तलवार के घाट उतार देगें और समस्त शूद्र राजाओं का दमन करेंगे।''

श्रीमद्भागवत-पुराण, द्वादश स्कंध अध्याय २

प.पू.श्रीमाताजी ने अवतार के विषय में स्पष्ट रुप से हमें बताया है कि-

ईश्वर के दशावतार हुए है और इन्हीं अवतरणों के सहारे ही हमारी उत्क्रांति हुई है।

निर्मला योग 1985

❐ मानव की उत्क्रांति में प्रत्येक अवतार इस धरा पर अवतरित हुए हमारे अंदर एक द्वार खोलने के लिए अथवा हमारी चेतना में उजियारा करने के लिए।

निर्मला योग 1983 सि.अ.

❐ समुद्र में ही सबसे पहले जीव-धारणा हुई। हम पहले अमीबा थे यानी पहले हम सब लोग मछलियों में ही थे और उसके बाद कुछ

मछलियाँ समुद्र से बाहर की ओर चली आई, उन मछलियों को पहली बार बाहर लाने वाला मत्स्य अवतार हुआ।

निर्मला योग, दि.स.17-2-81

❐ श्री विष्णु शक्ति का पूर्ण प्रादुर्भावयुक्त अवतरण श्री कृष्ण का है इसलिए उसे सम्पूर्ण अवतरण कहते हैं। इतना ही नहीं वे विराट हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 24-7-79

कल्कि अवतार के विषय में प.पू.श्रीमाताजी का कहना है कि– ''उस अवतारी पुरुष के पास श्री भैरव का खड्ग होगा, श्री गणेश का परशु होगा, श्री हनुमान की गदा और विनाश की शक्तियाँ होंगी। श्री बुद्ध की क्षमाशीलता व श्री महावीर की अंहिसा शक्ति भी उलट कर गिरेगी– ऐसी ग्यारह शक्ति युक्त श्री कल्की देवता का अवतरण होने वाला है। ... जिस समय श्री कल्कि का अवतरण होगा उस समय जिन लोगों के हृदय में परमेश्वर के प्रति प्रेम नहीं होगा या जिसे आत्म साक्षात्कार नहीं चाहिए होगा, ऐसे सभी लोगों का हनन होगा, उस समय श्री कल्की किसी पर दया नहीं करेंगे। वे ग्यारह रुद्र शक्तियों से सिद्ध हैं। उनके पास ग्यारह अति बलशाली विनाश शक्तियाँ हैं।''

प.पू.श्रीमाताजी, कल्कि शक्ति, निर्मला योग

श्री विष्णु शक्ति के इन दशावतारों की सिद्धता देने के साथ ही साथ प.पू.श्रीमाताजी ने देवी महात्म्य में वर्णित देवी के विभिन्न अवतारों का समर्थन किया है, वे बता रही हैं कि–

''आदि काल से ही जब भवसागर से लोग पार होना चाहते थे, तब उन भक्तों पर बड़ी आफत आती थी, वे जब भी मेडीटेशन में बैठते उनको (शक्तिशाली राक्षसों द्वारा) सताया जाता था तब आदिशक्ति अपने सम्पूर्ण रुप में प्रगट हुई और उन्होंने 108 बार अवतार लिया। देवी महात्म्य आप

पढ़ें मेरी बात आप समझ जाएंगे।

लेकिन तब वो सिर्फ देवी स्वरुप आयी थी, उनकी कोई माया बीच में नहीं थी, इस वजह से मनुष्य तारण नहीं पा सकता था, उनका सिर्फ बचाव ही हो सकता था, लेकिन तारण नहीं हो सकता था।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-11-73, सि.अ.2003 पृ.27

अब समय आ गया है कि युगों-युगों से जो साधक ईश्वर की सच्ची भक्ति करते आ रहे हैं, उनका तारण हो, उन्हें मोक्ष प्राप्त हो।

''परमात्मा ने इसीलिए आपकी सृष्टि की है कि आप पूर्ण तादात्म्य तथा आनन्द के साथ जीवन व्यतीत करें।''

14-7-2001, लंदन

मोक्ष प्राप्ति का सही मार्ग दिखाने के लिए साक्षात श्री गणेश एवं स्वयं श्री आदि शक्ति ने इस पृथ्वी पर अवतार लिया।

अध्याय 16

परम चैतन्य के दो अलौकिक अवतरण

1. साक्षात महाविष्णु के अवतार-संत ईसा मसीह

(''श्री कल्कि'' की विनाशलीला से पूर्व साधक भक्तों के उद्धार के लिए साक्षात महाविष्णु इस पृथ्वी पर कलियुग में 'संत ईसा मसीह' के रुप में अवतरित हुए। यह महत्वपूर्ण तथ्य प.पू.श्रीमाताजी बता रही हैं)-

- **''ईसा मसीह साक्षात महाविष्णु के अवतरण हैं।** ...वो साक्षात ॐ प्रणव से बने हैं, माने गणेश जी का अवतरण हैं वो। ॐ प्रणव है, उन्होंने साकार अपना स्वरुप लिया और **इस संसार के तारण के लिए वो आए** क्योंकि वो ॐ प्रणव हैं। उनकी मृत्यु भी जब हुई उसके बाद उनका पूर्णोत्थान हुआ। श्री कृष्ण उनके पिता हैं क्योंकि उन्होंने कहा था ''नैनं छिदन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः'' यह जो प्रणव है, जो ओम है यही किसी चीज़ से कटता नहीं और अग्नि से दहन नहीं होता, उसकी सिद्धता सिद्ध करने के लिए महाविष्णु का अवतार इस संसार में हुआ। कृष्ण उनके पिता थे इसलिए उनको क्रिस्त कहते है और यशोदा जी का नाम रखने के लिए राधा जी ने उनको 'येशू' कहा। ईसा की माँ साक्षात महालक्ष्मी का अवतरण हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 4-3-79, देहरादून

- आप यदि श्री गणेश के जन्म की कथा को पढ़े तब आप जान पाएंगे, आप हैरान होंगे, कि ये लिखा हुआ है कि इन्हें ब्रह्मांड कहा जाता था अर्थात ब्रह्मा जी का अंडा। उसने अस्तित्व धारण किया और इसका आधा भाग **महाविष्णु बन गया अर्थात ईसा मसीह और आधा भाग श्री गणेश के रुप में बना रहा।** कहा जाता है कि जन्म लेते ही महाविष्णु ने पिता के लिए रोना शुरु कर दिया। इसके विषय में सोचें। वे अपने पिता

को खोज रहे थे।

ईसा मसीह को यदि आप देखें तो वे अपनी पहली दो उंगलियाँ उठाते हैं। किसी भी अन्य अवतरण में इन दो उंगलियों का उपयोग नहीं किया। आप जानते हैं कि पहली ऊँगली विशुद्धि की है और दूसरी नाभि की। इसका अर्थ है कि वे अपने पिता की बात कर रहे हैं जो नाभि चक्र के शासक हैं। वे कौन हैं? ये आप अच्छी तरह जानते हैं। वे विष्णु हैं जो श्री कृष्ण के रुप में भी अवतरित हुए। **तो ईसा मसीह** इस बात की ओर इशारा करते हैं कि वे दोनों मेरे पिता हैं। उन्होंने कहा कि मेरे पिता श्री विष्णु ही हैं जो कि श्री कृष्ण भी हैं'

प.प.श्रीमाताजी, 23-4-2000, टर्की

महाविष्णु के विषय में देवी भागवत में एक प्रसंग मिलता है-

''श्री कृष्ण की चिन्मयी शक्ति राधा के गर्भ से एक प्रकाशवान बालक जो अंडाकार था उत्पन्न हुआ जिसे देवी ने ब्रह्माण्ड गोलक के अथाह जल में छोड़ दिया। निश्चित समय पूर्ण होने पर वह सहसा दो रुपों में प्रकट हो गया। एक अंडाकार ही रहा और दूसरा शिशुरुप में परिणत हो गया। उसकी आकृति बहुत विशाल थी अतएव उसका नाम ''महाविराट'' पड़ा। राधा-कृष्ण से उत्पन्न यह महाविराट बालक सम्पूर्ण विश्व का आधार है, यही महाविष्णु कहलाता है। इस विशाल शिशु के शरीर में असंख्य ब्रह्माण्ड है, प्रत्येग ब्रह्माण्ड में ब्रह्मा विष्णु-शिव विद्यमान हैं।

बालक रुदन कर रहा था तभी उसे सनातन ब्रह्म ज्योति के दर्शन हुए। पिता परमेश्वर को देखकर वह बालक संतुष्ट होकर हँस पड़ा। श्री कृष्ण ने उस बालक के भोजन की व्यवस्था इस प्रकार की- ''विश्व में भक्त जनों द्वारा ईश्वर को अर्पित सोलह भाग नैवेद्य में पन्द्रह भाग इस बालक के लिए निश्चित हैं, क्योंकि यह बालक स्वयं परिपूर्णतम श्री कृष्ण का विराट रुप है।

श्रीमद्देवीभागवत, अध्याय दो नवम् स्कंध के आधार पर

प.पू.श्रीमाताजी स्पष्ट रुप से बता रही हैं कि- ''ईसा स्वयं ओंकार हैं तथा चैतन्य लहरियाँ भी स्वयं ही है। शेष सभी अवतरणों को शरीर धारण करने के लिए पृथ्वीतत्त्व लेना पड़ा, ईसा का शरीर पूर्ण ओंकार है तथा श्री गणेश उनका पृथ्वी तत्त्व हैं। अतः हम कह सकते हैं कि ईसा श्री गणेश की अवतरित शक्ति हैं। वे देवत्व का निर्मलतम रुप हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 3-4-1994

''ईसामसीह के जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य ये था कि आपके अंदर जो आज्ञाचक्र है उसका भेदन करें इसलिए उन्होंने अपने को क्रास पर टँगवा लिया और उसके बाद फिर से जीवित हो गए।''

प.पू.श्रीमाताजी, 25-12-2000

''हमें समझना चाहिए कि ईसा की मृत्यु द्वारा ही हमें हमारा पुनर्जन्म प्राप्त हुआ है और भूतकाल की मृत्यु हो गई, हमारे पश्चाताप और बंधन समाप्त हो गए।

प.पू.श्रीमाताजी, 14-4-1992

''अगर ईसामसीह इस संसार में न आते और अपने को आज्ञा चक्र में बिठाकर तारण का मार्ग, पुनर्जीवन का मार्ग न बताते तो सहजयोग साध्य न हो सकता। उनका आना अति आवश्यक था।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-12-90

''वे मानव के चारित्रिक आधार हैं''

प.पू.श्रीमाताजी, 23-4-2001

2. साक्षात आदिशक्ति का अवतरण-श्रीमाताजी निर्मला देवी

..... **श्री येशू का अवतरण व श्री कल्कि शक्ति का अवतरण इस बीच की अवधि में मनुष्य को स्वयं का परिवर्तन करके**

परमेश्वर के साम्राज्य में प्रवेश करने का मौका है।

प.पू.श्रीमाताजी, निर्मलायोग, सहजयोग और कल्कि शक्ति

मनुष्य के अंतः परिवर्तन के लिए साक्षात आदिशक्ति इस घोर कलियुग में परमपूज्य माँ निर्मला देवी के महामाया रुप में पृथ्वी पर अवतरित हुई हैं- यह कृतयुग है।

आदिशक्ति के अवतरण से पूर्व जितने भी अवतरण आए उन्होंने मानव की उत्क्रांति एवं रक्षा में अपनी भूमिका निभाई। उत्क्रांति की अंतिम सर्वोच्च स्थिति तक पहुँचाने एवं मानव के पूर्ण अन्तर्परिवर्तन के लिए सातवाँ चक्र सहस्रार का भेदन आवश्यक था। संत ईसा मसीह ने मानव के उत्थान मार्ग का सबसे संकीर्ण द्वार आज्ञा चक्र खोला। अंतिम द्वार सहस्रार को खोलना स्वयं आदिशक्ति का कार्य था, जो उन्होंने अपने अवतरण काल में पूर्ण किया। यह कार्य इस युग में ही होना था।

''सहस्रार को खोलना मानव को दिया जाने वाला सर्वश्रेष्ठ वरदान है।''

प.पू.श्रीमाताजी

पू.श्रीमाताजी ने मनुष्यों की कुण्डलिनी जाग्रत करके उसका योग चारो ओर फैली परमात्मा की चैतन्य शक्ति से करवाया उसे शीतल चैतन्य लहरियों का प्रत्यक्ष अनुभव दिया। मानव को आत्मा-परमात्मा के सच्चे ज्ञान के प्रति चेतन किया और उनके अज्ञानान्धकार को दूर किया। सहजयोग का ज्ञान देकर उसे स्वयं का गुरु बना दिया उसकी आत्मिक शक्ति को जगाकर उसे इतना क्षमतावान कर दिया, उसे इतना समर्थ बना दिया कि वह स्वयं सारी आसुरी शक्तियों और नकारात्मक विचारों से लड़ सके।

सहजयोगियों का पूर्ण अर्न्तपरिवर्तन करके पू.श्रीमाताजी ने उन्हें भवसागर से पार करवा दिया, उनका तारण किया, और उन्हें परमपिता

परमात्मा के साम्राज्य तक पहुँचा कर उन्हें मोक्ष प्रदान किया।

सतयुग पुनः प्रारम्भ हो गया। सहजयोगी मानव से महामानव बन गए हैं, बिना मृत्यु के उन्हें नवजीवन मिला, उन्होंने अपने उत्क्रांति की अंतिम उच्चावस्था प्राप्त कर ली है। मोक्ष प्रदायिनी माँ ने अपने सहस्रार से पुनर्जन्म देकर उन्हें ''पूर्ण सुयोग्य गहन सहजयोगी'' बना दिया और उन्हें देवदूतों से भी अधिक क्षमतावान कर दिया।

सृष्टि की सूत्रधार परमेश्वरी माँ का स्वप्न था कि- **''मानव रुप में ऐसे स्वच्छ दर्पण बनाएँ जिनमें परमपिता परमात्मा अपना प्रतिबिन्ब साफ-साफ देख सकें।''**

इसी महान कार्य हेतु वे पृथ्वी पर अवतरित हुईं, अपनी अनन्त शक्तियों एवं अथवा परिश्रम से अपने लक्ष्य को पूर्ण कर वे चली भी गईं।

ममतामयी वात्सल्यमयी निर्मला माँ ने पूरे विश्व में अपना स्नेह-प्यार बाँटा और हम सब सहजी बच्चों को प्रेम के अटूट बंधन में बाँध दिया। हम सबसे माँ को बहुत उम्मीदें हैं, बहुत आशाएँ हैं। सहजयोग के विश्वव्यापी शान्ति पूर्ण आंदोलन की शुरुआत श्रीमाताजी ने की है, हमें उसे आगे बढ़ाना है।

परम पूज्या श्री माताजी ने कहा था- ''परमात्मा से साधक को तीन चीज़े माँगनी चाहिए- **सालोक्य, सामीप्य और सान्निध्य**। सालोक्य का अर्थ है परमात्मा के दर्शन करना, सामीप्य अर्थात परमात्मा के समीप होना और सान्निध्य का अर्थ है परमात्मा का साहचर्य मिलना परन्तु आपको तो उनसे तदात्म्य प्राप्त हो गया है। यह सौभाग्य किसी अन्य योगी, सन्त या पैगम्बर को प्राप्त नहीं हुआ। आप लोगों को यह तदात्म्य मेरे शरीर से बाहर रहते हुए प्राप्त हो गया है, जब कि उन लोगों को देह त्याग करके, मेरे विराट शरीर में प्रवेश करने के पश्चात यह तदात्म्य (एकरुपता) प्राप्त

हुआ।

आप लोगों को चाहिए कि समय की सीमा को समझें अपने महत्व को पहचानें और इस बात के प्रति चेतन हों कि सृष्टि में उत्थान के महानतम कार्य को करने के लिए किस प्रकार आपको चुना गया है।

तो अब आलस्य के लिए कोई समय बाकी नहीं है, अब आपको जागना होगा, उठना होगा।

प.पू.श्रीमाताजी, 4-5-1986, मेडिसिमो इटली, न.दि.1999, पृ.15

''उदग्ने तिष्ठ प्रत्यात्नुष्व''- तेजस्वी उठो, सब ओर फैल जाओ।

यजुर्वेद 13/12

भाग २

अध्याय 17

सहजयोगी, उठो, चारों ओर फैल जाओ

(इस पृथ्वी पर मानव सृजन की पराकाष्ठा है, ''सहजयोग'' ज्ञान की पराकाष्ठा है और सहजयोगी विकास की पराकाष्ठा है। परम पूज्या श्रीमाताजी ने आपको हर प्रकार से शक्तिशाली बना दिया है अब आपको अपना उत्तरदायित्व पूरा करने के लिए आगे बढ़ना है।)

1. परमात्मा के माध्यम बनो, आप पूर्णतया समर्थ हैं -

- आप लोग एक नए आयाम में उतर गए हैं।

..... आपने परमात्मा को पा लिया है। ...आपने सत्य पर अपने पैर जमा लिए हैं। **... आप मानव से महामानव बन गए हैं।**

प.पू.श्रीमाताजी, 29-3-75, मुंबई

- आप अत्यन्त उच्च चेतना के क्षेत्र में प्रवेश कर गए हैं, जहाँ अब आप परमात्मा से जुड़े हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 5-5-83

- आपका वह शक्तिशाली व्यक्तित्व बन गया है जिसे कोई भी प्रलोभन नहीं होता, कोई भी असद् विचार नहीं होता और कोई समस्या नहीं होती।... अब आपकी आत्मा आपको बल प्रदान करती है... अब आप अपनी आज्ञा के अनुसार कार्य करने लगते हैं। कैसा आश्चर्य है कि आपकी इच्छाएँ ही बदल जाती हैं, आपके संकल्प बदल जाते हैं, और जो कुछ भी आप कहते हैं, वही हो जाता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 4-2-83 दिल्ली, निर्मलायोग न.दिस.85

- श्री गणेश जी आपके अन्दर इतने सुंदर ढंग से स्थापित हो गए हैं और इस प्रकार जाग्रत हो चुके हैं कि अपनी स्वतंत्रता में भी आप श्री

गणेश विरोधी कोई कार्य नहीं कर सकते। आपके अन्दर उनकी अभिव्यक्ति पूर्णतया स्पष्ट हो चुकी है। आपके चेहरों पर सुन्दर चमक है, अन्य लोगों से आप बहुत भिन्न लगते हैं।

..... आत्मसाक्षात्कार के पूर्व आपका जीवन पूर्णतया भिन्न था, **अब आपका पूर्णतया कायाकल्प हो गया है और पराविज्ञान के नए युग में आप प्रवेश कर गए हैं।**

प.पू.श्रीमाताजी, 10 सितम्बर 1995, कबेला

– आप योगी जन हैं। ऋषी और महान लोगों को जो नहीं मिला वो आपको आज सर्वसाधारण तौर पर मिला है।... आप पूरी तरह से बदलकर एक नए मानव हो गए हैं।... आप सहजयोगी हैं, आपके अंदर सृजन शक्ति है, विचार शक्ति है, आपके अंदर वो शक्ति है जिससे आप दुनियाँ को चमका सकते हैं।... परमात्मा का माध्यम बनने के लिए आपके अंदर सारी शक्तियाँ हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 18-9-88, बंबई, 1993, अंक 9-10

– अब सहजयोगी को कहना है कि मैं आदिशक्ति का पुत्र या पुत्री हूँ। यह बहुत बड़ी पदवी है, बहुत बड़ा आशीर्वादित पद।

प.पू.श्रीमाताजी, 27-12-94, गणपति पुले

– आपको उस सर्वशक्तिमान परमात्मा का **प्रतिनिधित्व करना है, जो सर्वव्याप्त है, सर्वज्ञ है, सभी कुछ जानता है, सभी कुछ देखता है और जो सशक्त है जो सर्वशक्तिमान है। ...आपको भी वह शक्ति प्राप्त हो गई है जिसमें ये तीनों गुण हैं। ...आप सबने भ्रान्तियों से मुक्ति पा ली है।**

प.पू.श्रीमाताजी, 10-5-92, कबैला

– अब आप लोग जीवन्त कार्य के स्वामी हैं, मृत कार्य के नहीं।

आप जीवन शक्ति को संचालित कर सकते हैं, इसे अपने हिसाब से ढाल सकते हैं और अपने उद्देश्य के लिए उपयोग कर सकते हैं।... अब आप में कर्ताभाव नहीं है... अब आप अकर्म कर रहे हैं। सारा जीवन्त कार्य अकर्म है, जैसे पृथ्वी माँ बीजों को अंकुरित करती है परन्तु उसमें कर्ताभाव नहीं होता।... अब आप भी बस कार्य आरम्भ करते हैं और कुंडलिनी उठा देते हैं। अब आप यह नहीं सोचते कि आपने इतना महान जीवन्त कार्य किया है कि उनकी कुंडलिनी उठा दी है जो उन्हें परिवर्तित कर देगी और उन्हें एक नया जीवन प्रदान करेगी और वे भी आपकी तरह विशिष्ट लोग बन जाएँगे।... आपमें यह भावना इसलिए आई है कि अब आपमें अहं नहीं बचा है।

प.पू.श्रीमाताजी, 8-10-87 म्यूनिच, नव.दिस.2007

- कुंडलिनी के उद्दीपन से हृदय में जो शक्ति प्राण स्वरुप है वह प्रेम हो जाती है। पेट में जो धर्म है वह सारे संसार की जाग्रति हो जाती है और सर में जो चेतना है वो सारे संसार का ज्ञान हो जाता है। ...अब हमने इस शक्ति को पा लिया है।... हमारे ही इशारों से कुण्डलिनी उठ रही है, हमारे ही बंधनों से ये अधर्म चरमरा रहे हैं। ...इस सर्वव्यापी शक्ति को अपने अंदर पाकर हम सर्वशक्तिमान हो गए हैं। ...हम उस सर्वव्यापी परमात्मा के प्रेम की शक्ति के अंग हो गए हैं, जो हम इस्तेमाल कर रहे हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 30-3-75 मुंबई, मार्च अप्रैल २००५

- आपने आत्मा की ज्योतिर्मय अवस्था पा ली है। बिना किसी कठिनाई के आप धर्म को आत्मसात कर सकते हैं। हत्या या हिंसा आप नहीं कर सकते। आप सत्य पर अडिग रहेंगे। आपका तारतम्य परमात्मा से हो गया है और आपको परमात्मा का ज्ञान है। आपके अंदर परमात्मा के प्रति सम्मान है, भय नहीं। ...आप अति विशेष व्यक्ति हैं।

आपमें यह जानने का विवेक है कि अब इस जीवन काल में आपकी क्या भूमिका है।... मेरे अपने बच्चों में औदार्य है... आपमें इतनी करुणा, इतना प्रेम, एकाकारिता का भाव है।... आपका हृदय बहुत विशाल हो गया है कि वो पूरे ब्रह्माण्ड को अपने में समेट सकता है। आप सभी विश्वव्यापक बन गए हैं। ...यह परमात्मा की इच्छा की ऐसी पूर्ति है कि सामूहिकता में आपके देवत्व की अभिव्यक्ति होती है।

प.पू.श्रीमाताजी, 1-3-92, आस्ट्रेलिया, खण्ड IV अंक 5-6,1992

– हम किसी एक देश के न होकर पूरे ब्रह्माण्ड के हैं–''विश्व निर्मल धर्म'' के। **हम ब्रह्माण्ड के अंग-प्रत्यंग हैं, अब हम शाश्वत जीवन में असीम में प्रवेश कर गए हैं,** एक नन्हें कमल की तरह जो कीचड़ में से निकलता है और कीचड़ जिस पर चिपका हुआ होता है पर अंत में अति स्वच्छ रुप में वही कीचड़ से बाहर आ जाता है, तब वह चारों ओर अपनी सुगन्ध देता है, यहाँ तक कि कीचड़ को भी वह सुगंधित कर देता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 20-2-92, आस्ट्रेलिया, अंक 7-8, 1992

– आप सभी संत बन चुके हैं। आप संत है क्योंकि आपके अंदर आपके कमल की सुंदर सुगंध है, उस कमल को महसूस कीजिए, यह कितना सुंदर तथा कोमल है। यह गुलाबी रंग का है– उदारता एवं नियंत्रण का प्रतीक। आप भी यही हैं। जहाँ भी आप होंगे, इस सौन्दर्य की सृष्टि कर सकेंगे, लोग देख सकेंगे कितना आध्यात्मिक जीवन है। **आप लोग ही सहजयोग को प्रतिबिम्बित करने वाले हैं मैं नहीं। आप ही को सहजयोग दर्शाना है।**

.....**आप लोग सदा आनन्दमय और विवेकशील रहेंगे। ...अपने विवेक को नेतृत्व सँभालने दीजिए।**

प.पू.श्रीमाताजी, १०-११-९१, कबैला

– ये आपके पूर्व जन्मों के सुकृत्य हैं जिनके फलस्वरुप आप स्पष्ट देख सके और सहजयोग में आए। **...परमात्मा की कृपा से आप लोग ही सहजयोग की नींव बनेंगे और अपने विवेक, विश्वास, प्रेम तथा सामर्थ्य से सहजयोग रुपी महान भवन का निर्माण करेंगे।**

प.पू.श्रीमाताजी, 9-12-91, बैंगलौर, खण्ड IV अंक 1-2-1992

2. आपको इस पृथ्वी पर दिव्य स्वर्ग का सृजन करके, आदिशक्ति का स्वप्न साकार करना है–

– आदिशक्ति का स्वप्न साकार करने के लिए हम विश्व को एक सुंदर विश्व में परिवर्तित कर सकते हैं। आदिशक्ति ने आपकी सृष्टि इसी कार्य के लिए की है और इसीलिए आपको मानव स्तर से उठाकर वे महामानव स्तर तक लाई हैं... परमात्मा आपका उपयोग महान कार्य के लिए करेंगे... आपको ढालकर इस अवस्था तक इसीलिए लाया गया है।

प.पू.श्रीमाताजी, 27-9-92, कबैला, अंक 11-12-1992

– सभी अवतरण इस समय की भविष्यवाणी कर रहे थे, वह समय आ गया है, इसीलिए मैं इस काल को बसन्त ऋतु कहती हुँ और आप लोग इसके फल हैं। **भिन्न ऋतुओं के ब्रह्माण्डीय चक्र की तरह यह सुन्दर समय आया है और कालचक्र की तरह इसे घूमकर आगे जाना है।** सहजयोग पहले तो अत्यन्त छोटे स्तर पर शुरु हुआ परन्तु अब पूरे विश्व में फैलकर यह बहुत बड़ा हो गया है।... इस सामूहिक आत्मसाक्षात्कार के ज्ञान की कल्पना तो मैंने भी न की थी।... हमें कहना चाहिए कि संतो, पीर पैगम्बरों तथा अवतरणों ने जो कार्य किया, सहस्रार का खुलना इसकी पराकाष्ठा है।

..... **विश्व के कोने-कोने में जन-जन तक इसे पहुँचाना हमारे आध्यात्मिक उत्थान का अन्तिम लक्ष्य है।**

प.पू.श्रीमाताजी, 9-5-93, कबैला

– अब मुझे आशा है कि मेरा अवतरण व्यर्थ नहीं हुआ है। परमात्मा ने आपको अपने पदों पर आरुढ़ कर दिया है, और अब आप ज़िम्मेदार हैं। इसीलिए परमात्मा ने आपको पृथ्वी पर जन्म दिया है। मैं तो मात्र एक गृहिणी हूँ। विश्व आपके नेतृत्व की ओर देख रहा है।

प.पू.श्रीमाताजी, नव.दिस., चै.लहरी 2007

– यह देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि अब विश्व भर में बहुत लोग सहजयोगी हैं। **सर्वत्र फैला यह सार्वभौमिक आंदोलन है।** तथाकथित धर्मों के सीमित विचारों से इसे कुछ नहीं लेना-देना। ...पुनर्जन्म केवल आपके उत्थान के लिए ही नहीं, यह परमेश्वरी कृपा आपको इसलिए मिली है ताकि आप पूरे विश्व को जहाँ तक हो सके दिव्य बना सकें। **... आपको इस पृथ्वी पर दिव्य स्वर्ग का सृजन करना है।**

प.पू.श्रीमाताजी, 23-4-2000, टर्की

– आपको इतना दृढ़ बनाया गया है कि मात्र दृष्टिपात से आप लोगों को आत्मसाक्षात्कार दे सकते हैं। ...आप आत्मलीन हैं और सदा सुरक्षित .. .पूरे विश्व को बचाने के लिए आप सहजयोगी बने हैं। ...आप परमात्मा की सेवा के लिए विश्व में हैं और आपकी सेवा का लक्ष्य इस विश्व को बचाना है।

प.पू.श्रीमाताजी, 4-7-93, कबैला

– हमें जो नया जीवन मिला है वह सिर्फ सहजयोग के कार्य में संलग्न रहने के लिए, हर समय सहजयोग के बारे में सोचना है।... सहजयोग व्यक्तिगत नहीं, समाज के लिए नहीं, यह तो संसार के लिए है।

.....आपको अपना पूरा चित्त अब सहजयोग में देना चाहिए।

..... देखो। मेरा तो सब कुछ ये सारा विश्व है ...अब उसके लिए आप कुछ कीजिए। ...ध्यान देना है ...यह समय आपात काल का है। ...

अब आपको ध्यान में रखना है कि हम श्रीमाता जी के हाथ के ऐसे साधन बनेंगे, **ऐसे सूत्र बनेंगे कि माता जी को लगेगा कि हम ये सारा विश्व जीत लेंगे।** ...अब हर एक को कमर कसकर तैयारी में जुट जाना है, इसके आगे युद्ध है।, बहुत बड़ा युद्ध है, उसे लड़ना है। ... अब आपमें इतनी शक्ति है कि जहाँ आप बैठोगे वहाँ बंधन पड़ेंगे... जहाँ नज़र जाएगी वही बंधन पड़ेंगे... तलवार नहीं है, ऐसी बात नहीं है, सब कुछ आपके पास है, बस केवल इच्छा चाहिए।... सहजयोग का एक प्रतिष्ठावान व्यक्ति बनकर मैं आचरण करुँगा ऐसा एक निश्चय मन में रख कर अब चलना है। **...ये सहजयोग बहुत बड़ी चीज़ है... सारे विश्व के स्वतंत्रता की ये बात है। ... विश्व-धर्म की मर्यादा, परमात्मा की मर्यादा है।** अब आप गुजराती, मराठी कुछ नहीं रहे, आप हिन्दू अंग्रेज़ कुछ नहीं हैं। आप विश्वव्यापी विश्व-धर्म के अनुयायी बहुत शक्तिशाली हो गए हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 2-4-85, मुंबई

- आप स्वर्गलोक के दूत हैं। सारी दुनियाँ को सँभालने के लिए, सारी दुनियाँ को यशस्वी बनाने के लिए और सबको परमात्मा के साम्राज्य के दरवाज़े तक ले जाने के लिए **आप परमात्मा के भेजे हुए दूत हैं।**

प.पू.श्रीमाताजी, 14-1-85, मुंबई

3. दीप से दीप प्रज्ज्वलित कर सारे विश्व को प्रकाशित करो-

- आज जब कि कलियुग की परछाईं पूरे ब्रह्माण्ड को हिला रही है, यह सहजयोग ही पूरे समाज को प्रेरित करेगा अनन्तशन्ति मय जीवन में। आप सहजयोगी हैं, आपकी प्रकाश किरण बहुत ऊँची जानी चाहिए और उसी प्रकाश में आप मंगलमयता और समृद्धि प्राप्त करें।

प.पू.श्रीमाताजी, 18-8-76, दिल्ली

- इस अँधेरी दुनियाँ में तुम लोग दीपक हो और तुम्हें प्रकाश देना है।

... बड़ी जिम्मेदारी है आपकी। आप कलियुग में पैदा हुए हैं इसलिए इस कलियुग को बदलना है। ...तुम सच्चाई पर खड़े रहो, मैं तुम्हारे साथ हूँ और परमात्मा भी तुम्हारे साथ हैं। **...इस प्रकाश में आपने क्या पाया? हिम्मत। और हिम्मत से लड़ो।**

प.पू.श्रीमाताजी, 10-11-2007, नोएडा, जन.फर.2008 पृ.10

– आप पूरे विश्व के लिए दीपक सम हैं। **आपका अपना ज्योतिर्मय होना ही काफी नहीं है, आपको अन्य लोगों को भी प्रकाश देना है, दीपकों की तरह आपको अन्य लोगों को भी प्रज्ज्वलित करना है।** आपको किसी भी प्रकार की तैयारी की आवश्यकता नहीं है, यह शक्ति आपके पास है और यह शक्ति ही कार्य करती है। प्रकाश के लिए आप क्या करते हैं?आप केवल देखते हैं। दीपक को प्रज्ज्वलित करें और प्रकाश हो जाता है। **इसी प्रकार से आप अपने साक्षात्कार से भी विश्वभर के हजारों लोगों को प्रकाशवान कर सकते हैं। ...अपने प्रकाश से अपनी ज्योति से आप पूरे विश्व के अंधकार को दूर कर दें।**

प.पू.श्रीमाताजी, 3-11-2002, लास एंजिलिस, मार्च अप्रैल 2003

– पूरे विश्व के परिवर्तित होने का समय आ गया है। ...आप अपने समाज अपने देश और फिर पूरे विश्व को परिवर्तित कर सकते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 22-3-2000, दिल्ली

– आप यदि विश्व को परिवर्तित करना चाहते हैं और जीवन के दु:ख और तकलीफों से बचना चाहते हैं, तो आपको लोगों की रक्षा करनी होगी, आपको उनका उद्धार करना होगा। आपका यही कार्य है। सहजयोग का यह ऋण आपने चुकाना है।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-12-2001, गणपति पुले

अध्याय 18

सारा विश्व-आपकी कर्मभूमि

(प.पू.श्रीमाताजी ने सभी महाद्वीपों में घूम-घूम कर अपने बच्चों को ज्ञान दिया। उन्होंने मानव के आध्यात्मिक उत्थान के लिए अथक प्रयास किया है, हमें भी सभी देशों को अपना कार्यक्षेत्र बनाना है।)

- आज वह समय आ गया है जब विश्वभर में बहुत से साधकों ने जन्म लिया है, और उनमें जिज्ञासा है।

..... इंग्लैण्ड में मुझे बहुत कठिन परिश्रम करना पड़ा। केवल चार लोगों पर मैंने छः वर्ष काम किया... लोहे के चने चबाने जैसा है। परन्तु एक बार जब उन्हें आत्माक्षात्कार मिल गया तो तूफान सा आ गया, अब हमारे पास हज़ारों आत्मसाक्षात्कारी लोग हैं।

..... ब्रिटेन नाम ही अपने आप में अत्यन्त सुंदर है। इसने अपने पूरे देश को चमकाना है।... एक दिन यह तीर्थ स्थल बन जाएगा।

प.पू.श्रीमाताजी, 15-11-79, ब्रिटेन

- इंग्लैण्ड ब्रह्माण्ड का हृदय है।

- विराट की लीला मे **हालैंड और बेल्जियम** एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। दोनो देश बाँयी नाभि का हिस्सा हैं। बेल्ज़ियम विश्व शन्ति का और हालैण्ड न्याय का प्रतिनिधि करते हैं।

..... हालैण्ड यूरोप की पावन भूमि है। यहाँ पृथ्वी (माँ) और जल (समुद्र गुरु) का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध है। आप जानते हैं कि हालैण्ड का अधिकांश भाग जल के नीचे है। यहाँ सागर अशुद्धियों को दूर करता है तथा पृथ्वी माँ यहाँ के लोगों को आशीर्वादित करती हैं। पृथ्वी माँ ने समुद्र

को अंदर बहने की आज्ञा दी है, समुद्र ने पृथ्वी माँ में शरण ली है, गुरु मातृत्व के गुणों में दब गया है।

प.पू.श्रीमाताजी, चै.लहरी, मार्च १९९७

– फ्रांस के सहजयोगियों को समझना चाहिए कि अन्य देशों की अपेक्षा उनका कार्य अधिक कठिन है क्योंकि इस देश में विवेक का पूर्ण अभाव है, न यह आपकी संस्थाओं में है, न सरकार में और न शिक्षा में। .. .आप अपना विवेक खो चुके हैं ...जो कुछ भी विध्वंशक, भयानक व आमानवीय है सब आप सोखने का प्रयत्न करते हैं। ...यह गंदगी का दलदल है। ...आप यहाँ जन्में और कमल रुप सुंदर और सुगंधमय हो गए हैं। ...आपको इस समाज से लड़ना है, बहुत लोगों को आपको ही बचाना होगा, उनकी रक्षा करनी होगी।

..... मेरे विचार में पूरे यूरोप को दो तरह के लोगों में बाँटा जा सकता है–एंग्लोसेक्सन तथा लेटिन। लेटिन बाँयी ओर के हैं, **तथा एंग्लोसेक्सन दाँयी ओर के। यहाँ (फ्राँस में) लोग बाँयी ओर के हैं इसीलिए कैथोलिक चर्च की वृद्धि हो रही है।** बाँयी ओर के झुकाव के कारण असाध्य रोग हो जाते हैं, आपने गुरुपद से इनका मुकाबला करना है।... हर गुरु का यह कर्तव्य है कि वह जिस समाज में रहता है उसे पवित्र बनाए। ईसा इसके लिए अकेले लड़ते रहे, उन्हें बहुत यातनाएँ दी गई पर वे अपने मार्ग से न हटे। इसी प्रकार आप **सहजयोगियों को भी सत्य पर खड़े होकर बुराइयों से लड़ना है क्योंकि आप संत हैं।**

प.पू.श्रीमाताजी, 25-7-92, पेरिस, खंड IV अंक ९.१०.१९९२

– विश्व के भूगोल में योरोप भवसागर है और आस्ट्रिया वह स्थान है जहाँ आसुरी शक्तियों का मुकाबला करने के लिए हमें नकारात्मक विरोधी शक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए।

प.पू.श्रीमाताजी, 8-10-88, विएना

– **जर्मन लोग जब सहजयोग के प्रचार-प्रसार का कार्य सँभाल लेंगे तो सहजयोग उच्चतम बुलंदियों को छू लेगा।** हमने बहुत से उतार-चढ़ाव देखे हैं, कोई बात नहीं। यह बहुत कठिन स्थान है और अब वास्तव में हमने ठीक प्रकार से अंकुरित होना शुरू किया है। ...जर्मनी को जर्मनी नाम क्यों दिया गया? जर्म (germinate) अर्थात अंकुरित होना। किसी भी चीज़ के बीज का अर्थ है अंकुरित होना germinate अर्थात अंकुरण-सहयोग का अंकुरण।

प.पू.श्रीमाताजी, 8-10-87, म्यूनिच

– यह बात अत्यन्त उत्साह जनक है कि **रूस और यूक्रेन में इतनी अधिक संख्या में लोग आध्यात्मिक रूप से संवेदनशील हैं।** आत्मसाक्षात्कारी होना आपके लिए बहुत बड़ा आशीर्वाद है। यह सारी सामूहिक घटना निश्चित रुप से पूरे विश्व के लिए महान उद्धारक साबित होगी।

..... आप दोनों के पास विशाल हृदय है।

..... मैं रूस और पूरे यूक्रेन की माँ हूँ।

प.पू.श्रीमाताजी, 17-9-95, मास्को

– चीन के लोग साम्यवादी हैं फिर भी वो अत्यन्त देश भक्त हैं, वो अत्यन्त चरित्रवान भी हैं।... चीन की महिलाएँ अत्यन्त विवेकशील हैं। वो जानती हैं कि उनकी भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है और ये भी जानती हैं कि बच्चे किस प्रकार बनने चाहिए।... बुजुर्ग महिलाएं भी अत्यन्त स्नेहमय और करुण होती हैं।

..... यहाँ एक महान शक्ति कार्यरत है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि एक दिन चीन के लोग भी आप लोगों में पूरी तरह से सम्मलित हो जाएगें।

..... एशिया क्यों इतना आधुनिक और मशीनीकृत होना चाहता है,

यह बात मेरी समझ में नहीं आती। इस मशीनीकरण को आप यदि बहुत अधिक अपना लेंगे तो आपमें प्रेम की शक्ति समाप्त हो जाएगी। **पश्चिम में बहुत अधिक मशीनीकरण ने लोगों को नष्ट कर दिया है, उनके हृदय में प्रेम का पूर्ण अभाव हो गया है। देवी की शक्ति रोबोट के माध्यम से कार्य नहीं कर सकती। ...प्रेम के लिए आपको कृत्रिमता की आवश्यकता नहीं है।**

प.पू.श्रीमाताजी, 17-9-95, मास्को, जन.फर. 2002

- इस महान देश (आस्ट्रेलिया) में आकर मुझे अत्यन्त खुशी हुई है क्योंकि यहाँ पर अनगिनत साधक हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 22-3-81, आस्ट्रेलिया, नव.दिस.2004

- आस्ट्रेलिया के सहजयोगी उन कमलों की तरह से सुंदर हैं जो इस मिली जुली अव्यवस्थित संस्कृति से उपजे हैं, और आप ही लोगों को हमारी सहज-संस्कृति का प्रतिनिधित्व करना चाहिए।

..... आस्ट्रेलिया क्योंकि श्री गणेश का देश है, सहजयोग ने यहाँ पर बहुत अच्छी तरह जड़े पकड़ी हैं। श्री गणेश का आशीर्वाद यहाँ कार्य कर रहा है।

प.पू.श्रीमाताजी, 5-3-96, सिडनी, आस्ट्रेलिया, खंड IX अंक 1997

- आप लोग (आस्ट्रेलिया के लोग) क्योंकि वास्तव में स्वतंत्र हैं, आप लोग स्वतंत्र हैं अतः सहजयोग को समझने के लिए आपके पास खुला मस्तिष्क है।

प.पू.श्रीमाताजी, 22-3-81, आस्ट्रेलिया, नव.दि.2004

- **अमेरिका** - (अमेरिका श्री कृष्ण का देश है) श्री कृष्ण अत्यन्त महान व्यक्तित्त्व थे। ... वे पृथ्वी पर अवतरित हुए अपने एक ऐसे रुप को स्थापित करने के लिए जिसके कारण यह देश (अमेरिका) **वैभवशाली**

बना। अपने अवतरण द्वारा उन्होंने लोगों में एक अत्यन्त सुंदर मनोवृत्ति का सृजन किया कि धार्मिकता पूर्वक किस प्रकार इस संस्कृति को विकसित किया जाए। इस देश में ऐसे बहुत से महान नेता हो चुके हैं जिन्होंने उनका अनुसरण किया और एक प्रकार से उनकी (श्री कृष्ण की) पूजा की तथा **अमेरिका जैसे एक नए विश्व का सृजन किया।** परन्तु दुर्भाग्यवश समय के साथ-साथ लोगों के मस्तिष्क से उनका (श्री कृष्ण) रुप लुप्त हो गया, **इसका कारण ये था कि यहाँ पर उनका प्रतिनिधित्व बहुत ही ग़लत लोगों ने किया, उन लोगों ने जिन्हें श्री कृष्ण की बिल्कुल समझ ही न थी।** श्री कृष्ण वैभव के महान देवता थे, वे जानते थे कि धन-दौलत का किस प्रकार उपयोग करना है और धर्मपूर्वक, अधर्म द्वारा नहीं, किस प्रकार धन उपार्जन करना है। परन्तु यहाँ के लोग इस गुण को पूर्णतया भूल गए और शनैःशनै अपनी शक्ति का दुरुपयोग करने लगे। **सभी प्रकार के अधर्म आरंभ हो गए जैसे धोखाधड़ी, धन हथियाना, प्रभुत्व जमाना आदि।**

..... आपने देखा है कि मनुष्य यदि लालची है तो क्या होता है? **व्यक्ति सभी प्रकार के ग़लत कार्य किए चला जाता है। जो आपके देश को नष्ट कर सकते हैं।** इतना वैभवशाली देश अब ग़रीब हो गया है। ये लोग कभी इस बात से डरते न थे कि ये भी विपत्ति में घिर जाएंगे और इस तरह से ये वर्षों तक चलते रहे, मुझे पूर्ण विश्वास है कि एक दिन कुबेर स्वयं उनका पर्दाफाश करेंगे। ...कुबेर के रुप में श्री कृष्ण धन के दाता हैं।

..... इस देश के पास पैसा था, परिणाम स्वरुप बहुत से अच्छे लोग यहाँ कार्य करने आए और उनके कारण आपने बहुत सी उपलब्धियाँ प्राप्त की। ...मैं सोचती हूँ **कि कुछ चीज़ों में अमेरिका के लोग पिछड़े हुए थे। बौद्धिकता में नहीं, प्रतिभा में।... अतः विदेशों से उन्हें बहुत से प्रतिभावान लोग प्राप्त हुए।**

..... परन्तु यह मानव का स्वभाव है कि वह माया के पीछे दौड़ता ही रहता है और धन का भी यह गुण है कि यह आपको माया में उलझा देता है, माया भी इस प्रकार की कि पहले तो आप किसी प्रकार थोड़ा से धन पा लेते हैं, उस धन से कुछ खरीदते हैं आप और फिर सोचने लगते हैं कि पैसा होना अत्यन्त आवश्यक है ताकि आप बहुत सारी चीज़े खरीद सकें– कारें खरीद सकें, हवाई जहाज खरीद सकें आदि आदि। **जहाँ भी माया का खेल होता है वहां आप पागल पैसे के पीछे दौड़ना शुरु कर देते हैं जो आपको भी पागल बना देता है।**

..... इस प्रकार के लोगों की या देश की धन–शक्ति समाप्त हो जाएगी।

..... धन सम्बन्धी मामलों में श्री कृष्ण ही पहले आपको मूर्ख बनाते हैं कि धन के पीछे दौड़ो और फिर बाद में आपको स्वयं पता चलता है कि ऐसा करना अत्यन्त मूर्खता थी।

..... आपका नाभि चक्र यदि ठीक है तो आपने कुबेर की अवस्था प्राप्त कर ली है। यह देखना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि आपका नाभि चक्र संतुष्ट है।

प.पू.श्रीमाताजी, 18-8-2000, काना जौहरी

– अमेरिका बहुत अधिक कर्मी है, अतिकर्मी । ये हर समय काम ही काम में लगा रहता है। काम का नशा इन्हें मद्यपान सम है ... इनके बच्चे भी नशे के आदी हो जाते हैं, इनके परिवार टूट जाते हैं, कोई शान्त नहीं, ये युद्ध भड़काते हैं। बात केवल इतनी सी है कि अभी तक इस देश की रक्षा की जा रही है। परन्तु इन लोगों ने बहुत से मूल निवासियों को नष्ट कर दिया और बहुत सी मौलिक चीज़ों को नष्ट कर दिया है, उन चीज़ों को जिनको सँभाल कर रखा जाना चाहिए था।

..... **एक दिन ऐसा आएगा कि अमेरिका में बहुत सारे लोग आत्मसाक्षात्कारी होंगे।** परन्तु आज की स्थिति तो ये है कि धनार्जन के विचार से लोग पगला गए हैं परन्तु अब उन्हें लगता है कि अति हो गई है, तो अब क्या करें? -**सहजयोग में आ जाएँ।**

..... श्री कृष्ण अमेरिका के शासक देव हैं। **अमेरिका भी अत्यन्त सामूहिक है।** क्योंकि यह सभी देशों की चिन्ता करता है, परन्तु गलत ढंग से उनकी सहायता करने का प्रयत्न करता है ...सद् सद् विवेक का इनमें पूर्ण अभाव है। सद् सद् विवेक प्राप्त किए बिना आप उचित रुप से अपनी संघशक्ति का प्रयोग नहीं करते।

..... अमेरिका क्योंकि पूरे विश्व का विशुद्धि चक्र है अतः यह आवश्यक है कि **वहाँ के कार्यकारी सहजयोगी विशुद्धि चक्र की सारी शक्तियों को समझें** और ये भी ज्ञान उन्हें हो कि इन शक्तियों को किस प्रकार से सुरक्षित रखना है तथा किस प्रकार से इनका प्रसार पूरे विश्व में करना है। **... विशुद्धि चक्र बहुत महत्वपूर्ण है, इसी कारण से अमेरिका भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है।** अमेरिका का नागरिक होने के नाते आपको चाहिए कि यहाँ धर्म को बनाएँ रखें और विश्व की समस्याओं के लिए गहन सूझ-बूझ का सृजन करें और सभी देशों को प्रेम प्रदान करने के लिए प्रयत्नशील रहें।

प.पू.श्रीमाताजी, 29-7-2001, काना जौहरी, जन.फर. २००२

- जब पहली बार में अमेरिका गई थी तो वहाँ इतनी भयानक चीज़े देखीं कि लोग राक्षसी गुरुओं के पीछे दौड़ रहे हैं... ये लोग पागल हैं किस प्रकार ये भयानक गुरुओं का अनुसरण करते हैं और किस प्रकार ये इनका विश्वास करते हैं- उनको समझने का इनमें विवेक ही नहीं है, सत्य को समझने का उनमें विवेक ही नहीं है। **...यदि अमेरिका के लोगों में विवेक आ जाएगा तो वो सहजयोग में आएंगे, केवल आएंगे ही नहीं**

उसमें उन्नत भी होंगे।

प.पू.श्रीमाताजी, 27-10-2002, लास एंजलिस, मार्च अप्रैल 2003

– अमेरिका में इतने गुरु क्यों समृद्ध हुए? क्योंकि उन्होंने इन लोगों के अहंकार को प्रोत्साहित किया और कहा कि ''जो करते हो सब ठीक है, जब तक धन देते रहो अपनी मनमानी करते रहो।'' इस प्रकार सब कुछ होने लगा। रजनीश की तरह लोग पथभ्रष्ट होते गए। अमेरिका आकर रजनी ग्राम शुरू कर दिया और हजारों अनुयायियों के साथ वहाँ जम गया। परन्तु श्री कृष्ण की शक्तियों ने उस पर कार्य किया और वहाँ उसे मुँह की खानी पड़ी।

..... **अमेरिका के लोग गुरुओं के पास जा जाकर थक चुके हैं .. सहजयोग के लिए ऐसी बेचैनी का होना महत्त्वपूर्ण है** ...अमेरिका के लोगों ने मुझे बताया कि वे बिल्कुल बच्चों की तरह हैं और उन तक पहुँचने के लिए उन्हें समझाना पड़ेगा कि **केवल माँ का प्यार ही उन्हें ठीक कर सकता है।**

..... हमें अमेरिका को वास्तव में बचाना होगा। यह चहुँ ओर से घिरा है। उनके नैतिक और कलात्मक पक्षों पर आघात हो रहा है। उनकी आधुनिक चित्रकला में कोई गहनता नहीं, ये गन्दगी से परिपूर्ण हैं, ये गंदे चित्र वे अपरिपक्व लोगों को बेचते हैं जो मूलाधार की समस्याओं से ग्रस्त हैं। ... उन्हें सहजयोग के लाभ बताएँ ...सहजयोग के प्रचार के लिए हम समाचार पत्र आरम्भ कर सकते हैं ...टी०वी० केबल शुरू कर सकते हैं। .. . मुझे पूर्ण विश्वास है कि एक दिन हम अमेरिका में अवश्य सफल होंगे।

प.पू.श्रीमाताजी, अगस्त 1995, कबैला

– अमेरिका के सहजयोगी की ज़िम्मेदारी अन्य सहजयोगियों से कहीं अधिक है क्योंकि परमेश्वरी शक्ति उन्हें अत्यन्त सूक्ष्म एवं प्रभावशाली मानती है। परमेश्वरी शक्ति सोचती है कि अब आपको

आगे बढ़कर बहुत सा कार्य करना है, हमारे पास शक्ति भी है और मशीनरी भी।

प.पू.श्रीमाताजी, 20-6-99, काना जौहरी

– प्राचीन काल के महान साधकों को अमेरिका तथा इंग्लैण्ड में जन्म लेने का आशीर्वाद प्राप्त हुआ है, परन्तु वे व्यग्र हो गए और अपनी व्यग्रता में उन्होंने स्वयं को नष्ट कर दिया और इस प्रकार आप लोगों ने अपने सारे मनोदैहिक चक्र बिगाड़ लिए हैं। इन चक्रो में कुछ समस्या बनी रहेगी परन्तु आपको प्रयत्न करते रहना है, आपने इसी के लिए जन्म लिया है। इस उत्क्रांति को घटित होना है।

प.पू.श्रीमाताजी, 15-11-79, ब्रिटेन

– **भारतवर्ष** – भारतवर्ष के लोगों के पास पैसा–वैसा ज्यादा नहीं है, उनकी आर्थिक दशा कुछ खास नहीं है, ...लेकिन इस भारतवर्ष में चैतन्य है जो सब चीज़ों को कंट्रोल (नियंत्रित) करता है, अभी कोई और देश होता तो कोलैप्स हो गया होता। उसी Vibrations (चैतन्य) के सहारे तुम लोग जी रहे हो। कितना बड़ा देश है। ऐसे महान देश में तुम पैदा हुए हो।

..... हिन्दुस्तान में यह कार्य (सहजयोग का) बहुत ज़ोरों से हो रहा है उसका कारण यह है कि भारतवर्ष एक योग भूमि है, एक पुण्यभूमि है और पुण्यभूमि में इस तरह का कार्य होना ही था, विधि थी।

प.पू.श्रीमाताजी, 5-12-99

..... भारत महान देश है, जिसमें साक्षात्कारी लोगों की विशालतम सामूहिकता है। निश्चित रुप से ये आशीर्वादित देश है।

..... हिन्दुस्तान ऐसा देश है कि वो सारी दुनियाँ को बचा सकता है, सारी दुनियाँ को।

प.पू.श्रीमाताजी, 10-11-2007, नोयडा

– ''सारे संसार को आप मंगलमय बनाएं–यही मेरी इच्छा है।''

प.पू.श्रीमाताजी, 10-2-81

– ''शान्ति वीरों की एक प्रजाति का सृजन किया जा चुका है। मैं तो केवल इतनी आशा करती हूँ कि इस प्रजाति का विस्तार हो और लोग शान्त होकर अपने दिव्य कार्यों द्वारा विश्व में शांति प्रसारित करें।''

प.पू.श्रीमाताजी, परा आधुनिक युग

– ''सहजयोग को केवल अपने तक सीमित न करें, अपने तक इसे सीमित न करें, अपने तक सीमित न करें आपकी माँ की केवल एक इच्छा है।

प.पू.श्रीमाताजी, 26-12-2001, गणपति पूले

अध्याय 19

अपनी दिव्य शक्तियों को कैसे कार्यान्वित करें?

..... **सहजयोगियों को सर्वप्रथम समझना होगा कि -''सूक्ष्मतर स्तर पर तो हमने उपलब्धि प्राप्त कर ली है परंतु अब... हमें सोचना है कि सांसारिक स्तर पर हम क्या कर सकते हैं जिससे लोग समझें कि सहजयोग क्या है''?**

प.पू.श्रीमाताजी, 20-6-99, काना जौहरी

- ''अब आप लोग एक शक्तिशाली आध्यात्मिक व्यक्ति के रुप में विकसित हो चुके हैं... सारी शक्तियों का प्रगटीकरण आपमें हुआ है।''

प.पू.श्रीमाताजी, 9-10-94, कबैला

- ''हम अपनी महान शक्ति को कार्यान्वित करके पूरे विश्व को एक नए सांचे में ढाल सकते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 10-5-92, कबैला

- ''आप सब लोग जिन्होंने आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लिया है अपनी इन शक्तियों को कार्यान्वित कर सकते हैं, कैसे?उसे प्रसारित करके, उसका अनुभव करके इसे अन्य लोगों को देकर और इस पर प्रयोग करके।''

प.पू.श्रीमाताजी, 6-5-2001, कबैला

I. सर्वप्रथम आप अपनी शक्तियों को स्वीकार कीजिए और अनुभव करें कि सत्य, अबोधिता, विवेक एवं सहज निर्णय लेने की अद्‌भुत महान शक्तियाँ आपमें हैं, फिर पूरे विश्वास के साथ इनका उपयोग इस प्रकार करें -

अ. सत्य पर दृढ़ता से डटें रहें – स्वयं को सत्य में स्थापित कर लें कि आप परमात्मा के माध्यम हैं। ... इस पर दृढ़ हो जाएँ। सत्य की यह अभिव्यक्ति करते हुए आपको प्रकाश सम होना होगा। प्रकाश शान्तिपूर्वक स्वयं को प्रकट करता है, यह केवल अपनी शक्ति को ही प्रगट नहीं करता, अन्य लोगों को दर्शाता भी है कि यह चमकता है। प्रकाश दर्शाता है कि ''मैं प्रकाश हूँ'' तथा ''आप मेरी रोशनी में चलों।''

..... **सत्य ही आपका स्रोत है, आप सत्य पर खड़े है जिसमें महान शक्ति है, महान दृढ़ता है।** सभी महान अवतरणों– ईसा मसीह, मोहम्मद साहब में यह शक्ति थी, पूर्ण साहस तथा बल के साथ सत्य को कहने की शक्ति, ताकि लोग इसे स्वीकार करें। ...सत्य पर आपको खड़ा होना है, इसके लिए आपको साहसी एवं सशक्त होना होगा। सत्य के लिए आपको बलिदान देने के लिए तैयार रहना चाहिए क्योंकि आप सत्य का बलिदान नहीं कर सकते, आप तो असत्य की बलि दे रहे हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 6-8-82, लन्दन, जन.फर.2001

ब. अबोधिता की शक्ति पर विश्वास करें–

हम सहजयोगियों के लिए अबोधिता का सम्मान करना ही सहजसंस्कृति है। आपको चाहे ऐसा लगे कि आपको अपमान किया जा रहा है, फिर भी सहजयोगियों को अबोध होना है क्योंकि उनको अन्दर श्री गणेश की शक्ति विद्यमान है। ...आपको निरुत्साहित नहीं होना चाहिए। ... **अबोधिता जब दृढ़ होती है तब पूरे ब्रह्माण्ड की अच्छाई उसके बचाव के लिए आ जाती है।** ...अबोध व्यक्ति को कोई धोखा नहीं दे सकता क्योंकि अबोधिता का मूल्य शाश्वत है। हो सकता है लोग धन या अन्य भौतिक चीज़ों के मामले में आपको धोखा दे सकें परन्तु अत्यन्त शाश्वत चीज़ तो आपकी अबोधिता है।

..... मैंने आपको बताया है कि प्रकृति अबोध है, यह सब समझती है

और उपयुक्त क्षण में आक्रमक व्यक्ति के विरुद्ध कार्य करती है, उस व्यक्ति के विरुद्ध जो अबोध लोगों को बदनाम करने का या कष्ट देने का प्रयत्न करता है।... अबोधिता की शक्ति पर विश्वास करें।... स्थायी करुणामय स्वभाव अबोधिताा के निरंतर प्रवाह से आपके चरित्र से निरंतर बहने वाली अबोधिता से ही आता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 22-9-2001, कबैला, मार्च, अप्रैल 2002

क. हर परिस्थिति में दिव्य-विवेक से सहज-निर्णय लें-

..... आप केवल मेरे विवेक के प्रति समर्पित हो जाइए। यह विवेक कार्यशील है, यह कार्य करेगा, क्योंकि देवता आपके साथ हैं। ...आपके अपने **विवेक में आपकी अपनी आत्मा इस कार्य को कर रही है,** आपको कुछ नहीं करना है। आपको केवल स्मरण मात्र रखना है कि आप एक सहजयोगी या योगिनी है, और **आपका चरित्र तथा विचार सहज होने चाहिए।** ...प्रकाश बन कर हमें प्रकाश देना है। ...आप लोगों के अन्दर शाश्वत प्रकाश है, यही प्रकाश आनन्द को चहुँ दिश फैलाएगा।

प.पू.श्रीमाताजी, 10-11-91, कबैला

..... आप को निर्णय लेने होंगे और निर्णय लेने के विषय में व्यक्ति का क्या दृष्टिकोण होना चाहिए यह बात उसे समझनी चाहिए। **निर्णय स्वाभाविक होने चाहिए। निर्णय लेने के विषय में ढील नहीं करनी चाहिए। तुरंत जाकर चीज़ों को देंखे और श्री कृष्ण की तरह तुरन्त और सहजरुप से निर्णय लें,** जैसे श्री कृष्ण नदी में कूद पड़े (कालिया मर्दन), इसी प्रकार आपके निर्णय भी अत्यन्त स्वाभाविक होने चाहिए। ... **निर्णय के लिए बड़ी-बड़ी गोष्ठी करना आदि चीज़ें आपके लिए नहीं हैं।** रोजमर्रा के जीवन में भी आपको ऐसा ही होना चाहिए। **राजनैतिक, आर्थिक तथा जीवन के अन्य क्षेत्रों में आपको नेतृत्व करना होगा और अत्यन्त सहज होना होगा।**

किस प्रकार आप सहज हो सकते हैं? **अपनी चैतन्य लहरियों के प्रति आपको संवेदनशील होना है।** किसी पर भी दृष्टि डालकर, किसी के समीप बैठते ही किसी से हाथ मिलाते ही आपको पता चल जाना चाहिए कि उस व्यक्ति की चैतन्य लहरियाँ कैसी हैं? **इस प्रकार की संवेदनशीलता यदि आप अपने में विकसित कर लें तो निश्चित रुप से आप सहज निर्णय लेंगे।**

..... असफलताओं से घबराएँ नहीं और न ही सफलताओं से मदमस्त हो जाएं क्योंकि अब आप आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति हैं। आप संवेदनशील होंगे तो नि:संदेह तुरंत जान जाएंगे कि वास्तविकता क्या है? .. मैं कहूँगी कि **आप सहज निर्णयों पर डटे रहें,** इसके विषय में सोचें मत कि किस प्रकार ये कार्यान्वित होगा और हमें क्या करना चाहिए।

प.पू.श्रीमाताजी, 20-8-2000, कबैला, मार्च अप्रैल 2001

ड. सहजयोग को आयोजित मत कीजिए।

आयोजन शुरु करते ही बढोतरी रुक जाएगी। जैसे आपने देखा होगा कि काटकर सुव्यवस्थित करने से पेड़ छोटा (बौना) हो जाता है। मैंने ऐसा कोई वृक्ष नहीं देखा जो आयोजन से बढ़ता हो। ज़्यादा से ज़्यादा आप इसका पोषण कर सकते हैं, पानी दे सकते हैं, पर आप इसके विकास की गति नहीं बढ़ा सकते।

सभी संस्थाएं विकास की गति को कम करती हैं। आरम्भ में चाहे ये प्रतीत हो कि आयोजित करने से गति बढ़ गई। ईसाई, मुस्लिम, बौद्ध और हिन्दू धर्म भी आयोजन के बाद बनावटी रुप से बढ़े और खोखले से हो गए। हमें ठोस व्यक्तियों तथा ठोस एवं अन्तर्जात धर्म की आवश्यकता है।

..... सहजयोग को सहज ढंग से बिना बनावटी संस्थाएं बनाए, परमात्मा की कृपा से कार्य करने दीजिए। बनावट तो पतन ही लाती है... आप तो सहजयोगी हैं, सहज रहें।

प.पू.श्रीमाताजी, 1-3-92, आस्ट्रेलिया, खंड IX अंक 1-2-1997

II. स्वयं पर विश्वास करें कि अपने प्रेम, अपनी करुणा और दुसरों के प्रति अपनी हितैशिता की भावना से आप लोगों का हृदय परिवर्तन करने में पूर्ण समर्थ हैं। ये बहुत ही प्रभावशाली शक्तियाँ हैं, इन्हें प्रतिपादित करें-

1. सबसे प्रेम करें, प्रेम एवं शांति के सच्चे सिपाही बनें -

..... प्रेम देवी की शक्ति है...यही देवी पूरे ब्रह्माण्ड पर शासन कर रही है। यही तुम्हारे मध्य हृदय पर विराजमान है। आपकी तथा पूरे ब्रह्माण्ड की देखभाल करने वाली यह शक्ति प्रेम की शुद्ध इच्छा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं हैं।

..... आपको चाहिए कि इस शक्ति को धारण करें। एक बार जब आप इसे धारण कर लेंगे तो व्यक्तिगत रुप में सामूहिक रुप में आप इसे प्रतिपादित कर सकेंगे। किसी भी व्यक्ति को यदि आप जीतना चाहें तो अपने हृदय में आप कहें-

''देवी माँ कृपा करके इस व्यक्ति पर कार्य करें, मेरा पवित्र प्रेम इस व्यक्ति पर कार्य करे'' और आप हैरान रह जायेंगे कि आप किस प्रकार उसका हृदय जीत लेते हैं। 99 प्रतिशत लोग इस पावन के पूर्ण नियंत्रण में आ जायेंगे। इतना ही नहीं ये पवित्र प्रेम उन सभी नकारात्मक शक्तियों को नष्ट करता है जो आपको हानि पहुँचाने का प्रयत्न कर रही हैं। ...ये प्रेम तो ऐसा प्रकाश है जो सारे अंधकार को ज्योतिर्मय करता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 17-9-95, मास्को, ज.फ.2002, पृ.27

- मेरा हृदय रुदन करता है कि मैं कैसे समय पर पृथ्वी पर अवतरित हुई हूँ। यहाँ मुझे एक मानव दूसरे से घृणा करता दिखाई देता है।... उनमें आपस में प्रेमभाव है ही नहीं ...मेरे लिए यह अत्यन्त कष्ट कर है कि

मानव एक दूसरे से घृणा करते हैं। ...लोग खुल्लमखुल्ला घृणा करते हैं। घृणा बहुत बड़ा दुर्गुण है, यह बहुत भयानक तौर-तरीक़ों को समाप्त करने के लिए सहजयोगी क्या कर सकते हैं? ऐसा करना सम्भव है। प्रेम की शक्ति से आप यह कार्य कर सकते हैं।

..... यह प्रेम जब आपको ज्योतित करेगा तो आप हैरान होंगे कि आप मेरे लिए बहुत बड़ी शक्ति बन गए हैं। **मैं अकेले इन सबसे युद्ध नहीं कर सकती मुझे ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो वास्तव में अपने प्रेम को उन्नत करें। हम सबके लिए यह एक चुनौती है, विश्व भर के सभी सहजयोगियों के लिए।...**

यह तो एक ऐसा युद्ध है जिसमें हम सब एक हैं और हमीं को इसका मुक़ाबला करना है। ...यह युद्ध हममें और राक्षसों में है, यह साधारण लड़ाई नहीं है ...आजकल हो रहे आसुरी प्रचार से सावधान रहें। ...जो युद्ध में लड़ रही हूँ वह गम्भीर प्रकृति का है इसमें कोई संदेह नहीं। परन्तु आप सब लोग यदि **सामूहिक रुप से युद्ध लड़ें तो हम कितना कुछ कार्यान्वित कर सकते हैं। ...अपने अंदर आपको प्रेम की शक्ति को दृढ़ करना होगा। ... इस शक्ति को विकसित करें,** केवल यही शक्ति इन आसुरी शक्तियों का मुकाबला करने का क्षेम सृजन करेगी। ...में चाहती हूँ कि आप सब व्यक्तिगत रुप से इसे कार्यान्वित करें, आप सबसे प्रेम करें ...एक नयी पीढ़ी का उदय हो रहा है ...**ये मेरी हार्दिक इच्छा है कि आप सब लोग प्रेम एवं शांति के सच्चे सिपाही बनें, इसी कार्य के लिए आप सब लोग यहाँ हैं और इसी के लिए आप सबका जन्म हुआ है।**

मार्च अप्रैल २००२

2. करुणा को लोगों में बाँटे, करुणा सबको जोड़ती है-

- आपको करुणा बनना है। ...जो भी प्रेम जो भी करुणा मैंने आपको दी है उसे सहेज कर रखें और अन्य लोगों को भी वह करुणा व प्रेम

लौटाएँ, अन्यथा आप समाप्त हो जाएंगे, कहीं के न रहेंगे। ...करुणा बाहर की ओर बहनी चाहिए। ...आप इस करुणा को लोगों में बाटें। ...करुणा बनावटी या अस्वाभाविक नहीं होनी चाहिए, हमें अत्यन्त नैसर्जिक और स्वैच्छिक होना चाहिए, अन्तर्भावना होनी चाहिए। ...अन्य लोगों के प्रति अत्यन्त भावपूर्ण मातृसम तथा पितृसम करुणा। **...आपको चाहिए कि अन्य लोगों को ममत्व प्रदान करें, उनके लिए हृदय में गहन प्रेम एवं करुणा का भाव हो। ... आपको यह करुणा सर्वत्र फैलानी है और समृद्ध होना है। ... आपकी करुणा, आपका प्रेम ही आपकी अभिव्यक्ति है।**

प.पू.श्रीमाताजी, 6-8-82, लंदन, जन.फर.2001

– **करुणा वास्तव में हमारे अंदर सब चीज़ों को जोड़ती है। यह एक संयोजक तत्त्व है।** पहला आपका चित्त है, दूसरा आपकी बुद्धि या मन और तीसरा आपका हृदय। ये सब कभी न कभी एक हो जाते हैं। करुणा की शक्ति प्राप्त होते ही आप किसी से लड़ते नहीं, लड़ ही नहीं सकते। लड़ने के विषय में सोचते ही नहीं। करुणामय अवस्था में आप पूर्ण शान्त होते हैं, करुणा पूर्वक ही आप दूसरों से सम्बन्ध रखते हैं। **करुणा का अध्ययन, क्रियान्वयन या मुक्ति चालन नहीं किया जा सकता, यह तो स्वतः ही होती है।** वास्तव में हम क्षमा करते हैं और सब मूर्खता पूर्ण बातों को भूल जाते हैं, यदि हमारे अंदर करुणा है तभी हम क्षमा कर सकते हैं।

..... **करुणा आपके अस्तित्व के सभी पहलुओं को प्रकाशित करती है। व्यक्ति इससे लाभान्वित होता है और हर व्यक्ति के हृदय में आपके लिए दिव्य भाव रहते हैं करुणा न तो रेखीय है और न ही आक्रामक, यह तो केवल बहती है तथा प्रत्येक अव्यवस्थित, कष्टदायी एवम् दुखद अवस्था को शान्त कर सुखद बनाती है**

प.पू.श्रीमाताजी, जुलाई 1995, कबैला, अंक 3-4, 1996

– आपकी अपनी करुणा ही आपकी शक्ति दे पायेगी। जब आप लोगों को पूर्ण डूबते हुए देखेंगे, उन्हें पूर्ण नष्ट होते हुए देखेंगे तो स्वयं आपकी करुणा आपको शक्तिशाली बना देगी और आप सभी आवश्यक कार्य करेंगे।

प.पू.श्रीमाताजी, 5-4-96, कबैला, खंड IX अंक 1-2-1997

3. कार्य करते हुए स्वयं को हितैषिता के स्तर पर लाएं।

..... हितकर कार्य करने के लिए आपको यदि कोई झूठ भी बोलना पड़े तो कोई बात नहीं क्योंकि विशुद्धि चक्र के देवता श्री कृष्ण आपकी भावना को जानते हैं।

..... श्री कृष्ण ने ही कहा था ''सत्यं वद् प्रियं वद्'' पर यह सत्य हितकर भी होना चाहिए।

.....श्री कृष्ण दिव्य कूटनीतिज्ञ थे। ...हमें यह बात समझनी होगी कि उनकी हितैषी प्रवृत्ति ही उनकी कूटनीति का सार तत्त्व है। आपको भी सारी मानव जाति का हित करना होगा।

प.पू.श्रीमाताजी, 14-8-89, इंग्लैण्ड

III. आपके पास कुंडलिनी उठाने की जीवन्त शक्ति है। अधिक से अधिक लोगों को आत्मसाक्षात्कार देकर उनका सहस्रार खोले। सामूहिक चित्त शक्ति का प्रयोग करें। सामूहिकता में अपार शक्ति होती है।

1. आत्मसाक्षात्कार द्वारा लोगों को जाग्रति दें –

– लोगों के सहस्रार खुले न होने के कारण वे अँधेरे में विचरण कर रहे हैं, और इसी कारण सारे युद्ध होते हैं और सभी प्रकार की समस्याएँ

भी। **उनके सहस्रार यदि खुल जाएँ और उनका संबन्ध यदि परमेश्वरी शक्ति से हो जाएगा तो इन सभी समस्याओं का हल हो जाएगा, हर प्रकार की समस्याओं का हल हो जाएगा और सभी का जीवन खुशियों से भर जाएगा।**

प.पू.श्रीमाताजी, 6-5-2001, कबैला, सित.अक्टू.2001

– आज विश्व की, मानवता की रक्षा करने के लिए सभी लोगों को आत्मसाक्षात्कार देना अत्यन्त आवश्यक है। यही हमारा मुख्य कार्य है। केवल मुख्य ही नहीं परन्तु हमें केवल यही कार्य करना है। अन्य चीज़ों से कुछ भी अपलब्धि न होगी। **...ग़रीब लोगों पर दया करके, ग़रीबों तथा अपाहिजों की देखभाल करके लोगों ने अपने धर्म को फैलाने का प्रयत्न किया, वास्तव में सहजयोगियों को ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। उनके करने का एक ही कार्य है– वह है लोगों का अन्तर्परिवर्तन करना। ...आप आध्यात्मिक कार्यकर्ता है, आप सामाजिक कार्यकर्ता नहीं है।** आप सामाजिक कार्य कर सकते हैं परन्तु आपका मुख्य कार्य तो मानव का परिवर्तन करना है।

– मानव की सबसे बड़ी बीमारियाँ हैं– उसकी तुच्छता, क्रूरता, अन्य लोगों को कष्ट देना और क्रोध। ये सभी रोग आन्तरिक हैं, बाह्य नहीं। इन रोगों को ठीक किया जा सकता है। आज इसी चीज़ की आवश्यकता है। सभी देश लड़ रहे हैं, सताए हुए हैं और हर समय नष्ट होने का भय उन पर मंडरा रहा है। **इस कार्य को आप केवल आत्मसाक्षात्कार द्वारा ही कर सकते हैं।** आत्मसाक्षात्कार से क्या घटित होता है?यह बात स्पष्ट देखी जानी आवश्यक है। **जब आप किसी को आत्मसाक्षात्कार देते हैं और वह इसका** मूल्य समझता है, इसमें उन्नत होता है– तब उसकी रक्षा होती है, पूरी तरह से आपकी रक्षा की जाती है।

आप वास्तव में लोगों को आत्मसाक्षात्कार दें तो प्राकृतिक विपदाएँ

जैसे भूचाल, भूकम्प या तूफान टाले जा सकते हैं। ...अत्यन्त विनम्रतापूर्वक, अत्यन्त सुंदर तरीके से आपको आत्मसाक्षात्कार देने का कार्य करना है और आप हैरान होंगे कि किस प्रकार आपकी रक्षा की जाती है, किस प्रकार सहायता पहुँचती है, किस प्रकार सभी कुछ कार्यान्वित होता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 3-6-2001, कबैला, न.दि.2001

2. संघ-शक्ति बढ़ाएं, सामूहिक रुप से ध्यान प्रार्थना करें-

- आपको सहजयोग को नए विशाल एवं अधिक गतिशील तरीके से आगे बढ़ाना है। इसके लिए पहली आवश्यक चीज़ है **संघ शक्ति अर्थात आपकी सामूहिकता।**

..... **सामूहिकता में हम एक दूसरे को शक्ति देते हैं, और यही सामूहिकता सर्व राष्ट्रों और सर्वदेशों में फैलने वाली है** और उस दिन आप जानिएगा कि आप चाहे यहाँ रहें, चाहें इंग्लैण्ड में, चाहे अमेरिका में हों, चाहे किसी मुसलमान देश में हों या चीनी देशों में, कहीं भी रहे आप सब एक हैं। यही शुरुआत हो गई है। **सहजयोग एक बड़ी संक्रान्ति है- सं माने अच्छी और क्रांति माने आप जानते हैं, यह एक बहुत भारी** evolutionary **क्रांति है और जो पवित्र क्रांति है।** इसमें सबसे पहले हमने जाना हैं कि हम सब एक ही विराट के अंग-प्रत्यंग हैं, हम अलग नहीं हैं, सब एक हैं ...सामूहिक अस्तित्व है हमारा।... सब सहजयोगी आपस में रिश्तेदार हैं ...सहजयोगी आपके मित्र हो जाते हैं, आपके अपने हो जाते हैं- ''आत्मज''। आत्मज मतलब जो आत्मा से पैदा हुए हैं ... जिसका आत्मा से सम्बन्ध हो गया उसका नितान्त सम्बन्ध होता है। ... सारी दुनियाँ की दुनियाँ ही जब सहजयोगियों की खड़ी होगी तब वैमनस्य, द्वेष, हर तरह के Competition और आपस की पागल दौड़ सब खत्म हो जाएगा और इतनी sense of secutiry (सुरक्षा की भावना) हमारे अन्दर

आ जाएगी कि हम सब भाई-बहन हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 10-2-81, दिल्ली, जु.अ.निर्मलायोग 1983

..... जिन-जिन मामलों में बड़ी समस्याएं हैं, उन पर आपने केवल सामूहिक रुप से ध्यान करना है।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-4-99, टर्की

- आप लोग यदि यह निर्णय कर लें कि आप माफिया से डरेंगे नहीं और अपनी ध्यान-धारणा के दौरान यदि आप ये माँगेगें कि ''श्रीमाता जी ये माफिया समाप्त हो जाए'' तो मैं आपको वचन देती हूँ कि माफिया समाप्त हो जाएगा।

..... यह आपके विचारों का विवेक है, विवेक के माध्यम से आप जड़ों तक देख पायेंगे और समस्या का समाधान कर लेंगे।... देवी की यह शक्ति जो आपने अपने अंदर प्राप्त कर ली है। उसे विवेकशील तरीके से प्रसारित करना चाहिए। जैसे यहाँ (रुस में) पर समस्या मुख्य रुप से आर्थिक है और आप लोग सामूहिक रुप से यदि अपने मस्तिष्क इस समस्या पर डालें तो ...आपके ज्योतित विवेक के माध्यम से देवी की यह शक्ति जो कि आपके अंदर जाग्रत हैं, आपको पर्याप्त सूझ-बूझ देगी कि आप इस समस्या का समाधान कर सकते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 17-9-95, मास्को

3. संसार की समस्याओं को पूर्ण साक्षीभाव से देखें और उनको दूर करने की शुद्ध इच्छा करें क्योंकि आपकी इच्छा में ही अनन्त शक्तियाँ होती हैं-

- आप सहजयोगी अत्यन्त शक्तिशाली हैं, आप अन्य लोगों से कहीं बेहतर रुप से कार्य कर सकते हैं। उदाहारण के रुप में मान लो कोई समस्या है जिससे पूरा विश्व परेशान है, आपके पास **साक्षी रुप से देखने**

का ज्ञान है, समस्या को साक्षी रुप से देखें, बस समस्या समाप्त हो जाएगी। पूरे विश्व में ये समस्या समाप्त हो जाएगी, वह रह ही नहीं सकती। जैसे इन दिनों विश्व उपद्रवों से भरा हुआ है, संसार में मूर्ख और झगड़ालू लोग उभर कर आ रहे हैं, वे सब पर प्रभुत्व जमाना चाहते हैं। **इस समय यदि आप ये सब साक्षी भाव से देखें तो ये समाप्त हो जाएगा क्योंकि आप लोग बहुत ही शक्तिशाली हैं।**

..... आप लोगों को विशेष बनाया गया है अत्यन्त विशेष, इस पूरे विश्व की मुक्ति के लिए। ...सहजयोग केवल आपके लिए नहीं है, पूरे विश्व के लिए है कृपा करके इसको समझने का प्रयत्न करें। **आप अपनी शक्तियों का उपयोग करें** ...आपकी शक्तियाँ बढ़ेगी और **ये शक्तियाँ जब बढ़ जायेगी तो ये लोग जो अपनी राजनीतिक गतिविधियों से पूरे समाज पर छा जाने का प्रयत्न कर रहे हैं, वो सब लुप्त हो जाएंगे, उनमें शक्तियाँ नहीं हैं वे गायब हो जाएंगे।**

पपू.श्रीमाताजी ५-५-२००२ कबैला न॰दिस॰ २००२

– आपका व्यक्तिगत आचरण, सामूहिक आचरण, राष्ट्रीय आचरण सभी मिलकर वातावरण को परिवर्तित करेंगे।... आपकी शक्तियाँ अनन्त हैं, आपको वह शक्तियाँ दर्शानी होंगी। ये जड़ नहीं है, यह तो एक आन्दोलन है जो कि अच्छे प्रकार का है, ये जानता है कि कहाँ प्रवेश करना है और किस प्रकार प्रवेश करना है और किस क्षेत्र में प्रवेश करना है। यह शक्ति कार्य करवा लेती है।

प.पू.श्रीमाताजी २०-६-९९ काना जौहरी

– जब आप ध्यानात्मक चित्त से विकसित होते हैं तब आपका चित्त प्रबोधित हो जाता है। ऐसे में सिर्फ आनन्द लेने के बजाय चित्त को प्रेरित करना चाहिए तथा कोई समस्या हो तो उस पर चित्त लगाना चाहिए। मान लीजिए राष्ट्रीय स्तर पर कोई समस्या है तो आप सभी उस पर अपना चित्त

लगा सकते हैं। यह कार्यान्वित होगा क्योंकि आप लोग परम चैतन्य की नाड़ियाँ हैं जो आपके लिए दुनिया की रचना कर रहा है, नए तरह के मानव की रचना। और यह क्रांति बड़ी तेजी से कार्यान्वित हो सकती है अगर आप लोग निर्णय करें, दिशा दें और इस चित्त को कुछ अच्छे कार्य में लगाएं।

प.पू.श्रीमाताजी, 3-3-1996, शिव पूजा-सिडनी, अंक 9-10 1996

– सहजयोगियों से अनुरोध है कि **उन्हें इच्छा करनी चाहिए** ताकि लोगों में आत्मा बनने की इच्छा जाग्रत हो।

प.पू.श्रीमाताजी, लंदन, ज.फ.2002

..... इंग्लैंड ब्रह्माण्ड का हृदय है, परन्तु यह इतना उपेक्षित है कि तुरंत इसे ठीक किया जाना आवश्यक है। ...यहाँ के लोग नशे की आदत में फँसे हुए हैं, आलस्य एवं नकारात्मकता सर्वत्र फैली हुई है।...

..... आप सभी लोगों को अपने मन में इच्छा करनी चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए ताकि आपके अंग्रेज़ भाई-बहनों की मदद हो सके।

प.पू.श्रीमाताजी के मराठी में लिखे एक पत्र से जु.अ. 2005

IV. अपनी शक्तियाँ, अपनी ऊर्जा भी आप अन्य लोगों को दे सकते हैं, इस सुविचारित शक्ति का प्रेक्षपण कीजिए-

– यह तो आप जान ही गए हैं कि आपने दूसरे लोगों को साक्षात्कार देना है, उन्हें रोगमुक्त करना है और करुणामय होकर उनसे प्रेम करना है। **अपनी शक्तियाँ अपनी ऊर्जा भी आप अन्य लोगों को दे सकते हैं।** किसी व्यक्ति को यदि आपकी सहायता की आवश्यकता है, और आप भी अपनी शक्ति प्रसार करना चाहते हैं तो आप उसकी सहायता कर सकते हैं। **यह एक नए प्रकार की ध्यान-धारणा है जिसका आप सबको अभ्यास करना है, अपनी शक्ति को प्रसारित करके दूसरों पर**

प्रक्षेपित करना। न आपको कुछ करना है और न ही आपको कुछ बोलना है, आपको चित्त से केवल महसूस करना है। मैं चित्त से विशेष रुप से इसलिए कह रही हूँ क्योंकि ऐसा करना न तो सहज है और न स्वत:। आपको अपनी गणेश तत्त्व की अबोधिता शक्ति को दूसरों पर छोड़ने का अभ्यास करना है। इस प्रकार उनकी भी अबोधिता जाग्रत हो जाएगी। ... आप अपनी शक्ति का प्रक्षेपण इस प्रकार कीजिये कि दूसरों का मूर्खतापूर्ण व्यवहार रुक जाए और वे आपका आदर करें और आपके व्यक्तित्व की गरिमा का एहसास करें। यह कार्य कठिन नहीं है। ... **आपका तेजस्वी व्यक्तित्त्व अपने आसपास के लोगों पर आश्चर्यजनक प्रभाव डाल सकता है। आपको सहज ही इस सुविचारित शक्ति का प्रक्षेपण आरम्भ करना है।** यह सहज में ही घटित हो जाती है, थोड़े से अभ्यास से आप इसे प्राप्त कर लेंगे। अन्य लोगों को घृणा अथवा तिरस्कार से नहीं देखना, अपने गौरवशाली व्यक्तित्व को समयोजित करना है।

..... **आपका शान्त व्यक्तित्व ही उन सुंदर चैतन्य लहरियों को प्रसारित कर सकता है जो आपने अपने अंदर एकत्रित की हैं।** ये एकत्रीकारण ही आपके दैदीप्यवान चेहरे से प्रकट हो रहा है। ...यह सुविचारित शक्ति प्रक्षेपण होने पर आपको डरना नहीं है कि आपको अहंकार आ जाएगा या आप किसी प्रकार से बन्धन ग्रस्त हो जाएंगे। आपको केवल यही जानना है कि आपमें शक्तियाँ हैं और उन्हें बच्चे की भाँति सुंदरतापूर्वक अभिव्यक्त कर रहे हैं।...

..... हमारे अंदर जिस प्रकार श्री गणेश जी के रोग प्रतिरोधक गण हैं, उसी प्रकार आप भी श्री गणेश के गण हैं। ...रोग प्रतिरोधको के रुप में हम सहजयोगी क्या कर सकते हैं? **आपको कोई तलवार या शस्त्र लेकर तो शत्रुओं से लड़ना नहीं है, आप मात्र दो विधियों से शुत्रओं पर**

विजय पा सकते हैं -

अ) प्रथम उन पर अपने **प्रेम का प्रयोग** करके देखिए, इस प्रकार आप बहुत लोगों का हृदय जीत सकते हैं।

ब) दूसरे आप **ध्यान में जाकर** बंधन दे। बंधन देने की भी कई विधियाँ हैं। बंधन इतनी तीव्रता एवं सुंदरतापूर्वक कार्य करता है कि आप विस्मित रह जाते हैं। ऐसा नहीं है कि हर व्यक्ति का बंधन कार्य करे, आप तो शक्तिशाली सहजयोगी हैं, आप बंधन दे सकते हैं।

..... आप सब कुछ कर सकते हैं क्योंकि आपके अंदर शक्ति है। ... आपकी शक्ति स्वयं ही दर्शा देगी कि यह प्रेम, स्नेह एवं सौहार्द की शक्ति है जो विश्व को परिवर्तित कर देगी।... मैं पूर्ण विश्व के परिवर्तन का सोचती हूँ। मैं यह जानती हूँ कि यह एक स्वप्न है, फिर भी आप सब लोगों को देखकर ही मै ऐसा सोचती हूँ। जब मैं आपके अन्दर श्री गणेश को देखती हूँ तो मुझे पूरा विश्वास हो जाता है कि यह कार्य हो जाएगा।

प.पू.श्रीमाताजी, 10-07-95, कबैला, 1996, अंक 3&4

V. दृढ़ निश्चय करें। अपने निश्चय में अडिग रहें, दृढ़ता में बहुत शक्ति होती है, यह असंभव कार्यों को संभव बना देती है, सतयुग आपके ही प्रयत्नों से आएगा-

- एक बार जब आप दृढ़ निश्चय कर लेंगे तो पूरी दिव्यता पूर्ण दिव्य शक्ति आपके चरणों में लोट जाएगी। इस मामले में आप मेरा विश्वास करें। ...जैसा कि मैंने भैरवनाथ और हनुमान जी के बारे में बताया था कि ये सब विद्यमान हैं और आपकी पुकार की प्रतीक्षा करते रहते हैं ...आप अपना कोई भी कार्य उन पर छोड़ सकते हैं और वे इन कार्यों को देखेंगे ... वे आपकी हर तरह से मदद करेंगे।

..... **सतयुग आपके ही प्रयत्नों से आएगा। सहजयोग के पूर्व आपके कोई भी प्रयत्न दिव्य नहीं थे परन्तु अब आपके सारे प्रयत्न दिव्य हैं।**

..... कलियुग में एक सुंदर मंच की रचना कर दी गई है और इस पर आश्चर्यजनक नाटक खेला जाना है। इस नाटक में रावण सीता जी को माँ की तरह प्रेम करेगा और कंस भी श्री राधा के चरणों में गिरेगा।... देवी शक्ति के कारण ये सारे विजय-दिवस अभी आने बाकी है और ये **सब आपके माध्यम से कार्यान्वित होगा।**

..... **आप चुने हुए लोग हैं, आपने ही यह उत्तरदायित्व लेना है, परमेश्वरी प्रेम की वाहिकाएँ बनने का, वह प्रगल्भ शक्ति बनने का जो विश्व की सारी घृणा की धारणा को ही परिवर्तित कर देगा जिस पर ये सारे राष्ट्र और भेद-भाव बनाए गए हैं।**

कुछ समय तक ऐसा लगता है कि कैसे? कैसे ये कार्य हो सकता है? परन्तु अब गोकुल के दिन चले गए है। मैं इसके विषय में सोच रही थी, उस समय श्री कृष्ण अपनी बाँसुरी बजाया करते थे और गोप-गोपियों को सहजयोग देने का प्रयत्न करते थे। **ओह! वे प्रयत्न करते रहे, करते रहे, कई जन्मों में ये प्रयत्न करते रहे, पर कुछ भी तो कार्यान्वित नहीं हुआ।**

परन्तु अब ये सहजयोग चिंगारी की तरह फैल जाएगा। निरन्तर प्रतिक्रिया (Chain reaction) आरम्भ हो जाएगी परन्तु इसे कार्यान्वित करने के लिए हमारे पास शक्तिशाली मशीनों (माध्यम) का होना आवश्यक है, नहीं तो फ्यूज उड़ जाएगा।

आपको पूर्ण यंत्र, पूर्ण वाहिका, पूर्ण बाँसुरी तो बनना ही होगा। यदि आप चाहते हैं कि मैं आपके प्रेम की धुन बजाऊं तो आपको

अपने सातों छिद्र (चक्र) स्वच्छ रखने होंगे। परमात्मा कलाकार हैं परन्तु आप यंत्र हैं। इतनी सारी आत्माओं (सहजयोगीयों) से बजने वाला लयबद्धसंगीत **विश्व में व्याप्त सारे राक्षसों के कानों में घुस सकता है, इनके हृदय में प्रवेश कर सकता है और उनके हृदय में प्रेम भर सकता है।** तब हो सकता है कि सारे राक्षस अपनी दुष्टप्रवृत्तियों को त्याग कर प्रेम के चरणों में गिर जाएं। आपके अंदर ही श्री कृष्ण जन्म लेंगे जो जाकर कालिया के सहस्रार पर बैठकर अपने पैर से उसे दबाते रहे।... कृष्ण आपके अन्तस में जन्मेंगे।

प.पू.श्रीमाताजी, 28-8-73, मुंबई

- अब आप पूर्ण हैं

..... आपमें ऐसा व्यक्तित्व विकसित हो गया है जो केवल अन्य लोगों के लिए जीवित रहता है, अपने लिए नहीं।

..... आध्यात्मिक व्यक्तियों का व्यक्तित्व ही ऐसा होता है जिससे परमात्मा का प्रेम प्रतिबिम्बित होता है, वही प्रतिबिम्ब सदैव आपसे भी झलकना चाहिए।

प.पू.श्रीमाताजी, 20-8-2000, कबेला, मार्च-अप्रैल 2001

अध्याय 20

अपने आध्यात्मिक व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा में अटल रहें

(सहजयोगी प्रायः अनिवार्य दैनिक सहज साधनाओं के प्रति असावधान होने के कारण चैतन्य लहरियों की संवेदना खो देते हैं। गहन सहजयोगी भी अपने सूक्ष्म अहंकार एवं विषम परिस्थितियों में अपना संतुलन नहीं रख पाने के कारण उच्चावस्था से गिरकर साधारण स्थिति में आ जाते हैं। अतः हर सहजयोगी के लिए आवश्यक है कि वे परम पूज्य श्री माता जी द्वारा बताए निर्देशों का पूरी निष्ठा व ईमानदारी से पालन करें और एक सहजयोगी की प्रतिष्ठा एवं गरिमा बनाए रखें।)

- जब लोग (सहजयोगी) बाह्य की शक्ति की ओर बढ़ने लग जाते हैं तो अन्दर की शक्ति क्षीण हो जाती है। शक्ति क्षीण होने के कारण वे ऐसे कगार पर पहुँच जाते हैं कि फौरन अहंकार में ही डूबने लगते हैं।... अपना ही महत्त्व, अपनी ही डींग मारने-हमने ये किया, हम ये करेंगे-

प.पू.श्रीमाताजी, 30-9-90

- कुछ लोग तुरन्त सोचने लगते हैं-''अब तो हम आत्मसाक्षात्कारी हो गए और इसको-उसको आत्मसाक्षात्कार दे सकते हैं। वे अहंकार की सवारी करने लगते हैं और असफल होकर उन्हें वहीं वापिस जाना पड़ता है जहाँ से शुरु किया था।

यह साँप और सीढ़ी के खेल की तरह होता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 4-2-83, देहली

आपको सावधान रहना है, हर कदम पर षटरिपु साँप की तरह आपको डँसने के लिए तैयार बैठे हैं- सतर्क रहें।

1. सहजयोग कोई साधारण संस्था नहीं है, यह आत्म-ज्ञान की

साधना है, पूरी आस्था और विनम्रता से इसमें जमें रहें-

- सहजयोग में प्राप्ति इतनी सहज में हो जाती है कि उसके प्रति लोग कैज़ुअल रहते हैं। ... इसमें कैज़ुअलपना नहीं चलने का, खाते-पीते, उठते-बैठते जैसे श्वास चलती है, हर श्वास के साथ सहजयोग प्रस्थापित करना होगा। ये समझ लीजिए आप। ये भी दूसरी बात बता दूँ आपको कि बग़ैर सहजयोग के आपका कोई व्यक्तित्व है ही नहीं, अब उसके बग़ैर आपका निखार भी नहीं, उसके बग़ैर आपका कोई स्थान भी नहीं।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-11-75 बंबई, सि.अ.2004 पृ.28-29

- अभी भी आप लोग अपने विषय में मिथ्या विचारों, कृत्रिमताओं, हास्यासपद धारणाओं आदि में ही जिए जा रहे हैं। अभी भी आप सारी मूर्खताओं से चिपके हुए हैं। ...इन दुर्गुणों का साथ हम सहजयोगियों के लिए अत्यन्त ही भयानक साबित हो सकता है।

- आपमें से कुछ लोग बुद्धिवादी हैं। बुद्धिवादियों को हर चीज़ को बौद्धिक रुप देने की आदत होती है। परमात्मा की दृष्टि से बुद्धिवाद कुछ भी नहीं है, क्योंकि परमात्मा ने ही उसका सृजन किया है, अतः आपको सावधान रहना होगा।

प.पू.श्रीमाताजी, 12-2-84, बोर्डी, ज.फ.2004

2. प.पू.श्रीमाताजी के प्रति विश्वास एवं सहजयोगी की गरिमा आपके आचरण से अभिव्यक्त हो -

- श्रीमाताजी आपके जीवन में होनी चाहिए, आपके व्यवहार, अभिव्यक्ति तथा आचरण में होनी चाहिए, एक दूसरे को समझने में परस्पर प्रेम में होनी चाहिए। ...आप का माता जी के प्रति विश्वास तो आपके **अस्तित्व से झलकना चाहिए। इस विश्वास को कार्य करना चाहिए तथा परिणाम दिखाने चाहिए।**

प.पू.श्रीमाताजी, 9-12-91, बैगंलूर

– सहजयोग में हमें अत्यन्त **गरिमामय आचरण** करना चाहिए जो हमारी शैली और हमारी परंपरा के अनुरुप हों। सहजयोग परम्परा ये है कि हम लोगों से अत्यन्त सभ्य, मधुर, स्नेहमय एवं प्रोत्याहित करने वाले तरीके से व्यवहार करें। ...**आपके चरित्र में शक्ति की अभिव्यक्ति** होनी चाहिए।... आपको किसी चीज़ से भय नहीं है, किसी चीज़ के आगे आपको झुकना नहीं है। ...**शन्ति पूर्वक विरोध करें।** आप उच्चतम से भी उच्च है... आपको अत्यन्त शांत होना होगा। ...किसी भी कीमत पर किसी भी प्रकार से यह शन्ति नष्ट नहीं होनी चाहिए।

प.पू.श्रीमाताजी, 22-3-84, बंबई, न.दि.2007 पृ.-30, 31

– हमें जानना है कि हमारा स्वयं पर कितना **अनुशासन** है, यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। ...लोगों से बातचीत करते समय एक सुन्दर शैली का होना आवश्यक है। आपके आचरण जैसे बातचीत, चालढाल, बैठने तथा संवाद के ढंग से आपका **आत्मविश्वास झलकना चाहिए।** ... किसी से बातचीत करते समय घबराएं नहीं। ...दूसरों को ध्यान से सुनिए .. .मधुरता से बातचीत करें ...दूसरों को बात करने का अवसर दें। ...अपने संगठन के विषय में बात करते हुए ''मैं'' का प्रयोग न करें, ''हम'' कहकर बातचीत करें। सदा संगठन की बात करें, अपनी नहीं।

प.पू.श्रीमाताजी, 17 सितम्बर 1980

– **विनम्रता** सहजयोगी का एक मापदंड है। मैंने देखा है कि सहजयोगी भी कभी-कभी बहुत क्रुद्ध हो जाते हैं, चिल्लाने लगते हैं, यह व्यवहार दर्शाता है कि वे अभी तक सहजयोगी नहीं है। विनम्रता व्यक्ति को अधिक स्थायित्व देती है।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-12-2000, गणपतिपूले, सि.अ.2001 पृ.18

– वेश भूषा में **शालीनता** हो किसी भी पागल फैशन में आप न फँसे हैं, आपको शालीन वस्त्र पहनने चाहिए। आपको भद्दे या दूसरों को

आकर्षित करने वाले वस्त्र नहीं पहनने चाहिए।

आत्मसम्मान सहजयोग में आवश्यक गुण है, किसी भी अवस्था में हमें अपने शरीर का प्रदर्शन नहीं करना।... हमें भारतीय वेशभूषा धारण करनी चाहिए। भारतीय वस्त्र सुंदर हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 11-3-93, प्रतिष्ठान, न.दि.2008 पृ.31, 32

– आपके **व्यवहार में उदारता हो।** ...आप यदि उदार नहीं हैं, कंजूस हैं, सदैव अपने पैसे के बचत के विषय में चिंतित रहते हैं तो आप परिपक्व सहजयोगी नहीं हैं। ...कंजूसी आत्मा के विरुद्ध है, आत्मा तो अत्यन्त उदार है उदार, यह कभी कुछ बचाने का प्रयत्न नहीं करती। ... उसमें लोभ का नामोनिशान नहीं होता और यही कारण है कि आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति कभी दोषी नहीं होता, उसे अत्यन्त उदार होना पड़ता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 20-8-2000, कबेला, मार्च-अ.2001, पृ.35

– आपको किसी से **घृणा नहीं करनी चाहिए,** यह निकृष्ट प्रकार की लिप्सा है। ''मैं घृणा करता हूँ'' शब्द ही सहजयोगियों की ज़बान पर नहीं आने चाहिए। इसे दण्डक कहते हैं, ये आदेश है। किसी से भी घृणा का अधिकार आपको नहीं है, चाहे वो राक्षस ही क्यों न हो, बेहतर है उनसे घृणा न करें, उन्हें अवसर दें।

प.पू.श्रीमाताजी, 29 जुलाई 1980, लंदन

– **अहंचालित पाश्चात्य समाज की शैली की नकल न करें। वे ऐसे कठोर शब्दों का प्रयोग करते हैं** ''मैं क्या परवाह करता हूँ'' , किसी से भी ऐसे वाक्य कहना अभद्रता है। किसी प्रकार आप कह सकते हैं ''मैं तुमसे घृणा करता हूँ''... हममें क्या दोष है, आप ऐसा कहने वाले कौन होते हैं, यह हमारे बात करने का तरीका नहीं है। ...**अपमान जनक तरीके और भावनात्मक धमकी यह इस देश की परम्परा नहीं है। ऐसा करने वालों को बाहर फैंक दिया जाएगा।** आपको ऐसा नहीं

करना चाहिए। सहजयोग में आप ऐसा नहीं कर सकते।... लोगों को अपमानजनक परिस्थितियाँ उत्पन्न करने की धारणाएँ आपमें नहीं होनी चाहिए, ये सब आधुनिक शैली है। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। हम लोगों से अत्यन्त मधुर, स्नेहमय एवं प्रोत्साहित तरीके से व्यवहार करें।

प.पू.श्रीमाताजी, 22-3-84, बंबई, नव.दि.२००७

– आप सबको मैं यह कहूँगी कि कभी भी ये नहीं कहना चाहिए कि ये मुझे पसन्द है या मुझे पसन्द नहीं है। **ये उल्टे मंत्र हैं।** ये आम बात है कि मुझे **ये पसन्द है, ये नहीं है।** ...अपने बन्धनों के कारण आप सोचते हैं कि आपको यह कहने का अधिकार है कि मुझे पसन्द नहीं है, मैं नहीं चाहता, परन्तु आप कौन होते हैं? आप यदि आत्मा हैं तो आप कभी भी ऐसे शब्द उपयोग नहीं करेंगे क्योंकि इनसे किसी को चोट पहुँच सकती है। ...कभी भी आप ऐसी कोई बात नहीं करेंगे, जिससे दूसरों को चोट पहुँचे, कभी भी आप ऐसा कार्य नहीं करेंगे जो दूसरों के लिए भयानक है। सदैव अत्यन्त प्रेममय करुणा और शान्ति प्रदान करने वाली बातें कहें।

प.पू.श्रीमाताजी, 20-8-2000, कबैला

– सहजयोग की दृष्टि से जो शोभायमान है वह करना चाहिए। कोई सा भी व्यवहार जो अशोभनीय है, छोटी–छोटी बातों में उलझना, बेकार में आपस में झगड़े करना, किसी भी चीज़ की माँग करते रहना– हमको ये चाहिए, वो चाहिए या कोई इस तरह की बातें करना **ओछापन** है।

– एक **बड़प्पन** लेकर, एक उदारता लेकर आपको चलना है।... कोई भी ऐसा कार्य नहीं करना है जो Indecent हो, जिसमें डिकोरम नहीं हो, जिसमें कोई भी सभ्यता नहीं, न्यूनता हो। सभ्य तरीके से काम करना चाहिए।

प.पू.श्रीमाताजी, 29-3-83, दिल्ली, नव.दिस.2006

3. कुछ बातों में विशेष सावधान एवं सतर्क रहें –

– सहजयोगियों को मेरी किसी भी बात की व्याख्या नहीं करनी है। .

..आप मुझ पर टीका नहीं कर सकते। **...मैं स्पष्ट बात करती हूँ जिसमें ठीक करने के लिए कुछ नहीं होता। ...जो लोग स्वयं को बुद्धिमान समझते हैं उन्हें समझ लेना चाहिए कि उनकी बुद्धि में मेरी व्याख्या करने की क्षमता नहीं है।**

- सहजयोग में भाषण देते हुए सावधान रहना चाहिए कि कहीं अहम् में फँसकर वे कोई ऐसी बात न कहें जो श्रीमाता जी ने कभी कही ही नहीं। जो लोग पक्के सहजयोगी नहीं हैं उन्हें आत्मसाक्षात्कार तो देना चाहिए पर भाषण नहीं देना चाहिए।

प.पू.श्रीमाताजी, 20-12-92, आस्ट्रेलिया

- कोई भी अपने हिसाब से लोगों को उपदेश देना शुरु न कर दे। हमें उपदेश पसन्द नहीं है। काफी उपदेश दिए जा चुके, अन्य लोगों को उपदेश देने की कोई आवश्यकता नहीं। यदि आपको उपदेश देना ही है तो स्वयं को दीजिए, दूसरों को नहीं।

प.पू.श्रीमाताजी, 1-3-92, आस्ट्रेलिया, खंड IV अंक 5-6 1992

- **अतिशयता में न जाएँ** - कोई भी चीज़ अति में जाना ही सहज के विरोध में पड़ती है, जैसे अब संगीत का शौक है तो संगीत ही संगीत है फिर ध्यान भी नहीं करने का बस संगीत में पड़े हैं। मनोरंजन में पड़ गए फिर कविता में पड़ गए। **कोई भी चीज़ अतिशयता में जाना सहजयोग के विरोध में है। और दूसरी चीज़ जो हमारी शक्तियाँ हैं उनकी सम्यक होना चाहिए तभी हमें सम्यक ज्ञान मिलेगा** माने संघटित को आप देखते रहे तो सम्यक ज्ञान नहीं हो सकता आपको एक ही चीज़ का ज्ञान होगा।

प.पू.श्रीमाताजी, 16-10-88, पुणे, नवरात्रि प्रवचन

- **आलोचना न करें** - आलोचना करने का भी आपको कोई अधिकार नहीं है। ...बेहतर होगा कि चीज़ों की सराहना करें और स्वयं इस बात को समझें कि आलोचना करने का अधिकार आपको नहीं है। इसकी

योग्यता आपमें नहीं है। ...**आलोचना करके आप सृजन के आनंद को नष्ट कर देते हैं।** तो यह एक भूल है जो हमें नहीं करनी चाहिए। अच्छा होगा कि अपनी आलोचना करें। ...अपनी सभी ग़लत आदतों की आलोचना करें और स्वयं पर हँसे। आप यदि स्वयं पर हँसना जानते हैं तो आप किसी पर एतराज़ नहीं करेंगे और न ही किसी अन्य की सृजनात्मकता में बाधा डालेंगे। ...यदि संभव हो तो प्रेमपूर्वक उस व्यक्ति को समझना चाहिए। कि आपमें यह दोष है, अच्छा है सुधार कर लें। ऐसे ढंग से समझाइए कि वह बात को समझ ले ...उसे बुरा न लगे।

प.पू.श्रीमाताजी, 6-5-2002, कबैला, सि.अ.2002

– **सहजयोग में बिजनेस या राजकरण न करें** – बिजनेस आपको बिल्कुल नहीं करना है किसी भी तरह का पैसा आपको इकट्ठा नहीं करना है, किसी भी तरह, किसी भी चीज़ के लिए। पहले से ही समझ लेना चाहिए कि पैसे का और इसका (सहजयोग का) संबंध कहीं भी और किसी भी प्रकार से नहीं है। दूसरा राजकरण से भी इसका संबंध नहीं है।... राजकरण और सत्ता से सहजयोग का कोई संबंध नहीं है।

प.पू.श्रीमाताजी, 3-9-73, मुंबई, जु.अग.2004

– **गप्पबाजी से बचें** – गप्पबाजी ने सामूहिकता में हमारे लिए बड़ी बड़ी समस्याएं खड़ी कर दी है अत: मेरा सर्वोत्तम सुझाव है कि चुप रहें। . .आन्तरिक मौन के सिवाय आप दिव्य शीतल लहरियों का आनंद नहीं ले सकते। गप्पें मारते चले जाना सहजयोग में विकसित हो रहे व्यक्ति का चिन्ह नहीं है। ...बहुत ज्यादा प्रभावशाली और महान लोग सदैव मौन ही रहते हैं। ...मैंने देखा है कि कुछ लोग लोकप्रियता की बहुत चिंता करते हैं. ..जिस व्यक्ति में सहजयोग की प्रगल्भता होगी वह स्वत: ही लोकप्रिय हो जाएगा। ...बातें बनाने की, दूसरों को प्रभावित करने की, दिखावा करने

की तथा घटिया लोकप्रियता के पीछे भागने की कोई ज़रुरत नहीं है।

प.पू.श्रीमाताजी, 20-10-2000, लास एंजिल्स, मई.जून.2001

– **अपना विज्ञापन न करें** – एक बात और, हम क्या कर रहे हैं इसके विषय में शेख़ी मारने की आवश्यकता नहीं, इसका विज्ञापन करने की ज़रुरत नहीं। ...दूसरों को स्वयं के बारे में बताने की इच्छा भी आवश्यक नहीं क्योंकि जो भी काम आप करते हैं वह आत्म संतुष्टि के लिए करते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, जुलाई १९८५, कबैला

4. सभी आत्मघाती आदतों को छोड़ना होगा–

– सद्चरित्र, सदाचार और शुद्धता इसके बग़ैर कुछ भी आप इस (सहजयोग) मार्ग में नहीं जा सकते। ग़र आपके अंदर ऐसी कोई आदतें हैं तो उन्हें छोड़ने का प्रयत्न करना ही होगा।

प.पू.श्रीमाताजी, 3-9-73, बंबई

– आपको **पावित्र्य** में रहना है। ...पावित्र्य अत्यन्त अत्यन्त शक्तिशाली चीज़ है। ...आप एक सहजयोगी हैं और आपकी पवित्रता का पतन करने वाली कोई भी चीज़ आपको स्वीकार नहीं करनी चाहिए।

प.पू.श्रीमाताजी, 8-7-2001, कबैला

– यौन संबंध पवित्र रखें–

..... **हमें यौन संबंधी जीवन के प्रतिस्थूल दृष्टिकोण जो हमने विकसित किया है, को स्वच्छ करना है, आप इन्हें त्याग दे, फेंक दें पूर्णतया।** इस मामले में कोई समझौता नहीं हो सकता, अन्यथा आप योगी नहीं हो सकते, आप योगी हो ही नहीं सकते। ...कोई नहीं कहता कि अपनी पत्नियों के साथ आपके उचित यौन संबंध नहीं हाने चाहिए, ये बात सत्य नहीं है।

..... महत्वपूर्ण बात यह है कि **आपका चित्त यौन आकर्षणों से पावन होना चाहिए,** किसी भी प्रकार से आपका चित्त ऐसी किसी भी

चीज़ पर नहीं जाना चाहिए।... मूर्खता और गन्दगी के ये सारे आधुनिक तरीके जो हमनें एकत्र किए हैं, कृपा करके आप इनसे छुटकारा पा लें... इन घिनौने विचारों के साथ योगी बन पाना असंभव है।

प.पू.श्रीमाताजी, 20-3-81, आस्ट्रेलिया

– **मद्यपान न करें**– मेरे विचार से आत्मसाक्षात्कार का सबसे बड़ा शत्रु शराब है। लोगों को यदि मद्यपान की लत पड़ जाए तो वे इसके गुलाम हो जाते हैं, उनके दिमाग ठीक नहीं रहते। मैं सोचती हूँ कि शराब की लत के कारण उनका सहस्रार बिगड़ जाता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 6-5-2001, कबैला

– शराब में **पावनता** नहीं है। **...इससे व्यक्ति की चेतना चली जाती है।** शराब पीने वाले लोग सामान्य नहीं होते, उनके मस्तिष्क में ख़राबी आ जाती है ...कभी तो वे बहुत आक्रामक होते हैं और कभी अत्यन्त निष्चेष्ट। ...उनका आचरण मानवीय नहीं होता। ...शराब हानिकारक है और यह आध्यात्मिक जीवन के विरुद्ध है। जिन देशों में शराब को पावन माना जाता है, वे पतन की ओर जा रहे हैं। ये लोग श्री गणेश तथा अबोधिता के विरोधी हैं, ऐसे लोग अत्यन्त चालाक, धूर्त तथा अन्य लोगों पर रौब झाड़ने वाले हो सकते हैं, वे सभी प्रकार की बुराईयों का कारण बन सकते हैं। शराब की लत में फँसे व्यक्ति पर विश्वास नहीं किया जा सकता, ऐसा व्यक्ति अपने बीबी–बच्चों तथा अन्य व्यक्ति के पीछे पड़ सकता है तथा उनके जीवन को नष्ट कर सकता है।

..... **अबोधिता किसी भी ऐसी चीज़ की आज्ञा नहीं देती जो चेतना विरोधी हो। मानवीय चेतना महत्त्वपूर्णतम है,** इसका सम्मान होना ही चाहिए, आपके स्वास्थ्य या चेतना को बिगाड़ने वाली कोई भी चीज़ गलत है।

प.पू.श्रीमाताजी, 15-9-2000, कबैला

''शराब आपके शरीर के लिए एक स्वाभाविक वर्जन है।

प.पू.श्रीमाताजी, २३-८-९७, कबैला

5. पूरी ईमानदारी से अन्तर्वलोकन द्वारा शुद्धीकरण करें और सदैव सहजयोग की मर्यादा में रहें, सहजयोग बहुत ही अनमोल चीज़ है-

- सर्वप्रथम स्वयं को शुद्ध करना होगा। अपनी समस्याओं, आदतों एवं गलतियों को स्वीकार करना होगा और स्वयं को चुनौती देनी होगी कि तुम क्या कर रहे हो।... आपको स्वयं को धोखा नहीं देना। आपको तो स्वयं के प्रति अत्यन्त ईमानदार बनना होगा, अन्दर से ईमानदार और यह देखना होगा कि आप क्या कर रहे हैं? आपका लक्ष्य क्या है?और आपने क्या किया है?

..... मैंने आपको बताया है कि आपके अन्दर षटरिपु हैं और आप इन षटरिपुओं को न्यायोचित ठहराते हो।... मानव के पास अपने सभी कार्यों के लिए तर्क है।... अन्तर्शुद्धीकारण तभी संभव है जब आप स्वयं को अत्यन्त स्पष्ट रुप से देखें।... स्वयं को धोखा नहीं देना चाहिए।

..... स्वयं को सुधारना होगा। सारा अन्तर्वलोकन अत्यन्त शुद्ध हृदय एवं सूझ-बूझ के साथ किया जाना चाहिए। आप लोग अवतरण नहीं है जो जन्मजात शुद्ध होते हैं, आप मानव हैं और आप अवतरणों के स्तर तक उन्नत हो रहे हैं अत: आपको शुद्धीकारण करना होगा।

प.पू.श्रीमाताजी, 8-7-2001, कबैला, न.दि.2001, पृ.28-32

सहजयोग में स्वयं को प्रेम के अविरल प्रवाह के रुप में देखना है।... आप अपने मन से पूछें- ''मेरी शुद्ध इच्छा क्या है? मेरा लक्ष्य क्या है? मैं सहजयोग में क्यों हूँ?

..... हमें समझना है कि हम जिस सागर की बूँद बन रहे हैं, वह प्रेम का एक शुद्ध सागर है, अत: **हमें ऐसा कुछ भी नहीं करना जो इसे विषाक्त करे या निराशामय बनाए। कभी-कभी तो यह पूरे समुद्र की छवि को**

विकृत कर सकता है, इसलिए हमें शालीन और मर्यादित होना है।

प.पू.श्रीमाताजी जुलाई 1985 कबैला

– आपको अपनी डिसिप्लीन (मर्यादा, अनुशासन) अपने अंदर करनी है। सहजयोग का अपना अंदरुनी डिसिप्लीन है ...उसकी अपनी डिसिप्लीन अंदर से आने दो, अंदर से उसको जागने दो। उसके डिसिप्लीन में उतरना सीखो, उसके इशारे, उसके क्षेत्र मे बँधना सीखो। उसका यंत्र चल रहा है। अपना कुछ मत बनाओ। ...संसार का एक पत्ता भी उसकी डिसिप्लीन के बग़ैर नहीं चल सकता। ...उसकी Harmony में चलों, उसके साथ Harmonise कर लो पूरी तरह से।

..... सहजयोग की हर गति मे सौन्दर्य होना चाहिए। ...सहजयोग बहुत ही अनमोल चीज़ है।

तुमको जो मिला है। वह कम नहीं है। संतोष आना चाहिए अंदर में, पकड़ो अंदर से संतोष को और उस संतोष में खड़े हो जाओ। Points मैं कैसे कहूँ तुमसे कि इसके भी Computers होते हैं, उसके होते हैं। संतोष में एक उंगली दबाओं तो संतोष जाग्रत हो गया, एक उंगली दबाओ तो आपमें innocence (अबोधिता) जाग्रत हो जाएगा, एक दबाओ तो सत्य जाग्रत हो जाएगा, ये सब अंदर में है आपके। आपके ऐसे उंगलियाँ दबाने से एक सारा प्रोग्राम सेटिंग हो सकता है। ...आप लोग एक-एक चीज़ जोड़ो। संतोष में आओ, धर्म में आओ, सत्य में आओ, सौन्दर्य में आओ प्रेम में आओ। सबके बटन हैं। ...जो कमाना है सब कमा सकते हो अपने अंदर में।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-11-75, बंबई,
मराठी से अनुवादित सि.अ.2004 पृ.34-36

अध्याय 21

सर्वप्रथम युवा-वर्ग की जागृति आवश्यक

(युवा पीढ़ी आज भटक गई है, अज्ञानता के कारण उन्होंने ग़लत रास्ते अपना लिए हैं। इनको सहजयोग द्वारा ही सुधारा जा सकता है। हमारे देश के युवा वर्ग ने अच्छी तरह सहजयोग समझा और अपनाया है। सारी युवा शक्ति का कर्तव्य है कि वे अपनी क्रिया शक्ति का उचित उपयोग करें और अपने युवा साथियों को भी सही रास्ते पर लाएँ।)

– इस युवा पीढ़ी में बड़ी खलबली मची हुई है। बात-बात पर तलाक़, पत्नी से साथ लड़ाई, माँ-बाप से नहीं बनती घर में रह नहीं सकते, घर से बाहर भाग जाना, छोटी-छोटी बातों पर लड़ाई-झगड़े- ये सब हो रहा है। काम-धंधा नहीं, पैसे नहीं, सभी बुरी आदतें – **सब तरफ से युवा पीढ़ी एक बड़े संक्रमण काल की तरफ बढ़ रही है।** ...गंदी किताबें सड़क पर ख़रीद कर पढ़ना, कुछ अत्यन्त नकली-इस प्रकार की युवा पीढ़ी बनती जा रही है। इस युवा पीढ़ी को यदि इसी तरह रखा तो ये इसी हवा में खो जाएगी, किसी काम की नहीं रहेगी।

– आपको अपनी शक्ति में खड़े रहना है, और कोई विशेष बनना है तो आप जो चले जा रहे हैं, सो रुकना पड़ेगा। जरा शांत होकर सोचिए ... ये जो रैट रेस (अंधी दौड़) चल रही है उसमें ही मैं भी भाग रहा हूँ क्या? एक मिनट शांत होकर सोचना चाहिए कि **हमारी भारतीय विरासत** क्या है? सम्पत्ति के बँटवारे में यदि एक छोटा टुकड़ा कम ज़्यादा मिला तो कोर्ट में लड़ने जाते हैं, **परन्तु अपने देश की बड़ी परम्परा है** जो उस तरफ ध्यान ही नहीं किसी का, वह ख़त्म होती जा रही है, उसका हमने कितना लाभ उठाया है? ...**इसका ज्ञान सहजयोग में आने के बाद होता है** क्योंकि तभी उन्हें एहसास होता है कि हम पहले जो थे उससे कितने ऊँचे

उठ गए हैं।

..... **सर्वप्रथम इस युवा-वर्ग की जाग्रति होनी चाहिए।** ...इस युवा पीढ़ी को पार कराना बहुत आसान काम है, ये सारे भोलेपन में ग़लत कार्य करते हैं। एक लड़का सिगरेट पीता है तो मैं भी पीऊँ बस। किसी ने कुछ विशेष तरह के कपड़े पहने तो मैं भी पहनूँगा बस इतना ही- सबकुछ भोलापन। परन्तु कभी-कभी भोलेपन से ही अनर्थ हो सकता है।

..... आजकल की युवा पीढ़ी परमात्मा के साम्राज्य में सहज में आ सकती है, इस युवा पीढ़ी को पार कराना बहुत आसान काम है।

..... यही युवा पीढ़ी आज कहाँ से कहाँ पहुँच सकती है। आज अपने देश में किस बात की कमी है?... सब कुछ है हमारे पास, सोना-चाँदी सब कुछ। कमी किस बात की है?सोचकर देखिए कमी किस बात की है?एक ही बात की कमी है कि हमें ये ज्ञान नहीं है कि हम कौन हैं? मैं कौन हूँ, इसका अभी तक ज्ञान नहीं है। जिस समय यह घटित होगा (आप सहजयोग में आएंगे) तब पूरा शरीर पुलकित हो उठेगा और आपके शरीर में प्रेम अर्थात चैतन्य की लहरें बहनें लगेगी, केवल यह घटना आप में घटित होनी चाहिए।

प.पू.श्रीमाताजी, 29-11-84, मुंबई, मराठी से अनुवादित

युवा शक्ति गतिशील हो - सहजयोग इस संसार की भलाई के लिए संसार में उत्पन्न हुआ है, और उसके आप लोग माध्यम हैं। आपकी ज़िम्मेदारियाँ बहुत ज़्यादा हैं, आप इसके माध्यम हैं।... आप ही की धारणा से, आप ही के कार्य से ये फैल सकता है।

प.पू.श्रीमाताजी

- युवाओं से युवा पीढ़ी से मेरी प्रार्थना है कि अपनी सहज शक्तियों को बेकार की चीज़ों में नष्ट न करें ...अच्छा होगा कि आप आगे बढ़े। ...ये

(शक्तियाँ) आप को इसलिए दी गई हैं कि आप बहुत सारे लोगों को आत्मसाक्षात्कार दें। ...आपका कार्य बहुत सारे सहजयोगी-सहजयोगिनियाँ बनाना है, परन्तु ऐसा नहीं हो रहा है ...क्रिया शक्ति के उपयोग का अभाव है। आपको क्रियाशील होना होगा।

- अब हमें यह समझना है कि इतना ही काफी नहीं है कि हमें आत्मसाक्षात्कार मिल गया, हम ठीक हैं, हम लोगों को रोगमुक्त कर सकते हैं, यही अन्तिम शब्द नहीं है ...नहीं आपको सहजयोग फैलाना है।.. . **अपनी समस्याओं, अपने शत्रुओं अपनी शक्तियों के विषय में सोचने के स्थान पर अन्य लोगों को शक्ति देकर उन्हें सहजयोगी बनाएं।** ...अपनी गरिमा, अपना यश, अपना नाम फैलाने के स्थान पर कृपा करके सहजयोग में अधिक से अधिक लोगों को लाएँ। अत्यन्त गतिशील ढंग से काम करें। ...आपने सहजयोग को केवल फैलाना ही नहीं है, **लोगों को परिवर्तित करना है और उन्हें महसूस करवाना है।**

प.पू.श्रीमाताजी, 23-5-2002, ज.फ.2003

- जो यंग लोग हैं ...अलग-अलग जगह के, जहाँ जहाँ रहते हैं, अपने अपने एक सेंटर सँभालिए organize करिए और उसके इंचार्ज जितने लोग हैं उनको सँभालिए। ...आप जो यंग लोग हैं वो अपने ऊपर लें सब...

जो बात मैंने कही organization की ये है सरस्वती तत्त्व की। इसमें सारा आरगैनाइज़ कैसे करना, लोगों को कैसे बुलाना, किस तरह उनको चालना देना, उनको समझाना, उनको जोड़ना... सब आपस में प्यार से बातचीत करें।... उनका मज़ाक करना, उनका दोष देखना आदि नहीं करने का।... जैसा भी जहाँ हो सकता है, जिसको भी आप ले सकते हैं, उनको लेकर के आप इसको workout करें।

प.पू.श्रीमाताजी, ३०-९-७९, मुंबई, ज.फ.२००८

– अपने हृदय विस्तृत करो, विनम्र बनो और विनम्रतापूर्वक आक्रामकता पूर्वक नहीं, सहजयोग को फैलाने का प्रयत्न करो।... आप यदि ऐसा कर सकते हैं केवल तभी आप अपने जीवन से, जो कि आध्यात्मिक जीवन है, पूर्ण न्याय करेंगे।

..... आपको बहुत से ऐसे लोग मिलेगें जो दिल और दिमाग़ की शान्ति चाहते हैं और परमात्मा से पूर्ण एक रुपता चाहते हैं।... वो अपने अन्दर सच्ची आध्यामिक शान्ति प्राप्त करना चाहते हैं। **आज लोगों में उस इच्छा को जाग्रत करने के लिए आपको अत्यन्त सहजजीवन और सहज व्यक्तित्व अपनाना होगा।**

..... **मानव का ग़लत चीज़ों को स्वीकार करना ही आज सारे विश्व में उथल-पुथल का कारण है। हमें करना है कि परमेश्वरी ज्ञान उन तक पहुँचा दें।** यह आपकी इच्छा होनी चाहिए और इसी इच्छा के कारण ही आपको बहुत सुख प्राप्त होगा।

..... बहुत सारे संतो ने पृथ्वी पर अवतरित होकर पूरे विश्व में सत्य का प्रसार करने का प्रयत्न किया। उन्होंने बहुत से कष्ट उठाए, समस्याएँ झेलीं, बहुत सी समस्याएँ, परन्तु सहजयोग को फैलाने के लिए तथा परमात्मा और देवत्व के विषय में बताने के लिए घोर परिश्रम किया। ... आज सहजयोग फैलाना विश्व की अत्यन्त गहन आवश्यकता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 23-5-2002, कबैला, ज.फ.2003

– सहजयोग इस संसार की भलाई के लिए संसार में उत्पन्न हुआ है और आप लोग माध्यम हैं। आपकी जिम्मेदारियाँ बहुत ज़्यादा हैं, आप इसके माध्यम हैं।... आप ही की धारणा से आप ही के कार्य से यह फैल सकता है।

प.पू.श्रीमाताजी

युवा शक्ति को पू.श्रीमाताजी का संदेश -

..... आप सबने जो कार्य मेरे लिए किया है उसके लिए मैं अनुगृहीत हूँ। आप सब यदि सहजयोग की गहनता में उत्पन्न हों तो मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होगी। आपमें बहुत लोग अच्छे सहजयोगी हैं।

आपको याद रखना है कि आपने आदर्श सहजयोगी बनना है क्योंकि आप ही ने पूरे विश्व को परिवर्तित करना है। आपकी माँ आपसे यही आशा करती है। मेरी केवल यही इच्छा है। बाकी सब कुछ व्यर्थ है, मूल्यहीन है, केवल तभी आप परमात्मा के साम्राज्य में होने का आनन्द ले सकते हैं।

प्रतिदिन ध्यान-धारणा अवश्य करें। सहजयोग में परिपक्व होने का केवल यही उपाय है। आपने सभी अभागे नशेड़ियों को भी बचाना है। अपने हृदय में प्रेम करुणा एवं उदारता प्रसारित होने दें। परमात्मा आपको धन्य करें।

प.पू.श्रीमाताजी, 18-3-2000, पुणे

- हमें अपनी सभ्यता की ओर ध्यान देना चाहिए। हमें अपनी सांस्कृतिक स्थिति भी ठीक करनी चाहिए। हमारी आत्मिक उन्नति जो है उसकी ओर हमें ध्यान ही नहीं देना चाहिए पर जैसे कोई एक शहीद सर पर कफन बाँध कर कार्य में संलग्न होता है, उसी प्रकार हमें सरफरोशी की तमन्ना लेकर के सहजयोग करना चाहिए। जब तक हमारे अंदर यह बात नहीं आती तब तक सहजयोग सिर्फ हमारे लाभ के लिए है।

..... जब आप दीप हो गए तो इस दीप को आपको उघाड़ कर रखना चाहिए। **सहजयोग समाजोन्मुख है, समाज की ओर उन्मुख है वही सहजयोग है। जो प्रकाश फैलता नहीं ऐसे प्रकाश का कोई उपयोग नहीं।**

प.पू.श्रीमाताजी, 26-3-85, दिल्ली, वर्ष 4, अंक 21 निर्मलायोग

– आप उनमें से बनिए जो दस अच्छे सहजयोगी हैं, जो सहजयोग का कार्य बड़े प्रेम से करते हैं और उसमें मज़ा उठा रहे हैं, उसमें बह रहे हैं, उसमें अग्रसर हैं और एक अग्रिम श्रेणी में जाकर खड़े हो जाते हैं। **जैसे कि हिमालय संसार में सबसे ऊँचा है, उसकी ओर सबकी दृष्टि रहती है, ऐसे ही आप बनें।** आप ही में आप हिमालय बन सकते हैं और आप देख सकते हैं कि दुनियाँ आप की ओर आँख उठाकर कहे कि बनूँ तो इस आदमी जैसा बनूँ, सहजयोग में इतना ऊँचा उठ गया। ये अन्दर का उठना होता है, बाहर का नहीं।

प.पू.श्रीमाताजी, 1 फरवरी 1995, मुंबई, न.दि.2008

– आप लोगों का जीवन है, योगियों का जीवन है, यह अत्यन्त सुन्दर जीवन बने और आपके साथ अनेक आपके कारण कल्याण के मार्ग में आएं और परमात्मा के साम्राज्य में स्थित हो जाएं।

..... मेरी पूजा तो तभी होगी जब तुम अनेक लोगों को जाग्रत करोगे, हज़ारों लोगों को जाग्रत करोगे। जब मैं देखूँगी कि ये शक्ति सारे संसार में बह रही है, वही असल में मेरी पूजा होगी।

प.पू.श्रीमाताजी, 30-9-79, जन.फर.2008

अध्याय 22

सहजी बच्चे ही कल के विश्व-निर्माता

I. बच्चों का महत्त्व समझें क्योंकि ये ही भविष्य में भारतीय संस्कृति को पुनर्स्थापित कर सारी मानवता का कल्याण करेंगे-

- इस तथ्य के प्रति हमें जाग्रत होना पड़ेगा कि आधुनिक काल की अव्यवस्थित स्थितियों से हमारे बच्चे, माता-पिता और परिवारों के प्रभावित होने के कारण हमारे चारित्रिक मूल्यों का, पिछले दशक में, बहुत विनाश हुआ है।

शान्ति से परिपूर्ण सामाजिक तथा राजनैतिक वातावरण क़ायम करने के लिए आवश्यक है कि इन चारित्रिक मूल्यों को पुनर्जीवित करने का हर संभव प्रयत्न करें। **इस लक्ष्य के लिए हमें जड़ो से आरम्भ करना होगा। अपने बच्चों के पालन-पोषण के लिए हमें अधिक से अधिक ध्यान देना चाहिए क्योंकि आज के बच्चे ही कल के नागरिक हैं। आज के बच्चे ही कल के समाज की संस्थापना करेंगे**

प.पू.श्रीमाताजी, परा आधुनिक युग से

- यही बच्चे अवतरण हैं, यही उत्थान पथ में मानव-जाति का नेतृत्व करेंगे... बच्चे कल की मानव-जाति हैं और हम आज के हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 13-9-2003, कबैला, जन.फर.2004

- आर्थिक समस्या एवं बहुत सी चीज़ों के कारण संयुक्त परिवार प्रणाली टूट रही है, **बच्चों का आधार अस्थिर हो गया है,** उनका पालन-पोषण ठीक प्रकार से नहीं हो रहा है, इसी के कारण एक बहुत ही हिंसक और भयानक रुप से भूत-बाधित बच्चों की पीढ़ी का सृजन हुआ, यह पीढ़ी युद्ध के उन्माद में फँस गई ...बच्चे अत्यन्त अक्खड़ और

बनावटी बन गए।

प.पू.श्रीमाताजी, 6-6-93, कबैला

– आधुनिक समाज में बच्चे जब बड़े होते हैं तो उनमें अज़ीबों ग़रीब सोच विकसित हो जाती है ...और जीवन के विषय में उनकी अज़ीबो ग़रीब धारणायें बन जाती हैं।

..... बड़े होकर वे किसी भी मूर्खता के पीछे दौड़ पड़ते हैं, परन्तु बचपन में ही यदि उन पर अच्छी-अच्छी बातों का प्रभाव पड़ा हो, संस्कार मय पारिवारिक जीवन, अच्छी शिक्षा, उचित मार्गदर्शन, आवश्यक प्रेम और सहायता उन्हें प्राप्त होगी तो बच्चे अत्यन्त ही भले और सुंदर बन सकते हैं। **...यही बच्चे कल के सहजयोगी हैं,** ...बच्चे अबोधिता की देन हैं अत: वे अत्यन्त पावन हैं। उनकी पावनता का सम्मान और सुरक्षा की जाना आवश्यक है। आशा है कि आप लोग बच्चों के महत्त्व को और उनमें श्री गणेश के गुण विकसित करने का महत्त्व समझेंगे।

प.पू.श्रीमाताजी, 18-9-2002, कबैला, मई.जून.2003

– छोटी उम्र में जो संस्कार बच्चों में पड़ते हैं वे ऐसे होते हैं जैसे कि किसी घड़े के कच्चे रहते वक्त जो उस पर दाग पड़ जाए, उसी प्रकार वो पक्के हो जाते हैं। उस वक्त उसका सँभालना ज़रुरी है, उनको प्रेम देना ज़रुरी है जिससे उनकी जो वृद्धि हो वो क़ायदे से हो जाए पर ऐसा होता नहीं है, ज़्यादातर ऐसा नहीं होता है। हम या तो उनको ज़्यादा पानी देते हैं और या नहीं देते। बीचो-बीच खड़े रहकर देखना चाहिए कि बच्चे किस रास्ते पर चल रहे हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 16 मार्च 1984, दिल्ली, निर्मलायोग

– ये नन्हें शिशु महान आत्माओं की प्रतिमूर्ति हैं और इनका पालन-पोषण भी उन्हीं के रुप में किया जाना चाहिए, वैसे ही इनका सम्मान होना चाहिए और अत्यंन्त सावधानी से इन्हें प्रेम किया

जाना चाहिए।

..... ये बच्चे श्री गणेश के अवतरण हैं तथा इनकी ओर ध्यान दिया जाना चाहिए, उनकी हमें उचित जानकारी होनी चाहिए।

प.पू.श्रीमाताजी, 13-9-2003, कबैला

– परमात्मा भी बच्चों की हमेशा रक्षा करते हैं।... साँप और अन्य ज़हरीले जीव भी उन्हे नहीं काटते। कहते हें शेर भी बच्चों को नहीं खाता। ये सब क्या है? ये कौन सी शक्तिशाली चीज़ है, जिसके कारण बच्चे सुरक्षित हैं और उनका विकास होता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 18-9-2002, कबैला, मई-जून 2003

– हमारे बड़ी आयु के लोगों की यह समस्या है कि हम बच्चों को ध्यान देने योग्य, परवाह करने योग्य और उन्हें समझने योग्य नहीं मानते।। हम सोचते हैं कि हमें अपनी शक्ति इन छोटे बच्चों पर नहीं नष्ट करनी चाहिए।

..... बड़े सहजयोगियों का यह कर्तव्य है कि उनकी देख भाल करें। (पर पहले) **आपका चारित्रिक स्तर बेहतर हो, आपके जीवन बेहतर हों ताकि वे (बच्चे) आपके जीवन का अनुसरण करके वास्तव में अच्छे सहजयोगी बन सकें- ये बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है।**

प.पू.श्रीमाताजी, 13-9-2003, कबैला, जन.फर.2004

– बच्चों को आपको पूरी तरह से अनुशासन में लाना है... और उसके लिए पहले आपमें ख़ुद अनुशाासन होना चाहिए, यदि आपमें अनुशासन नहीं होगा तो आप बच्चों को अनुशासित नहीं कर सकते।

प.पू.श्रीमाताजी, 15-12-1997

II. सर्वप्रथम बाल मनोविज्ञान को जानना होगा। बच्चों के अन्तर्जात स्वाभाविक गुणों एवं उनकी मनोवृत्तियों और आदतों को समझना भी आवश्यक है- ''मेरे विचार से बच्चे संसार की सबसे दिलचस्प

चीज़ हैं।''

प.पू.श्रीमाताजी, 10-8-2003

1. बच्चे सच्चे, अबोध, सरल, निश्छल एवं उदार होते हैं-

- बालक यानी अबोधिता, भोलापन ... और यह भोलापन बड़ा प्यारा होता है।... वे चालाकी नहीं जानते, अपना महत्त्व नहीं जानते, कुछ भी नहीं जानते। क्या जानते हैं? वो जानते यह है कि सब कोई लोग हमारे हैं, ये हमारे भाई-बहन और सब कुछ हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 10-8-2003, पुणे, जन.फर.2004

- अपनी अबोधिता में बच्चे किसी को भी सब कुछ बता देते हैं। कुछ भी छिपाना वे नहीं जानते।... बच्चे सारी सच्ची बातों को अत्यन्त अबोधिता पूर्वक कह देते हैं, वे झूठ नहीं बोलते, वे बहुत सच्चे होते हैं। अबोधिता का यही गुण है।... बड़े लोग ही उन्हें सिखाते हैं कि किस प्रकार झूठ बोलना है, किस प्रकार धोखा देना है।

प.पू.श्रीमाताजी, 16-9-2003, कबैला, जन.फर.2001

- बच्चे अत्यन्त सहज हृदय होते हैं और इस सहजता से वो सबके दोष सुधारते हैं।... बच्चे अत्यन्त उदार होते हैं, जो कुछ भी उनके पास होता है उसे अन्य लोगों को देने में वे बिल्कुल भी नहीं हिचकिचाते। चीज़ों के प्रति स्वामित्व भाव उनमें नहीं आता, इस गुण की आप कल्पना करें, किसी को यदि कोई चीज़ अच्छी लगती है तो बच्चा कहता है कि आप ले लो।... उनके माध्यम से श्री गणेश स्पष्ट चमकते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 10-9-2002, कबैला

- मैंने देखा है कि जिस तरह से हम बुरी आदतों को अपना लेते हैं, बच्चे जल्दी से उसे नहीं अपनाते, उन्हें इस बात का ज्ञान होता है कि ये बुरी बात है, इसे नहीं किया जाना चाहिए। अपनी अबोधिता में वे यह

जानते हैं कि ये कार्य ग़लत है ये नहीं करना चाहिए। कभी-कभी हो सकता है कि वो आग से खेलना चाहें या वों ऐसा कुछ करें, परन्तु एक बार यदि वे आग से जरा सा भी जल जाएगें तो उसके बाद कभी उसे छुएंगे नहीं। बच्चे बहुत शीघ्रता से सीखते हैं क्योंकि उनकी बढ़ती हुई आयु होती है।

प.पू.श्रीमाताजी, 10-9-2002, कबैला, मई-जून 2003

2. बच्चे मधुर, सुंदर एवं आनन्ददायी हैं -

बच्चे अपना सभी कुछ बाँट देते हैं, उनका व्यवहार इतना सुंदर होता है कि आप हैरान रह जाएंगे कि किस प्रकार वे सभी को प्रसन्न करने तथा आनंद देने का प्रयत्न करते हैं, ये सब करने की उनकी योग्यता अद्‌भुत है। ...यह श्री गणेश जी का आशीर्वाद है कि बच्चे इतने मधुर, सुंदर एवं आनन्ददायी हैं।...

..... बच्चों का माधुर्य, उनकी अबोधिता, जो कि उनकी शक्ति है, उसी के कारण वे इतने मधुर और सुंदर प्रतीत होते हैं कि हमारे हृदय में सच्चा आनन्द भर जाता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 16-9-2000, कबैला, जन.फर.2001

- बच्चों में गणेश को देखिये, उन्हें पूजनीय बनाइये।

..... श्री गणेश हममें बैठकर हमारे बच्चों का पालन करते हैं, प्रथम जनन उसके बाद पालन और जो वह भोला गणेश है वह घर के सभी लोगों को आनंद देता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 29-11-84 निर्मलायोग, 'पांच और सहजयोग'

- बच्चे कभी आलोचना नहीं करते। आलोचना योग्य चीज़ो को वे कभी भी नहीं देखते। बच्चे किसी भी स्थान पर जाते हैं तो उसका आनंद लेने लगते हैं। ...उनकी दृष्टि तो बस अच्छी-अच्छी चीज़ों की ओर ही होती है।

प.पू.श्रीमाताजी, 18-9-2002, कबैला, मई.जून 2003

3. बच्चे पूर्ण विश्वासी, विवेकी चेतन और संवेदनशील होते हैं-

- बच्चे पूर्ण विश्वस्त होते हैं, उनसे कुछ भी पूछिए वो तुरंत बताते हैं कि ऐसा ऐसा है। ...उन्हें इस बात की चिन्ता नहीं होती कि कुछ दिखावा करना है, कुछ नहीं वो जो देखते हैं कह देते हैं। ...बच्चों में चालाकी नहीं होती।

प.पू.श्रीमाताजी, 17-5-80

- कोई भी बालक अबोधिता, गरिमा आदि गुणों का दिखावा नहीं करता क्योंकि बालक में तो सावधानियों की समझ ही नहीं होती।

प.पू.श्रीमाताजी, 5-5-84, फ्रांस

- बच्चे अत्यन्त चेतन होते हैं और पावन व्यक्तित्त्व बनना चाहते हैं। बच्चों से आप सीखें कि किस प्रकार देखना है। ये देखकर आप हैरान होंगे कि बच्चे किस प्रकार सोचते हैं, कितने विवेकशील हैं और कितनी विवेक पूर्ण बातें करते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 18-9-2002, कबैला, मई जून 2002

- छोटे बच्चों की चैतन्य लहरियों को यदि आप देखें तो सौ सहजयोगियों की चैतन्य लहरियाँ एक बच्चे के बराबर नहीं होती, परन्तु जब बच्चे बढ़ने लगते हैं तो वो भी बड़े लोगों की तरह बुद्धिमान और परिपक्व हो जाते हैं मानो उनकी अबोधिता खो गई है।

प.पू.श्रीमाताजी, 15-9-96, कबैला

- बच्चे अत्यन्त संवेदनशील होते हैं।

..... बच्चे हर चीज़ को एक विशिष्ट परिभाषा में बाँधकर स्वयं को दु:खी नहीं करना चाहते।

प.पू.श्रीमाताजी, 11-9-94

4. बच्चों के मन में कोई भी भेदभाव नहीं होता, वह सबसे प्यार करता है, प्रेम को महसूस करता है और उसे याद रखता है। माँ का

प्यार तो उसके लिए अनमोल होता है-

सामान्य रुप से यदि आप बच्चों को देखें तो उनमें अपनी स्वाभाविक अन्तर्जात सूझ-बूझ होती है। कोई भी बच्चा अपनी चीज़ों को अन्य बच्चों से बाँटना चाहेगा और अन्य बच्चों से **प्रेम करना चाहेगा।** कोई भी छोटा बच्चा यदि वहाँ हो तो वह बच्चा उस छोटे बच्चे की रक्षा करना चाहेगा। स्वाभाविक रुप से वह यह नहीं सोचेगा कि इस बच्चे के बालों का रंग काला है, लाल है या नीला है। स्वाभाविक रुप से अन्तर्जात रुप से वह प्रेम महसूस करता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 10-5-1992, कबैला

- आपने बच्चों को देखा है। उन्हें चाँटा मार दें, कभी उनसे नाराज़ हो जायें फिर भी वे इसे भूल जाते हैं। वे केवल **प्रेम को याद रखते हैं** आपके द्वारा दिए गए कष्टों को नहीं। ...बचपन में बच्चे केवल उन्हीं लोगों को याद रखते हैं जिन लोगों ने उनसे प्रेम किया है।

प.पू.श्रीमाताजी, 8-8-1989, मई जून 2002

- बच्चे जो हैं बहुत ही ज़्यादा निष्पाप और अबोध होते हैं। ...वे रुठेंगे आपसे वो आपसे शरमायेंगे लेकिन अंदर से प्यार। **प्यार ही उनका जीवन, और प्यार ही उनके जीवन का सार,** दूसरा उनको किसी चीज़ से कोई भी मतलब नहीं। आप उनको सौ चीज़ दे दीजिए वे समझ नहीं पाएँगे कि इसमें क्या विशेषता है पर उनकी माँ को हटा दीजिए या उनकी नानी को हटा लीजिए तो बड़ा बुरा हाल हो जायेगा। **...ये प्यार बच्चों में बहुत ही प्रगल्भ (developed) है।**

प.पू.श्रीमाताजी, १०-५-१९९२, कबैला, अक्टू २००२

- जैसे कोई छोटा बच्चा खेलेगा, खेल में वो शिवा जी राजा बनेगा, किला बनवाएगा, सब कुछ करेगा, उसके बाद सब कुछ छोड़कर वह

चला जाएगा, मतलब सब कुछ करके **उससे अलिप्त (अलग) रहना,** जो कुछ किया उसके प्रति अलगाव, उसके पीछे दौड़ना नहीं।... परन्तु कुछ बातें ऐसी हैं जो छोटा बच्चा कभी नहीं छोड़ता। उसमें एक बात बहुत महत्त्वपूर्ण है वह है उसकी माँ अपनी माँ को वह नहीं छोड़ता, बाकी सब कुछ आपने उससे छीन लिया तो कोई बात नहीं, उसे कुछ नहीं मालूम, पैसा नहीं मालूम, पढ़ाई नहीं मालूम, कुछ नहीं मालूम, उसे केवल एक ही बात मालूम है– और वह है उसकी माँ। ये मेरी माँ है, **ये मेरी जन्मदात्री है, यही मेरी सब कुछ है, वह माँ से ज़्यादा किसी चीज़ को भी महत्त्व नहीं देता।** मतलब हम सभी में बचपन से ही ये बीज तत्त्व है, इसीलिए हम अपनी माँ को नहीं छोड़ते।

प.पू.श्रीमाताजी, 22-9-79, बम्बई, सि.अक्टू. 2008

– ध्यानाकर्षण बच्चों का मनोविज्ञान है।

प.पू.श्रीमाताजी, 9-7-86, विएना

– ये बच्चे इतने बुद्धिमान हैं कि वे जानते हैं कि माता–पिता के साथ कहाँ तक स्वतंत्रता लेनी है। वे ग़लत या बुरी कहलाने वाली अधिकतर बातें भी माता–पिता का ध्यान आकर्षित करने के लिए करते हैं परन्तु जन्मजात आत्मसाक्षात्कारी बच्चे कभी–कभी ही ऐसा करते हैं।

– बच्चे अच्छी चीज़ों को तुरंत पकड़ लेते हैं क्योंकि सम्मान योग्य व्यक्ति को पहचानने में सहजयोगी बच्चे बहुत चुस्त होते हैं। अतः स्वाभाविक रुप से बुज़ुर्गों के सद्‌गुणों की अनुसरण वे करते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी ''सहजयोग''

अध्याय 23

बच्चों के साथ माता-पिता के संबंध एवं उत्तरदायित्व

I. माता-पिता और बच्चों के बीच के संबंध बहुत ही महत्त्वपूर्ण होते हैं, साथ ही बहुत नाज़ुक भी। इन्हें सूक्ष्मता से समझना होगा, पारस्परिक संबंधों में पूर्ण संतुलन आवश्यक है-

- मैं आपको एक छोटी सी बात बताने वाली हूँ कि माता-पिता का संबंध बच्चों के साथ कैसा होना चाहिए।

सबसे पहले बच्चों के साथ हमारे दो संबंध बन ही जाते हैं जिसमें एक तो भावना होती है और एक में कर्तव्य होता है। भावना और कर्तव्य दो अलग-अलग चीज़ बनी रहती है जैसे कि कोई माँ है, उसका बच्चा अगर कोई ग़लत कार्य करता है, ग़लत बातें सीखता है तो भी माँ अपनी भावना के कारण कहती है ठीक है, चलने दो, आजकल बच्चे ऐसे ही हैं, बच्चों से क्या कहना? जैसा भी है ठीक है। दूसरी माँ होती है कि वो सोचती है कि वो बच्चों को कर्तव्य परायण बनाए। कर्तव्य परायण बनाने के लिए वो फिर बच्चों से कहती है कि सबेरे जल्दी उठना चाहिए, आपको पढ़ने बैठना चाहिए फिर आप स्कूल जाइए, वहाँ बैठना चाहिए, यहाँ उठना चाहिए, ऐसे कपड़े पहनने चाहिए- इन सब चीज़ो के पीछे में लगी रहती है।

अब इसे कहना चाहिए कि ये सम्यक नहीं है-ये Integrated बात नहीं है। इसमें समग्रता नहीं है और आज का सहजयोग जो है वह समग्रता (Integration) है। **भावना और कर्तव्य दोनों चीज़ों का समग्रीकरण होना चाहिए और कर्तव्य हमारी भावना होनी चाहिए।**

जैसे कि हमें अपने बच्चे के प्रति प्रेम है तो हम कहेंगे कि प्रेम है

इसलिए हमारा कर्तव्य है, हमारा बच्चा है वो ठीक रास्ते पर चले और हमारा बच्चा ठीक रास्ते पर चले क्योंकि हमें उससे प्रेम है। अगर हम अपने बच्चे को नहीं बताते कि वो ठीक रास्ते पर चले तो इसका मतलब है कि हम भावना प्रधान हैं। ये तो बहुत आसान है कि हम इस चीज़ को सोचे कि ''हम बच्चों से क्या कहें? जाने दीजिए, बच्चों से कहने में बच्चे दु:खी हो जाते हैं, तकलीफ होती है उनको क्यों दु:खी करें। और एक होता है कि यह सोचा जाए कि नहीं कितना भी दु:ख हो तो भी बच्चों को जो है एकदम से छोड़कर के, माँज करके बिल्कुल साफ कर दें।'' जब समग्रीकरण हो जाता है तब मनुष्य इसी तरह का बर्ताव कर लेता है और उसका बच्चों पर सबसे बड़ा प्रभाव पड़ता है।

..... **सम्यक ज्ञान से कार्य करना है। अगर बच्चे जानते हैं कि आप पूरी तरह से उनको प्यार करते हैं तो एक बार झिड़की ही बहुत होती है** लेकिन अगर आप हर समय ही झिड़कते रहें तो बच्चें कहेंगे कि इनकी तो आदत ही झिड़कने की है, इसीलिए बच्चों को बहुत प्यार से संभालकर रखना चाहिए।...

..... तो पहले तो अपनी ओर देखना चाहिए कि हम बच्चों को क्यों ख़राब करते हैं? इस क़दर उनको प्यार नहीं देना चाहिए कि जिससे बच्चे ख़राब हो जाएँ, आपकी बात न सुनें और मनमानी करें या बच्चे ये न सोचें ''हाँ हम इनको सब समझ लेंगे, ये तो अपने हाथ की बात है।'' इस तरह अपने अति प्यार से हम ही उनको ग़लत रास्ते पर डाल देते हैं। उसी प्रकार कभी-कभी उनके साथ बहुत सख़्ती करने से भी उनको हम इस तरह का बना देते हैं कि वो हमसे मुँह मोड़ लेते हैं फिर हमारा वो मुँह नहीं देखना चाहते।

दोनों चीज़ो के बीच सहजयोग है सुषम्ना नाड़ी पर। अत: सुषम्ना नाड़ी पर चलना चाहिए। **न तो अति प्यार के बहाव में रहना चाहिए और न ही अति कर्तव्य के बहाव में किन्तु आत्मा के बहाव में चलना**

चाहिए और आप जब आत्मा के आदेश से चलेंगे तो आपको आश्चर्य होगा कि आपकी आत्मोन्नति तो होगी ही साथ में आपके देखा-देखी आपके बच्चों की भी होगी।

प.पू.श्रीमाताजी, 15 दिसम्बर 1983, सहजमंदिर, निर्मलायोग

II. माता-पिता अपने आध्यात्मिक कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों को गंभीरता से लें। एक माली की भाँति उन्हें बच्चों के मन में सही संस्कारों का बीजारोपण कर उसकी देखभाल करनी है-

..... सर्वप्रथम हमें अपने बच्चों की देखभाल करनी होगी और ऐसा करना तभी संभव होगा जब माता-पिता इस बात को समझ लें कि **बच्चों में आध्यात्मिकता का परिचय कराए जाने की ज़िम्मेदारी महत्त्वपूर्णतम है।** परिवार में बच्चों के पालन-पोषण की ओर विशेष ध्यान दिए जाने की ज़िम्मेदारी माता-पिता की है, इसके लिए माता-पिता बच्चों समाज और देश के ऋणी हैं। आज जिस प्रकार से चीज़े चल रही हैं, ये आवश्यक हो गया है कि माता-पिता को उनकी ज़िम्मेदारियों तथा आध्यात्मिक कर्तव्यों के विषय में बताया जाए।

परा आधुनिक युग

1. बच्चे के विवेक को बनाएं रखें -

- सहजयोगी माता-पिताओं का ये कर्तव्य है कि निलिप्त भाव से अपने बच्चों की इस प्रकार देखभाल करें कि उनमें श्री गणेश स्थापित हों जाएँ। बच्चों में उसका विवेक श्री गणेश की पहली पहचान है। बच्चा यदि विवेकशील नहीं है, कष्टकर है, यदि वह व्यवहार करना नहीं जानता तो इससे प्रगट होता है कि वह श्री गणेश पर आक्रमण कर रहा है।

..... **बच्चों को एक चीज़ अवश्य सिखायें कि जैसे श्री गणेश अपनी माँ का सम्मान करते हैं वैसे ही तुम अपनी माँ का सम्मान**

करो, अपनी माँ का अर्थ है- आपकी परमेश्वरी माँ, आपकी अपनी माँ। ये बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। पिता यदि बच्चों को माँ का सम्मान करना न सिखाये तो बच्चा कभी ठीक नहीं हो सकता क्योंकि इस बात में कोई संदेह नहीं है कि अधिकार पिता का हक है परन्तु माँ का सम्मान होना आवश्यक है। माँ को भी चाहिए कि पिता का सम्मान करे.... यदि माता-पिता परस्पर झगड़ने लगे, एक दूसरे से उचित व्यवहार न करें तो इसका प्रभाव बच्चे के गणेश तत्त्व पर पड़ेगा।

..... **बच्चों को विवेकशील, चरित्रवान और धर्मपरायण बनाने के लिए पहली आवश्यकता उनके विवेक को बनाए रखने की है। वे यदि कोई विवेकपूर्ण बात कहें तो आपको चाहिए कि उनकी सराहना करें, परन्तु यह बात उन्हें उचित समय और सम्मान पूर्वक कहना चाहिए पर उनका अभद्र व्यवहार भी सहन नहीं किया जाना चाहिए।**

प.पू.श्रीमाताजी, 8-8-1989, मई-जून 2002

- सहज धर्म आपके बच्चों के लिए है कि बिना कष्ट दिए उनका पालन पोषण करके आप उन्हें स्वतंत्र व्यक्तित्व बना सकें। उन्हें अपनी बुद्धि का उपयोग करने दें। कई बार भटक कर बच्चे ग़लत कार्य करने लगते हैं, ऐसी स्थिति में आप उन्हें सुधारें। उन्हें बताना आपका कर्तव्य है वे पेड़ों से नहीं पैदा हुए हैं, माँ-बाप से जन्मे हैं, अत: ग़लतियों के विषय में आगाह करना माँ-बाप का कर्तव्य है पन्रतु यह कार्य आपको सहज ढंग से करना है।

प.पू.श्रीमाताजी, 23-8-97, कबैला, खंड IX, अंक 10-11, 1997

2. बच्चे का हित सर्वोपरि रहे -

अपने बच्चों के प्रति आपका प्रेम अत्यन्त आवश्यक है पर **हमें अपने प्रेम को सीमाबद्ध करना चाहिए और यह सीमा है- हितैषिता।** क्या ये मेरे बच्चे के हित में होगा? क्या मैं अपने बच्चे को बिगाड़ रहा हूँ?

क्या मैं अपने बच्चे को बहुत ज़्यादा प्रोत्साहन दे रहा हूँ? क्या मैं अपने बच्चों के हाथों में खेल रहा हूँ? या मैं अपने बच्चे को ठीक से चला रहा हूँ। आप लोग सहजयोगी हैं, आपने अपने बच्चे का इस प्रकार पोषण करना है कि वे **आज्ञाकारी हों, विवेकशील हों, संवेदनशील हों।**

प.पू.श्रीमाताजी, 8-8-89, मई-जून 2002

- आप जब किसी से प्रेम करते हैं तो सोचने लगते हैं कि उसके लिए क्या अच्छा है और **उसके हित के लिए आप क्या कार्य कर सकते हैं?** कुछ माता-पिता अज्ञानी होते हैं, वो नहीं जानते कि उन्हें अपने बच्चों के लिए क्या करना है? भिन्न प्रकार की चीज़ों से, खान-पान आदि से अपने बच्चों की आँखों को चकाचौंध करने लगते हैं, परन्तु जिन बच्चों का पालन आपने प्रेम से नहीं किया तो वे किसी भी बात के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे, भटक जाएंगे।

यदि वे जानते हैं कि उन्हें कोई प्रेम करने वाला है तो उस प्रेम के ख़ातिर न तो वे भटकेंगे और न ही गलत कार्य करेंगे।

प.पू.श्रीमाताजी, 22-4-2001, टर्की, नव.दिस.2001

- समझना चाहिए कि परिवार क्या है? बच्चा परिवार में जन्म लेता है, माता पिता यदि बच्चे की ओर पूरा ध्यान न दें, या उन्हें बिगाड़ दें और बिगाड़े भी नहीं परन्तु उनसे ज़्यादा मोह करे या उनकी उपेक्षा कर दें तो बच्चा समझ नहीं पाता कि प्रेम क्या है... **प्रेम का अर्थ ये नहीं कि आप बच्चे को बिगाड़ दें या खेलने के लिए बहुत से खिलौने देकर जान छुड़ा लें। इसका अर्थ ये है कि हर समय आपका चित्त बच्चे पर हो पर वह चित्त मोह न हो, बच्चे के हित पर चित्त हो।**

प.पू.श्रीमाताजी, 6-6-93, कबैला, जन.दिस. 2007

- कई बार हम अपने बच्चों को अनदेखी करते हैं, चाहे वह धन की समस्या के कारण हो या पति-पत्नी के पारस्परिक समस्याओं के कारण

हो परन्तु बच्चों की उपेक्षा हो जाती है। एक बार यदि बच्चों की उपेक्षा हो जाए तो उनके साथ कुछ भी हो सकता है। मेरे विचार से बच्चों को जन्म देकर **उनकी उपेक्षा करना अपराध है। परिवार में, गृहस्थी में बच्चों को मुख्य स्थान दिया जाना चाहिए। बच्चे परिवार के महत्वपूर्ण सदस्य हैं।..**

प.पू.श्रीमाताजी, 18-9-2002, कबैला, मई-जून 2003

– सर्वप्रथम अपने प्रपंच में सुख का कारण बच्चा होता है। बच्चे के गर्भ में आते ही घर में आनंद शुरु हो जाता है, माता के कष्टों की समाप्ति के बाद अत्यन्त उल्लास के बीच बच्चे का जन्म होता है।

प.पू.श्रीमाताजी, 29-11-84, मराठी से, निर्मलायोग

3. बच्चों से स्नेहमय व्यवहार करें और उनका आनंद उठाएं बच्चों को समय दें, उस पर नज़र रखें-

बहुत से बच्चे हैं जो जन्म से साक्षात्कारी हैं और योगियों के यहाँ जन्में हैं। उन्होंने स्वयं अपने माता-पिता चुने हैं ताकि वे माता-पिता उन बच्चों की जीवन प्रणाली को समझ सकें। ये बच्चें नन्हें, कोमल, अंकुरित बीजों या कोपलों के समान हैं।

..... साक्षात्कारी बच्चों से बहुत ही स्नहेमय व्यवहार होना चाहिए। बच्चे प्रेम को सबसे अधिक समझते हैं। बच्चों को क्योंकि परमात्मा के साम्राज्य का नागरिक बनना होता है इसलिए हर बच्चे को पथ-प्रदर्शन की आवश्यकता होती है।

..... माता-पिता को जान लेना चाहिए कि ये बच्चे दंड के हक़दार नहीं हैं क्योंकि वे अति विवेकशील और स्नेहमय बच्चे हैं। यदि आपको इन बच्चों को दंड देना पड़ता है तो आप जान लें कि आपने अभी तक वास्तविकता में उनके प्रति अपने प्रेम को प्रभावित नहीं किया है क्योंकि

आपका प्रेम ही उनके लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

प.पू.श्रीमाताजी, 'सहजयोग'

– बच्चों के प्रति **कठोर व्यवहार** प्राय: इसलिए होता है क्योंकि लोग बच्चों से प्रेम नहीं करते।

..... सहजयोग के अनुसार **बच्चे विश्व के सारे वैभव से भी अधिक महत्वपूर्ण हैं** और इसी प्रकार उनका पालन पोषण होना चाहिए। नि:संदेह बच्चों को भी अपनी गरिमा का ज्ञान होना चाहिए और उन्हें व्यवहार के तौर तरीके आने चाहिए परंतु उसके साथ-साथ बच्चों की छोटी-छोटी शरारतों का आनंद भी उठाया जाना चाहिए।

..... जो माँ-बाप बच्चों के साथ बहुत कठोर हैं, वे कभी भी सामान्य नहीं हो सकते, या तो वो अत्यन्त विकृत होते हैं या शांत होकर बैठ जाते हैं, जीवन का सामना नहीं कर सकते।

प.पू.श्रीमाताजी, 14-8-89, बंबई, मार्च-अप्रैल 2002 पृ.26

मैंने आपको बताया कि सहजयोग में हमें कभी भी बच्चों पर क्रोध नहीं करना, किसी भी प्रकार उन्हें दंड नहीं देना। बच्चे के प्रति प्रेम ही हमारी मुख्य उपलब्धि होगी।

प.पू.श्रीमाताजी, 8-8-89, मई जून २००२

इन बच्चों के साथ पूर्ण सौहार्द होना चाहिए। माता-पिता या नेता (सहजयोग के) को चाहिए कि उन बच्चों की तरह बनने का प्रयत्न करें और इस प्रकार से बातचीत करें जैसे वे उन्हीं के स्तर के हों, और उन बच्चों को इस बात का ज्ञान करायें कि उन्हें मात-पिता के देखभाल की आवश्यकता है।

अपने बच्चों की संगति करने ओर उनका सामना करने से बचने के लिए लोग अधिकतर बच्चों को ढेर सारे खिलौने दे देते हैं, क्यों? एक

सहजयोगी बच्चा इतना दिलचस्प होता है कि आपको उसे थोड़े से ही खिलौने देने चाहिए और उनके साथ स्वयं भी उन खिलौनों का आनन्द लेना चाहिए और उनसे रोचक बातें करनी चाहिए।

प.पू.श्रीमाताजी, सहजयोग

– आप (सहजयोगी माता-पिता) आशीर्वादित लोग हैं, यदि आपने अपने बच्चों का पालन-पोषण ठीक प्रकार से नहीं करेंगे तो कल को आपके बच्चे आपको ही इसका जिम्मेदार ठहराएंगे। बच्चे यदि जिद्दी हैं, दूसरे लोगों से अपना प्रेम नहीं बाटतें तो तुरंत उन्हें रोकना होगा। बच्चे बहुत चतुर होते हैं, ये पता लगतें ही कि उन्हें आपका प्रेम मिलना बन्द हो जाएगा, वे एकदम सुधरने लगेंगे।

प.पू.श्रीमाताजी, 21-10-90, इटली

– माता-पिता को घर में रहकर बच्चों के साथ समय व्यतीत करना चाहिए। जीवन आमोद प्रमोद है परन्तु आध्यात्मिक अनुशासन पूर्णता है। **चुपके-चुपके बड़े प्रेम से बच्चों पर नज़र रखी जानी चाहिए** कि बच्चे कहां जाते हैं, कब वापिस आते हैं और उनके मित्र कौन हैं?

..... बच्चों के साथ माता-पिता को मधुर संबंध रखने चाहिए, यदि ऐसा होगा तो गलियों में आवारा गर्दी करते रहने के स्थान पर **बच्चों को माता-पिता के साथ समय बिताने में आनन्द आएगा।**

..... बच्चों को यदि आप बाहर ले जाएं तो गन्दे स्थानों पर नहीं ले जाना चाहिए। बच्चे अच्छी-बुरी सभी चीज़े आत्मसात करते हैं, वे जुआ खेलना भी सीख लेते हैं। मैं कुछ बच्चों के विषय में जानती हूँ जो किसी भी बात पर शर्त लगा लेते थे और फिर लड़ते थे। दूसरी ओर जिन बच्चों को मात-पिता प्रेम तथा स्नेह-पूर्वक पालते हैं वे अत्यन्त सुन्दर तथा मधुर बच्चे बन जाते हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, ''परा आधुनिक युग''

– बच्चों को पता होना चाहिए कि आप उनसे प्रेम करते हैं प्रेम दर्शन के लिए कुछ न कुछ कीजिए। प्रेम की अभिव्यक्ति होनी ही चाहिए। बच्चों के अंदर केवल यही डर बना है कि कहीं यह प्रेम उनसे छिन न जाए। हर समय सम्मानपूर्वक यही प्रेम उन्हें दिया जाना चाहिए। सम्मानपूर्वक उन्हें पुकारिए, यह दण्ड देने से अधिक आवश्यक है।

प.पू.श्रीमाताजी, 2-3-85, पर्थ आश्रम

– बच्चे कुछ भी त्याग सकते हैं, परंतु आपका प्रेम नहीं छोड़ सकते। यदि वे जान जाएं कि आप उनसे प्रेम करते हैं तो वे ऐसा कुछ भी स्वीकार नहीं करेंगे जो उन्हें आपके प्रेम से वंचित कर दें। यह निश्चित है।

..... बच्चों से बातचीत करें, आप हैरान होगें कि वे माधुर्य से पूर्ण हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-8-97, कबैला

– आप उनसे इस प्रकार प्रेम करें कि वे जान जाए कि यदि उन्होंने कोई ग़लती की तो आपका प्रेम मिलना बंद हो जाएगा। बच्चों का यह जानना बहुत आवश्यक है क्योंकि आपका प्रेम उनके लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। आपको जो भी बात पसन्द न हो उसे बता दें, आप हैरान होंगे कि किस प्रकार आपको नाराज़ करने वाला कार्य बच्चे छोड़ देते हैं। अब यह सब तो सतर्कता है जो आप सभी को सीखना है, बच्चों के विकास के लिए यह बहुत अच्छा तरीका है।

– बच्चों के अन्तर्विवेक का सम्मान करते हुए यदि आप उन्हें कोई गहन बात प्यार से बताएंगे तो उनका सुधार होगा।

प.पू.श्रीमाताजी, 15-9-96, कबैला, अंक 1997 3-4, पृ.12

4. बच्चों की रुचियों को समझें और उसे प्रोत्साहित करें-

– बच्चों की प्रवृत्ति का पता लगाकर अपने रुझानों में उनको प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

..... बच्चों को यदि अवसर दें और उन्हें समझने और उनका सम्मान करने के लिए उचित दृष्टिकोण बनाएं तो वे अपनी अबोधिता में ही बहुत शीघ्र परिपक्व हो सकते हैं। उनके सद्गुणों और छोटी-छोटी उपलब्धियों को बढ़ावा देने से बच्चे प्रोत्साहित होते हैं और समझते हैं कि अच्छी चीज़े सदैव सम्मानित होती हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, प.आ. युग

- बच्चों की सभी सुन्दरताओं और सूक्ष्मताओं की जानकारी आपको होनी आवश्यक है। **सहजयोगी बच्चे पूरे विश्व-समूह की बहुमूल्य सम्पत्ति है।** बच्चे यदि कालीन या किसी अन्य कीमती वस्तु को गन्दा कर दें तो माता-पिता को परेशान नहीं होना चाहिए, उन्हें आध्यात्मिक तथा सौन्दर्यबोधी मूल्यों की चिन्ता करनी चाहिए।

बच्चों की सभी रचनात्मक कार्यों का सम्मान किया जाना चाहिए और उन्हें उत्साहित किया जाना चाहिए तथा वे जो सृजन करने वाले हैं उसको समझा जाना चाहिए।

प.पू.श्रीमाताजी, ''सहजयोग''

- बच्चों के लिए खिलौने अत्यन्त ध्यान से चुने जाने चाहिए, ये न तो हिंसा की प्रशंसा करने वाले हों और न ही हिंसा को बढ़ावा देने वाले, तथा हिंसा इनकी विषय-वस्तु भी नहीं। बच्चों के खिलौने सुन्दर और सृजनात्मक होने चाहिए ताकि वे **सृजन के सौन्दर्य** को महसूस कर सकें।

प.पू.श्रीमाताजी, परा.आ.युग

5. बचपन से ही सादा जीवन जीने और पौष्टिक भोजन की आदत डालें-

- बिना अपमानित किए, बिना कष्ट पँहुचाए या बहुत अनुशासन बद्ध किए बच्चों को सादा तथा कठोर जीवन यापन करने की आदत

सिखाई जानी चाहिए। माता-पिता तथा आध्यापकों द्वारा बिताए जा रहे सादे जीवन का प्रदर्शन सर्वोत्तम है।

बचपन में ही यदि उन्हें बहुत अधिक सुख-सुविधा की आदत हो जाएगी और बाद में जीवन में यदि उन्हें उतना सुख न मिला तो वे कभी भी प्रसन्नतापूर्वक न रह सकेंगे। पर यदि बचपन में उन्हें सादा जीवन बिताने की आदत पड़ जायेगी तो जीवन की हर परिस्थिति के साथ वे प्रसन्नता पूर्वक समझौता कर पाएंगे।...

भोजन सादा पौष्टिक स्वाद तथा दिल को भाने वाला होना चाहिए। जिन्हें किसी विशेष भोजन की आवश्यकता है उनके सिवाय सबको एक ही प्रकार का भोजन लेना चाहिए। आप क्या खाना पंसद करेंगे या किस प्रकार खाना पसन्द करेंगे, ये बातें पूछकर उनके चित्त को व्यर्थ नहीं करना चाहिए। अपने आप यदि वे कुछ मांगे तो इसका ध्यान रखा जाना चाहिए।

प.पू.श्रीमाताजी, सहजयोग

6. बच्चों के चारित्रिक आचरण का विशेष ध्यान रखें-

- बच्चों के चारित्रिक आचरण का सावधानी पूर्वक ध्यान रखना आवश्यक है। बारह से चौदह वर्ष की आयु तक उनसे यौन सम्बन्धी बात करने की कोई आवश्यकता नहीं। कुछ मामलों में यदि आवश्यक हो तो बच्चों के मान का ध्यान रखते हुए व्यक्तिगत रुप से बात की जानी चाहिए। कक्षा या खुले में यौन शिक्षा नहीं दी जानी चाहिए। जब बच्चे युवा होने लगे तो माता-पिता या अध्यापक व्यक्तिगत रुप से उन्हें ये शिक्षा दें। विस्तृत वर्णन या खुली बातों से उनकी अबोधिता भंग नहीं की जानी चाहिए।

प.पू.श्रीमाताजी, ''सहजयोग''

- पाश्चात्य देशों के स्कूलों में छोटी आयु के बच्चों को भी यौन शिक्षा दिया जाने पर बहुत बल दिया जा रहा है। इससे अपरिपक्व मस्तिष्क

में उत्सुकता जाग्रत हो जाती है और परिणाम स्वरुप बच्चों में सभी प्रकार की यौन सम्बन्धी समस्याएं पनप उठती हैं।

अधिकतर नन्हें बच्चों के मस्तिष्क चिकनी मिट्टी की तरह होते हैं, इन्हें सुगमतापूर्वक बहुत ही सुन्दर आकृतियों में ढाला जा सकता है परन्तु यदि सावधानीपूर्वक उनकी देख-रेख न की गई तो ये आकृति बिल्कुल विकृत भी हो सकती है। बच्चों के मस्तिष्क में अश्लील भावनाएं नहीं होती। स्कूल, मीडिया तथा पुस्तकों के माध्यक से यौन और हिंसा का दृश्यों का निरंतर आघात यदि उन पर किया गया तो उनके मस्तिष्क फोटो लेने वाले कैमरे की तरह से होने के कारण इन पर यौन और हिंसा की छाप रह जाती है और खाली समय में ये प्रतिमाएं उनके सम्मुख नृत्य करती हैं। इस आयु में इनके सम्मुख यौन सम्बन्धों की बातें खुल्लम-खुल्ला नहीं की जानी चाहिए।

जिन देशों में बच्चों के सम्मुख ये बातें नहीं की जाती है, वहाँ के बच्चों को काफी बड़े होने पर यौन सम्बन्धों का पता चलता है तथा वे यौवनावस्था के उचित समय तक इससे दूर बने रहते हैं। वैसे भी माता-पिता ही बच्चों को यौन शिक्षा दे सकते हैं, पिता पुत्र को और माँ पुत्री को। कक्षा के खुले कमरे में यौन शिक्षा का प्रभाव बच्चों को उत्तेजित करने वाला होता है तथा छोटी आयु में ही उन्हें यौन-प्रयोग करने के लिए विवश कर सकता है।

छोटी आयु में बेरोक टोक यौन भोग गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनते हैं तथा स्वछन्द समाज की सृष्टि करते हैं। यौन सम्बन्ध, जो कि अत्यन्त निजी मामला होता है, के विषय में बच्चों की लज्जाशीलता समाप्त हो जाती है। भारत में यदि स्कूलों में ऐसी शिक्षा आरम्भ कर दी जाए तो माता-पिता तुरन्त इस प्रकार के स्कूल से अपने बच्चों को निकाल लेंगे।

..... **बच्चों के अबोध मस्तिष्क में असभ्य एवं अनैतिक विचार भरने वाले वीडियो कैसेट तथा फिल्मों पर प्रतिबन्ध लगाया जाना चाहिए।** माता-पिता को चाहिए कि ऐसे वीडियो कैसेट और फिल्मों के विरोध में अभियान छेड़ें।

..... बच्चों को अबोधिता ख़राब करने के सभी उद्यमियों के प्रयत्नों का; माता-पिताओं को सामूहिक रुप से मुकाबला करना होगा।

..... बच्चों की फिल्मों का पूर्व दर्शन होना चाहिए और माता-पिता समिति द्वारा इसकी जिम्मेदारी ली जानी चाहिए।

..... ऐसी फिल्में जिसमें राक्षस, मृत शरीर या भूत दिखाए गए हों या जिनमें बच्चों को भयभीत करने वाली चीज़े हों, नहीं दिखाई जानी चाहिए। इस कोमल आयु में यदि बच्चे डर जाए तो यह स्मृति उनके साथ बनी रहती है। हमने ऐसे कई बच्चों को ठीक किया है जिनके मन में चाँद, पेड़ या कुत्तों आदि का भय बना हुआ था।

छोटे बच्चों को भयभीत करने वाली कहानियाँ सुनाने वाले लोग ही इसका कारण होते हैं। ये भय निरंतर बने रहते हैं। बहुत सबूरी तथा शान्ति से बच्चों के सम्मुख यह दर्शाने का प्रयत्न करने से कि उन्हें सुनाई गई कहानियों में जरा भी सच्चाई नहीं है, यह भय दूर किए जा सकते हैं।

मैंने पाया है कि कैंसर जैसी मनौदैहिक बीमारियों का कारण भी बचपन से बच्चों के मन में बैठा हुआ भय होता है। इस भय के कारण बच्चे कई बार बड़े अजीबों गरीब ढंग से आचरण करते हैं, यहाँ तक कि गुप्त रुप से वे उन उन लोगों को नष्ट करने का मार्ग ढूँढते हैं जिनसे वे भयभीत हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, प.आ.युग

कुछ बातो में विशेष सावधानी रखें-

❒ बच्चों को ज़्यादातर ''ये करो, वो करो'' ऐसे नहीं कहना चाहिए।

''सबेरे उठो', जल्दी चलो'', ये करो ऐसा नहीं करना चाहिए''। इससे बच्चों की तिल्ली जिसे स्प्लीन कहते हैं, ख़राब हो जाती है औ इसी से ब्लड कैंसर हो जाता है। **हेक्टिक लाइफ जो लीड करता है उसे ब्लड कैंसर होता है।** बच्चों को Hectic नहीं बनानाा चाहिए, बच्चों को बहुत शांतिपूर्वक रखना चाहिए।

प.पू.श्रीमाताजी, 25-3-1985, जु.अग.2008

❐ **धन लोलुपता भी बच्चों में बचपन से ही आती है।** बच्चों के सम्मुख यदि आप धन लोलुप बातें करेंगे तो बच्चे भी वही सब सीख जाएंगे।... हमें बच्चों को उन चीज़ों से बचाना चाहिए जो उन्हें धन लोलुप बनाती हैं।

प.पू.श्रीमाताजी, 18-9-2002, कबैला, मई-जून 2003

❐ आत्मसम्मान की गहन भावना बच्चों के मन में इस तरह से बिठा देनी चाहिए कि वे न तो सदैव चीज़ों की माँग करते रहें और न उसके लिए झगड़ते रहें। बातचीत द्वारा आत्मसम्मानी लोगों की कहानियाँ उन्हें सुनाकर यह कार्य किया जा सकता है।

प.आ.युग

❐ बच्चों के लिए पूर्ण स्वतंत्रता का सिद्धांत अत्यन्त भयानक है, उनको वास्तविक स्वतंत्रता तो तभी देनी चाहिए जब वे स्वतंत्रता का अर्थ समझ जाएं। यदि वे विवेकशील और परिपक्व हैं तो यह स्वतंत्रता उनके लिए हितकर होगी।

प.आ.युग

❐ छोटे-छोटे बच्चें भी अत्याधुनिक वेशभूषाएं पहनते हैं जो कि छोटे बच्चों को न तो व्यक्तित्व प्रदान करती हैं और न गरिमा।

प.पू.श्रीमाताजी, प.आ.युग

❒ व्यक्तिगत स्वास्थ्य सम्बन्धी आदतें, विशेषकर पश्चिमात्य बच्चों की, बदली जानी चाहिए। उन्हें अपने मुँह-हाथ वाश बेसिन में एकत्र पानी से न धोकर चलते हुए साफ पानी से धोने चाहिए। खाना खाने के बाद उन्हें अपने दांत नीम की दातून से साफ करने चाहिए। जीभ को साफ रखना आवश्यक है। आँखे धोकर साफ करनी चाहिए। खेल समाप्त करने पर, शौच के बाद, खाना खाने से पहले और बाद में नाखून और हाथ साफ किए जाने आवश्यक हैं। शौच के बाद उन्हें कागज का प्रयोग नहीं करना चाहिए, ढेर सारे पानी का प्रयोग करना चाहिए। हर रोज उनके सिर से लेकर पैर तक तेल मालिश होनी चाहिए।... बच्चों के जूते व जुराबें अत्यन्त आरामदेह और साफ होने चाहिए और पैर साफ तथा सुरक्षित रखे जाने आवश्यक है।

प.पू.श्रीमाताजी, ''सहजयोग''

अध्याय 24

बच्चों के उचित पालन हेतु व्यवहारिक निर्देश

1. बच्चों के विकास में उनका भावनात्मक पक्ष बहुत महत्त्वपूर्ण है, उसका विशेष ध्यान रखें- (आयु के अनुसार)

मैंने देखा है कि प्रारम्भ में हम बच्चे के केवल शारीरिक पक्ष को ही देखते हैं, बाद में उसके अहं पक्ष पर ध्यान दिया जाता है। **तीन माह से दो वर्ष की अवस्था में बच्चे के अहं का विकास होने लगता है। अपने स्नेह द्वारा आप उनके भावनात्मक पक्ष का भी ध्यान रखें। आपका, अपने बड़ो का, श्रीमाता जी का तथा स्वयं का सम्मान करना आप उन्हें सिखाएं। उसी आयु में ही आदर करना सिखाया जा सकता है। जब वे नमस्ते, सुप्रभात आदि करने लगें तो सराहना कर आप उन्हें उत्साहित करें।** आप उन्हें चूम भी सकते हैं, तब वे जान पाएंगे कि कुछ अच्छा कार्य हो रहा है। सम्मान तथा महान भावनाएं विकसित करने के लिए यह अत्यंत प्रभावशाली अवस्था है।

देखभाल के लिए बच्चे को किसी अन्य महिला को दें, इस प्रकार बच्चा केवल आपकी सम्पत्ति न रहकर सभी की सम्पत्ति बन जाता है। **बच्चे में सामूहिकता तथा अच्छे मूलाधार का विकास शुरु हो जाता है।** यदि केवल एक व्यक्ति से ही आप घुले-मिले हैं तो तरुण होने पर किसी भी अन्य व्यक्ति से आप मिलेंगे, उसमें यौन भाव आप पाएंगे। **परन्तु अबोध काल में यदि आपने उन पवित्र भावनाओं को लिया है तो यह बेहूदगी आप में न होगी।** अत: बच्चे को सभी के साथ रहने तथा बातचीत करने दीजिए, फिर भी सोए वह माता-पिता के कमरे में ही।

दो साल की आयु तक बच्चे को माता-पिता के कमरे में रहने देना

चाहिए। दो साल की आयु में बच्चे को दूसरे खटोले पर सुलायें। इससे बड़ा होने पर वे सामूहिकता में, दूसरे कक्ष में जिसमें कोई बड़ा व्यक्ति भी हो, सो सकते हैं। तब बच्चों की माता-पिता के साथ नहीं सोना चाहिए, सामूहिकता को समझाने का प्रयास करना चाहिए। बच्चों के कपड़े तथा सामान मिलाकर रखें। **शिशु किसी व्यक्ति विशेष के नहीं होने चाहिए। माता-पिता से दूर सामूहिकता में बच्चों का रहना महत्वपूर्ण है।**

छः वर्ष की आयु तक बच्चे स्वतंत्र बन जाते हैं बड़ों का सम्मान करने लगते हैं, सबकों अच्छी तरह सम्बोधित करना तथा सद्व्यवहार करना शुरु कर देते हैं। **छः वर्ष की आयु के पश्चात् वे वास्तविक रुप से परिपक्व तथा अच्छे बालक बने होते हैं।** तब वे अध्ययन में लग जाते हैं।

बच्चे यदि अच्छे नहीं तो पांच वर्ष की आयु तक आप उन्हें **प्रताड़ित कर सकते हैं।** यदि वे शरारती हैं तो एक कमरे में ले जाकर आप उनसे कह सकते हैं कि यदि वे न सुधरे तो इनकी पिटाई होगी। **उनसे एकान्त में बाते कीजिए, सबके सामने नहीं। उन पर चिल्लाइये भी नहीं। दूसरों के सामने बच्चों को झिड़कना नहीं चाहिए।** कमरे में ले जाकर उन्हें बताइए कि ''देखो हम अब माता जी से मिलने जा रहे हैं, श्रीमाता जी देवी हैं, तुम्हें भी वैसा व्यवहार करना है।

इसी आयु में आप उन्हें **आत्मसम्मान सिखा सकते हैं।** आप बच्चों को बताए कि ''लोग सोचेंगे कि तुम एक भिखारी के बेटे हो, तुम्हें गौरवशाली लोगों की तरह व्यवहार करना है। अब तुम एक राजा के समान हो, तुम एक साक्षात्कारी आत्मा हो।'' यह सारे विचार आपने उसके मस्तिष्क में छः वर्ष की आयु तक भर देने हैं। चालीस वर्ष की आयु में यदि आप उन्हें आत्म सम्मान सिखाने लगे तो असंभव है। दस वर्ष की आयु में भी आप यह नहीं कर पाएंगे। यह दो से छः वर्ष की आयु में होना चाहिए।

आत्मसम्मान, साफ सुथरन, अनुशासन आदि का विवेक केवल

इसी आयु में ही सिखाया जा सकता है। यह अत्याधिक महत्वपूर्ण समय है क्योंकि पहले तीन महीने में वे माँ के दूध पर होते हैं, तीन माह से दो वर्ष तक एक प्रकार की बीच की अवस्था है, परन्तु दो से छः वर्ष का समय ही केवल वांछित समय है। **बनाया हुआ कच्चा मटका अब तक आग पर नहीं चढ़ा होता। दो से छः वर्ष के बीच में आप इसे भट्टी में पकाते हैं। परन्तु आग में डालने से पहले आप इस पर प्रभाव छोड़ दे और फिर आग में डालें।** ऐसा करना अति सरल है।

बच्चे को बनाना अति रचनात्मक कार्य है, जैसे में समझती हूँ कि सहजयोगी बनाना बहुत रचनात्मक कार्य है। एक मानव उत्पन्न करना महानतम, कलात्मक कार्य है। परमात्मा की बनाई ये महानतम रचना है। **इस आयु में आप बच्चों की प्रतिभा खोज सकते हैं।** उनकी रुचियाँ क्या हैं, क्या वे संगीत प्रवृत्त हैं? संगीत आरम्भ होते ही वह लय को देखने लगेगा। क्या उनकी रुचि नृत्य में है या किसी अन्य कार्य में। **प्रारम्भ से ही उनकी प्रतिभा खोज निकालनी चाहिए।**

बच्चे पर सभी कुछ न थोपें। कुछ बच्चे गणित में प्रखर होते हैं, परन्तु अन्य नहीं होते। यदि कोई बच्चा हस्तकला में अच्छा है तो उसे वही करने दो। सभी ज्ञान समान है।... सीखते हुए आपके लिए ऊँचा-नीचा कुछ नहीं। **अतः बच्चे को उसकी रुचि के अनुसार करने दें। उसे संचालन करने दें, लक्ष्य प्राप्ति हो जाएगी।...**

बच्चों को उदारता सिखाइए। उदार कृत्यों के लिए उनकी सराहना कीजिए।

दूसरों की प्रशंसा करना बच्चों को सिखाइये। किसी की मिथ्या आलोचना वे करें तो आप बिल्कुल न सुनें। जब वे दूसरों की प्रशंसा करें तो आप ध्यान से सुने।

छः वर्ष की आयु तक यदि वे किसी से लड़ रहे हो तो आप उन्हें

लड़ने दें। अपनी समस्या का समाधान वे स्वयं कर लेंगे। परंतु यदि वे बहुत अधिक झगड़ रहे हों तो उन्हें दो डंडे ला दीजिए और एक दूसरे को मारने को कहिए, तब वे समझ सकेंगे। आप उनसे कहो ''एक दूसरे को अच्छी तरह मारो, जब आप दोनों घायल हो जाएंगे तो हम आपको चिकित्सालय ले चलेंगे, अब लड़ाई कर लो।'' उनके झगड़े का कारण खोजिये।

ध्यानाकर्षण भी बच्चों का मनोविज्ञान है। ध्यानाकर्षित करने की इच्छा से बच्चा गाली गलौज़ की भाषा का प्रयोग भी कर सकता है। यदि आप कहें- ''ऐसा करने पर मैं तुम्हें मारुँगा'', तो वे पुनः वैसा ही कहेंगे परन्तु यदि आप उसे कोई तूल न देंगे तो बच्चा भूल जाएगा। पूरी मनोवृत्ति आपके ध्यानाकर्षण की है। परन्तु उनके किए गए अच्छे कार्य को यदि आप महत्त्व देंगे तो उस कार्य को भी बच्चे दोहराएंगे।

प.पू.श्रीमाताजी, 9-7-86, विएना, चै.ल.1991, खंड 3 अंक

2. बच्चों में ग़लत आदतें बचपन से ही पनपती हैं, इस विषय में विशेष रुप से सतर्क रहें- आदतों से ही चरित्र बनता है।

- ग़लती करने पर बच्चों का ध्यान उनकी ग़लती की ओर दिलाया जाना चाहिए। अभिभावक होने के नाते यह आपका कर्तव्य है, ताकि **बच्चे आज्ञाकारी बनें** और उचित-अनुचित का ज्ञान उन्हें प्राप्त हो सके। **बच्चे को मनमानी नहीं करने देना चाहिए।** बारह वर्ष की अवस्था प्राप्ति तक अत्याधिक प्यार तथा किसी चीज़ के प्रति उनका अत्याधिक झुकाव अनुचित है। हर समय उन्हें आभास होना चाहिए कि आप उनकी सहायता को तत्पर हैं।

..... अपने प्यार के साथ-साथ उन्हें **स्वालम्बी बनने का अवसर भी दें।...** मेरे नाती किसी भी अव्यवस्थित वस्तु को स्वयं ही व्यवस्थित कर यथा स्थान रख देते हैं, यह उनके रचनात्मक दृष्टिकोण का द्योतक है। अतिथियों के आने पर वे दरवाजा खोलते हैं और बिजली के उपकरणों को

अनावश्यक रुप से नहीं छूते। **उनके विचार सही दिशा में गतिशील होते हैं।**

..... बच्चों के विषय में एक महत्वपूर्ण सीखने योग्य बात यह है कि उनके शैशव काल में आपने उनकी सेवा करनी है पर आपने उनकी ओर केवल **इतना ध्यान देना है जिसका दुरुपयोग वे न कर सकें।** एक बार एक महिला और उसका बच्चा मेरे साथ रेलगाड़ी मे यात्रा कर रहे थे। बच्चे को शांत रखने के लिए माँ को कई तरह की कहानियां सुनानी पड़ रही थी। मैंने उस महिला को बच्चे की ओर अनावश्यक ध्यान देने से रोका क्योंकि बच्चा दुरुपयोग करने लगता है। **स्वयं खेल-कूदकर ही बच्चे सुधर सकते हैं।**

हर समय बच्चों को आपसे प्रश्न करना अनुचित है, ऐसा करने की उन्हें आज्ञा नहीं दी जानी चाहिए। इस तरह की स्वतंत्रता बाल्यकाल से ही उनके अहं को बढ़ावा देती है। हर चीज़ के विषय में जानने की उन्हें आवश्यकता ही क्या? शनैः शनैः वे सब जान जाएगें। जैसे सड़क पर चलते हुए वे पूछेगें- ''यह क्या है?'' ''वह क्या है?'' यह सब एक प्रकार का कष्टदायी स्वभाव उनमें विकसित हो जाता है, बड़े होने पर आप उन्हें बतायें, बचपन में बताने से कोई लाभ नहीं। बहुत अधिक ज्ञान उनके मस्तिष्क में ठूँस देने से वे उलझ कर कष्ट में फंस जाएंगे। अतः वे जैसे हैं रहने दीजिए, **केवल आवश्यक बातें ही उन्हें बताइए।** पश्चिमी देशों में बहुत छोटी आयु में ही हम उन्हें बहुत अधिक ज्ञान दे देते हैं। **धीरे-धीरे उनमें विवेक विकसित होने दें।**

अच्छी बातों के बारे मे बताकर उन्हें सौन्दर्य बोध सिखाएं। ''मैं ऐसा सोचता हूँ'' ''मैं वह पसंद करता हूँ''- इस प्रकार कहना उन्हें बिल्कुल नहीं सीखना चाहिए। सुबह नाश्ते के समय भी आप उन्हें बहुत छूट दे देते हैं। **''तुम क्या खाओंगे''? यह पूछना अनावश्यक है।** बच्चों के लिए उचित भोजन ही सब बच्चों को खाना चाहिए। मैं यह खाऊँगा, मैं वह

खाऊँगा से अहं विकसित होता है। इन्हीं कारणों से अहं चालित होकर लोग अहं के घोड़े पर सवार हो जाते हैं। किसी पर कृपा करने का अवसर प्राप्त होने पर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता के भाव के स्थान पर अहंवश वे कहते हैं ''ओह मुझे तो पूरे विश्व का प्रभु होना चाहिए।'' **ऐसा स्वभाव बचपन की अनावश्यक स्वछन्दता का परिणाम है।** ऐसा होता है और इसका कारण बच्चे का बचपन में स्व-स्थित रहने की आदत न डालना है। उनकी रुचि को इतना महत्व क्यों? नाश्ते में जो बनता है उन्हें भी खाना चाहिएं **पसंद ही अहं की सीढ़ी है।**... अत: बच्चे को सिखाना चाहिए कि ''पसंद'' शब्द ही गलत है, बच्चों को ऐसा गंदा शब्द सीखना ही नहीं चाहिए। हमारी भाषा बहुत अच्छी होनी चाहिए, यह शिक्षा उन्हें दी जानी चाहिए।

..... आप सब सहजयोगी हैं, आपको अति सुंदर भाषा का प्रयोग करना चाहिए।... आप संत हैं और संतों की तरह मधुरता से आपको बातचीत करनी है। **क्रोध से या अपमानित करने के ढंग से अपने बच्चों से नहीं बोलना, बच्चों को डाँटना हो तो सम्मान-पूर्वक डांटिये, उनके साथ कभी अनुचित भाषा का प्रयोग न कीजिए** और न उन्हें पीटिए। घमंडी तथा दुष्ट प्रकार के बच्चों को भी यदि आवश्यक हो तो कभी एक-आध थप्पड़ से अधिक न मारिए, परन्तु ऐसा करने की आवश्यकता नहीं होगी क्योंकि अधिकतर बच्चें साक्षात्कारी आत्माएँ हैं जो आपको बहुत कष्ट नहीं देंगे, और मुझे विश्वास है, वे रास्ते पर आ जाएंगे।

..... बच्चे को यदि कोई वस्तु प्रिय है तो आप हर सम्भव प्रयत्न से वह वस्तु उसे लाकर दीजिए, ऐसा करना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। बच्चों को सदा **उदारता सिखाइए।** घर की कोई वस्तु यदि वह किसी मित्र को उपहार दे दे तो उनकी उदारता की आप प्रशंसा करें।

..... **आदतें बनाने की आज्ञा बच्चों को नहीं दी जानी चाहिए।** बहुत अधिक आराम का आदी भी उन्हें नहीं होना चाहिए। बच्चों को

दूसरों का ध्यान रखना चाहिए। किसी न किसी कार्य हेतु बच्चों को सदा व्यस्त होना चाहिए।... बच्चों से हमें कठिन परिश्रम नहीं करवाना चाहिए।

.....आपके बच्चे को आचरण ज्ञान अवश्य होना चाहिए किस प्रकार उत्तर देना है, कितना बोलना है आदि। उपहार दे देकर उन्हें बिगाड़िए मत। उन्हें उपहार दीजिए तथा व्यवहार विधि भी बताइए। आपको बच्चे को अनुशासित करना है, यह आपका कर्तव्य है। यही अत्यन्त महत्वपूर्ण समय है।.. **माता-पिता को पलट कर उत्तर देने की अनुमति किसी भी बच्चे को नहीं होना चाहिए।** ऐसा करने पर उन्हें दो चाटें रसीद कीजिए, यह करने की आपको छूट है। बच्चों को सम्मान करना सिखाइए अन्यथा दूसरों के प्रति अशिष्टता के कारण उन्हें मार पड़ेगी जो आपको रुचिकर न होगी।... **आत्मसम्मान** उनमें भरिए जिससे वे **उपयुक्त व्यवहार करें।**... आपको उन्हें बताना है कि आप उनसे क्या चाहते हैं।... वस्तुओं का उचित सम्मान हम नहीं करते, प्रयोग के बाद अपने वस्त्र इधर-उधर फेंक देते हैं, यही कारण है कि बच्चे भी बड़े होकर अनुशासनहीन बनकर हमारे लिए समस्या बन जाते हैं।

प्रातःकाल उठने की आदत भी बननी चाहिए।... माता-पिता का आदर्श होना चाहिए यदि माता-पिता आदर्श स्थापित नहीं करते तो बच्चे अनुसरण नहीं करेंगे। अतः बच्चों को बिगाड़ने के लिए माता-पिता के अतिरिक्त कोई अन्य उत्तरदायी नहीं हो सकता।... सोलह सत्रह का होने तक आपको अपने बच्चों से सभी अच्छी बातें व्यवहार तथा जीवन विधि बतानी चाहिए।

..... बच्चे अभी मानव नहीं है। उन्हें मानव या शैतान बनाना आपके हाथ में है। किसी भी तरह आपको उनके प्रति क्रूर नहीं होना है फिर भी उनके प्रभुत्व में भी नहीं होना। माता-पिता को बच्चों से आदेश नहीं लेने। सहजयोग में पितृत्व का ज्ञान आवश्यक है।

प.पू.श्रीमाताजी, 2-3-85, पर्थ आश्रम, चै.लहरी 191 पृ.4

अध्याय 25

बच्चों के पूर्ण विकास में सुसंस्कृत घर एवं सहज आदर्श विद्यालय का महत्त्व

I. मूल को ही सींचने से वृक्ष फलता फूलता है। सर्वप्रथम हमें घर का सींचना होगा, घरों को सुसंस्कृत बनाना होगा–

''अपने बच्चों के लिए एक उपयुक्त घर बनाना आज बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य है, ये किया जाना चाहिए।''

प.पू.श्रीमाताजी, 2-7-2000, काना जौहरी

एक उपयुक्त घर वही है जहाँ आपसी स्नेह सम्बंधों में मधुरता हो, मिल जुलकर रहने का प्यार भरा वातावरण हो जहाँ सब लोग पारिवारिक मर्यादाओं का प्रसन्नता पूर्वक पालन करते हों और सर्वोपरि जहाँ ईश्वर के प्रति अटूट श्रद्धा–विश्वास एवं भक्ति भावना हो।

हमारे वैदिक ग्रन्थों में प्रतिष्ठित, कुलीन, संस्कारी धार्मिक परिवारों के लिए विशेष निर्देश हैं। ''सूक्तियों'' के माध्यम से गृहस्थों को उनके कर्तव्यों का बोध कराया जाता है।

1. यजुर्वेद की एक सूक्ति है –

''सुनृतावन्तः स्तघराः'' अर्थात घर में रहने वाले लोगों! अच्छी नीति वाले हो। मर्यादा का पालन करने वाले सुनृतावान कहलाते हैं– घर के लोगों! मर्यादापालक बनो।

❐ **घर की मर्यादा का प्रथम अंग है–अभिवादन**–प्रणाम, नमस्कार। प्रत्येक घर में यह मर्यादा होनी चाहिए कि प्रातः सोकर उठते हुए और रात्रि को शयनार्थ जाते हुए सर्वप्रथम ईश्वरीय शक्ति को नमन करें। परिवार में छोटे अपने से बड़ों को प्रणाम करें और बड़े छोटों को

आशीर्वाद दें।

❒ **आज्ञापालन** - अर्थात एक दूसरे का कहना मानना। छोटों को चाहिए कि बड़ों के आदेशों का सहर्ष पालन करें। बड़ो को चाहिए कि छोटों को उत्तम, आवश्यक तथा उचित आदेश ही दें और छोटों के निवेदन पर समुचित ध्यान दें।

❒ **अनुशासन** - का अर्थ है नियम के अनुसार कार्य करना। घर के नियमों का पालन करना घर के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य है। किसे, कब और क्या कार्य कैसे करना है?प्रत्येक कार्य को निर्धारित समय पर सुनिर्धारित नियम के अनुसार करना है।

❒ **सहनशीलता** - अर्थात कष्ट और कठोरता को सहन करना। माता-पिता गुरु आदि के कटुवचनों एवं क्रोध को बच्चों को समझना चाहिए क्योंकि वे जो कहते हैं उसमें बच्चों का हित छिपा होता है।

❒ **सेवा** - घर में एक-दूसरे की सेवा करने की भावना और एक दूसरे के कार्यों में सहयोग देने का चाव होना चाहिए।

❒ **परिश्रम** - घर में सबको- श्रमशील होना चाहिए। किसी भी कार्य में आलस न करें। बच्चों के लिए खेलना, पढ़ना और अन्य कार्यों के लिए समय निर्धारित होना चाहिए।

❒ **स्नेह-प्रेम** - घर में परस्पर सबको सबसे हार्दिक स्नेह होना चाहिए **''वास्तव में प्रेम तथा करुणा ही परिवार का आधार है''**

प.पू.श्रीमाताजी, 2-7-2000

❒ **आदर-सत्कार** - परिवार में सब एक दूसरे का सम्मान करें। छोटे बड़ो का आदर करें और बड़े भी छोटों को यथोचित मान दें। कोई किसी का तिरस्कार या अपमान कभी भूलकर न करें।

❒ **सहानुभूति** - अर्थात सह+अनुभूति, यदि घर में किसी को किसी

से असुविधा या क्लेश हो तो परिवार के सदस्यों को उससे सह अनुभूति होनी चाहिए और ऐसा प्रयत्न हो कि किसी को किसी के कारण दु:ख न हो, हम एक दूसरे के दु:ख को समझें और समस्याओं को मिल जुलकर दूर करें। परस्पर मधुर व्यवहार हो। ईर्ष्या, द्वेष न करें, अपनी ग़लती स्वीकार करें।

❒ **सत्य बोलना** - घर में परस्पर सबको सत्य बोलना ही चाहिए। जो बात जैसी है उसे वैसी ही कहें। बड़ी आयु के लोग बच्चों के सामने प्राय: झूठ बोल जाते है, इनसे छोटे-छोटे बच्चों को भी झूठ बोलने के संस्कार पड़ जाते हैं। घर के वातावरण को ऐसा बनाना चाहिए कि कोई किसी से छिपाव न करे और न कोई किसी को धोखा दे।

2. यजुर्वेद की दूसरी सूक्ति है -

''हसा मुदा: स्त घरा:'' घर के लोगों! हास विनोव से युक्त हो हँसने और मुस्कराने वाले लोग सबके मन को मोह लेते हैं। तुम सब फूल बनो, फूल के समान सदा प्रफुल्ल रहो।

''खुश मिज़ाज होना चाहिए... आनंद से रहें, सुख से रहें, चैन से रहें, हँसते रहें।''

प.पू.श्रीमाताजी, 3-1-84, दिल्ली आश्रम

3. ''अतृप्या असुध्या स्त घरा:''- घर के लोगों! तृप्त रहो यानी अपने जीवन में संतुष्ट रहो।

प.पू.श्रीमाता जी ने कहा है-

''(घरों में) **अपने प्रेममय माता-पिता के माध्यम से बच्चों को जान लेना चाहिए कि पावन तथा नि:स्वार्थ प्रेम ही जीवन में महत्वपूर्णतम है तथा नैतिकता बहुमूल्यतम सद्गुण है, धन से भी कही अधिक महत्वपूर्ण''**

..... ''झगड़े को बढ़ावा देने वाला कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए।''

..... ''बच्चों को ये जानना चाहिए कि हमें शान्त, मित्रवत होकर एक दूसरे को प्रसन्न करना है, हम पशुवत नहीं ले सकते, अन्य लोगों को प्रसन्न करना बहुत आवश्यक है।

..... ''बच्चों को इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि झगड़े से बचना दुर्बल व्यक्तित्व का चिन्ह नहीं है। शांति एवं प्रेम से रहना सम्मान जनक होता है। व्यक्ति को चाहिए कि क्षमा करे और क्षमा ले। यह सद्गुण है बच्चे जब एक बार सद्गुणों का आनन्द लेने लगेगें तो मूर्खतापूर्ण चीज़ों को नहीं अपनाएगें।

प.पू.श्रीमाताजी, परा आधुनिक युग

4. घर में नियमित पूजा-अर्चना, आरती, स्तुति आदि से ऐसा धार्मिक परिवेश बनाएं जिससे बच्चे के मन मे परमात्मा के विषय में जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हो। बचपन से ही परमात्मा के साथ उसे जोड़े। उसे बताइये कि ये हम सबके परमपिता हैं, उन्होंने ही सबको बनाया है, वह हमें प्यार करते हैं, रक्षा करते हैं पर उनके नियम कठोर हैं, वह सजा भी देते हैं-

- ''सर्वप्रथम तो हमने उन्हें बताना है कि श्री गणेश कौन हैं तथा उनके गुण कौन से हैं, वे किसका प्रतिनिधित्व करते हैं।... श्री गणेश के विषय में उन्हें पूरी तरह समझना चाहिए।... आप सबके लिए आवश्यक है कि **अपने घरों में श्री गणेश की मूर्ति लगाएं** ताकि आप अपने बच्चों से बता सकें कि आपको भी इन्हीं की तरह बनना है।

..... आप हैरान होंगे कि किस प्रकार बच्चे गणेश के गुणों को समझते हैं और किस प्रकार उन्हें कार्यान्वित करते हैं। अब श्री गणेश के

गुण क्या है? बच्चों को पावित्र्य समझ में नहीं आएगा क्योंकि वे अभी बहुत छोटे हैं वे सभी गुण नहीं समझ पायेंगे, परन्तु एक गुण उनकी समझ में आ जाएगा कि ईमानदारी होना है।... उनकी ईमानदारी उनकी अबोधिता उन्हें सच्चाई का बोध कराने में सहायक होगी।

प.पू.श्रीमाताजी, 13-9-2003, कबैला, चै.ल.जन.फ.2004

– सर्वशक्तिमान परमात्मा के नियमाचरणों का ज्ञान बच्चों को होना चाहिए। दिव्य शक्ति और दिव्यता का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है। बच्चों को बताया जाना चाहिए कि वे योगी हैं और उनका भी सम्मान होना चाहिए। सम्मान द्वारा वे अपने अस्तित्व की अवस्था और अपने सम्माननीय व्यक्तित्व के प्रति जागरुक हो जायेगें।

..... बच्चों को समझना चाहिए कि कितनी विविधता के साथ परमात्मा ने एक विश्व की रचना की है... और प्रकृति कैसे एक दिव्य अनुशासन बद्ध है।

..... विकास प्रक्रिया, कुण्डलिनी एवं सहजयोग का ज्ञान उनके लिए सबसे अधिक आवश्यक है। उन्हें समझाया जाना चाहिए कि पुनरुथान के इन दिनों वे कैसे जन्मे हैं, सभी चमत्कारिक फोटो उन्हें दिखाकर उनके विचार पूछने चाहिए।

प.पू.श्रीमाताजी, ''सहजयोग''

5. घर में सहजयोगी माता-पिता ''सहज संस्कृति'' के विषय में बच्चों को बताएं, आपकी अपनी जीवन शैली एवं आचरण भी उसी के अनुसार होने चाहिए तभी बच्चों पर प्रभाव पड़ेगा-

❐ सहतजयोगी को नम्र होना चाहिए। सहजयोगी की भाषा बहुत सुंदर होती है। उसे ढंग से बातचीत करनी चाहिए कि दूसरा व्यक्ति तदात्मयता का अनुभव कर सके।

❒ सहजयोगी किसी भी तरह आलसी व्यक्ति नहीं होता।

❒ सहजयोगी अति शांति तथा गरिमामय जीवन व्यतीत करता है।

❒ उदार चित्त, करुणामय तथा धन लोलुपता विहीन व्यक्ति ही सहजयोगी है।

❒ तर्क वितर्क, अनावश्यता टिप्पणियों सहज संस्कृति का हिस्सा नहीं है। हर चीज़ का उसकी पावन अवस्था में आनन्द लेना ही सहज-संस्कृति है।

❒ सहजयोगी अपनी शक्ति या धन को व्यर्थ की चीज़ पर नष्ट नहीं करते। वे न तो शराब पीते हैं, न सिगरेट और न नशा करते हैं।... वे गंदी फिल्म नहीं देखते और न ही गंदा साहित्य पढ़ते हैं। वे गरिमामय और एक विशेष प्रकार के अति पवित्र लोग हैं।

❒ सहजयोग सामूहिकता में कार्य करता है इसी तरह आपको भी सामूहिकता का अंग बनना है, अन्य लोगों से एकाकार करना है।

''सहजयोग'' से

''हमारे व्यक्तित्व के निर्माण में परिवार का अपना महत्त्व और प्रभाव है।''

प.पू.श्रीमाताजी, अगस्त 1995, इटली

सहज-परिवार में सबके बीच में रहकर उनके आचरण से बच्चा सब सीखता है। बच्चों में अनुकरण की प्रवृत्ति बहुत तीव्र होती है वे बहुत ध्यान से हर चीज़ को देखते हैं और फिर वैसा ही करते हैं, धीरे-धीरे वही उनका स्वभाव बन जाता है। सहजयोगी के सारे गुण ये बच्चे अपना लेते हैं।

II. बच्चों के पूर्ण प्रशिक्षण के लिए अधिक से अधिक सहज आदर्श विद्यालय खोलने होंगे जहाँ शिक्षा का आधार भारतीय

संस्कृति हो-

''श्री गणेश जी आध्यात्मिक जीवन के नींव के पत्थर हैं, इसी कारण मेरी बहुत इच्छा है कि अपने बच्चों के लिए हम उचित विद्यालय खोल सकें जहाँ उन्हें उचित शिक्षा मिले तथा उनकी उचित देखभाल हो क्योंकि उनका गणेश तत्व उनमें पहले से ही है, हमें केवल इसका पोषण करना है, देखभाल करनी है तथा इसको बढ़ाना है। एक बार यदि ऐसा हो जाए तो बच्चे सुरक्षित है और उन्हें कोई भी हानि नहीं पहुँचा सकता, गलत चीज़ों को वे कभी भी आत्मसात नहीं करेंगे।''

प.पू.श्रीमाताजी, शेरे, पुणे, 15-12-91

''गुरु (अध्यापक) को अपने शिष्य की पूरी भलाई, धर्मपरायणता का उत्तरदायित्व एक माँ की भाँति लेना पड़ता है। गुरु वह है जो अपने शिष्य को ब्रह्म चैतन्य से जोड़ता है।''

प.पू.श्रीमाताजी, चै.ल.2008, मई-जून

''अध्यापक पूर्ण प्रशीक्षित सहजयोगी होने चाहिए।''

प.पू.श्रीमाताजी, सहजयोग

''गुरु आपके अन्तर्निहित बहुमूल्य गुण खोजता है।''

प.पू.श्रीमाताजी, 23-7-2000

''अच्छा गुरु बनने के लिए आपको संयत, शांत, करुणामय और प्रेममय बनना होगा।

प.पू.श्रीमाताजी, 1-8-99, कबैला

''टीचर्स (अध्यापकों) पर भी बड़ा उत्तरदायित्व है कि वो अपने जीवन को इस तरह सुधारें कि बच्चों के सामने एक बड़ा भारी आदर्श खड़ा हो जाए, जो लोग याद करें कि 'हमारे एक टीचर थे, उनकी एक विशेषता थी, वे विशेष थे। तो यह काम बहुत पहुँचे हुए लोगों का है।

पहले गुरु जो होता था realized soul (आत्मसक्षात्कारी) होता था और बहुत पहुँचा हुआ होता था। इसीलिए अब आपका गोत्र जो है, आपकी यूनीवर्सिटी जो है ये सहजयोग है और सहजयोग की योग्यता के ही वहाँ के टीचर्स होने चाहिए और वहाँ के बच्चे होने चाहिए। एक आदर्शवादी उत्तम–अति उत्तम विद्यार्थी इस स्कूल (सहज आदर्श विद्यालय) से निकलेंगे।''

प.पू.श्रीमाताजी, 15-12-83, सहज मंदिर, दिल्ली

''अध्यापकों को चाहिए कि बच्चों को सिखाएं कि पवित्रतापूर्वक वास्तविक प्रेम किस प्रकार करें, किस प्रकार करुणामय हों, किस प्रकार से निर्लिप्त हों और किस प्रकार समाज के लिए उपयोगी बनें। गाणित, वर्ण विन्यास (spellings) आदि अन्य चीज़े बाद में आ सकती हैं, परन्तु अध्यापकों के लिए मुख्य चीज़ बच्चों में सभी सद्गुण भर देना है। अध्यापकों के उच्च स्तर से, तथा महान व्यक्तियों द्वारा लिखी गई अच्छी पुस्तकों के माध्यम से तथा उन पुस्तकों के धर्मादेशों की ओर ध्यान न देने वाले व्यक्ति को किस प्रकार कष्ट उठाना पड़ता है, ये काय किया जा सकता है।

..... **शिक्षा नीति सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देने वाली होनी चाहिए।** विश्व भर के महान तथा श्रेष्ठ लेखकों द्वारा लिखी गई पुस्तकें, केवल उन्हीं के देश में लिखी गई पुस्तकें ही नहीं, पढ़ने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। काल्पनिक या एक प्रकार से युद्धोत्तेजक लोगों के जीवन कथाओं के स्थान पर महान लोगों की जीवनी तथा आत्मकथाओं के प्रति बच्चे में रुचि विकसित की जानी चाहिए। बच्चों के सम्मुख यदि भयानक चरित्र के लोगों को आप रखेंगे तो बच्चे उनकी बुराइयों को सुगमता से आत्मसात कर लेते हैं। बड़े आयु के लड़के और लड़कियाँ भी ऐसी पुस्तके पढ़ सकते हैं जो ये दर्शाती हैं। कि अनैतिक जीवन भयानक एवं विनाशकारी है।

प.पू.श्रीमाताजी, परा आधुनिक युग

नैतिकता एवं अनैतिकता के विषय में सतर्क करना माता-पिता अभिभावक एवं अध्यापक सभी का कर्तव्य है। बच्चों को बचपन से ही सही और गलत कार्यों का फर्क बताया जाना चाहिए ताकि प्रारम्भ से ही वे गलत काम न करें और सदैव सतर्क रहें। जैसे-

1. झूठ बोलना - जो बात जैसी देखी-सुनी है वैसी न कहना झूठ है। जो कुछ जैसा है उसे वैसा ही कहना सच है। सच सदा एक होता है, वह बदल नहीं सकता। सच को अपने लाभ के लिए बदल देना पाप है। सच तो सच ही रहेगा। एक सच को छिपाने के लिए पहले हम झूठ बोलते हैं फिर झूठ को सच साबित करने के लिए बार-बार झूठ बोलना पड़ता है। हमेशा सच बोलने की आदत डालनी चाहिए।

2. हिंसा करना - किसी भी जीव को दु:ख देना, अत्याचार करना, उसको मान डालना हिंसा है।

3. चोरी करना - किसी की रखी हुई, भूली हुई या गिरी हुई वस्तु को चुपचाप उठाकर अपने पास रख लेना चोरी है। बिना टिकट यात्रा करना, उचित मूल्य न चुकाना, अधिक मूल्य पर वस्तु बेचना, एवं सरकार द्वारा निर्धारित कर न देना- ये सब चोरी है। अपने वायदे से मुकर जाना भी चोरी या धोखा देना है, कर्ज़ लेकर उसे चुकता न करना भी चोरी है।

4. कुशील पाप - किसी की माँ-बहन बेटी के बुरी निगाह से देखना कुशील पाप है। आपस में स्नेह का पवित्र रिश्ता होना चाहिए। प्रत्येक नारी माँ के समान होती है।

5. परिग्रह पाप - अपनी आवश्यकता से अधिक पदार्थों का संग्रह करना परिग्रह पाप कहलाता है। अधिक वस्तुएं एकत्र करना लालच कहलाता है। लालच करना बुरा होता है।

ये सारे पाप कर्म ही सारी बुराइयों की जड़ हैं। पाप कर्म करने का

अर्थ है कि हम परमात्मा के बताए नियमों की अवेहलना कर रहे है। पर हमारे सहजी बच्चे तो सदैव परमपिता के संरक्षण में है। उनके अन्तर्जात गुण जाग्रत हो जाते हैं, इसलिए वे गलत कार्य करेंगे ही नहीं। उनका ध्यान सदैव सही और सुंदर चीज़ों की ओर रखें।

– हर सृजनात्मकता, कलात्मक, सुन्दर और हर उस चीज़ को जिसमें कोई संदेश हो बच्चे तुरंत अपना लेते हैं। इसी तरह से हम उनमें गहन संवेदना विकसित कर सकते हैं।

– यदि बच्चे को चीज़ों को सुंदर बनाने तथा साफ सुथरा रखने के लिए ज़िम्मेदार बना दिया जाए तो वे निश्चित रुप से इस कार्य को करेंगे।

प.पू.श्रीमाताजी, परा आधुनिक युग

– बच्चों का संचालन करना बहुत ही महत्वपूर्ण है। अत्यन्त कोमलता से उनके अन्तर्विवेक का संचालन किया जाना चाहिए मानो आप किसी फूल को संभाल रहे हैं। वे एक फूल हैं, जिस प्रकार फूल में सुगंध होती है उसी प्रकार बच्चों की अबोधिता में भी सुगंध होती है।

प.पू.श्रीमाताजी, 15-9-96, कबैला, चै.ल.अंक 3, 4

वेदों में शिक्षण संबधी विशेष निर्देश–

ऋगवेद की एक सूक्ति है–

''त्रितः कूपेवहितः'' अर्थात "त्रित" कुएँ में गिर गया। ऋगवेद की इस सूक्ति का अर्थ बहुत गूढ़ है। मनुष्य के जीवन में तीन दोष होते हैं– व्यसन दोष, स्वभाव दोष और चरित्र दोष। जिनके जीवन में ये तीनों दोष होते हैं वह पतन के गहरे कुएं में गिर जाता है, इससे निकलना उसके लिए असंभव हो जाता है।

व्यसन हैं – सिगरेट, बीड़ी, पान, तम्बाकू, मदिरा आदि मादक पदार्थों का सेवन।

स्वभाव दोष हैं - क्रोध, आलस्य, प्रमाद, अहंकार, लोभ, चुगली करना, कटुभाषण, दलबंदी अशिष्टता आदि।

चरित्र दोष हैं - ब्रह्मचर्य का नाश, बुरी नज़र से स्त्रियों को देखना, चोरी, छलकपट, स्वार्थपरता, विश्वासघात, भीरुता कायरता आदि।

आत्मसाधना द्वारा तीनों प्रकार के दोषों से मुक्त रहकर ही बच्चे उत्थान के पथ पर सतत् अग्रसर रह सकते हैं।

बच्चों के मन में प्रारम्भ से ही अपने प्रति एक दृढ़ विश्वास पैदा करें। उनकी आत्मिक शक्ति को बढ़ाना है। आत्मनिरीक्षण एवं ध्यान धारणा द्वारा ही आत्मशक्ति बढ़ेगी।

''वयां जयेम'' अर्थात हम विजयी हों। अथर्ववेद की यह सूक्ति कहती है कि बच्चों को अपने हृदय में सदैव विजय की भावना रखनी चाहिए। सर्वप्रथम बच्चों को अपने-अपने जीवन क्षेत्र में विजय प्राप्त करनी चाहिए। बच्चों को धीर, वीर और बलवान बनकर विश्व में न्याय और सदाचार की प्रस्थापना करनी है, बच्चों को ही सम्पूर्ण पृथ्वी पर मानव धर्म और मानव संस्कृति की प्रस्थापना कर सांस्कृतिक और धार्मिक विजय प्राप्त करनी है।

'क्या कहते हैं वेद' से संकलित

वर्तमान में हम सब सहजी तो बहुत ही सौभाग्यशाली हैं कि हमें साक्षात आदि माँ गुरू रुप में मिली हैं, उन्होंने 'सहजयोग' के माध्यम से हम सबको संपूर्ण ज्ञान दे दिया है; अब सभी सहजयोगियों को गुरू रुप में अपनी अपनी भूमिका निभाते हुए नई पीढ़ी के इन सहजी बच्चों को सब कुछ सिखाना है। हर सहजी को आदर्श गुरू बनना है। पू.श्रीमाताजी ने आप सबकों स्वयं का गुरू तो बना ही दिया है अब आप बच्चों के आदर्श सहजी अध्यापक बनें। उन्हें अच्छे संस्कार देकर उनके चरित्र और

व्यक्तित्व की नींव मज़बूत करें।

पू.श्रीमाताजी ने बार-बार कहा है-

''हमारे जो संस्कार हैं, भारतीय संस्कार इन्हीं से हम लोग धीरे-धीरे पूरी तरह परिपक्वता में आते हैं।... हमारें अंदर के संस्कार ऐसे हैं जो हमें बाँध लेते हैं पूरी तरह से जैसे एक पेड़ है वह क़ायदे से बढ़े अगर तो परिपक्व हो जाएगा।

..... सहजयोग के लिए यह बहुत महान चीज़ है कि आप लोग हिन्दुस्तानी भी हैं उसको आप पकड़े रहें, पकड़ कर उसी पर आप जमें और उसी पर आप परिपक्वता पायें।

प.पू.श्रीमाताजी, 29-3-1983, दिल्ली

हमें शपथ है आपकी

हे आदिशक्ति माँ,

अपने बच्चों के लिए ही
आप इस कलियूग में धरती पर आई हैं
महामाया रूप में, आपने हमारी कुण्डलिनी जगाई
और सिर्फ हमारी रक्षा ही नहीं की,
वरन पार कर दिया है हमें
अपने इस आदिशक्ति अवतरण में

हे सहस्रार स्वामिनी माँ

आपने अपने सहस्रार से
पुनर्जन्म दिया है हम सबको
देवदूतों से भी अधिक समर्थ बना दिया है हमें
अपनी अद्‌भुत असंख्य दिव्य शक्तियाँ दे कर
अब हम स्वयं के गुरू हो गए हैं,
आपकी अनुकंपा से

हे साक्षात् गुरु माँ

हमें शपथ है आपकी ममता की,
आपके निर्व्याज्य अविरल प्रेम की
हम वचन देते हैं आपको, हम सब
मिल-जुल कर आत्मसाक्षात्कार देंगे जन-जन को
सारे विश्व का अन्तर्परिवर्तन करेंगे और
सहजयोग लायेंगे इस धरती पर
चलते रहेंगे, चलते रहेंगे हम,
आपका स्वप्न साकार होने तक

हमें शपथ है आपकी...
हमें शपथ है आपकी...

सर्वाधिकार सुरक्षित

बिना पूर्व आज्ञा के इस पुस्तक के किसी भी भाग की प्रतिलिपि या किसी भी रूप में प्रसारण वर्जित है। कोई भी व्यक्ति अनधिकृत रूप से यदि इसका प्रकाशन करता है तो उस पर हानिपूर्ति का दावा किया जाएगा।

visit us at www.sahajayoga.org to know more about Sahaja Yoga.